भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार
साहित्य अकादमी पुरस्कार
पद्मश्री एव पद्मभूषण से

अलंकृत

ताराशंकर वन्द्योपाध्याय

का

बहुचर्चित उपन्यास

संदीपन पाठशाला



अनुवादक

प्रवोधकुमार मजुमदार



संदीपन पाठशाला

ताराशंकर वन्द्योपाध्याय



संस्करण 1992

सदीपन पाठशाला (उपन्यास)

प्रकाशक
शारदा प्रकाशन
१६/एफ ३ अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२

मुद्रक
नव प्रभात प्रिंटिंग प्रेस
बलबीर नगर, शाहदरा
दिल्ली ११००३२

मूल्य 75 रुपये

SANDEEPAN PATHSHALA
Novel by
—Tarashankar Vandyopadhyaya

प्रतिष्ठा की कामना जब मनुष्य की रोटी कपड़े की चिन्ता को भुला देती है तब उसका राह चलना आसमान की ओर मुह किये चलने के समान हो जाता है। अति-यथार्थ मिट्टी की धरती के बाधा विघ्नो को वह उस समय भूल ही जाता है।

एक कहानी है एक ज्योतिर्विद अधेरी रात में आकाश के तारा की ओर देखते हुए राह चलते एक कुँए मे गिर गये थे। जिस व्यक्ति ने उनका उद्धार किया था, उद्धार करने के बाद ही निवृत्त नही हुआ था, साथ ही साथ एक अनमोल उपदेश भी दे गया था। कहा था, अजी, धरती का हालचाल पहले जान लो, फिर आसमान की ओर देखना।

इस मशहूर अगरेजी कहानी के बारे मे सीताराम जानता है, बचपन मे उसने यह कहानी पढी है, याद भी है।

सीताराम का पिता वह कहानी नहीं जानता, उसने अगरेजी नही पढी बगला पढाई भी नही के बराबर। यही बात वह दूसरे ढग से कहता है। कहता है, बेटा, ऊपर की ओर मत देखना। नीचे की ओर निगाह डालो। तुमसे कितने लोगो का हाल बेहतर है, कितने लोग तुमसे ज्यादा मान सम्मान पाते हैं, उसका हिसाब मत लगाना वर्ना अशान्ति की आग बुझेगी ही नही। इससे बेहतर होगा कि तुमसे कितने लोगो की हालत खराब है, तुमसे मान सम्मान मे कितने लोग छोटे हैं उन्ही का हिसाब लगाओ। इससे सुख चाहे न भी मिले, शान्ति मे बीत जाएगे तुम्हारे दिन।

सीताराम के कुल गुरु कहते हैं, बेटा, कामना और आग मे कोई फर्क नही, आग की लौ की भाँति कामना का स्वभाव भी ऊर्ध्वमुखी है। कितना भी उसे नीचे की ओर घुमा दो, वह फौरन पलटकर ऊपर की ओर सिर उठा लेगी। लेकिन जब वह बुझ जाती है, तब जीवन जली हुई लकडी जैसा हो जाता है राख और कोयले का ढेर सा।

बातें सीताराम के दिल को भी छू गयी थी। लेकिन फिर भी वे सारी बातें वह आज किसी कदर मान ही नही पा रहा है। किसान का बेटा जमाने के रिवाज के मुताबिक स्थानीय हाई स्कूल मे पढने गया था। वहाँ अगरेजी अपने काबू मे करने के बूते की कमी के कारण व्यथमनोरथ हो अन्त मे हुगली नामल

स्कूल म पढने चला गया था। वहाँ भी दो-दो बार फेल हो कर फिर सिर झुकाय लौट आया है। लेकिन इसी बीच जाने कब उच्चाशा की आग मन मे सुलग उठी और वह नौकरी करना चाहता है। वह नौकरीपेशा बाबू बनेगा। पंडित के रूप म ससार म जाना माना जायगा। लेकिन बाप रमानाथ ने कहा, नहीं, यह इरादा छोड दो तुम। हम लोग किसान हैं, सिरजनकी पढी से बाप दादा का खानदानी काम है काश्तकारी। हम लोग खा-पी, ओढ़ पहन अपनी औलाद को जर-जमीन दे, राम का नाम लेकर आँखें मूँदते चले आए हैं। यह सब छोड कर तुम नौकरी ढूँढ रहे हो! सो भी किसी कायदे की नौकरी होती तो बात कुछ समझ म आती। हाय! हाय रे किस्मत! दाहिने हाथ से खुरपा चलाकर वह नीबू के एक दरख्त के नीचे से घास की निराई कर रहा था, बाए हाथ में हुक्का थामे तमाखू पी रहा था। बेट से बातें करते समय दोनो ही काम बन्द थे, अब बात बीच मे अधूरी छोड वह फिर से वे दोनो काम करने लग गया।

सीताराम सिर झुकाये खडा ही रहा।

अचानक फिर अपने हाथ का काम रोककर रमानाथ ने मुह उठाकर पूछा, क्या है? बताओ! अपना इरादा तो बताओ।

सीताराम अब की बार बोला, कैसी भी हो, एक नौकरी जब मिली है तो मैं कोशिश करके देखूँगा ही।

रमानाथ न खेद और श्लेष दोनो मिलाकर कहा, तकदीर तुम्हारी! नौकरी तो क्या, पेट भर खाना और चार रुपए तनख्वाह! आज दस साल स्कूल की फीस बोडिंग का खच भरने के बाद आखिर म चार रुपए तनख्वाह और खुराकी, सो भी कोई कपडा लत्ता नहीं। जो लोग बिना पढेलिखे नौकर-खानसाम का काम करते हैं वे भी खुराकी और तनख्वाह क साथ कपडे पाते हैं बेटा!

सीताराम खामोश सिर झुकाये अब बाप के पास से चला गया।

बेटे के बिन-बोले चले जाने में ही रमानाथ को उसका जवाब मिल गया। वह मौन रहकर बाप के प्रस्ताव का समथन नहीं जता गया। वही काम वह करेगा। खुराकी और चार रुपए तनख्वाह ही उसके लिए काफी है। कुछ दर उसके जाने के रास्ते की ओर एकटक देखने के बाद एक लम्बी साँस लेकर रमानाथ फिर काम मे लग गया। इतनी देर में अचानक ही उसकी निगाह पडी, बातें करने की असुधी मे जाने कब उसने पौधे की एक मोटी-सी जड काट डाली है! शायद यह पौधा न भी जी सके। कडवी-सी मुस्कराहट रमानाथ के चेहरे पर झलकी, उसे लगा, उसके जीवन के आशा-तरु की मूल ही उसने काट डाली है।

"मुखिया दादा हैं क्या?"—उनके गाँव के आठ-आने हिस्से की जमींदारी का पुराना और खेती-बाडी की देखभाल करन वाला एतबारी कारिन्दा कन्हाई राय आकर खडा हो गया। यह कन्हाई राय मुजस्सम कलि है। नल दमयन्ती जिन दिनो एक ही धोती म वनवास के दिन काट रहे थे—एक-दूसरे से दूर

जाने का कोई रास्ता नही था —उस समय कलि ने नल के हाथ मे एक तेज छुरा जुटा दिया था। बस उसी कलि जैसे ही कन्हाई राय ने सीता के हाथो मे यह नौकरी ला दी है। इसी कन्हाई राय ने ही सीताराम की नौकरी तय की है। उसी ने उसको प्रलुब्ध किया है। उसको देखकर रमानाथ अपने को सभाल न सका, बोल पडा, आपने मुझसे यह दुश्मनी क्यो की, यह तो बताइए ?

दुश्मनी !—कन्हाई राय आश्चर्य करने लगा।

दुश्मनी तो है जी—रमानाथ ने कहा, अकेली औलाद है यह मेरी। माँ मर गई इस बेटे की तो मैंने इसे पाला पोसा गोद मे। पढाई मे आज चार साल से अलग थलग रहा, सो भी मैंने कहा, झख मारने दो, बेटा पढना चाहता है तो पढने दो। फेल होगा, यह तो मुझे मालूम ही था। लेकिन मैंने कहा, खैर शौक पूरा कर ले। वही फेल होकर घर लौट आया। सोचा था, बहरहाल, लडके की साध तो पूरी हो गयी, अब थिर हाकर घर पर बैठेगा। मेरा दाहिना हाथ बनगा, खेती बाडी देखेगा। बूढा हो गया हू, पास रहगा। सो नहीं, तुमने भला यह कैसी अक्ल दे दी उसे ?

राय ने ऐसी शिकायत की प्रत्याशा नही की थी। सीताराम से उसे प्यार है और उसी प्यार के कारण उसका अभिप्राय समझकर उसने ऐसी व्यवस्था कर दी है।

रमानाथ न आँखे पोछी। आँखो मे आसू आ गये थे, बोला, अचानक अगर मर जाऊ तो शायद बेटे के हाथो आग भी न मिले।

अब राय से बिना हँसे नही रहा गया। बोला, अरे ढाई मील का ही तो रास्ता है, दूर क्या कहते हो ? शाम को लडको को पढाकर, खा पीकर रोजाना घर भी आ सकेगा। आपका सिर भी दुखे तो इत्तिला मिलते ही घटे-भर मे घर आ जायगा।

रमानाथ को इस बात का कोई जवाब बूढे नही मिला। खामोश मिट्टी की ओर नजर गडाय घास के एक गुच्छे की जड पकडकर खीचने लगा।

राय ने उसे समझाते हुए कहा, आप इसमे एतराज न करें। सीताराम का इसमे भला होगा, आपका भी। आठ आने हिस्से के जमीदार के घर के लडको का मास्टर बनेगा सीताराम, इससे

रमानाथ ने यकायक उसका हाथ पकड लिया और कहा, सरिश्तेखाने का कामकाज सीख ले, ऐसा कर देना भाई।

राय ने कहा, यह कौन-सा मुश्किल काम है ! गाहे-बगाहे अगर सरिश्तेखाने के नायब के पास बैठे तो सीखने मे कै रोज लगेंगे ? खैर, यह बात मैं रानी माँ से बता दूगा।

हाँ, बाबू लोगो की गुमाश्तागिरी अगर मिल जाये हमारे गाँव की, तो इज्जत तो मिलेगी ही, दो-दस रुपए भी, घरपर रहेगा, सबकुछ ठीक रहेगा।

अदृश्य विधाता हँसे, आग की छूत लगते ही आग सुलग उठती है।

ऐन ऐसे ही समय सीताराम आकर खड़ा हो गया।

मैं जा रहा हूँ बप्पा!

रमानाथ खड़ा हो गया। बोला, 'जा रहा हूँ' नहीं कहा जाता है बेटा, 'आ रहा हूँ' कहना चाहिए। चलो तिलक लगा दूँ, फूल दूँ, भगवान को माथा टेक लो। चलो।

सीताराम चला गया। रमानाथ उदास-मन हुक्का लेकर ओसारे बैठ गया। उसका यह सजा सजाया खेती-बारी का टाट, पीढ़ियों के खून से सींचा यह टाट, इसी टाट के देवता की पूजा बन्द होने का आज सूत्रपात हुआ। कुछ-कुछ पागल जैसे ही रमानाथ अकेले ही, मानों अपने को ही सुनाते हुए बोल पड़ा—हो गया, आज से नोटिस मिल गया। काल-पुरुष बाँस की गाड़ी पर बैठे यहाँ आ जाय और सबकुछ सीलमुहर कर दे बस, सारा का सारा सफाया! जमाना है जमाना, जमाने की चाल! पुराने जमाने का गाँव—सोने का गाँव होता था। अहा, क्या सारी गिरस्तियाँ थी! सोने की गिरस्ती। वह जमाना और वह गाँव आँखो पर तिर रहे हैं। उस जमाने का गाँव! रमानाथ की आँखो में आँसू आ गये।

उस जमाने की बात!

किसान-अहीरो का गाँव!

तेरह सौ सन[1] का किसानो का गाँव। उनके टोले के सिरे पर था बाउरी लोगो का पुरवा। मंडल जी की खेती बारी में वे हलवाहे-टहलुए का काम करते हैं, गोपालन म सहायता करते हैं। भिनसारे मालिक उठने से पहले वे घर म आ पहुँचते। मालिक खुद खड़े रहते, वे गौवो को गुहाल से बाहर निकाल कर सानी पानी देते। मालिक तमाकू पीते गौवो की पीठ पर हाथ सहलाकर उनको दुलारते, डाँटते, सजा देते। फिर रात का काम भी वे गो सेवा कर समाप्त करते। गुहाल म धुआ दे मच्छर भगाकर गौवो को उनके अपने अपने ठाँव पर बाँध देते। कोई ठाँव ठिकाने मे गलती करता तो उसको फटकारते हुए कहते—बेवकूफ, बेहूदा, बदमाश, अपना ठाँव-ठौर भी नही जानते? फिर तमाकू पीते हुए दयामय भगवान का स्मरण करते।

मिट्टी का बना घर फूस का छाजन बाँस या लकड़ी की अठकोनी खूटियो से घिरा ओसारा तारकोल पुते दरवाजे, लाल मिट्टी से पुती हुई दीवारें, उन पर खड़िया या गेरू से बनी अल्पना, गोबर मिट्टी से लिपी पुती फर्श और आँगन, इन्ही से उनका घर बना। किसी किसी का घर कोठा है यानी दुमजिला। ज्यादातर घर कोठे नही इकमजिले हैं। घर के बगल म तलैया, तलैया में लकड़ी के लट्ठो स बना घाट, उस घाट पर बैठकर किसान बहुएँ बरतन माँजती

१ बंगाब्द १३०० ईसवी सन् १८०७ होता है।

हैं, नारी का साग चुनती हैं मर्द लोग बाँस की तीलियों का बना टापा डालकर मछली पकड़ते हैं।

तलैया के चारों ओर साग सब्जियों का घरेलू खेत, लौकी कुम्हड़े का मचान, उसी के बीच जाफरी से घिरे एकाध कलमी आम के बिरवे, इसके अलावा पपीते के दरख्त हैं अड़हुल-कनेर के पेड़ हैं, गाढ़े हरे रंग के फ्रेम की तरह तलैया के पानी को घेरे रहते। अड़हुल-कनेर के फूल चुन कर वे खुद देवस्थान को दे आते, फल-साग भी दे आते और इससे विधि निर्देशित मृत्तिका सेवा में नियोजित उनके दो हाथ धन्य हो जाते। घर के दूसरी ओर खलिहान और गोशाला, इसी ओर उनके घर का सदर पड़ता है—जिस प्रकार जमींदार की कचहरी, बाबू लोगों की बैठक, उसी प्रकार इन लोगों का खलिहान-गोशाला। एक लम्बा चौड़ा छप्पर, छप्पर के सामने अनावृत्त खलिहान में धान और पुआल रखने के गोल खत्ते, गुहाल के सामने साफ-सुथरे मिट्टी के बने नादों के सामने गौवों की पाँत बंधी हुई। चौड़े छप्पर के मचान में खेती बारी के सामान—हल, जुआ, डोंगी, पगहा, यहाँ तक कि डोंगी इस्तेमाल करने में लगने वाला लकड़ी का पटरा और लम्बा बाँस भी रखे हुए रहते हैं।

सबल गठे हुए बदन, सिर के बाल छोटे कतरे हुए, उसके बीच चुटिया, गले में तुलसी की माला, मर्दों की पोशाक सात हाथ लम्बी और दो हाथ चौड़ी—करघे पर बुनी मोटी धोती और कंधे पर अंगोछा। औरतों की पोशाक—उसी करघे पर बुनी नौ हाथ बयालीस इंच वाली साड़ी। सुबह उठकर मर्द खेतों में चले जाते हैं, औरतें घर का कामकाज करतीं, गौ सेवा करतीं फिर पहरभर बेला चढ़ जाने के बाद रसोई चढ़ातीं, खाना पीना खत्म होने में दो पहर ढल जाती है बाबुओं के गाँव रत्नहाटा के स्कूल में उस वक्त टिफिन के बाद क्लास लगने का टन-टन घंटा बजता। लड़के दस बारह साल की उम्र तक गाँव के पुरोहित जी की पाठशाला में पढ़ाई करते, फिर पाठशाला जाना बन्द कर बड़ों के साथ खेती के काम में जुट जाते हैं। वे लोग जीवन में अधिक पढ़ाई की जरूरत महसूस नहीं करते। क्या जरूरत है भला? खेत की फसल, तालाब की मछली, घर का दूध, घर का गुड़—डट कर सन्तोष से पेट भर कर खाते हैं, भगवान का सुमिरन करते, एड़ी चोटी का पसीना एक कर खेत में मेहनत मशक्कत करते, खेतों में फसल लहरा कर पक आती, उनका जीवन भी अकूत आनन्द से भर उठता, उसी आनन्द से दोनों हाथ ऊपर उठाये शाम को मृदंग बजाते हुए कीर्तन की मंडली ले गाँव के डगर पर निकल कर गाते हैं—"ओ नामेर गुणे गहन बने मृततरु मुजरे। बल माधाइ मधुर स्वरे, हरिनाम बिना आर कि धन आछे ससारे।"[1] इससे अधिक उन्हें सोचने की जरूरत नहीं और न वे सोचना

---

१ उस नाम की महिमा से बीहड़ वन में मरे हुए दरख्त में भी कोंपल निकल आते हैं। ऐ माधाइ, मधुर स्वर में बोल, हरि के नाम के सिवा ससार में और कौन सा धन है।

ही चाहते हैं। लिहाजा ज्यादा पढ़ लिख कर भला क्या होगा? किसी तरह टेढ़े मेढ़े आठ हरुफों में दस्तखत भर करना है, दस्तावेज पर गवाही बनना पड़ता, हैंडनोट तमस्सुक कबाला पर दस्तखत करने पड़ते, इसलिए इतने भर की जरूरत है। और जरूरत है गिनती, पहाड़ा, धान के वजन का मन-सेर छटाक का हिसाब लगाना, बिघवा बीघा आदि की जानकारी की। उन्हीं में जो लोग अच्छा पढ़-लिख जाते हैं सम्मान्य व्यक्ति हैं, ज्ञानी लोग हैं। उनके ओसारे में जाकर वे शाम को बैठते, सस्वर रामायण, महाभारत पढ़ने, ये लोग सुनते। जीवनतत्व के बारे में जितनी ही व्याख्याएँ वे उन्हीं से बटोरते रहते हैं।

इससे अधिक उनके जीवन में कोई प्रयोजन नहीं था। पाप और पुण्य का एक सरल-सहज मीमांसाबोध था। उसी बोध के अनुसार जीवन सत्य को गम्भीररूप से अनुभव करने लायक हृदय का विस्तार और गहराई भी थी। भौतिक जीवन की आवश्यकताएँ भी अल्प थीं, अभाव की अशांति नहीं थी, अन्तर में परम सत्य को पाने के विश्वास से गहरी शान्ति थी। किसानों के गाँव के कोलाहलशून्य दिनों रात के साथ उनका जीवन भी प्रसन्नता से बीतता जा रहा था।

अचानक देश में जोरदार हवा का एक झोंका आया। झोंका नहीं था दरअसल क्योंकि झोंका होने पर थोड़ी देर के बाद ही थम जाता है, यह हवा थमी नहीं, लगातार उसका जोर बढ़ता ही रहा, बरसात में पछुवा की तरह।

भद्र बाबुओं के रत्नहाटा गाँव में शुरू में माइनर स्कूल खुला। रत्नहाटा के ब्राह्मण प्राय सभी जमींदार हैं। पक्ष होने पर ही पक्षी बन जाता है। ऐसे चार गड्डे जमींदारी हिस्से की मिल्कियत लेकर सभी जमींदार थे। इतने दिनों दो आने दो पैसे की पक्की शराब की बोतल और बारह आने का बकरा खरीदकर दावत करते और दावत में मौज बहार कर के दिन काट रहे थे, उनमें नई लहर आई, पढ़े लिखे बनेंगे। माइनर पास कर बाबुओं के बेटों में कुछ तो सदर में जाकर आममुख्तार बने, सबरजिस्ट्री दफ्तर में क्लर्क बने, अदालत में भी नौकरी मिली, कुछ ने जो माइनर पास कर कीर्नाहार के अंगरेजी स्कूल से भी पास किया—उनको कलकत्ते में रेल की नौकरी मिली, सरकारी नौकरी मिली—दारोगा बने, पोस्टमास्टर बने, एकाध कालेज में पढ़कर वकील बन गये और एक बन गया हाकिम। किसानों के गाँव में भी यह हवा आ लगी। वे भी उसी ओर पलटे। सद्गोपटोले के मातबर रंगलाल ने अपने दो बेटों को माइनर स्कूल में भरती कर दिया। बड़े बेटे ने माइनर पास कर पाठशाला खोल दी। उससे छोटा भी माइनर पास कर पाठशाला खोलने की कोशिश में घूमता। उसके बाद वाले बेटे को माइनर पास कर वजीफा मिला। उसी बार रत्नहाटा में बड़ा अंग्रेजी स्कूल खुला। रंगलाल का वजिफा प्राप्त बेटा बड़े स्कूल में पढ़ पास कर कालेज में पढ़ने चला गया। साथ ही साथ सद्गोपटोले के सभी लड़के स्कूल में भर्ती हो गये। बरसात आई, मानस की खेती शुरू हो गई नई फसल की खेती।

अचानक ही एक दिन सद्गोपटोले की नवीन मण्डली भी उत्साह और गौरव से चंचल हो उठी। लड़के आश्चर्यजनक खबर ले आए हैं। रत्नहाटा में स्कूल में एक तरुण सद्गोप शिक्षक आ गये हैं। कुर्सी पर बैठकर ब्राह्मण, वैद्य, कायस्थ बाबुओं के बेटों की गुरुआई कर रहे हैं। गमगोह की महफिल जम गयी। सद्गोप मास्टर को एक दिन निमन्त्रित कर वे ले आए। गोष्ठी में बैठकर मास्टर ने बहुत सारी विचित्र बातें बताईं। ऐसे ही समय एक परम विस्मयकारी घटना घटित हो गयी। गाँव के रास्ते पर रत्नहाटा के बाबुओं के घर के लड़के आ पहुँचे। रविवार की छुट्टी में बन्दूक लेकर वे शिकार करने निकले थे। शिकार से निबट लौटती राह वे सद्गोप मास्टर के सामने पड़ गये। बाबुओं के लड़के शिकार पर जाने आने के रास्ते अक्सर इस गाँव में आते हैं मेहरबानी कर कभी कभी प्यास लगने पर बताशे या गुड़ के साथ पानी पीते हैं। मण्डल लोग झुककर जमींदार ब्राह्मण-कुमारों को प्रणाम भी करते हैं। आज आश्चर्यजनक काण्ड हो गया! सद्गोप मास्टर को देखकर वे खड़े हो गये और सम्मान जताते हुए उनको नमस्कार किया। सद्गोप प्रवीणलोग ब्राह्मणनन्दनों को प्रणाम करते देखकर सविस्मय चमक गये। मास्टर ने हँसकर कहा शिकार?

—हाँ सर।

कहकर वे चले गये।

उसी दिन इस गाँव में दुगुनी रफ्तार से वही हवा चलने लगी।

रमानाथ ने भी अपने बेटे सीता को इसी उत्साहवश स्कूल में भर्ती कर लिया।

हाय, उस दिन काश! वह समझ सकता! पाँच साल पढ़ने के बाद सीताराम थर्ड क्लास तक नियमित उठने के बाद यथास्थान ठहर गया। अंग्रेजी की अड़चन से और आगे न बढ़ सका। लगातार दो साल फेल होता रहा। दो साल के बाद रमानाथ ने अचानक ही एक दिन उसे स्कूल से छुड़ा लिया। वजह भी थी। उस वक्त रमानाथ पढ़ाई के एक दूसरे पहलू को देखकर शंकित हो उठा था। इस ओर उसकी निगाह नहीं पड़ी थी और न ध्यान ही दिया था वर्ना वह सीता को अंग्रेजी स्कूल में न पढ़ने देता। उस मुहल्ले के महादेवपाल का बेटा चंडी सीताराम का हमउम्र है और पढ़ता भी सीताराम के साथ था। वह सीताराम को लाँघ कर एक कक्षा ऊपर उठने के बाद अटक गया था। उस दिन उसे एक हाथ में एक फूल लेकर घुमाते और दूसरे हाथ में सुलगती बीड़ी लेकर गाना गाते हुए देखा उसने। शाम के अँधेरे में गाँव के बाहर एक पेड़ तले बैठे साँझ के आकाश की ओर उदास नयनों से देखते हुए छोकरा गा रहा था, "सम्मुख लाख मेघ खेला करे।" रमानाथ दंग रह गया! सीता के प्रोमोशन के लिए स्कूल के बड़े मास्टर के पास ही गया था, रमानाथ भारी मन लिए लौट रहा था, ऐसे समय अचानक ही यह दृश्य दिखाई पड़ गया। मन ही मन वह शंकित हो उठा। अगले दिन ही सबेरे अपने नाते के भाई के घर शोरगुल सुन

उसने जाकर देखा, भाई वल्लभ हाथों में सिर थामे बैठा है, उसका बेटा ईश्वर सन्दूक का ताला तोड़ रुपया लेकर भाग गया है। ईश्वर भी सीताराम की उम्र का है। वह आज कई साल से विपथ बलाय में ही अटक गया था। इस बार भी फेल हुआ था और उसी सिलसिले में कल बाप के साथ झगड़ा हुआ था। उसके फलस्वरूप रात ही को कभी ताला तोड़ कर मुट्ठी भर रुपया – पचास-पचपन रुपए लेकर भाग गया है।

वल्लभ ने कहा, अपने बेटे को कोई कभी स्कूल में मत पढ़ाना।

रमानाथ को यह बात भा गई। घर आकर ही उसने सीताराम की पढ़ाई छुड़ा दी—कोई जरूरत नहीं अब और पढ़ाई की।

हालांकि सीताराम उन लोगों की तरह नहीं था। वह बराबर मोटे कपड़े से ही सन्तुष्ट है, जूते की जरूरत अभी उस दिन तक उसे नहीं पड़ी। सिर के बाल भी वह एक ही लम्बाई के कटाता। कोई नशा भी नहीं करता था—रमानाथ का हुक्का तमाखू आज तक जगह से हिले नहीं। फिर भी वह भविष्य के लिए शंकित हो उठा, बोला, अब और पढ़ाई की जरूरत नहीं, खेतीबारी देखो।

सीताराम खामोश सिर झुकाए खड़ा रहा, कोई भी प्रतिवाद नहीं किया उसने। दो दिन बाद अचानक रात को नींद उचट गई और रमानाथ चौंक पड़ा। गर्मी के दिन—सीताराम ओसारे में खम्भे से टेक लगाये बैठे गुनगुनाता गाना गा रहा था। गर्मी के दिनों में भी देहात में खास कोई बाहर नहीं लेटते। कम उम्र के दो चार लोग बड़ों से छिपकर भले लेट लें पर बड़े-बूढ़े कोई भी नहीं लेटते। चोर डाकुओं के भय से पुरखा का निषेध है। वे आकर सबसे पहले घर के मालिक को अपने कब्जे में करना चाहते हैं। दूसरे लोगों पर थोड़ा-बहुत जुल्म कर डाकू छोड़ देते हैं। लेकिन मालिक का निस्तार नहीं। सारा माल-मता दे देने पर भी छुटकारा नहीं। बस और कुछ भी नहीं है—इस बात पर चोर-डाकू विश्वास नहीं करते, निर्ममता से पिटाई करते हैं। बहुधा कत्ल भी कर जाते हैं। खैर, जाने दो वह बात। बाहर के गुनगुनाने के शब्द से नींद उचट गयी तो रमानाथ ने खिड़की से देखा, सीताराम बाहर खम्भे से टेक लगाये गुनगुनाता गाना गा रहा था, 'न साध मिटी मेरी, न आशा हुई पूरी—मेरा सभी कुछ चुका जाय माँ।' रमानाथ और भी अचम्भे में पड़ गया—सीताराम की आँखों से आँसू ढुलकते देखकर, चाँदनी उसके मुख पर आ पड़ी है, जुन्हाई की छटा में आँखों के कोर से लेकर ठोढ़ी के सिरे तक जल की दो धाराएँ चमक रही हैं। उसके दिल में एक हूक-सी उठी। सीताराम अपनी माँ के लिए रो रहा है। उसकी भी आँखों में आँसू आ गये। धीरे धीरे दरवाजा खोल वह बाहर निकल आया और अपने बेटे का सिर अपनी छातीपर खींच लिया।

कुछ देर के बाद चौकीदार की हाँक सुन वह अपने आपे में आया। रात दो पहर पार कर रही है। बेटे से उसने कहा, आ जा, मेरे कमरे में आकर सो

जा।' हमेशा से सीताराम बड़ा ही शान्त और आज्ञाकारी है। उसने कोई विरोध नहीं किया, अपने कमरे से चटाई और तकिया लाकर बाप के पास लेट गया।

रमानाथ ने इतनी देर में सस्नेह पूछा, क्या रे, अपनी माँ को क्या सपने में देखा था?

सीताराम ने कोई जवाब नहीं दिया।

रमानाथ ने कुछ लम्हों के बाद फिर पूछा, तेरी माँ ने कुछ कहा?

सीताराम फिर भी चुप किये रहा।

रमानाथ ने कहा, सो जा। सपने लोग देखा ही करते हैं। फिर एक गहरी-लम्बी साँस लेकर बोला, मेरी गिरस्ती तो तुझ ही को लेकर है। तेरे मुँह की ओर देखकर मैं चुप्पी साधे रहता हूँ। फिर कुछ देर चुप रहने के बाद बोला, तू अगर रोए तो मैं दिल में हौसला कैसे रखूँ, बता भी? वह उठकर आया और बेटे के बिस्तर के बगल में बैठकर उसके बालों को सहलाते हुए बोला, सो जा।

सीताराम स्तब्ध लेटा रहा लेकिन नींद उसे नहीं आई, यह समझने में रमानाथ को देर नहीं लगी। वह पंखा लेकर झलने लगा। अब सीताराम ने हाथ बढ़ाकर पंखा ले लिया और कहा, नहीं।

रमानाथ ने पंखा नहीं दिया और सीताराम का जवाब पाकर उत्साहित हो उठा। उसी उत्साह में उसे अचानक दिलासे का रास्ता मिल गया, बोला, इसी साल मैं तेरा ब्याह कर दूँगा।

सीताराम चौंक पड़ा, उठ कर बैठ गया। बोला नहीं।

नहीं! रमानाथ दंग रह गया। नहीं—क्या? ब्याह नहीं करेगा? यह कैसी अनहोनी बात!

'नहीं! मैं पढ़ूँगा।'

'पढ़ेगा?' रमानाथ स्थिर दृष्टि से बेटे की ओर देखता रहा, अँधेरे में ही। इतनी देर में सारी बात का धीरे धीरे खुलासा हो गया। 'साध न मिटी, आशा नहीं पूरी हुई'—राम कहो, पढ़ाई की साध और आशा! रमानाथ उठ कर अपने बिस्तर पर जाकर लेट गया बोला, अच्छी बात, पढ़ लेना। अब सो जा। तेरी साध और आशा पूरी होगी।

सीताराम बोला, मैं हुगली में नामल पढ़ूँगा।

हुगली में? चौंक पड़ा रमानाथ। हुगली तो बहुत दूर है। इसके अलावा वहाँ की पढ़ाई घर का खाना खाकर वहाँ खर्च पड़ेगा।

महीने में बारह रुपए मिलने पर ही मेरा काम चल जायगा,

रमानाथ ने जवाब नहीं दिया, करवट बदलकर वह लेट गया।

अगले दिन रमानाथ ने सबेरे उठते ही खाना चढ़ा दिया पकाने को। सीताराम के उठते ही बोला, भात उतार लेना। मैं खेत चला। खाकर तू अपने स्कूल चला जाना।

इसी ढंग से उसकी पत्नीशून्य गिरस्ती चली आ रही थी। वह दाल

बनाने के बाद एक तरकारी बना डालता था फिर चावल चढ़ाकर खेत चला जाता था, सीता पढ़ता था, सीता पढ़ने पढ़ते ही भात उतार लेता था। बाप के लिए ढककर रख देता, फिर खुद खाकर ताऊ के घर चाभी रखकर स्कूल चला जाता था। दिन ढले पाँच बजे लौटता था। नाई मील का रास्ता है रत्नहाटा। उस दिन शाम को सीताराम छः बजे लौटा। रमानाथ घबरा रहा था, सारे लडके लौट आए, सीता नहीं लौटा। उसे डर लगा, सबसे पहले उसने बक्सा सन्दूक देखा। साला तोड़कर मल्लभदा के बेटे ईश्वरा जैसा भाग तो नहीं गया? नहीं, बक्स सन्दूक तो सब ठीक-ठाक हैं। फिर भी दिल नहीं मानता। ईश्वरा की तरह ताला तोड़ रुपया लेकर न भी भागे, यूँ ही एक कपड़े मे भाग सन्यासी तो बन जा सकता है। कल ही रात को तो वह रो रहा था और गा रहा था साध नहीं मिटी।' रमानाथ गाँव के बाहर रास्ते पर जाकर खड़ा रहा।

सीता लौटा उसके साथ रत्नहाटा के ही वहीं सदगोप पंडित जी।

पंडित बोले, मण्डल जी, सीताराम मेरे पीछे पड़ा है, वह नार्मल स्कूल में पढ़ेगा। मेरा काम है आपको सहमत कराना।

रमानाथ क्या बोले, यह उसे ढूँढे नहीं मिला।

पंडित जी बोले, अंग्रेजी इसे भली भाँति आती नहीं, इसीलिए यहाँ फेल हो रहा है। नार्मल मे पढ़ना उसके लिए अच्छा ही होगा।

रमानाथ ने अब कहा, लेकिन वह पढ़ने तो हुगली जाना पड़ेगा।

हाँ, यहीं हुगली मे, आज चिट्ठी डाली आप सा कल मिल जाती है। सवेरे सवार होने पर बारह बजे दोपहर तक पहुँच जाइए, कौन ऐसी दूर है?

रमानाथ चुप किए रहा। अचानक उसे दिखाई पड़ा, सीता ओसार के एक कोने म बैठा रो रहा है। एक लम्बी साँस लेकर उसने कहा, अच्छा ऐसा ही होगा।

रमानाथ ने ऐसा ही किया। हास्य से उदभासित मुख लिये सीताराम बाप के पैरो की धूल सिर पर लेकर हुगली के लिए रवाना हो गया।

पंडित जी ने भी हस कर कहा, सीताराम आपके वंश का मुख उज्ज्वल करेगा। चन्द्र-सूर्य सा नहीं कर सकेगा—लेकिन माटी के दीपक-जैसा कर सकेगा।

रमानाथ खुशी लिए हसा, कोई जवाब नहीं दिया। चुपके-से बेटे को रत्नहाटा स्टेशन के एक छोर पर बुलाकर कहा, एक वादा तुमको मुझसे करना होगा। इसबार तुम्हारा ब्याह करूँगा मैं। 'नहीं' कहने से नहीं चलेगा।

सीताराम ने सिर झुकाकर कहा, अच्छा।

नार्मल स्कूल म पढ़ाई के पहले ही वर्ष में रमानाथ ने उसकी शादी कर दी। दुल्हन का नाम है मनोरमा। सीताराम को भी वह पसन्द आई। इन तीन वर्षों म जितनी बार वह छुट्टी में घर आया है, उतनी बार चन्द दिनों के लिए सीताराम ससुराल गया है। रमानाथ ही उसे भेज देता था। ब्याह के समय

मनोरमा बारह साल की छोटी सी लडकी थी। उस समय उसके साथ बातें करने मे सीताराम को अक्सर हंसी आती थी। शादी के बाद गर्मी की छुट्टियो मे सीताराम जब पहली बार ससुराल गया, अपने साथ वह ले गया एक पाठ्य-पुस्तक—महाकवि माइकेल मधुसूदन दत्त का मघनाद वध काव्य'। गर्मियो के दिन थे। भोजन के बाद सास ने उसे अपने मिट्टी के बने नये दुमजिले की सीढ़ियों का दरवाजा दिखलाते हुए कहा, ऊपर जाकर लेट जाओ बेटा, बिस्तर लगा दिया गया। तुम्हारे सब सामान ऊपर हो रख दिये गये हैं।

ऊपर आकर सीताराम ने दरवाजा खोल कर देखा, मनोरमा पहले से ही आकर बैठी हुई है, उसकी किताब खोलकर पढ रही है। सीताराम पुलकित हो उठा। मनोरमा पढी लिखी है ? दरवाजा भेडकर सीताराम मनोरमा के बगल में आकर बैठ गया। तबतक हालांकि मनोरमा एकहाथ घूंघट काढकर किताब से दूर सरक कर बैठ गई है। विवाह के बाद पति पत्नी की पहली मुलाकात! रिवाज के मुताबिक जबरदस्ती ही उसका घूंघट खोलना होगा, काफी चिरौरी विनती कर उससे बात कराना होगा। चिरौरी विनती पर भी अगर वह न बोले तो पति को रुठना होगा।—अच्छी बात, मुझसे भला क्यो बोलोगी ? मैं कौन होता हूं तुम्हारा ? लम्बी सास लेकर कहना पडेगा, कल ही चला जाऊंगा मैं। सीताराम को इनमे से कुछ भी नही करना पडा। घूंघट का पट खोल देते ही मनोरमा फिक्क से हँस दी थी। कुछ ही देर मे वह स्वच्छंदता से बोलने लग पडी।

यकायक सीताराम हाथ म किताब लेकर पूछ बैठा, कौन सी जगह पढ रही थी ? कैसी लगी ?

मनोरमा न होठो की भंगिमा से अच्छा न लगने का आभास दिया और गर्दन हिलाकर बोली, वाहियात किताब है तुम्हारी! एक भी तस्वीर नही।

सीताराम बोला, तुम पगली हो! पढकर समझ नही सकी, यह एक महाकाव्य है। इसम क्या चित्र रहता है ?

शब्द की ध्वनि से मनोरमा विस्मित हुई, महाकाव्य—महा शब्द के गाम्भीर्य और गुरुत्व ध्वनि के प्रभाव से उसके मन पर असर डल चुका था। वह आँखें फाडती हुई बोली महाकाव्य! फिर अपराधबोध से लजाकर बोली, क्या मालूम। मुझे पढना तो आता नहीं, तस्वीर देखने के लिए खोला था। पचाग मे कितनी सारी तस्वीरें होती है। दादा के स्कूल की किताब म कितनी सारी तस्वीरें है। एक शेर है उसमे बडा अच्छा सा।

सीताराम हँसा। बोला, खैर सुनो। वह पढ़ने लगा—

'सम्मुख समरे पडि वीर चूडामणि
'वीरबाहु चलि जबे गला यमपुरे—
'अकाले, कह हे देवि अमृतभाषिणि
'कोन वीरवरे वरि सेनापति पदे

'पाठाइला रणे पुन रक्षकुलनिधि
'राघवारि।"

समझी? रामायण की घटना है। लंका के युद्ध में रावण के वीरपुत्र वीरबाहु मारे गये। राम ने उनका वध किया। उसके बाद ही यह कविता आरम्भ होती है समझ लो।

तकिये पर सिर रख मनोरमा तब तक लेट गयी है। बोली, हूं।

इसीलिए कवि माता सरस्वती से कह रहे हैं, समझ लो। उसने शुरू कर दिया। एक साँस में पढ़ता चला गया—"गौड़जन याहे आनंदे करिबे पान सुधा निरवधि' तक। फिर वह रुका। बोला, अब आरम्भ हुआ। रावण सिंहासन पर बैठे हैं, समझी?

मनोरमा से कोई आहट नहीं मिली। सीताराम ने जरा झुककर उसके मुख की ओर देखा, मनोरमा तब तक सो गई है।

शाम को मनोरमा ने कहा, वह सब पढ़ने पर अच्छा नहीं होगा जी। गाना गा सकते हो तो एक गाना गाओ, सबसे अच्छा हो अगर तुम एक कहानी सुना दो—भूत प्रेत की कहानी।

तीन साल इसी प्रकार बीत गये। इसके बाद आखिरी परीक्षा के पहले वह फिर ससुराल गया ही नहीं। मनोरमा के बारे में भी उसने एक तरह से चिन्ता नहीं ही की। लगभग आहार-निद्रा त्यागकर वह केवल पढ़ता रहा, और पढ़ता ही रहा। परीक्षा खत्म हो आने के बाद मनोरमा याद आई। शिशिर के अन्त में रिक्तपत्र रक्तकांचन का वृक्ष अकस्मात ही एकदिन फूलों से भर उठता है, इसी प्रकार से मन उस दिन मनोरमा की चिन्ता से भर उठा। परीक्षा से निबट कर जब वह मेस में लौट आया उस वक्त भी उसे मनोरमा याद नहीं आई उसवक्त भी किसने कैसा लिखा है इसी की चर्चा चल रही थी। फिर सामान बस्ते समेटने की बारी आई। इस वक्त एकबार वह याद आई। लेकिन साथ ही साथ बाबा भी याद आ गये। लेकिन उसी दिन रात को उसने सपना देखा अपने बाबा को नहीं, मनोरमा को। सबेरे उसका दिल मनोरमा के लिए उतावला हो उठा। वह घर न जाकर ससुराल पहुँच गया। एक साल—करीब एक साल उसने मनोरमा को देखा नहीं उसको देखकर वह अचम्भे में पड़ गया। मनोरमा सिर से लम्बी हो गयी है, भरी हुई नदी की नाईं उसके अंग-अंग यौवन उच्छ्वास से भर गये हैं। घर में दाखिल होकर वह घूंघट काढ़े खड़ी मनोरमा को पहचान भी नहीं सका, थोड़ा-सा घूंघट खोल कर मनोरमा ने उसकी ओर ताका, फिर भी सीताराम पहचान नहीं सका। लगा कि पहचाना चेहरा है लेकिन ठीक याद नहीं आया। मनोरमा मुस्काई और उसकी सवर्धना की। अब पहचान लिया सीताराम ने। विस्मय आनन्द से वह व्याकुल हो उठा। एकान्त कमरे में भेंट हुई। खुद ही आगे बढ़ दोनों हाथों से सीताराम का गला बाँध उसके कन्धे पर उसने मुख रख दिया। पूछा, इसबार तो पास हो ही जाओगे?

मनोरमा की बात का जवाब देने को होकर सीताराम अचानक ही अपने उत्तरपत्रों के बारे में संदिग्ध हो उठा। यही पहली बार उसे लगा कि परीक्षा में उसने कोई खास अच्छा नहीं लिखा है। बोला, कोशिश में तो कोई कमी नहीं की।

मनोरमा बोली, इस बार तुम जरूर पास करोगे।

मानो न हुआ ?

नहीं होगे ? क्यों ? इतना पढ़े ?

पढ़ने के अलावा भाग्य नाम की भी तो एक चीज होती है।

हाँ होती है।

तो फिर ?

मनोरमा हँस कर बोली, सो शायद हो। भाग्य।

भाग्य ही था। सीताराम इसबार भी फेल हुआ, असफलता का संदेश पत्र में आया। उस वक्त वह घर में था।

परीक्षा में असफलता की खबर को सीताराम ने सिर झुकाये ग्रहण किया। अब और वह रोएगा नहीं। रमानाथ छिपकर रोया। बेटे की पढ़ाई के सिलसिले में उसे बहुत ज्यादा कामना नहीं थी लेकिन सीता पढ़ लिख कर एक बड़ा विद्वान् व्यक्ति बन जाये, ऐसी कल्पना करते हुए उसे अच्छा ही लगता था, बस। रंगलाल मंडल का मझला बेटा बी० ए० पास कर एम० ए० पढ़ रहा है, साथ ही साथ वकालत भी पढ़ रहा है। उसको भाग्यवान ही मान लेना चाहिए, उस लड़के को—किशोरकृष्ण को देखकर दसजनों के साथ उसका भी दिल खुशी से भर उठता है। बाहर के दस लोगों के सामने किशोर उसके गाँव रिश्ते का भतीजा है—ऐसा गर्व करने की भी इच्छा होती है, साथ ही साथ ठंडी साँस लेकर वह सोचता, काश ! सीता नामल में न पढ़कर यहाँ की पढ़ाई पास कर कम-से कम एक मुख्तार भी बन जाता तो अच्छा होता। यह सभी कुछ सच है फिर भी उसके साथ यह भी सच है कि इसको लेकर एक अनबुझी दाहमय आकांक्षा भी उसमें नहीं थी। शान्त सरल आदमी है रमानाथ। विधुर हो जाने के बाद इसी सीताराम के प्रति अतिरिक्त स्नेहवश ही उसने दुबारा ब्याह नहीं किया। ब्याह के बारे में सोचते ही उसे पहले ही यह ख्याल आता कि वह इस घर में सीताराम की माँ बनकर तो नहीं आएगी, सौतेली माँ बनकर आएगी। दिल से वह उसकी अकल्याण-कामना करेगी, शायद मृत्युकामना भी करे। भय से सिहर कर वह विवाह की कल्पना को मन से पोंछ डालता था। गोद में सीता को उसने बड़ा किया है। सीता उसकी आँखों के सामने स्वस्थ रहकर जीवित रहे, यही उसकी सबसे बड़ी कामना है। इसीलिए पढ़लिख कर सीता नौकरी करने परदेश चला जायगा इस काल्पनिक विरह की आशंका से उसकी पढ़ाई की सार्थकता की कल्पना बराबर यूँ ही बनकर उसके सामने आई

है। सीता जितनी ही बार कहता, नामल पास कर अगर काव्यतीर्थ पास कर सकूँ तो हाई स्कूल म हेडपडित वाला काम तो मिल ही जायगा।

रमानाथ खामोश अपने हुक्के को फुर फुर गुडगुडाता ही रहता।

प्रसग क्रम से सीताराम नौकरी के स्थान पर ही घर बनाने की बात करता। कहता था, छोटा-सा घर बनाएगे। आपके रहने पर मैं निश्चित रहूँगा, उस वक्त दो लडकी को पढ़ाने पर और भी बीस,पच्चीस रुपए आ जाएँगे। आप मेरी गिरस्ती की देखभाल करेंगे, मुझे फिर कौन-सी फिक्र होगी ?

लम्बी सांस लेकर रमानाथ कहता था, घर छोडकर जाना क्या मेरे लिए मुमकिन है बेटा ? जमीन-जायदाद, गाय बछिया, धान-पान, खेती-बारी, नवान्न लक्ष्मी

सीताराम इस समस्या का समाधान बडी आसानी से कर देता था। क्यो ? खेत जमीन अधिया पर उठा दीजिएगा, गाय बछिया भी पालने के लिए दे देंगे, धान पान साल मे एकबार आकर बेच देने से ही चलेगा। नवान्न लक्ष्मी का पूजन जहाँ भी हम रहेंगे वही होगा।

रमानाथ सिर हिलाता, ना ना नही। ऐसा नही होगा। डीह पर बाती नही जलेगी। इसके अलावा । जरा चुप रहकर रमानाथ मन ही मन सोचता, फिर बोलता, बेटा, मेरे खेत बडी ही मेहनत मशक्कत के बाद सोना उगलने वाले खेत बने हैं। पुकारने पर आवाज देता। मंऽहूँऽ। फिर जरा चुप रहकर बोलता, बल्कि तू बहू को ले जाकर घर बसाना। कभी-कभार मैं देख आया करूँगा।

इसके बाद सीताराम चुप्पी साध लेता था। फिर कहता, फिर तो घर ही पर सब रहेंगे। मैं ही आया करूँगा छुट्टियो मे। आपके न जाने पर अलग घर बसा कर क्या करूँगा ?

रमानाथ की आँखो में आँसू आ जाते थे। वह जरा जोर लगाकर हुक्का गुडगुडाने लगता था। तमाकू के धुवे से अपने मुख के सामने धूम्रजाल बना डालता था।

सीताराम फिर कहता, रत्नहाटा मे अगर काम मिल गया तो कोई बात ही नहीं। घर मे खाकर ही काम करूँगा। जैसे घर मे खाकर स्कूल पढने जाया करता था, वैसा ही चलता रहेगा।

रमानाथ हसकर कहता, यहाँ का स्कूल तुमको कोई काम नही देगा बेटा। देगा भी नहीं और लेना भी क्या कहते हैं याने ठीक नहीं होगा। रत्नहाटा के बाबू हमें काश्तकार कहते हैं। मंऽहूँऽ—नहीं नहीं नही। उससे परदेस आनदेस बेहतर होगा।

अचानक सारी कल्पना को व्यर्थ करता पत्र आया—सीताराम इसबार भी फेल हो गया है। रत्नहाटा के डाकघर से सीताराम खुद ही चिट्ठी ले आया। सिर झुकाये खुद ही उसने कहा, इसबार भी पास नही कर सका हू बाबा।

उसकी सुर्ख आँखें देखकर रमानाथ ने अपने आँसुओं को रोका वर्ना उसकी आँखों में आँसू आ गये थे।

तीनेक दिन के बाद रमानाथ बोला, सीता बेटा, अब घर बैठ कर खेती-बारी देखो। बहू को भी लिवा लाता हूँ। तेरे घर पर न रहने से उसका भी यहाँ जी नहीं लगता। एक महीना, दो महीना गुजरते-न गुजरते पीहर चले जाना चाहती है। उस पीहर में अब और रखना अच्छा नहीं दिखता।

सीताराम आदतन थोड़ा चुप रहकर बोला, जो आपकी मर्जी हो कीजिए। दिन तय कर एक चिट्ठी लिख दीजिए।

रमानाथ बोला, मेरा जितना कुछ है, उससे तुझे तंगी कमी नहीं होगी। पढ़ना तेरी तकदीर में नहीं, वर्ना कोशिश में तेरी कोई खामी नहीं, यह तो मैं जानता हूँ। चाहे तो एक बार और । बात खत्म करने की हिम्मत नहीं पड़ी रमानाथ की।

सीताराम बोला, नहीं, अब और नहीं पढ़ूँगा।

रमानाथ ने आराम की साँस ली। हँसकर बोला, कोई तुझे मूरख तो नहीं कह सकेगा।

सीताराम हँसा। पिता की इस तसल्ली से उसकी आँखों से आँसू निकलने को हुए इसलिए हँसी से उसको ढाँपने की कोशिश की। अगले ही क्षण वह उठ कर चला गया।

●●

इस महीने की पच्चीस तारीख तय हुई है बहू को ले आने के लिए। रमानाथ खुद ही जाकर ले आयगा। सीताराम जाने में सकार महसूस करेगा—यह मन में कूत कर रमानाथ ने खुद ही कहा, समझे, मैं ही बहू को लिवा लाने जाऊँगा। बहुत दिनों से समधी जी से मुलाकात नहीं हुई, फिर समधिन जी का पकाया पकवान भी खा आऊँगा, नजदीक दो कोस की दूरी पर गंगा माई भी है, नहा आऊँगा। तुझे दो चार कामों की जिम्मेदारी सौंप जाता हूँ—उनको कर रखना। काम है—तख्तपोश की मरम्मत, पड़ोसी के घर से दो बच-रियाँ तैयार करा लेना, घर-द्वार खड़िया मिट्टी से पुतवाना। और भी कई इसी तरह के छोटे मोटे काम। समधी के घर को रवाना होने से पहले खुद ही सबकुछ निबटाने की कोशिश रमानाथ करेगा, लेकिन अगर सब निबट न सका तो उसकी भी जिम्मेदारी सीताराम को लेनी पड़ेगी।

इन्हीं सब कामों में रमानाथ व्यस्त था—व्यस्त शब्द से भी वह व्यक्त नहीं होगा, वह करीब करीब मस्त हो गया था। रमानाथ की कितनी साधभरी गिरस्ती, उसी गिरस्ती में लक्ष्मी आएगी। सीताराम गृहस्थ बनेगा।

सीताराम चुपचाप बैठे सबकुछ देखता था। भरसक कोशिश करता था कि सबकुछ अच्छा लगे। अपनी असफलता का दुःख भूल जाना चाहता था। मनोरमा की इस परिमार्जित घर गिरस्ती के बीच कल्पना करने की कोशिश करता और पुलकित होने की इच्छा होती उसे। लेकिन वह इच्छा मानो मन

में उभर कर ही बिला जाती। कोई मानो साथ ही साथ उसे चाबुक मारता।

विवाह के बाद प्रथम परिचय से ही वह मनोरमा से बताता रहा है, वह पढ़ाई कर रहा है, वह पंडित होगा, सद्गोप होते हुए भी वह किसान नहीं बनेगा। कैसे, कौन-सा मुह लेकर वह मनोरमा के सामने जाकर खड़ा होगा?

इसके अलावा कामना की आग भड़ककर उसको अस्थिर बनाती रही। जिस कामना का पथ रुद्ध हो जाने से किसी रात को उसने 'मेरी साध न मिटी, आशा नही पूरी हुई' गाना गाया था, जिस कामना की अस्थिरता से वह हुगली पढने चला गया था, उसी कामना की बेचैनी! आखिरकार क्या वह एक किसान बनकर ही रह जायगा? आग जाने कब भड़क उठी थी, उस वक्त समझ नही सके थे। आज वह अब बुझेगी नही।

इसी गाँव मे रास्ते पर खड़े जमीदार के नायब ने एक दिन कहा था, उसे साफ याद है, किसान से बड़ा दाता नहीं, पर बिना जूते के देता नहीं। बाबू लोग कहते हैं—किसान गँवार।

सीताराम फिर सख्त होकर अपने पैरो पर खड़ा हो गया। पिता से बिना पूछे ही चारो ओर शिक्षक की नौकरी ढूँढने लगा। नामल पास करने के बाद जो वह करने वाला था, वही करेगा वह।

फिर वह रमानाथ के पास एक अजीब-सा प्रस्ताव लेकर आया। रत्नहाटा मे उन्ही के गाँव मे आठ आना हिस्से वाले जमीदार के घर मे दो लड़को को पढ़ाने के लिए एक गृह शिक्षक की जरूरत है, दो जून खाना और चार रुपए वेतन पर। कई दिन से सीताराम चारो ओर घूमता रहा है। एक दिन विग्रहार भी गया था। विग्रहार वहाँ से चार मील दक्षिण मे है। वहाँ एक माइनर स्कूल है। दो दिन अभयापुर गया था। रत्नहाटा उनके गाँव से ढाई मील उत्तर में है, रत्नहाटा से और भी सात मील उत्तर मे है अभयापुर। अभयापुर में भी एक माइनर स्कूल है। लेकिन कही भी कुछ नहीं हुआ। सीताराम मुह लटकाये घर लौट रहा था, अचानक भेंट हो गई जमीदार-गृह के खेती की देखभाल करने वाले गुमाश्ते कन्हाई राय के साथ। सब कुछ सुनकर कन्हाई राय ने प्रस्ताव किया, हमारे घर के दो छोटे बाबुओं को पढ़ाने के लिए पंडित चाहिए। पढ़ाओगे? सीताराम ने दुविधा नही की राजी हो गया। दो लड़को को पढाना है, दो जून खाना और चार रुपए वेतन। रमानाथ जानता है, वह चार रुपया वेतन भी उसे नियमित नहीं मिलेगा, शायद पूरा भी नही मिलेगा। जमींदार घराने के लोग प्रजा के बेटे से विद्या सलामी मे लेने मे कुंठित नहीं होगे। फिर भी सीताराम ने नहीं माना। वह दोनों जून लड़को को पढ़ाएगा और दस से चार बजे तक बाबुओं के ठाकुरबाड़ी मे छोटे बच्चो के लिए एक लोअर प्राइमरी पाठशाला खोल देगा, फीस होगी हर बच्चा चार आने। लेकिन उससे भी कितने रुपए होगे? और जमींदार घराने के बेटे इस खेतिहर गाँव के लड़के की क्या मास्टर-पंडित के रूप मे इज्जत करेंगे?

सीताराम ही जाने !

रमानाथ ने कहा था, अगर पाठशाला ही खोलनी है तो गाँव मे ही क्यो नही खोलता ?

सीता ने कहा, ताऊ जी के बेटे, बडे भाई गोविन्द दादा ने पाठशाला खोल रखी है—क्या उससे मैं रार मोल लू ?

इस बात का जवाब रमानाथ नही दे सका। लेकिन खुराक और चार रुपए वतन की मास्टरी कर होगा क्या ?—इस बात का जवाब भी सीताराम नही दे सका। न दे सके, शायद इसका कोई जवाब ही नही, फिर भी—

फिर भी सीताराम मानेगा नही। उसकी आँखों पर एक दिन का चित्र तिर रहा है। रत्नहाटा के बाबुओ के बेटो ने इस गाँव के सद्गोप शिक्षक को नमस्कार किया था। आग उसी दिन से भडकी है।

रोजाना खाना खाकर घर आएगा और जमीदारी के सरिश्तेखाने मे काम सीखने का बन्दोबस्त होगा—कन्हाई राय के यह वादा देने पर रमानाथ ने आखिरकार फिर कोई एतराज नही किया।

एक रामायण, कृष्ण का शतनाम, लक्ष्मी जी की पाँचाली—इनका एक बस्ता लेकर रमानाथ ने बेटे के माथे से छुवाया। तुलसी बिरवा के नीचे से मिट्टी लेकर दही के साथ मिलाकर उसका टीका बेटे के माथे पर लगाया। फिर सिर पर हाथ रख एक सौ आठ बार कृष्ण नाम का जाप कर सारे अगो पर तीन बार हाथ फेरने के बाद बोला, भगवान का नाम लेकर यात्रा करो बेटा ! कोई पाप मत करना, ऊँचे की ओर मत देखना।—कहते हुए होठ उसके काँपने लगे। आँखो की कोर मे आँसू आ गये थे।

सीताराम ने प्रणाम किया।

फिर एक बार बेटे के सिर पर हाथ रख रमानाथ बोला, रोजाना रात को घर लौट आओगे। लालटेन लेकर आओगे और एक लाठी।—कहकर अपनी जवानी की सहचर—बाँस की लाठी बेटे के हाथो मे थमा दी। साप-गोजर, सियार भेडिए, गोहदे-बदमाशो का मुकाबला इसी से करना।

सीताराम ने यात्रा की। गाँव पार करते ही खेत, खेतो के उस पार रत्नहाटा की पक्की इमारतें नजर आ जाती है। रईस लोगो का गाँव है। शिक्षा-दीक्षा सभ्यता मे बाबू लोग विशिष्ट हैं। सीताराम बचपन में उस स्कूल मे पढा है। इसके बाद भी कितने ही बार गया है। फिर भी इस गाँव के विचित्र लोगो को देखकर उसका विस्मय दूर नही हुआ, केवल विस्मय ही नही, थोडा-सा भय भी है मानो केवल भय ही नही, उनके प्रति क्षोभ भी है। बाबू लोग उनसे घृणा करते हैं और यह बात वे बेझिझक प्रकट करते हैं। कहते हैं —गवार। निस्संकोच कहते हैं—तुम लोग तो जाति से किसान हो। दिल अपने आप ही डोल उठता है।

लेकिन अपने अन्तर का क्षोभ वह प्रकट नही कर पाता। उन्ही के बीच

वह जा रहा है। वहीं उसे रहना है।

भय वह नही करता। किसका भय, कैसा भय ? अन्याय वह करेगा नहीं, किसी का अन्याय वह सहेगा भी नही। फिर भी जाने कैसा लग रहा है !

सूटकेस हाथ मे लेकर वह खेतो की पगडण्डी से रत्नहाटा की ओर बढ़ चला।

●●

दो

बहुत बड़ा सम्पन्न गाव। आधा शहर। दोनो तरफ से ही—भीतरी और बाहरी दोनो रूपो मे ही। सीताराम का ताऊजाद भाई किशोर कृष्ण एम० ए० मे पढता है। रत्नहाटा का जिक्र होते ही वह तिरछे ढग से बोलने लगते, रत्नहाटा की तुलना केवल देहाती कलकतिया कालेजी लडके के साथ हो सकती है—हालांकि बिल्कुल हाल ही के नही और न पक्के पौढे—यह समझ लो जो फस्ट इयर पास कर सेकड इयर में आ गया हो घर की माली हालत अच्छी है, नियमित रूप से रुपये आते हैं। पन्द्रहवें दिन बाल कटाता है, हर दूसरे दिन हजामत बनवाता है लेकिन अब भी सेलून मे दाखिल नही हो पाता। रेस्त्रा मे चाय-टोस्ट, आमलेट खाता है लेकिन फार्पो या अन्य किसी साहबी होटल में नही जाता, डरता भी है और रुचि भी आडे आती है, कविता नहीं लिखता, काव्यचर्चा करता है योरोपीय लेखको तथा पुस्तको के नाम रट रखे हैं, लेकिन किताबें पढी नही, बडी कठिन लगती हैं। राजनीति पर बहस करता है, वन्दे मातरम से लेकर इन्कलाब जिन्दाबाद तक, सभी बोलिया तोता रटन्तु सा बोलता रहता है। कालेज अधिकारियो के साथ हुए हगामे म हुजूम के पीछे रहता, साथ भी। लेकिन हडताल होने पर कालेज म चोरी छिपे आ जाता है। पोशाक फैशन माफिक लेकिन इस्तरी बेढगेपन से की हुई। कृष्ण किशोर खुद कट्टर हिन्दू है, बहुत बडी चुटिया रखता है। इसलिए उसके मुह ये बातें बडी अच्छी लगती।

यहाँ सब-रजिस्ट्री दफ्तर है, पोस्ट आफिस, थाना है, यहाँ तक कि एक सकल डिप्टी ने भी यही अपना हेडक्वाटर खोल रखा है। स्कूल, बोर्डिंग, गर्ल्स यू० पी० स्कूल हैं, लायब्रेरी है अमेचर थियेटर है महिला समिति है, यहाँ तक कि साहित्य-सभा भी है यहाँ पर। फुटबाल मैच खेलने के लिए एक कप तक है किसी भद्र सन्तान ने स्कूल के दिवगत बगला-साहित्य-शिक्षक के स्मृति रक्षार्थ दान किया है। प्रवीण लोग तम्बाकू पीते, नये जमाने के बाबू लोग सिगरेट। सभी के पास कुछ देवदत्त सम्पत्ति है। लेकिन युवको म प्राय सभी मूर्ति पूजा के विरोधी हैं। यात्रा करते समय सभी दही का टीका लगाकर घर

से निकलते हैं किन्तु बाहर आते ही सबसे पहले जेब से रूमाल निकालकर टीका पोछ डालते हैं। नये जमाने की लडकियो और बहुओ में प्राय सभी के पास जूते हैं लेकिन गाव मे कोई भी पहनती नहीं, कही जाना हो तो कागज मे लपेट कर स्टेशन पहुँचने के बाद ही पहनती है।

प्रवीण बाबू लोग सीधे गाली देते हैं, साला, हरामजादा, बदमाश, बदजात कहकर, नये बाबू लोग अगरेजी मे गाली देते हैं, 'डैम, स्वाइन' कहकर। बात-बात मे कह देते, नानसेन्स। किशोर की बातें सुनकर सीताराम को कौतुक का बोध हुआ और खुशी भी हुई। लेकिन उसने कभी इन सारी बातो को विवेचना के साथ देखा परखा नही। उसको खुद ही बुरा लगता, यहाँ नई रोशनी वाला कोई भी तालव्य 'श' का उच्चारण नही कर पाता, उनके लिए सभी अगरेजी 'एस' के समान है। बाजारटोले और बाबूटोले के जो लोग निचले तबके के हैं, वे यार दोस्तों से मुलाकात होते ही उनको सानन्द सम्भाषित करते, क्या बे स्ला ?

ध्वनि की प्रतिध्वनि सी जवाब आता, क्यो रे स्ला ?

एक और डर है सीताराम को। डर के साथ नफरत भी है। यहाँ लगभग सभी शराब पीते हैं, प्रवीण लोग तात्रिक मतानुसार उसे कारणवारि बना लेते हैं और नवीन लोग अपने अपने अड्डो पर इज्जत बनाये रखकर पीते हैं। कुछ नियमित पियक्कड ऐसे हैं जो दुकान की शराब पीकर रास्ते पर हो हल्ला मचाते हैं, आस्तीन समेट कर गुडई भी करते हैं, लेकिन छुरा चक्कू चलाने की हिम्मत नही करते, कोई निरीह मिल जाये तो कोई न-कोई कसूर निकालकर बडी बहादुरी के साथ दो चार घूसा थप्पड रसीद कर ही देते हैं।

रत्नहाटा मे प्रवेश कर गाव के नुक्कड पर सीताराम एकबार ठिठक कर खडा हो गया। सामने ही मणिलालबाबू का घर है। मणिलालबाबू कचहरी के बरामदे पर खडे मूछो पर ताव दे रहे हैं। उनके छोटे भाई महीन अद्धी का कुरता पहने एक बाइसिकल की सीट पर कोहनी रखे खडे हैं, कही जाने से पूर्व शायद दादा से कुछ कह रहे हैं।

कन्हाई राय बोले, क्यो, खडे क्यों हो गये ?

सीताराम ने पीछे पलट कर एक बार अपने गाव की ओर देखा। ताड, शिरीष, आम और बसवारी के घने घिराव के बीच वह विलुप्त हो गया है।

कन्हाई राय ने फिर कहा, चलो।

सीताराम ने फिर अपने को सयत और दृढ बना लिया और कहा, चलिए।

मणिलाल बाबू की कचहरी के सामने आकर उसका दिल धडकने लगा। मणिलाल बाबू को यहा सभी लोग 'जरनली' कहते हैं। बातचीत, चालढाल आदि सभी बातो मे वे विशिष्ट हैं। सीताराम को अपने बाप का उपदेश याद आया। इसके अलावा कन्हाईराय ने पहले ही झुककर नमस्कार की मुद्रा मे उनको प्रणाम किया, सीताराम ने भी अनुरूप ढग से प्रणाम किया। सीताराम

का भाग्य है कि मणिलाल ने इनके प्रणाम को तवज्जो नहीं दिया। वे मणि बाबू की कचहरी पार कर गये। लेकिन थोड़ा सा बढ़ते ही मणिलाल बाबू के छोटे भाई ने पुकारा, अजी कन्हाई राय !

जी।

कन्हाई पलटा। सीताराम वहीं खड़ा रहा। कुछ देर बातचीत के बाद कन्हाई ने पुकारा, सीताराम, सुनो, बाबू बुला रहे हैं।

सीताराम आकर खड़ा हो गया।

तीखी नजरों से उसका सिर से पैर तक देखकर मणिलालबाबू बोले, रमानाथ मुखिया के बेटे हो तुम ? नामल पास किया है ? वाह ! क्या नाम है तुम्हारा ?

सीताराम ने सविनय कहा, जी, मेरा नाम है सीताराम पाल।

मणिलाल बाबू बोले, वाह ! बहुत खूब ! नामल पास किया है तुमने ! बड़ा अच्छा है। बाबुओं के बेटों को पढ़ाओगे ? बहुत खूब ! तुम लोगों में पढ़ाई की बड़ी लहर उठी है न ?

सीताराम खामोश रहा।

मणिबाबू के छोटे भाई ने कहा, हाँ, इसका एक ताऊजाद भाई किशोरकृष्ण पाल बी० ए० पास कर एम ए और ला पढ रहा है, किशोर का एक और भाई इस बार मैट्रिक देगा। वह लड़का भी अच्छा है।

मणिलाल बाबू बोले, वाह् बहुत खूब ! म्लेच्छ विद्या में तो ब्राम्हण सूद्र का कोई भेद नहीं, सभी को अधिकार है। तुम लोग पढो लिखो, आदमी बनो। तुम्हारी जाति की एक बदनामी है कि मूरख होते हैं, इस बदनामी को दूर करो तुम लोग।

एक अदम्य उच्छवास से सीताराम का दिल भर उठा। आंखों में आंसू आ गये। उसने तीखे श्लेषपूर्ण आचरण की प्रत्याशा की थी। ऐसे सस्नेह आचरण, ऐसी अकारण प्रशंसा की उसने प्रत्याशा नहीं की थी। उस अप्रत्याशित उदार बरताव से सीताराम का दिल भावविह्वल हो उठा। वह अपने को सँभाल न सका, झुककर मणिलाल बाबू के पैर छूकर उसने प्रणाम किया।

मणिलाल बाबू के मुख पर अभिजातसुलभ मुस्कान खिल आई थी लेकिन अचानक ही वे चौंक पड़े, बोले, तुम रो रहे हो ?

सीताराम की आंखों में आंसू आ गये थे,—वही आंसू उनके पैरों पर ढुलक पड़े हैं। गर्म सजल स्पर्श से अनुमान कर लेना मणिलालबाबू जैसे विलक्षण व्यक्ति के लिए कठिन नहीं हुआ।

सीताराम झेंपकर मुस्काया और आँखें पोंछ बोला, जी नहीं। उसके बाद ही उसने मणिबाबू के छोटे भाई को नमस्कार किया।

मणिलाल बाबू उसके दिल की उछाह को भाप गये थे। उनको भी कुछ अच्छा ही लगा और इस उछाह के स्पर्श से उनमें भी शायद कुछ भावस्पंदन

जाग्रत हो उठा। उन्होंने कहा, हमारे गाव मे स्कूल है—भद्रलोगो का गाव है लेकिन ब्राह्मणो के लडके, हमारे बेटे पढते-लिखते नही। स्कूल बनने के बाद दो लडके बी ए पास कर चुके है, और कोई भी एंट्रास तक पास नही कर सका। खैर, तुम लोग सीखो, तुम लोग बडे होओ।

यकायक सीताराम हाथ जोडकर बोल पडा, मैंने नामल पास किया है यह आपसे किसने बताया, यह मुझे नही मालूम, लेकिन मैंने दो बार परीक्षा दी है, पास नही कर सका हू।

मणिलालबाबू अब विस्मित हुए।

सीताराम ने कहा, तो अब मैं जाऊँ?

मणिलालबाबू बोले, तुम्हारा कल्याण होगा। बाद मे मुझसे मिलना।

●●

सीताराम भाग्य मे विश्वास करता है। सभी सुख और दुख के नियन्ता के रूप मे उससे भय भी करता है, भक्ति भी। अपने भाग्य को वह बारम्बार प्रणाम करता है। आज के दिन के लिए इतनी तृप्ति, इतना आश्वासन, इतना आनन्द उसने सचित कर रखा था।

मणिलालबाबू का वह आशीर्वाद और स्नेहपूर्ण बरताव ही सबकुछ नही, उसे और भी कुछ मिला। अपने कर्मस्थल, जमीदार भवन मे आकर लडको के पढने के कमरे मे उसने अपना सूटकेस रखा। यह कचहरी उसने इससे पूर्व भी देखी है। पहले भी वह यहाँ आया है। तब जमीदार बाबू जीवित थे। वे बडे गम्भीर और भयकर प्रकृति के थे। प्रताप और प्रतिष्ठा मे वे मणिलालबाबू के समकक्ष तो थे ही, तिस पर अपने सहज सत्य आचरण और स्पष्टवादिता के कारण सभी के आदरणीय भी थे। विषयी व्यक्ति थे किन्तु कुटिलपथा के पक्षपाती नही थे। विरोध ठन जाने पर वे जो कुछ करते कह सुन कर करते थे और अन्याय चाहे किसी का भी हो और कही का भी हो, प्रतिवाद करते थे। सीताराम के मन म एक बात बडे गहरे मे रेखाकित है। यहाँ यह कत्ल हुआ था, इस गाव के और थाने के सामने। पुलिस ने सन्देहवश इसी गाव के दो भद्र सन्तानो को गिरफ्तार किया। भद्र सन्तानो मे जो लोग शराब पीकर गुडई की भँडती कर अपने को खौफनाक रूप मे प्रतिष्ठित करना चाहते है, उन्ही मे अमूल्य और भूपति को इस सिलसिले मे पुलिस साहब ने पकडा और गाँव के समाजपतियो को बुलवाकर इन लोगो के चरित्र के बारे म राय जानना चाही। इस घर के मालिक को भी बुलाया था। पूछा था, अमूल्य और भूपति इन दोनो को आप जानते हैं? ये लोग शराब पीते हैं?

मालिक ने जवाब दिया था, हाँ जानता हू। दोनो ही गाँव के रिश्ते मेरे नातेदार हैं और शराब पीते हैं।

क्या ये भयानक प्रकृति के हैं?

भयानक प्रकृति कहने से आपका तात्पर्य क्या है, मुझे नही मालूम ठीक-

ठीक। लेकिन शराब पीकर वे चिल्लाते हैं, डींग हाँकते हैं, शायद एकाध बेगुनाह को एकाध घूसा भी जड देते हैं।

इसको क्या आप भयानक प्रकृति के नही कहते ? शराब पीते, चिल्लाते, लोगों को मारते-पीटते ?

मालिक ने जवाब दिया था, सुनिए साहब, शराब बहुत सारे लोग पीते हैं। मैं भी पीता हू, शायद आप भी पीते हो, इसलिए शराब पीने से ही कोई भयानक प्रकृति का नही बन जाता। शराब पीते ही उसकी एक क्रिया होने लगती है। कोई चीखता चिल्लाता है, कोई रास्ते पर पडा रहता, कोई सावधानी से इज्जत बचाकर घर मे रहता है। साधू लोग उसी को कारण बनाकर भगवान के नाम का जप करते हैं, काली की साधना करते हैं। ये लोग शोरगुल मचाते है, शराब पीकर फिर कभी सडक पर भी पडे रहते है लेकिन जिस अर्थ मे आप उनको भयानक प्रकृति के कह रहे हैं, उस प्रकृति के वे नही हैं। जो सन्देह आप कर रहे हैं वह उनके द्वारा सम्भव नही।

साहब ने आश्चर्य से उनके मुख की ओर देखा था। मालिक ने फिर हँसकर कहा था, वे शराब पीकर डींग हाँकते हैं, लोगों को मारते पीटते भी हैं और इसी से अगर वे भयानक प्रकृति के बन जाते हैं साहब, तो एक बात और भी बता दू साहब, शराब पीकर दूसरे के कष्ट पर उनको रोते भी मैंने देखा है। इन अपनी आँखो से कई बार देखा है। एक बार यहाँ के एक महान व्यक्ति की सख्त बीमारी के समय, मैंने देखा है, वे दोनों ही शराब पीकर भगवान को पुकारते कह रहे हैं, भगवान हमारी आयु लेकर इस महान व्यक्ति को जिला दो। तो क्या आपके तर्क के अनुसार वे महान व्यक्ति नही हैं ?

इसी घटना की स्मृति मे ही इस घर के मालिक सीताराम के मन मे जीवित हैं। श्रद्धा और भय ये दोनों मिलकर उसे इस घर के सम्बन्ध मे विह्वल बनाये हुए हैं। सीताराम की धारणा है कि इस घर के लडको के खून मे प्रचड दम्भ की एक धारा है। उसने सुना है, नाबालिगो के राज्य मे, बडा लडका बडे ही उग्र स्वभाव का है। सीताराम का सौभाग्य है कि उसको पढाना नहीं पडेगा, वह फर्स्ट क्लास में पढता है। पढाना है दो छोटे लडको को। लेकिन उनमे भी तो वही खून है। इस घर की मालकिन अब रानी माँ हैं। वे ही सीताराम की सहारा हैं। सुना है वे बडी नेक हैं।

सूटकेस रखकर कमरे पर उसने एक बार अपनी नजर दौडायी। काफी साफ-सुथरा मझोले आकार का कमरा। असबाब मे केवल एक तख्तपोश और एक पुराने जमाने की मेज।

कन्हाई राय ने कहा इस कमरे म तुम रहोगे। अब चलो, मुँह-हाथ धो लो, रानी माँ को प्रणाम करने जाना है।

कचहरी से सटा हुआ एक बडा-सा तालाब है, पानी भी अच्छा है, पक्का बना घाट है। यह तालाब भी बाबुओं का है। सबकुछ मिलाकर सीताराम को

यह स्थान अच्छा ही लगा।

मकान के भीतर प्रवेश करने मे दो दरवाजे पार करने पडते हैं। दोनो दरवाजो के बीच मे जो जगह है वहाँ खडे घर के भीतर की बातें सुनाई पडती हैं किन्तु कुछ दिखाई नही पडता। घर के भीतर से एक शोरगुल सा सुनाई पडा। कन्हाई राय ठिठक कर खडा हो गया, हुआ क्या ? प्रश्न मानो उसने अपने से ही किया, धीमी और डरी हुई आवाज मे।

सीताराम को सुनाई पडा, घर के भीतर बचकानी आवाज मे कोई कह रहा है, मैं चोर नहीं हू और न मैं चोरी करने गया था। फुटबाल खेलकर घर लौट रहा था, देखा, उस मुहल्ले के छकू, बडि और भी कई लडके खेत मे शाम के अंधेरे मे मूली और बैंगन तोड रहे हैं। मैंने पूछा तो छकू ने कहा, हम लोग रात को फीस्ट करेंगे इसलिए तरकारी चुरा रहे हैं। मैंने भी उन लोगो को कुछ आलू खोदकर दे दिये।

नारी कठ की आवाज सुनाई पडी, क्यो दिय ?

जवाब मिला, उनकी सहायता की। और चोरी कभी की नही थी, देखा, चोरी करने मे कैसा लगता है।

नारी-कठ ध्वनित हो उठा, लेकिन वह किसान अगर तुमको देख न लेता तो सवेरे उठकर बेशक गाली देता, किस गूखोर के बेटे ने, किस हरामजादे ने मेरा मूली-बैंगन चुराया है ! तब वह गाली तुम्हारे मरे बाप पर जा लगती। गाली अगर वह देता तो उसका कोई कसूर नही ! इस बरसात मे बेवक्त उसने कितनी मेहनत से मूली-बैंगन उगाया है।

किसी पुरुष कण्ठ की भारी आवाज सुनाई पडी, रहने भी दीजिए माँ ! बच्चा है, कर डाला है।

बच्चा मत कहिए नायब जी उसे, फस्ट क्लास मे पढ रहा है, सोलह साल का हो गया है, बच्चा कैसे है ?

कन्हाई राय सकपका सा गया था। सीताराम की मौजूदगी को शायद भुलाकर ही वह बोल पडा, रानी माँ बडे बाबू को डाट रही हैं।

बचकानी आवाज सुनाई पडी अब। सीताराम समझ गया कि यह उग्र स्वभाव वाला बडा बेटा है। सीताराम सिहर उठा इस लडके ने अनायास कह दिया, चोरी करने मे कैसा लगता है, देख रहा था। इस बार वह क्या उत्तर देगा, सुनने के लिए सीताराम उद्ग्रीव हो उठा। लडका कह रहा है, उसने सुना, हाँ, मुझसे बेजा काम हो गया है इसके लिए मैं उससे क्षमा माग ले रहा हू। इसके बाद ही उसने किसी और को सम्बोधित करते हुए कहा, मैंने दोष किया है, इसके लिए मैं तुमसे क्षमा माग रहा हू।

घबरायी आवाज मे शायद उस किसान ने कहा, जी बाबू ! जी बाबू ! जी नही। मुझसे आप कहते तो मैं ही खेत से तोडकर आपको दे देता।

रानी माँ ने फिर कहा, नायब जी, इस आदमी को पाच सेर आलू का

बाजारदर का दाम पूरा दीजिएगा। और यह दाम धीरा के नाश्ते के पैसे म स काट लीजिएगा।

सीताराम विस्मय से अभिभूत हो गया। कहाँ आ पड़ा वह! इनकी यह ध्यान धारणा, यह रीति नीति उसके लिए केवल विस्मयकर ही नहीं बल्कि उसे एक प्रकार के घुटन का भी अनुभव होने लगा। सिर्फ इतना ही नहीं, उसे लग रहा है इसमें ऐसा कुछ निहित है जो इशारे से उस पर शासन कर रहा है। वह मानो बहुत छोटा हो गया।

नायब जी का गला सुनाई पड़ा, आओ जी आओ।

पैदल सुनाई पड़ने लगी, सम्हभर में कन्हाई सचेतन हो उठा, ऐसे छिप कर बातें सुनने का वह आदी है। उसने गला खँखार कर अपने आने की सूचना देते हुए कहा आओ आओ। यह तो तुम्हारे जमींदार की ही कोठी अपना ही घर है। आओ सकुचाते क्या हो?

नायब जी निकल आए साथ में एक नीची जाति का किसान। सीताराम लगा गया इसी के खेत से इस घर के बड़े लड़के ने आलू चुराया है, देख रहा कि चोरी करने में कैसा लगता है।

कन्हाई ने नायब जी से कहा यह आपके-हमारे रमानाथ दादा का बेटा है, सीताराम। मा के पास ले जाऊँ?

नायब के कुछ कहने से पूर्व ही रानी माँ निकल आईं, नायब जी, उस आदमी से आप कुछ न कहें। उसने मुझसे शिकायत नहीं की। मुझे दूसरे आदमी की मार्फत इसका पता मिला था। जिसने उनको आलू खोदते देखा है, उसी ने आकर मुझे बताया है।

माँ की बात खत्म होते ही कन्हाई बोल पड़ा, सीताराम आ गया है माँ।

यह है सीताराम? आओ आओ बेटा घर के भीतर आओ।

सीताराम अवाक् हो इस माँ को देख रहा था। देहवर्ण की दीप्ति से ही [illegible] मानो [illegible] गयी थी। [illegible] देखने पर विश्राम [illegible] नहीं [illegible] देखा पर लगता [illegible] नहीं छोटी है। [illegible] देह-दीप्ति [illegible] कुछ विपरीत है— [illegible]

[illegible] रानी माँ [illegible] बैठने का आसन दो।

[illegible] सीताराम [illegible] कहाँ है वह? [illegible]

सुनकर उसके कौतूहल और शका की कोई सीमा नही रही। अद्भुत शकाभरा कौतूहल! "चोरी करने मे कैसा लगता है, यह देखा"। यह कैसा लडका है? कहाँ है वह? लेकिन वह नहीं है, शायद ऊपर चला गया है। इसी बीच अचानक आसन की बात सुनकर वह चौंक सा पडा, आसन की प्रत्याशा उसने नही की थी। इसके लिए वह तैयार नही था। वह चचल हो उठा, हाथ-परो से पसीना छूटने लगा। आत्मसवरण कर उसने लज्जित हो सकोच से कहा, नही, नही मा! आसन किस लिए? आसन नही चाहिए। आपके सामने—

उसके मुह की बात छीनकर कन्हाई राय बोल पडा, ठीक बात है माँ, आपके सामने हम लोग क्या आसन पर बैठ सकते है? आप ही का दिया खाकर जिन्दा हैं, फिर आपकी प्रजा भी तो है।

माँ हँसी, अनोखे स्नेहमधुर स्वर मे प्रतिवाद करती हुई बोली, नही, नही राय, इस घर म सीताराम आज श्यामू देव का शिक्षा गुरु बन कर आया है। इस घर मे अन्न भी हम दया करके नही देंगे, वे ही दया कर ग्रहण करेंगे। जमींदार प्रजा का रिश्ता अलग है। सीताराम, आसन पर उठ कर बैठो, बेटा!

सीताराम के मन मे एक अजीब-सी उथल पुथल मच गयी। उसका कोई स्पष्ट रूप नही, लेकिन एक आवेश है, उस आवेश ने उसको एक मर्यादामयी प्रेरणा से प्रेरित किया, उसके सकोच को दूर कर दिया। वह आसन खींच कर बैठ गया।

मा चली गयी, बोली बैठो, मैं अभी आयी।

इतनी देर मे सीताराम ने कोठी की ओर देखा। जमीदार होने पर भी छोटा जमीदार है, धनी नही कहा जा सकता, सम्भ्रान्त गृहस्थ हैं, घरद्वार भी उसी के अनुरूप। कुछ हिस्सा पक्का है तो कुछ मिट्टी का बना। मिट्टी के बने होने पर भी दालान पक्का सा ही लगता। खम्भेवाले बरामदे, पक्की फर्श, मिट्टी के सलोतर पलस्तर के ऊपर पक्के मकान जैसी सफेदी की हुई, आँगन-चबूतरा सभी पक्के।

कन्हाई ने हसकर किसी से कहा, आओ देबूदादा, तुम्हारे मास्टर जी हैं। आओ।

सीताराम की निगाह पडी, सामने बरामदे मे एक खम्भे की आड से खूबसूरत सा एक चेहरा झाँक रहा है। उसकी आँखो से आँखें टकराते ही उसने फिक से मुस्करा कर मुख छिपा लिया।

सीताराम ने उसे सस्नेह पुकारा, आओ खोकाबाबू, आओ।

ठीक ऐसे ही वक्त माँ आकर खडी हो गयी। अपने हाथो एक तश्तरी मे दो मिठाई लेकर आई हैं—मलाई के दो लड्डू, एक गिलास पानी। उतार कर उन्होने कहा, तुम उन लोगो को 'बाबू' मत कहना बेटा!

फिर बोली, लो, पानी पी लो। पहली बार आए हो, सबसे पहले मुह मीठा कर लो। वह जरा मधु रखा है, उसी को पहले ले लो।

सीताराम को अब दिखाई पड़ा, एक और जरा-सा शहद है।

बिना किसी सकोच के उसने तश्तरी उठा ली। मधु चाट लेने के बाद उसने एक मिठाई उठा ली। दुकान की बनी नहीं, घर में बनाई हुई। ऐसी बेहतरीन मिठाई सीताराम ने कभी खाई नहीं थी। मुह में रखकर लीलने की मानो इच्छा नहीं हो रही थी, खाने से ही तो खत्म हो जायगी, बस एक ही तो बची है।

माँ ने इसी बीच बेटे को लाकर सीताराम के सामने खड़ा कर दिया। तुम्हारे मास्टर जी, नमस्कार करो।

बच्चे को माँ का रग मिला है, मुखड़ा भी बड़ा मधुर सा है, बस आँखें ही बड़ी प्रखर और चचल हैं और शरीर बड़ा हल्का सा दुबला ही लगता है। वह मुस्करा रहा था, उस मुस्कान में उसकी चचल प्रकृति का परिचय उभरा आ रहा है, मानो फूलों की कलियों के हरे आवरण के अतराल में उनकी मुदी पखड़ियों के भीतर के रग का आभास हो। आँखों से आँखें मिलते ही आँखें झुकाये ले रहा है। उसकी मुस्कान और भी स्पष्ट होती जा रही है।

माँ ने फिर कहा, नमस्कार करो।

लड़के ने एकबार चट फुरती से सीताराम के पैर से हाथ लगा अपने माथे से छुवाया।

सीताराम सकपका कर बोल पड़ा, नहीं नहीं। मुझे इस प्रकार से प्रणाम नहीं करना चाहिए। नमस्कार करना चाहिए।

मा ने हँसकर कहा, करने दो। उनका प्रणाम लेने पर तुम्हें कोई दोष नहीं लगेगा।

सीताराम बोला, क्या नाम है तुम्हारा ?

लड़का आदतन नीरव मुस्कराने लगा।

माँ बोली, बताओ, अपना नाम बताओ।

सिरी देवानन्द मुखोपाध्याय।

वाह ! बड़ा अच्छा नाम है बसा ही अच्छा लड़का भी।

माँ ने हँसकर कहा, अच्छा वह कसई नहीं। बड़ा ही नटखट है। इसको लेकर तुमको जरा परेशानी होगी। लेकिन श्यामू कहाँ गया ? श्यामू ! श्यामू !

ऊपर के किसी कमरे से आवाज आई, यहा हू मैं।

क्या कर रहे हो ? नीचे आओ।

जवाब आया दादा मुझे कद में रख गये हैं।

माँ ने कहा कोई बात नहीं, तुम्हारे मास्टर आए हैं, नीचे आओ।

दादा जब तक रिहा नहीं करते, कैसे आऊ ?

दादा से बताओ। धीरा !

दादा हैं नहीं।

तो मैं तुम्हें रिहा कर रही हू। मैं माँ हू दादा की भी गुरुजन हूँ। मेरे

रिहाई कर दने पर दादा कुछ नही कहेगा।

अब दुमजिले से एक सात-आठ साल का लडका निकल आया। इस लडके का रग साँवला है, नाक-नक्शे अच्छे, पर जरा गम्भीर।

माँ ने कहा, तुम्हारे मास्टर जी हैं, नमस्कार करो।

लडके ने दोनो हाथ उठाकर बडे ही सुन्दर ढग से नमस्कार किया। कोई जडता नही, चचलता नही, धीर और स्वच्छन्द भगिमा मे नमस्कार किया।

माँ ने कहा, यह बडा धीर और शान्त है। बातें कम करता है।

सीताराम ने उसे पास खीच लिया। बोला, क्या नाम है तुम्हारा ?

श्री श्यामानन्द मुखोपाध्याय।

क्या पढते हो ?

श्यामू बोलता गया, सरल बगला पाठ,प्रथम भाग, सहज गणित, शिशु भूगोल पाठ, इतिहास की कहानियाँ प्रथम भाग, सचित्र लिखनप्रणाली, और दादा ने पढने को दिया है श्रीयुक्त रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'कथा ओ काहिनी।'

अरे बाप रे, तुम तो बहुत सारी किताबें पढते हो !

श्यामू ने निसकोच स्वीकारा, जी हाँ।

वाह, बहुत अच्छे लडके हो !

छोटा देवानन्द शायद दादा का समादर देखकर ईर्ष्यातुर हो गया था। वह अब आगे बढकर बोला, मैं भी कविता जानता हूँ, बोल सकता हूँ। बताऊँ ?— कह कर ही उसने शुरू कर दिया, सम्मति की प्रतीक्षा नही की, हाथ पैर हिला कर बडे मजे मे बोलने लगा—

"नामटी आमार गडाडर, सबाइ बले गडा,
सारा डिनटा रोदे टो टो गाये धूलो भाडा,
डाडा बलले, गाडा तुई लिखबि पडबि ने ?
अमनि आमि केंदे दिलेम—ए एँ-एँ एँ।"

आँखो पर हाथ रख एँ एँ कर रोने का बेहतरीन अभिनय उसने किया। उसका वह हावभाव देखकर सीताराम और सभी हँसने लगे। और भी उत्सा हित हो देबू कविता पाठ करता रहा—

डीडी बलले— ना ना ना, तुमि भालो छेले,
साना मानिक एस खानिक हाडुडुडु खेले।

कहकर ही 'चल मारा चल कबड्डी, कबड्डी' कहते हुए लपक कर घर से निकल गया।

माँ ने श्यामू से कहा, तुम कुछ सुना दो।

देबू की सफलता से श्यामू उत्साहित हो उठा था। सीताराम के पास से जरा दूर सरक कर वह खडा हो गया, एक नमस्कार किया, फिर बोला, कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'प्रार्थनातीत दान —

'पाठानेरा जबे बाँधिया आनिल वन्दी शिखेर दल

सुहृदगजे रक्तवरण हइल धरणीतल।"

सीताराम दग रह गया। स्पष्ट उच्चारण, कवितापाठ म कही कोई छद पतन नही, युक्ताक्षरो पर जोर डाल उच्चारण कौशल से दा अक्षरो की क्रिया को लाकर सुदर पाठ करता जा रहा है। ऐसा कवितापाठ सीताराम स्वय नही कर पाता। और कविता भी कितनी सुदर है! नामल स्कूल म रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ पढाई नही जाती। यहाँ के स्कूल मे जब वह पढता था तब भी पढाई नही जाती थी। उनका नोबल प्राइज मिला है, यह सीताराम जानता है। लेकिन उनकी कविताए खास कुछ उसने पढी नही। लेकिन यह छोटा-सा लडका!

श्यामू ने अपना कवितापाठ समाप्त किया—

"तरुसिह कहे करुणा तोमार हृदये रहिल गाँथा
जा चेयछ तार बेशी किछू देब, वेणीर सग माथा।"

फिर उसने बताया, सिक्खो के लिए वेणी का कटना धर्मपरित्याग के समान दूषणीय है। यह तथ्य भी सीताराम के लिए नया था। वह अचम्भे के मारे हक्का बक्का बना रह गया है। क्षणभर के लिए उसके मन म आया, इन लोगो को वह कैसे पढाएगा?

हँसी मानो माँ के चेहरे पर जन्मजात है, वे हँसकर बोली, धीरा ने इन लोगो को यह सब सिखाया है। धीरानन्द को पहचानते हो न? मेरा बडा बेटा?

सीताराम का गला और तालू मानों खुश्क हो गये। परिचय वैचित्र्य से धीरानन्द उसके तई इस घर के मालिक जी के समान भय और श्रद्धा का पात्र बन चुका है। लार छुटते हुए उसने कहा, जी नही।

माँ ने पुकारा, धीरा!

श्यामू बोला दादा साहित्य सभा मे लेख देने गया है।

माँ ने श्यामू से कहा, जाओ, मास्टरजी को ले जाओ।

अकेले कमरे मे बैठ वह सोच रहा था। भाग्य ने उसके आज के दिन को विपुल सम्पदा से भर दिया है—रूप और परिमाण मे वह सम्पदा विस्मयकारी है। दूसरी ओर भय से उसका दिल सकुचाता जा रहा है। सिमट की फश पर बठा था, अचानक ही किसी मकान की पालिश की हुई सगमर्मर की फश उसे याद आगयी। हुगली में रहते वक्त एक मशहूर रईस की कोठी देखने जाकर ऐसी फर्श उसने देखी थी, हिमशीतल पिच्छिल प्रकाश छटा से चमचमा रही थी। देखकर उसका जितना विस्मय हुआ था उतना ही भय भी, उस फश पर पैर रखने मे। गोबर और लाल मिट्टी से पुते हुए गृहागन म जो सस्नेह अतरगता है, उसके रचमात्र का भी पता वहाँ न पाकर वह फश उसको अनात्मीय सी लगी थी। वहाँ वह पैर नही रख सका था, अदभुत एक अनुभूति से अभिभूत हो कुछ देर खडे रहकर दरवाजे स ही लौट आया था। यहाँ के परिचय म स भी उसी सग

मर्मरी फर्श की अनात्मीयता मानो उभर आई है। इन लोगो को वह यहाँ कैसे पढायेगा ?

क्या घर लौट जाये ? जिस तरह उस सगममरी फर्श के छोर से वह लौट आया था ?

नही, वैसी इच्छा भी नही हो रही है।

उसका साऊज़ाद भाई रत्नहाटा के बारे मे जो बाते करता है, वे बाते सुन कर, उसे और उसके गाँव के सभी को आनन्द मिलता है, यह बात भी झूठी नहीं। इतने दिनो तक वही परिचय मिलता रहा। लेकिन आज और एक विचित्र परिचय जो उसे मिला उससे घृणा करने की या उपेक्षा करने की शक्ति उसकी ठप पड गयी है। यह स्नेह, यह समादर उसके लिए दुर्लभ वस्तु है। जो लोग ऐसी दुर्लभ वस्तु दे सकते हैं, उनको कैसे वह बुरा कहे ? ये भी भले हैं, ये भी भले हैं—भले बुरे मिलकर इन्सान होते है, भले भी हैं और बुरे भी—जितने भले, उतने बुरे।

बहुत देर तक वह स्तब्ध बैठा रहा। सोचता रहा।

नही, डर के मारे वह भागेगा नही। सब सीख लेगा वह। सीखने मे भला कितने दिन लगेंगे ? यहाँ वह बहुत कुछ सीख सकेगा। घर मे हालांकि मोटे भात और मोटे कपडे की कमाई तगी नही, लेकिन क्या वही सब कुछ है ? भात कपडे का अभाव रहने पर—किसान सदगोप का बेटा है वह उसकी पढाई ही नही हो सकती थी, रोटी कपडे के लिए दूसरे के खेत मे हलवाही करता, अधिया पर हल जोतता होता। या ऐसे ही किसी शरीफ आदमी के घर मे नौकर का काम करता होता। तकदीर बेहतर होती तो कहाई राय की मर्यादा मिल सकती थी। लेकिन जब सारे प्रयत्न और कितनी ही व्यग्रताओ म स भी वह उस हालत से उत्तीर्ण हो सका है हो सकता है कि थोडी सी ही शिक्षा मिली हो लेकिन कुछ तो सीखने का सौभाग्य उसे मिला ही, तब क्यो वह उस जीवन म फिर से लौट जाये ?

यह जो आज जमीदार की कोठी मे, सभ्रान्त भद्र घर म उसे शिक्षागुरु का आसन मिला, उस आसन की उपेक्षा कर वह कायर-सा उठकर चल दे ?

नही। नहीं जायगा वह।

कुछ देर बाद जाने उसे क्या ख्याल हुआ, जेब से पेन्सिल निकाल कर, तख्त-पोश से लगी जो खिडकी है, उसके सिर पर लिख दिया—८ श्रावण १३२२ बगाब्द। आज की तारीख।

आज का दिन उसके जीवन का एक स्मरणीय दिन है। अपने पिता पितामह के गाँव और वश के कुलकम का दायरा पार कर आज भद्र शिक्षित ब्राह्मण प्रधान गाँव रत्नहाटा म—अपने ही गाँव के जमीदार गृह मे शिक्षक का आसन उसे सम्मान मिला है। यह क्या कोई कम गौरव की बात है ! बहुत देर तक वह चुप किये बैठा रहा। इस दृढ सार्थकता को नींव बनाकर वह भविष्य जीवन

की कल्पना का देवालय बनाने लगा। बाबुओं के घर की इस नौकरी पर रहने से उसका चलेगा नहीं। मासिक चार रुपए में वह जिन्दगी नहीं काट सकता, गिरस्थी है, गिरस्थी बढ़ेगी। इसके अलावा देवू श्यामू के बड़े होने पर उसका क्या होगा? हालांकि उस बड़े लड़के का शायद तब तक ब्याह हो जाय—शायद बच्चे भी हों। देवू श्यामू के बाद वह उनको पढ़ा सकेगा। फिर श्यामू की सन्तान होगी, फिर देवू की सन्तान। कल्पना बहुत अधिक मधुर सी लगी। यह मानो उस कोठी में मौरूसी खत लिखी नौकरी हो—मौरूसी मास्टरी। उससे बेहतर हो अगर वह यहाँ एक पाठशाला खोल सके!

पाठशाला की बात उसने कन्हाई राय से की है। कन्हाई राय ने इस कोठी की माँ से बता दी है। माँ ने आश्वासन दिया है। वे कोशिश करेंगी। मुहल्ले के ठीक बीचों बीच उनका चंडीमंडप (चौपाल) है। वहीं पाठशाला के लिए जगह बना देंगी—ऐसा कहा है उन्होंने। लेकिन—। लेकिन बाबुओं के बेटे क्या उसके पास पढ़ने आएँगे? बड़े स्कूल वाली पाठशाला छोड़कर? सीताराम सोचता रहा।

ब्राह्मण जमींदारों के बेटों को लेकर पाठशाला की कल्पना से उसे कोई उम्मीद नहीं बंधती और न चैन ही मिलता। मन अजीब सी परेशानी से भर उठता है। बनियाटोला, साहाटोला, या कँवलपुरवा में पाठशाला होने से बेहतर होगा। उनको वह पा सकेगा। वे मानो इनसे कहीं अधिक सहज हैं, बहुत सगे।

अन्यमनस्क हो पेंसिल से गोद गोद कर दीवार पर लिखी = श्रावण की तारीख को मोटा और दागदार बनाने लगा।

●●

तीन

सात दिन के बाद। आज महीने की पन्द्रह तारीख है।

मिट्टी के दिये की रोशनी का आदी आदमी अचानक ही जोरदार बिजली की रोशनी के सामने आ जाय तो उसकी आँखें चौंधिया जाती हैं आँखों की शिराएं तनाने लगती हैं, फिर दो चार दिन की आदत के बाद ही वह तीव्रता आँखें सह लेती और क्रमश रोशनी की उज्ज्वलता और मनोहरता ही दृष्टि को आनन्द देती है। उसी प्रकार इन चन्द दिनों के अभ्यास से ही, सीताराम के मन का संकोच और भय क्रमश घट गये हैं। यहाँ के हालचाल का वह क्रमश आदी होता जा रहा है। इस घर के लोगों से परिचय हुआ है वे अच्छे भी लग रहे हैं। इस कोठी में प्रवेश करते ही जो उसे सबसे अधिक विस्मयकर और भय का

पात्र लगा था, जिसके उग्र स्वभाव की शोहरत उसने बाहर से ही सुन रखी थी और घर मे प्रवेश के मुख पर ही 'देखा, चोरी करने मे कैसा लगता है' यह विचित्र विस्मयकर उक्ति सुनी थी, इस घर के उस बडे लडके के साथ भी उसका अच्छा खासा परिचय हो चुका है। प्रथम परिचय के समय ही वह सबसे अधिक आश्चयचकित हुआ था और अब भी मन ही मन वही सबसे आश्चयजनक व्यापार बना हुआ है। उसके साथ परिचय हुआ बडे सहज ढग से, राह चलते वक्त हमराही के साथ जैसे सहज ढग से परिचय हो जाता है उतने ही सहज ढग से। आश्चय है !

उसी पहले ही दिन शाम को धीरानन्द से भेंट हुई। बिल्कुल मँझले भाई जैसा ही चेहरा-मोहरा। नगे पैर, कछाना मारे, धोती और पसीने से तर बनियान पहने, कचहरी के चबूतरे पर चढते ही ठिठक कर खडा हो गया। सीताराम कमरे म बत्ती जलाकर छात्रो की प्रतीक्षा मे बैठा था। बाहर ड्योढी म और कोई नही था। धीरानन्द आकर कमरे के सामने खडा हो गया।

आप ही नए मास्टर जी है ?

मँझले से घनिष्ट सादृश्य देख उसको पहचानने मे सीताराम को देर न लगी। वह झटपट उठकर खडा हो गया, बोला, जी हा। समझ म नही आया, प्रणाम करे या नमस्कार—क्या करना चाहिए ?

आपकी बत्ती जरा ले लू ? फुटबाल खेलकर आया हू, जरा हाथ पैर धो लू।

चलिए, मैं ही बत्ती दिखाता हू।

घाट पर हाथ पैर धोकर धीरा बोला, तो फिर घर की गली मे भी तनिक रोशनी दिखा दीजिए, हमारे घर के चारो ओर साँप भरे पडे है।

सीताराम उत्साहित हुआ और सहज सम्भाषण की धारा मे स्वच्छन्द गति से अनायास ही धीरानन्द के सम्मुख पहुँचकर बोला ठहरिए, तो फिर रोशनी लेकर मैं ही आगे चलता हू।

धीरानन्द ने कहा, पिछली बार हमारे घर से एक दिन मे छत्तीस गेहुअन सँपोले निकले थे।

छत्तीस ! फिर तो घर मे कही बच्चे हुए थे।

नही। घर मे नहीं। लगभग सबके सब घर के बाहर से भीतर की ओर आ रहे थे। रास्ते वाली कोठरी मे सोलह मारे गये, बाहर वाले दरवाजे के पास पाँच, सारे के सारे बाहर से घर की ओर आ रहे थे। आँगन मे तेरह। घर के भीतर सिफ दो। एक भण्डारे मे, और दूसरा—दूसरे ने ही सबको हैरत मे डाल दिया था। दालान—कमरा—दरदालान पार कर लक्ष्मी जी का कमरा है, उसके पीछे बरतन वाला कमरा है, उसमे कोई खिडकी नही, बस एक दरवाजा है, दिन को भी बत्ती लेकर उस कमरे मे दाखिल होना पडता है। उसी कमरे म गगाजल की बडी हाँडी मे जाने कैसे जा पडा था। क्या आपके गाँव म साँपो का क्या हाल है ?

सांप तो हैं।

कार्बोलिक एसिड से कभी सांप मारा है आपने ?

नहीं। सीताराम ने कहा, लेकिन सुना जरूर है कि कार्बोलिक एसिड देते ही सांप मर जाता है।

देते ही नहीं मरता। उस बार मैंने देकर देखा है। सिकुड़ सिमटकर काफी छटपटाने के बाद मरता है। अथाह यंत्रणा मिलती है। लेकिन हां, उसकी गंध से सांप नहीं आता, यह भी ठीक है।

कहते कहते वे घर के भीतर आ गये थे। धीरानन्द ने हांक लगायी, श्यामू, देखू तुम्हारे मास्टर जी खड़े है। मेक रेस्ट।—कहकर ही वह ऊपर चला गया था।

उसके चले जाने के बाद सीताराम को लगा था —बड़ा बेहतरीन आदमी है यह ! उग्रभाषी कहां ! इसमें विस्मयकारी भी क्या है भला !

इन सात दिनों में और भी कई बार भेंट हो चुकी है, बीस तीस बार तो विशेष बातचीत भी दस बारह बार हो चुकी है। बस एक ही ढर्रे की बातें।

धीरानन्द सवेरे यहीं के स्कूल के असिस्टेंट हेडमास्टर के पास पढ़ने जाता है। शाम को घर पर पढ़ता है, घर के भीतर ऊपर धीरानन्द का पढ़ने का कमरा है। सुना है, वहां बहुत किताबें हैं। अच्छी-अच्छी अंग्रेजी और बांगला किताबें। सीताराम का जी करता, किताबें लेकर पढ़ें। पढ़ने का कमरा देखने की भी इच्छा होती, पर बोल नहीं पाता। परिचय और वार्तालाप हो चुका है और बड़े ही सहज सरल ढंग से हुआ है, कहीं कोई भी तनिक सी भी बाधा के कांटे का अनुभव नहीं करता, लेकिन फिर भी उस लड़के में ऐसा कुछ है, जिससे उससे निपटने लायक सान्निध्य में नहीं आया जा सकता। संसार में एक एक व्यक्ति ऐसा होता है, जिसके बदन पर हाथ रखने पर मुंह से तो कुछ भी नहीं कहेगा और न हाथ को परे धकेल देगा, फिर भी हंसते-हंसते ऐसे सहज ढंग से हाथ को हटाकर अपने को दूर सरका लेता है, ताकि ठेस भी न लगे, यहां तक कि सोचना भी नहीं पड़ता—बस उसी ढंग से वह अपने को सरका ले सकता है।

सीताराम भी आगे नहीं बढ़ा। उसने भी इसी बीच अपने रोजमर्रा के काम को योजनाबद्ध ढंग से निर्धारित कर डाला है। रात को घर जाता है। सवेरे अपने पिता के साथ ही उठता है। कुरता और बनियान कंधे पर डाल छतरी, लालटेन और लाठी हाथ में लेकर वह रवाना हो जाता है। रत्नहाटा और उसके गांव के बीच एक छोटा नाला है, ऊपर के एक झरने से पानी बारह महीने प्रवाहित हो नदी की ओर चला जाता है। उसी नाले के पास आकर कुरता, बनियान, छतरी, लालटेन लाठी रखकर वह अपना प्रातः कृत्य निबटा लेता है। नाले के दोनों ओर असंख्य बाघभेरेंडा के पौधे हैं। एक पौधा उखाड़ कर छुरी से काटकर वह दातौन बना लेता है। और भी थोड़ी दूर आकर रत्नहाटा के सिवान पर बहुत दिनों पुराना जो छायाघन बरगद का वृक्ष है

उसके नीचे पहुंचकर बनियान कुरता पहन लेता है, दबाव डाल दोनो हाथ फेरकर बालो को विन्यस्त कर डालता है, धोती का अगला पल्ला दो एक बार झटककर झाड फिर चल देता है, साढे छह बजे के अन्दर ही बाबुओ की कोठी मे जा पहुचता है। कमरे के ताले की दो चाबिया है—एक घर मे रहती है और दूसरी उसके पास। कमरा खोलकर वह कुरता बनियान टाग देता, दीवार-खूटियो पर जिन्हें उसने हुगली से खरीदा था और घर से यहाँ ले आया था। अपना गडुवा और गिलास माज डालता। अँगोछे से कई बार मुह पोछने के बाद उसे छाटकर सुखाने टाग देता। फिर घर मे पुराने जमाने की जो मेज है उस मेज के किनारे आकर खडा हो जाता है। मेज की एक दराज उसे मिली हुई है, उसको खोल सामान सँजो लेता, पेन्सिल की नोक देखता, जरूरत पडने पर उसे काटता, नोक मोटी हो गई हो तो चाकू से उसे महीन बनाता, फिर एक टूटे स्लेट के टुकडे पर चाकू घिसकर सान धराता। ऐसे ही समय श्यामू और देबू आते, अभी नीद से जागे फूले हुए चेहरे लेकर वे आकर खडे हो जाते। माँ की व्यवस्था और अनुशासन से वे सचालित हैं, मुँह धोकर ही वे आते। सीताराम फिर भी अपना कर्तव्य पूरा करता। वह देखता, उनके दात अच्छी तरह से साफ हुए हैं या नही, आँखो के कोर पर कीचड लगी है या नही! देखते समय सीताराम को उनके मुँह से अभी अभी पूडी खाने की गन्ध मिलती। इस गन्ध से अपने गाँव के बच्चो के लइया गुड खाये मुहो की गन्ध का फर्क वह अनुभव करता। जितने दिन बच्चे दूध पीकर बडे होते हैं उतने दिन सभी बच्चो के मुह से एक ही प्रकार की गन्ध आती है। उसके बाद ही फर्क शुरू हो जाता है।

लडके पढने बैठ जाते। कन्हाई राय घर के भीतर से चाय ले आते, नायब पीता, कन्हाई राय पीता पर सीताराम नही पीता। नियमित नही पीता। इस बीच केवल एक दिन उसने पी थी जिस दिन काफी बारिश हुई थी।

करीब आठ बजे नाश्ता आता। सीताराम ने नाश्ता लेने में आपत्ति की थी, लेकिन माँ ने कुछ न सुना। वे भेजेंगी ही, नौकर ले आता—चार रोटी, घी मे तले मिच पडे उबले आलू और थोडा सा गुड। सीताराम रोज ही एक रोटी, दो आलू और चम्मच भर गुड लेकर बाकी लौटा देता। आज अन्त मे एक फैसला हुआ है, माँ ने सीताराम का एक रोटी लेना ही मान लिया है।

सीताराम ने हाथ जोडकर कहा, अभी दो-चार दिन बाद ही पाठशाला मे बैठना पडेगा माँ, साढ़े ग्यारह बजे। दस बजे पर भात खाना होगा। चार रोटियाँ खाकर क्या भात खा सकूगा माँ!

चार दिन के बाद बृहस्पतिवार। बृहस्पति हैं देवताओ के गुरु, स्वर्ग मे विद्यादाता वे ही हैं, उन्ही के नामाकित दिन पर पाठशाला खोलना उचित होगा, इसके अलावा उस दिन साइत भी अच्छी है। उसी दिन सीताराम की पाठशाला लगेगी। पाठशाला के लिए माँ ने बडी कोशिश की है। उसका फल

बेशक कुछ निकला है, लेकिन सीताराम ने जो आशा की थी वैसा नहीं हुआ।

माँ ने कहा था, छोटे छोटे लडको को दस बजे ही खाना खाकर भागना पडता है, आधे मील से भी अधिक रास्ता। तुम अगर मुहल्ले म घर के पास चडीमँडप मे ग्यारह बजे पाठशाला खोलोगे, स्कूल से कम फीस लोगे तो सभी लोग अपने लडका को तुम्हारी पाठशाला मे देंगे।

सीताराम को भी यह तक अकाट्य सा लगा था। लेकिन वह आश्चय करता रह गया जब देखा कि तक अकाटय होने पर भी लोग तक के आस पास भी नही फटके। स्कूल से छुडाकर लडको को पाठशाला में देने को वे तैयार नही हुए।

जगद्धात्री इस मुहल्ले की प्रवीणा मह्री तबके की औरत हैं। उन्होने उस दिन इसी कोठी म ही माँ से कहा, सीताराम मौजूद था उस समय, बोली, हजार हो, स्कूल की पढाई और पाठशाला की पढाई दोनो मे फक है धीरु की अम्मा! तुम्ही बताओ क्यो? तुम क्या लडको को स्कूल से छुडा लोगी?

माँ न हँसकर कहा, ननद जी, मेरे छोटे दो लडके तो स्कूल मे नही पढते, वे तो उसी के पास पढते है।

सो तो पेराइवेट पढते हैं। दो लडको को लेकर वह मास्टर दो जून रगडता है। सो तो एक बात और पाठशाला के गोल मे बैठ पहाडा बोलना दूसरी बात। जरा सोचने के बाद बोली, मेरे तीन भतीजो को दे सकती हू अगर मास्टर तुम्हारे लडको की तरह उनको दोनो वक्त पेराइवेट पढावे। सो तीन जनो के लिए तीन रुपए दूगी। छोटा वाला तो मान लो पढता ही नही, अ आ और क ख। उसका पढना तो नाममात्र के लिए, बस सभाले रखना है, फिर भी तीन ही रुपये दूगी।

इस मुहल्ले के पतित पावन बाबू प्रवीण और मातबर व्यक्ति हैं—उनको भी माँ ने बुलाया था उन्होने कहा, वह तो स्वय एक बालक है। बच्चो को शिक्षा देना वह क्या जानता? स्कूल मे पाठशाला रहते फिर पाठशाला! हु ह!

यहाँ के स्कूल का प्रायमरी विभाग स्कूल के साथ नाम से स्वतन्त्र होन पर भी स्कूल हो का एक अश है। वहाँ तीन मास्टर हैं। उनमे केवल एक ही प्रवीण हैं, पुराने दिनो का छात्रवृत्ति परीक्षा पास किया हुआ, बाकी दो जनो मे एक तो मैट्रिक फेल है दूसरा नामल पास। दोनो मे एक है सेकेंड मास्टर का दामाद दूसरा है हैडमास्टर के गुरुदेव का भतीजा। इन दोनो की उम्र हालाकि कम ही है, सीताराम के ही हमउम्र पच्चीस से तीस के अन्दर। प्रवीण जो हैं, प्रवीण होने के नाते स्कूल के पाच घटो म ढाई घटे कुर्सी पर बैठे बिना सोये उनस रहा नहीं जाता।

माँ ने सीताराम को फिर भी आश्वासन दिया और हँसमुह कहा, उनकी बातों से तुम हिम्मत मत हारना बेटा! लेकिन भले काम म बहुत सारी

बाधाएँ आती हैं। आई, अगले दिन ही फिर एक बाधा आई। सीताराम खाने बैठा था, अचानक एक महिला आ पहुची। कहा हो घोरू की अम्मा!

कौन? मा निकल आयी।

मैं हू। दादा ने तुम्हारे पास भेजा है।

बाहर से पुरुष का कठ सुनाई पड़ा, बता दे कि मैं यहीं खड़ा हू।

बताओ।

महिला गम्भीर भाव से कह गयी, चडीमडप के तुम लोग बड़े शरीक जरूर हो, बारह आना हिस्सा तुम लोगो का है—यह सच्ची बात है लेकिन इसलिए जो मर्जी सो तो नही किया जा सकता चडीमडप के साथ।

मा अचम्भे में पड गयी, बात क्या है?

उन्होने कहा, मुहल्ले के बीच म देवस्थान है, बहू-बेटियाँ सब आती-जाती हैं, वहाँ तुम अपन पति के नाम पर सुना, पाठशाला खोल रही हो? यह क्या ठीक हो रहा है?

बाहर से महिला के दादा ने अब हाक लगायी, ठीक होना ओना नहीं। ऐसा होगा नहीं। वह मैं करने नहीं दूगा। चली आ तू।

वे चली गयी।

सीताराम बोला, रहने दीजिए माँ, अब इतना—। अपनी बात वह खत्म न कर सका।

माँ का मुख तमतमा उठा था। वे एकटक दृष्टि किये कुछ सोच रही थी, अचानक बोल पड़ी, हमारे कचहरी के पूरब क बरामदे पर पाठशाला खोलोगे तुम।

यही तय कर वह शाम को स्कूल सब इसपेक्टर के पास गया। रत्न हाटा मे ही एक सकल सब इसपेक्टर रहते हैं। पाठशालाओ के वे ही हर्ता-कर्ता विधाता हैं। सब इसपक्टर बठे थे बडे स्कूल के हड मास्टर के घर पर। सीताराम के लिए यह अच्छा ही हुआ, हेडमास्टर जी उसके किसी समय के शिक्षक रहे हैं, उनसे भी अनुमति लेना हो जायगा। उनके पैरो की धूल सिर से छुवाकर उसने प्रणाम किया, सब इसपेक्टर को नमस्कार किया। फिर सविनय निवेदन किया।

सब इसपेक्टर बोले, अच्छी बात, खोलिए पाठशाला, चलने दीजिए कुछ दिन, सालभर गुजरने दीजिए, फिर दरख्वास्त कीजिएगा। तब देखभाल कर जो समुचित होगा किया जायगा।

हेडमास्टर गभीर हो गए थे शुरू से ही, उन्होने कहा, इसके लिए तुम मुझसे क्यो कह रहे हो?

मैं आपका छात्र हूँ। मैं यहाँ पाठशाला खोल रहा हूँ, इसलिए आपकी अनुमति माँग रहा हूँ।

अनुमति तो मैं नहीं दे सकूँगा। यहाँ हमारा एक प्रायमरी सेक्शन है।

तुमको पाठशाला खोलने की अनुमति देकर कैसे उसका नुकसान करने को कहूँगा, बताओ ?

इसका उत्तर सीताराम नहीं दे सका, केवल जरा दुखी हुआ। वह भी तो उनका छात्र है। उसका मगल देखना भी क्या उनका कर्त्तव्य नहीं ?

मास्टर जी ने फिर कहा, अपने गाँव में क्यो नही खोली पाठशाला ?

जी वहा मेरे ताऊजाद भाई पाठशाला खोले हुए हैं।

तो ? यहाँ भई हमारा अपना पाठशाला विभाग जा है।

अबकी बार सीताराम ने जवाब दिया, कहा, हमारा गाँव छोटा है, वहाँ लड़के भी कितने ? यहाँ बडा गाँव है, बीस लडके आएग तो मेरे पाँच रुपए बन जायेंगे। और ज्यादा लडके तो आपकी पाठशाला म पढ़ते नहीं, ज्यादा फीस—

तो फिर शरीफ मुहल्ला छोडकर तुम दूसरे मुहल्ले मे पाठशाला खोलने की कोशिश करो। हँसकर बोले, देश सेवा भी होगी। उन लोगो को इकट्ठे कर पाठशाला खोल अ प्रकार से प्रकाश म अगर ला सको तो तुम्हारी एक कीर्ति रह जायगी।

उनके बोलन की भगिमा से सीताराम मर्माहत हुआ। वह वहाँ से चला आया।

माँ ने फिर मणिलाल बाबू के पास भेजा।—उनको एक बार कना आओ। व अगर कहेंगे तो चण्डीमण्डप के बारे म कोई भी आपत्ति नहीं खडा करेगा।

मणिलाल बाबू को प्रणाम कर वह खडा हो गया। सारी बात बता दी। आश्चर्य ! उस दिन वाले व्यक्ति ही नहीं हैं वे, बात करने का लहजा भी अलग। वे केवल चन्द बार बोले, हूँ। हू। हू। सुना है जरूर। अंत मे निलिप्त सा बोले, देखो कोशिश करो। फिर तकिए स टेक लगाकर हाँक लगाई चैतन, ए चैतन !

जवाब न पाकर बोले, फरशी की चिलम लेकर बाहर किसी को दे देना छोकरा, आग बुझ गयी है, आग देने का कहना।

सीताराम स्तभित रह गया लेकिन आज्ञापालन से भी विरत न हुआ।

माँ ने सुनकर कहा, भणि देवर जी ऐसे ही अजीब शख्स हैं। जब जैसी सनक सवार होती है वैसा ही बोलते हैं।

बठक मे आकर कन्हाई बोला, अजी भद्रलोग सब ही सनकी होते हैं।

सीताराम मर्मान्तक विषाद से भर गया है। बिना कोई उत्तर दिये उसने सिर्फ एक ठण्डी सास ली। फिर सिर झुकाये बैठा रहा। अचानक एक बात याद आ गयी, हेडमास्टर की बात याद आ गयी। शरीफों का मुहल्ला छोडकर दूसरे मुहल्ले मे पाठशाला खोली जाय तो कैसा हो ? बहुत सोच विचार कर एक क्षेत्र का भी आविष्कार कर डाला। साहाटोला या मछुआ-केवटो के टोले मे पाठशाला खोलने की बात याद हो आई।

साहाटोले के लडको म अधिकाश पढ़ने लिखने की ही कोशिश करते हैं।

साहा अर्थात शौडिक समाज मे जल अचल सम्प्रदाय होने पर भी आर्थिक अवस्था से काफी सम्पन्न होते हैं। वंश परम्परा से शराब की दुकान तो है ही तिस पर महाजनी कारोबार भी है इनका। जो जैसा है उसका वैसा ही कारोबार है— गहने बरतन गिरवी लेकर ऊँचे ब्याज पर रुपये उधार देते हैं। छुड़ा लेने की एक अवधि निश्चित रहती है, वह अवधि पूरी होते ही वह देनदार को इत्तला कर देता है कि वह चीज तुम्हे अब वापस नही मिलेगी। आचार और वेश भूषा मे भी वे भद्र हैं, लेकिन फिर भी स्कूल म पाठशाला म उन लोगो का स्थान नीचे है। शिक्षक उनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं। सीताराम को याद है, उसके साथ साहा घराने के खुदे और पचा पढ़ते थे। मास्टर उनको बुलाते थे, ऐ शौडिक (कलवार)।

कोई कोई कहते थे, दारू वाले का बेटा! सीताराम को लगा, उनके लिए अगर वह पाठशाला खोल दे तो वे बेशक खुश होकर उसकी पाठशाला मे पढ़ेंगे।

मछुवे केवट के लड़के बहुत सारे है। जाड़ा गर्मी बारह महीने बरगद के तले सबेरे से शाम तक एक ही जगह बैठे वे ही ही कर हँसते रहते हैं, परस्पर गाली गुफ्तार करते रहते हैं। वे पाठशाला नही जाते। उनमे से बहुतो की धारणा है कि उनको पढ़ना लिखना नही चाहिए। जो पढ़ेगा वह मर जायगा। हालांकि केवटो के पास पैसे हैं—मछली के व्यापार के पैसे। उनके मुखिया विपन की बड़ी इच्छा है, बेटे को पाठशाला मे देने की। हाईस्कूल की पाठशाला में भरती भी कर दिया था। लेकिन वहाँ दो दिन जाने के बाद उस लड़के ने फिर नही जाना चाहा। क्यो नही जाना चाहता, यह सीताराम अनुमान लगा सकता है। वह भय अगर न रहे, तो वे आयेंग क्यो नही ?

सीताराम उठकर बैठ गया। ज्योतिष साहा साहाटोले का मातबर है - आदमी भी नेक है। केवट भी साहा जी के अनुगत है। विपन को ज्योतिष 'काका' कहकर पुकारता और विपन कहता है, 'ज्योतिष बाबा।

हाँ, यही करेगा वह। उन्ही के पास जायगा।

श्यामू और देबू को दस बजे छुट्टी देकर उसने नहा लिया। नहाने मे उसे जरा वक्त लग जाता है। पोखर मे वह नही नहाता। इस बारे म वह अपने स्कूल जीवन के दो प्राचीन शिक्षको का अनुगामी हुआ है। जिस पण्डित जी ने उसके बाप से उसे नामल स्कूल म पढ़ाने का अनुरोध किया था वे और इस स्कूल के हेडमास्टर दोनो ही घनिष्ट मित्र थे और वे निर्मल चरित्र के व्यक्ति। जितने दिन वे जीवन मे कर्मठ थे, उतने दिन वे दोनो साढ़े नौ बजे गड़ुवा लेकर अगोछा और धोती कंधे पर डाले गाँव से मीलभर दूर झरने की तरफ चल देते थे। झरने मे स्नान कर दो गड़ुव झरने के पानी से भर कर लौटते थे। दिन भर उसी झरने का पानी पीते थे। सीताराम भी गड़ुवा लेकर अगोछा और धोती कंधे पर डाले झरने पर जाता। तेज कदम जाता और तेज चाल लौटता। अपने कमरे के भीतर ही उसने अलगनी टाँग ली है। उस अलगनी

पर वह अपनी धोती फैला देता है, गडुवे को मेज के नीचे रख देता है। किसी टूटे बक्से का एक सलोवर लड़की का पटरा उसने जुगाड़ा है, उसके ठाँव पर एक कंकड़ का वजन भी उस पर रख देता, फिर हुगली के पाठ्य जीवन की आदत के मुताबिक बायें हाथ में आईना थाम बालों में कंघी करता है। माँग नहीं काढ़ता, बालों को समान रूप से सामने लाकर बाईं ओर से दाहिनी ओर कर देता है। एक चुटिया भी है, उसे बालों म ना-मालूम मिला देता है। इसके बाद खाना खाता है। खाना खाकर ही बनियान कुरता पहन छाता हाथ में लिए वह निकल पड़ा। साहाटोले की ओर गया। ज्योतिष साहा जी की शराब गाँजा-अफीम भाँग की दुकान के बरामदे पर जाकर खड़ा हो गया।

ज्योतिष आश्चय करने लगा। उसकी दुकान पर रमानाथ मुखिया का बेटा क्यों ? यह लड़का पढ़ा लिखा है इसके अलावा सभी उसे एक नेक लड़के के रूप मे ही जानते हैं।

नमस्कार कर सीताराम ने कहा, आपसे एक बात करनी है।

क्या है ? बताओ।

आपके मुहल्ले मे मैं पाठशाला खोलना चाहता हू। आप लोगों के लड़कों के लिए पाठशाला।

ज्योतिष ने हैरत मे कहा, पाठशाला ?

जी हाँ, पाठशाला। सीताराम ने अपने सोचे हुए तर्कों को साहा से कहा। बताया स्कूल के छोटे बच्चों को दस बजे खाना खाकर भागना पड़ता है डेढ मील रास्ता—शरीफ लोगों के घर मे हालाकि दस बजे खाना बन जाता है, लेकिन हमारे जैस गिरस्त घरो मे औरतो को इसमें दिक्कत होती है। मान लीजिए, मैं ग्यारह बजे पाठशाला आऊँगा, घर के पास पाठशाला हो, औरतो को घण्टाभर समय मिल जायगा, इसके अलावा खाना न पक सका हो तो लड़का खाकर पाठशाला चला आएगा और एक बजे टिफन—बड़े मजे मे दौड़कर घर चला जायगा और खाना खाकर लौट आएगा। अचानक किसी को अपने लड़के की जरूरत पड़ गई, हाँक लगा दी,—मास्टर राम को छुट्टी दे दो। बस हो गया। इसके अलावा फीस भी कम कर दूँगा मैं। गिरस्त घरो में दो आन पस कोई कम नहीं।

इतन सारे तर्कों को पेश करने के बाद उसने साहा के मुख की ओर देखा, बातों का कोई असर साहा जी के मुख पर पड़ा या नहीं। साहा जी सोच रहे थे। बातें वाकई उनके मन को छू गई हैं।

सीताराम को फिर एक बात याद आ गई, बोला, इसके अलावा मान लीजिए स्कूल की फीस सात तारीख को जमा न करने पर जुर्माना देना पड़ता है, फिर महीना खत्म हो जाय तो नाम कट जाता है। जो लोग गरीब गृहस्त हैं वे क्या हर महीने ही ठीक ठीक फीस जमा कर सकते हैं ? पाठशाला मे यह भी एक सुविधा है जुर्माना नहीं देना पड़ेगा, नाम नहीं कटेगा।

इस पर साहा जी हँसे, बोले, जुर्माना नही देना पडेगा यह सुविधा बेशक है लेकिन फीस न देने पर अगर महीना खत्म होने पर भी नाम न काटा जाय तो उससे तुम्हें दिक्कत होगी। फीस कोई देगा ही नही।

सीताराम लज्जित हो गया, उसे लगा, उसने कमलापन कर डाला है। अपने को सम्भालते हुए उसने कहा, उसके लिए एक कमेटी-जैसी रहेगी, आप लोग पाँच जने मिलकर एक कमेटी बना देंगे। आप प्रेसिडेन्ट होंगे। महीने के अन्त मे मैं आपको बही खाता दिखाऊँगा। आप लोग कहेंगे तो नाम काट दूँगा।

कुछ देर चुप रहने के बाद फिर वह बोला, हालाँकि मैं जी-जान लगाकर मेहनत से पढाऊँगा, मुझे वेतन बेशक चाहिए। कुछ मिलेगा इसीलिए तो काम करने आया हूँ। लेकिन मैं भी किसान गिरस्त घर का बेटा हूँ—गृहस्थ घर के दुख-दद को मैं जानता हू। अपने दु ख के साथ छात्र के घर की दु ख-दुदशा के बारे में भी तो मुझे सोचना है। कोई अगर एक महीना फीस न दे सका, आप लोग अगर देखें, फीस जानबूझ कर बाकी नही पडी है, तो उसका नाम नही काटूगा, वह रहेगा। और उसकी तगी यदि अधिक हो तो दो महीने की फीस बाकी रहे। बाद मे दे देगा। सो भी अगर आप लोग ऐसा सोचें कि बकाया फीस माफ कर दी जाय तो मैं वैसा ही करूँगा।

साहा की दुकान के सामने ही बाबुओं का एक बाग वाला पोखर है। उस पोखर के पानी म उस वक्त हवा से हिलकारें आने लगी हैं, सावन की बरसाती उतावली बयार। लहरो ने सिर पर सूय की छटा चमचमा रही है। साहा उस ओर देखता हुआ काफी देर तक चुप रहा, फिर बोला, भाई, मैं जरा सोच लूँ। मुहल्ले के और भी पाच जनो को पूछ लू।

सीताराम ने इस बार आखिरी बात की, इसके अलावा यह होगी आप लोगों के लडको के लिए पाठशाला। बाबुओं के लडके और आप लोगो के लडको मे कोई फक नही रहेगा। आप लोगों का असम्मान नहीं होगा।

ज्योतिष ने चकित-सा मुह उठाया, एकटक सीताराम के मुख की ओर देखता रहा फिर सामने की ओर पोखर के, प्रकाश से उज्ज्वल, जल की ओर।

●●

और भी दो दिन बीत गय।

पाँच जनों को लेकर सलाह मशविरा अभी तक चल रहा है।

ग धवणिक टोले मे कई स्कूल वाले दोस्त हैं उसके। दो दिन वह उनके पास भी गया। वहाँ उसे विशेष उत्साह नही मिला। ये लोग भी विचित्र लोग हैं। इन्ही के तबके के कम उम्र वाले तालव्य 'श' का उच्चारण अंग्रेजी 'एस' की तरह करते है। यार दोस्त देखते ही समादर सम्भाषण कर कहते हैं—स्ला। इनके प्रवीण लोग बडे विज्ञ होते हैं। बोले, हाँ, खोलो वो पाठशाला। देख लें पढाई कैसी होती है, फिर देखा जायगा।

उस दिन दिनभर चक्कर लगाने के बाद सीताराम तिपहर लौटा। पानी

पीकर अवसादग्रस्त मन से गड्डवा हाथ मे लेकर अगौछा कंधे पर डाले वह निकल पड़ा। यह उसका नित्य कर्म है। झरने के किनारे घूमने जाता है। और एक चीज साथ होती—एक आसन, यह आसन वह घर से ले आया है। आसमान में बादल होने पर छाता ले लेता है बगल में। गाँव पार कर उस झरने के पास चला जाता है। कंकड़ पत्थर से भरे रस विरिस से शून्य एक ऊसर टीले के नीचे झरना है। वह उस टीले के किसी स्थान पर जाकर आसन बिछाकर बैठ जाता है। सूर्यास्त तक बैठा ही रहता है। यह भी उस पुराने जमाने वाले पंडित का अनुकरण है। बैठे-बैठे सोचा करता। उसकी चिंता—पाठशाला की चिंता। पाठशाला न होने पर खुराक और चार रुपए तनख्वाह पर नौकरी करना सच मुच बड़ी ही लज्जा की बात है। बाबा के सामने वह मुँह कैसे दिखाएगा?

उसके बाबा अब भी कह रहे हैं, घर पर बैठे खेतीबारी देखो बेटा। माँ लक्ष्मी की सेवा करो। "नया वस्त्र और पुराना अन्न, यही खा-पहन बीते जन्म-जन्म।" खेती छोड़ने पर खेती बरबाद हो जायगी। मैं भला कितने दिन। यह सब पुरखों की बातें हैं।

यह सही है कि बातें पुरखों की हैं। और सच्ची भी हैं। उसके ताऊजाद भाइयों की—उसी किशोर वगैरा की खेती की हालत इसी बीच सचमुच खराब हो गयी है। बड़े दादा ने मास्टर पढ़ने के बाद गाँव मे पाठशाला खोली है, न वह हल थामता है और न खेती देखता। मझला नौकरी की टोह मे घूम रहा है। किशोर एम० ए० और लॉ पढ़ रहा है। छोटा इस बार मैट्रिक देगा। ताऊ बूढ़ा गये हैं आँखों से अच्छी तरह दिखाई नहीं पड़ता। फिर भी खेती का सारा भार उसी बूढ़े पर है। खेत मजूर पर सोलह आने निर्भर रहना पड़ता। इस कारण, ताऊ के खेत में उसके नाते रिश्तेदारों से सबसे कम फसल होती है। बात ठीक है। लेकिन घर मे रहकर खेती-बारी लेकर रहने की बात सोचते ही उसका दिल जाने कैसा करने लगता है। खेती करने पर क्या जमींदार गढ़ में उसे बैठने का आसन मिलेगा? उस मणिलालबाबू ने जो उस दिन उसको बाहर चिलम ले जाने के लिए कहा था, वह किसान का बेटा था इसलिए। इतना कहने पर भी उससे तमाकू भर कर लाने को नहीं कह सके। पढ़ लिखकर मास्टरी करेगा, सुनकर उनको तारीफ भी करनी पड़ी। अपने हाथ खेती करने पर क्या वे इतना भर भी बोलेंगे? अब की बार तमाकू भर लाने के लिए कहेंगे।

भर पेट खाकर जिन्दा रहना ही क्या सबकुछ है?

उसके वे पुराने पंडित जी कहा करते थे, सूअर भी दिन गुजार लेता है, दिनभर घूम कर वह भी अपना पेट भर लेता है।

उसके पिता और भी कहते थे, अच्छी बात, पाठशाला ही खोलनी है तो गाँव में तेरे दादा ने खोल रखी है उसी में लग जा। या बगल के गाँव राधिकापुर में खोल ले।

राधिकापुर उन लोगों के गाँव के पास ही है, उन्हीं के गाँव जैसा ही छोटा

किसानों का गाँव है। लेकिन वह भी उसको नहीं भाता। राधिकापुर के पंडित जी और रत्नहाटा के पंडित जी मे क्या तुलना हो सकती है? इसके अलावा छात्र? जो जमींदार गृह के दो लडके, खिले हुए चेहरे, चमकती आखें, झटपट बातो का जवाब देते हैं, चुस्त दुरुस्त, यह सब राधिकापुर के लडको मे कहाँ से मिलेगा? मणिबाबू ने बेशक उस दिन कहा था, गाव मे स्कूल होते हुए भी हमारे लडके कोई भी कुछ भी नहीं कर सके, तुम लोग कर रहे हो, यह तो अच्छा है, बहुत अच्छा। फिर भी वे ही तो इस जवार के प्रधान हैं। वे ही तो सारे काम मे आगे बढ आते हैं। साहब लोग आकर उन्ही से बातचीत करते हैं। वे पढाई नहीं कर पाते अवहेलना के कारण, जानते हैं, पास न होने पर भी उनकी प्रतिष्ठा कोई छीन नहीं सकता। उनके मास्टर जी बनने मे कितना बडा गौरव है। श्यामू और देबू को यदि वह पढाता है, और किसी समय अगर वे जाने माने व्यक्ति बन जायँ तो वह कह तो सकेगा कि वह श्यामू-देबू का मास्टर है। श्यामू-देबू मे एक अगर जज बन जाये और एक मजिस्ट्रेट, तो? उसका दिल जाने कैसा होने लगता।

झरन के पास का गाँव उसी का गाँव है। उसके गाँव से औरतें आकर पानी ले जाया करती हैं। हरे धानो से भरे खेतो की पगडण्डी से, सज्जी से धुले मोटे कपडे पहने बहू बेटियाँ आकर पानी ले जाती हैं। बहुओ के सिर पर घूघट, बेटियाँ घूघट नहीं काढती, उनके सिर के जूडो पर शाम के सूरज की आभा आ पडती। रूखे बालो के ढीले जूडे, घडे लेकर चलते वक्त पैर रखने के लय पर डोलते, जिनके जूडे बँधे हुए उनके तेलाक्त बालो पर सूर्य की छटा चमकती।

मनोरमा भी इनके साथ पानी लेने आएगी। उसके साथ इसी मौके रात को घर पर मुलाकात होने से पहले ही एक बार भेंट हो जायगी। मनोरमा शुक्रवार को आ रही है। उसकी ख्वाहिश थी कि उसी बृहस्पतिवार को ही आ जाये। ट्रेन पाँच बजे आने वाली है। बृहस्पतिवार ग्यारह बजे पाठशाला खुलेगी। उसी दिन पाँच बजे मनोरमा आएगी, यह सोचते हुए उसे भला लगा था। लेकिन बृहस्पतिवार केवल गुरुवार ही नहीं, लक्ष्मीवार भी है। धान नहीं बेचना चाहिए, कन्या घर की लक्ष्मी के समान है—उसको भी नहीं भेजना चाहिए। कल बाबा रवाना होंगे। उसकी ससुराल से गंगा बहुत निकट है, दो मील के अन्दर ही, खेत की जुताई खत्म हो चुकी है, निराई मे अभी कुछ दिन की देर है। सावन के अंत तक निराई होने से ही चलेगा, अभी लमेरा घास पात बढे नहीं। इसी मौके पिताजी जाकर कुछ दिन रहेंगे, गंगास्नान होगा। इन चार दिनो मे उसके घर पर भी बहुत-सारे काम है। बाबा रहेंगे नहीं, इसी वक्त घर को अपने मनमाफिक सजा डालना है। हालाँकि बाबा ने खुद ही कहा है लेकिन फिर भी बाबा के सामने यह सब करने में लाज लगती है।

कपडे टाँगने की खूटिया वह रत्नहाटा ले गया है। वह है भी बहुत छोटी। उससे घर म कोई काम न होता। मनोरमा के कपडे, अपनी धोती, कुरते,

बनियान रखने के लिए एक बडी अलगनी चाहिए। बाबुओ के घर के नायब से उसने एक अलगनी खरीदने को कहा है, वे सदर गये हैं। दो पकिंग बक्स खरीद कर रत्नहाटा के सतीश बढई को दो शेल्फ बनाने को दिया है—बडा वाला घर के लिए और छोटा वाला वह रत्नहाटा की पाठशाला में रखेगा।

साँझ हो आई वह उठा, झरने में मुह हाथ धो गडुवा भरकर वह लौट चला। अचानक उसे 'मेघनादवध काव्य' के द्वितीय सर्ग का प्रारम्भ याद आ गया—

'अस्ते गेला दिनमणि, आइला गोधूलि
एकटि रतन भाले। फुटिला कौमुदी,
मुदिला शरम आँखि विरस वदना
नलिनी।''

इसके बाद ठीक तरह से याद नही। उसकी स्मरण शक्ति कोई अच्छी नही। उसके जीवन की अकृतकार्यता का यही सबसे बडा कारण है। जाने क्या सोच यकायक वह खडा हो गया। फिर लौट गया झरने की ओर। कुछ ब्राह्मीसाग चुनकर लौट चला। पकाकर खाने की सुविधा नही मिलेगी, कूट कर रस पी लेगा सवेरे। हाँ और भी है, सामने भादो का महीना है पित्तवृद्धि का समय ऐसे समय चिरैता का पानी कम-से कम हफ्ता भर पीना है। शरीर को स्वस्थ रखना है। शरीरमाद्यम।

बाबुओ के घर लौटते ही कन्हाई राय ने कहा क्या जी पड़ित, भरमन हो गया? यानी भ्रमण।

सीताराम को यह बात जरा कोच गयी। कन्हाई राय चन्द दिनो से जान कैसी आडी तिरछी बातें कर रहा है। 'सीताराम' कहकर नही बुलाता। कहता, पडित, कभी-कभी पडित जी' भी कहता। कन्हाई राय के मन की बात वह समझता है। लेकिन वह उसका क्या करे।

'मूल जो है, विद्या का मूल्य वह कभी क्या जाने।'

वणिक ने कुक्कुट से जा कहा था 'तेरा दोष नही है मूढ, दम्भ है यह छलना, मानशून्य किया गुसाईं ने। कोई झूठ नही।

कन्हाई राय बोला, यह कैसा? बात नही कराेगे क्या?

हँसकर सीताराम ने कहा, तुमको मैं 'काका' कहता हू, तुम्हारा अनादर करते, अश्रद्धा करते कभी तुमने मुझे पाया यह बताओ?

राय जरा झेंप गया। नही, नही नही।—कहकर ही अपनी आवाज में एक भारीपन लाकर प्रसग को दबाते हुए बोला, ज्योतिष साहा ने आदमी भेजा था। तुमको एक बार शाम को जाने के लिए कहा है।

सीताराम गडुई रख बनियान और कुरता पहनते हुए बाहर निकल गया। क्षण भर की भी देर नहीं लगाई उसने।

साहा की दुकान के बरामदे पर शोरगुल हो रहा है। सीताराम

सामने ही ठिठक कर खडा हो गया। इसी गाँव के बाबुओ के लडके शिवकिंकर से हाथ जोडकर ज्योतिप कह रहा है मुझे माफ कर दीजिये बाबू, मैं हाथ जोड रहा हू। मुझसे नही होगा। दुकान बन्द हो गई है। खाता बन्द हो गया है, अब मैं नही द सकूगा।

लडखडाते स्वर मे शिवकिंकर ने कहा, और नही दे सकोगे ?

जी नही। हाथ जोड रहा हू आपको।

हाथ जोड रहे हो ?

जी हाँ।

जी हाँ ?

ज्योतिप को इस बात का जवाब न मिला।

शिवकिंकर ने एक लम्बी साँस लेकर विजडित स्वर मे कहा, अच्छी बात ! तुम्हारी ही इच्छा पूरी हो।

ज्योतिप की अब निगाह पडी, सीताराम खडा है। उसने पुकारा, आओ, आओ। आओ पण्डित।

अचानक ही एक काड घटित हो गया। शिवकिंकर चबूतरे से नीचे उतर रहा था, रुक गया। बोला, पण्डित ? पण्डित कौन ? पण्डित क्या शराब पीता है ?

सीताराम का पैर से लेकर सिर तक झनझना उठा। क्या कहे उसकी समझ मे नही आया। साहा जी झटपट बोल पडे, जी नही, वह है हमारे बगल के गाँव के रमानाथ मण्डल का बटा सीताराम। नामल पास किया है।

रमानाथ मण्डल का बेटा ?

जी हाँ।

सीताराम ? सीताराम मण्डल ?

जी हाँ।

नामल पास किया है ?

जी हाँ।

यहाँ किसलिए ? शराब नही पीता तो यहाँ क्यो ?

हमारे मुहल्ले मे पाठशाला खोलेगा इसलिए।

यकायक शिवकिंकर हँसने लगा। बोला, मण्डल, मण्डल ! अँय ! मण्डल !

जी हाँ।

चापा ! (खेतिहर) चापा ! अँय चापा पण्डित बना है ! अँय ! चापा शब्द के च का उच्चारण अद्भुत श्लेष-तीखा और अगरेजी 'एस के लहजे से मिलाकर ऐसा तीखा कर डाला है कि वह सीटीदार आवाज एक धारदार हथियार की तरह सीताराम के अतर को छिन्न भिन्न करती हुई-सी लगी। वह सबल युवक है। उसके शरीर का खून मानो खौलने लगा।

ज्योतिप ने झट कहा, छी, आप मद्रसन्तान हैं, बाबू लोग, आपको क्या

इस तरह से बात करना शोभा देता है ?

मतवाला शिवकिंकर नशे में लगातार हँसता ही जा रहा था, कह रहा था, खेतिहर पण्डित और कलवार छात्र ? हलवाहा पण्डित बन गया है, अब कलवार पण्डित होगा। हे हे हे— हे हे हे।

सीताराम अब आगे बढ़ आया— बाबू के सामने जाकर सीना तानकर खड़ा हो गया।

शिवकिंकर ने उसकी ओर कुछ देर देखा। काली सूरत, पत्थर सा सख्त जिस्म और आँखें गुस्से से दमकती हुईं। बिना कुछ कहे वह चलने लगा। सीताराम उसके साथ बढ़ रहा था लेकिन ज्योतिष ने बाधा दी, कहा रहने दो, जाने दो।

कुछ दूर आगे बढ़कर शिवकिंकर फिर हँसने लगा, हे हे-हे—हे हे-हे ! हलवाहा पण्डित और शौंडिक छात्र। कागजम् कलमम् खरचम मात्र।

भद्र घराने के लड़के के मन की कदर्यता देखकर सीताराम स्तम्भित रह गया। ज्योतिष भी धूप से तपी पत्थर की मूर्ति की नाईं वाक्शून्य खड़ा रहा।

●●

चार

एक छोटी सी आकस्मिक घटना से अघटन, अर्थात् जिसकी घटित होने की सम्भावना नहीं थी, बहुधा घटित हो जाता है। घटित हो जाने पर सीताराम उसे भाग्य का खेल कहता है। शिवकिंकर का यह गाली गलौज करना, सीताराम के लिए भाग्य का खेल बन गया। ज्योतिष साहा चन्द क्षण चुप रहने के बाद सीताराम से बोला, तो यही तय हुआ पंडित। तुम पाठशाला खोलो।

सीताराम उस वक्त भी अपने को सम्भाल नहीं सका था। वह शिवकिंकर के जाने के रास्ते की ओर अपलक देख रहा था। शिवकिंकर दिखाई नहीं पड़ रहा था, केवल अंधेरा भाँय भाँय कर रहा है। दिल जले के आवेश से रूखे स्वर में ही बोल पड़ा शिवकिंकर के व्यंग्य श्लेष भरे 'चाषा' शब्द की नकल करते हुए वह बोला, चाषा, चाषा ! चाषा लोग मानो इन्सान नहीं ! कलवार मानो इन्सान नहीं !

ज्योतिष बोला कलवार के दरवाजे पर चक्कर न लगाने पर बाबुओं का दिन नहीं पूरा होता। शराब की दुकान हथियाने के लिए बाबुओं के बेटों ने कितनी कोशिश की। दस बारह दरख्वास्त मेरे खिलाफ भेज चुके हैं मैं रात को शराब-गाँजा बेचा करता हूँ। इसके अलावा—। ज्योतिष हँसा। शिवकिंकर के पथ की ओर उसने भी एक बार देखा, फिर कहा, सिर्फ शराब ही नहीं, बाबुओं को

रुपए की जरूरत पड जाये तो कपडो म गहने छिपाकर लाते और कितनी ही मीठी मीठी बातें करते हैं। जानते हो पडित, दो तीन घरो को छोड ऐसा कोई बाबू नहीं है यहाँ जिसका कुछ-न कुछ हमारे घर पर न हो। इस युद्ध के बाजार मे बाबुओ की जायदाद हमी लोग तीन चार घरो म बनाये रखे हैं।

सीताराम बोला, आप अगर बीच मे न पडते तो आज उसे एक सबक दे देता मैं।

कितनो को सबक दोगे ? ज्योतिष का मुख कठोर-सा हो गया। धीमी आवाज मे बोला, वह तो शराबी है। मुह के सामने बोल गया। यही बात बाबुओ में कौन नही कहता ? हम लोग जाति के साहा हैं, खैर ठीक है। हमारा छुवा पानी नही पीते, हम लोग नीचे जमीन पर बैठते, हमे कलवार कहकर पुकारते हैं। खैर देशाचार चला आ रहा है, शास्त्र में है, बहुत अच्छा। लेकिन हमारे ही नातेदार नरेन साहा डाक्टरी पास करके आया है, क्यो, उसकी दवा पानी मिली दवा पर तो कोई ऐतराज नही करता ? क्यो, उसके बारे मे तो ऐसी बात कोई कह नही पाता ? जानते हो, स्कूल मे उसके बेटे-बेटियो की खातिर तवाजह ही निराली होती है। यकायक ज्योतिष का कठ स्वर गम्भीर हो उठा, बोला, मुझे याद है, स्कूल में पढता था, पढाई में तेज नहीं था। जरा रुका वह। रुकने के बाद फिर बोला, लेकिन यहा के बाबुओ के लडके भी तो कोई अच्छे नही थे। यही शिवशंकर, यह भी तो मेरे साथ का पढा है। हम लोग जो कुछ पढ भी लेते थे, वह नही पढ पाता था। मास्टर उनको कुछ भी कहने की हिम्मत नही करते थे। और मुझसे क्या कहते थे, जानते हो ? कहते, महुआ मिसने वाले जाकर महुआ मिस। ताडी बेच जाकर।

एक गहरी लम्बी सास ली उसने। फिर चुप्पी साधे जाने क्या सोचने लगा। शायद उसी जमाने की ऐसी सारी बाते। सीताराम को भी याद आ गईं। अगरेजी उच्चारण उनके गाँव के और बिरादरी के ज्यादातर लडको का शुद्ध नही होता था। 'ऐम' को 'एम' 'एन' को 'ऐन' 'एल' को 'ऐल' और 'एस' को 'ऐस' यह डालते थे वे। सेकड मास्टर कहते थे 'ऐल नही—'एल', 'ऐम' नही—'एम', 'एन नही 'एन', 'रैन' नही रेल समझे 'एस' 'ऐस' नही है—'एस' है, ऐस हो तुम गधे कही के।

वे लोग शरमिन्दा हो जाते थे। मखौल उडाते हुए वे फिर बताते थे, अच्छी तरह से जीभ छिलोगे, समझे ? अगर हो सके तो लुहार के घर से रेती लाकर घिसकर पतली कर डालोगे। फिर धमकाते हुए कहते थे, अबकी अगर, 'ऐल', रैल कहा तो एक 'बैल' लाकर सिर पर ठोक-ठोक कर सिर तोड डालूगा। छोड दे, छोड दे पढना। जाकर अपना कुल-कम शुरू कर दे।

ज्योतिष साहा ने कहा, तो फिर वही हुआ। तुमको बुलाया था, कहना चाहा था, अब पाठशाला तुम बाबुओ के वहाँ ही खोलो, हमारे यहाँ सब लोग दुलमुलयकीन हैं। तुमने मुझसे कहा था, बृहस्पतिवार को ही पाठशाला खोलना

चाहते हो इसलिए कहा था सबको समझा-बुझाकर देख लूँ। लेकिन—चन्द क्षण स्तब्ध रहने के बाद वह बोला, नहीं, तुम बृहस्पतिवार ही को इस मुहल्ले म पाठशाला खोल दो। कलवार के लड़के, केवट के लड़के पढ़ेंगे, खेतिहर पंडित ही हमारे लिए अच्छा है। हाँ, यही अच्छा है। पक्की बात।

सीताराम बाला, देख लीजिएगा आप, हर साल अगर लड़कों से वृत्ति न लिवा सकूँ, तो—। क्या शपथ लें यह उसकी समझ म नहीं आया। क्षण भर चुप रहने के बाद बोला, देख लीजिएगा, आप देख लीजिएगा।

●●

अगले दिन से पाठशाला खोलने का आयोजन लेकर वह जुट गया। ऐसा उत्साह उसे माँ की सहायता से पाठशाला खोलने के प्रस्ताव पर नहीं मिला था। उस प्रस्ताव के तहत पाठशाला के उद्योग आयोजन म मानो उसके लिए कुछ भी करने धरने को नहीं रह जाता। सारी व्यवस्था ही माँ के हुक्म से हुई होती। और इस पाठशाला के लिए चेष्टा सभी कुछ उसी पर निर्भर है। साहा ने सम्मति दी है कुछ छात्र वह शुरू मे संग्रह कर देगा और पाठशाला के लिए जगह भी वही देगा। साहा न एक नया बखार घर बनाया है, उसी बखार पर म पाठशाला लगने का स्थान निर्धारित हो गया है। साहटोला और केवटटोले के सिरे पर एक तालाब या किनारा है। तालाब के मालिक यहाँ के एक ऋण ग्रस्त बाबू हैं, धन के लिए उसे बन्दोबस्त पर देना चाहा था। साहा के घर के पास ही है यह तालाब। साहा यूँ ही दर्शक के रूप में बन्दोबस्त की बोली देखने के लिए चला गया था। जाने क्या जिद्द चढ गई, सबसे ऊँची बोली बोलकर उसीने बन्दोबस्त पर ले लिया। जब ले ही लिया तो चहारदिवारी से उसे घेरना भी पडा। दीवार से घेरते वह एक कमरा भी बना डाला था। साहा के तीन चार बेटे हैं, भविष्य म काम आएगा।

साहा ने खुद ही हँसकर कहा, किस काम के लिए क्या बन जाता है, किसके भाग्य से कौन भोग करता है, यह कोई भी नहीं बता सकता। इन दिनों सोच रहा था गाँजा-अफीम की दुकान इस ओर ले आऊगा। तो यह घर पाठशाला बन गया। अब सारा आयोजन करो तुम।

एक कुर्सी चाहिए, एक स्टूल, एक मेज भी हो तो बेहतर। बोर्ड—एक ब्लैक-बोर्ड तो चाहिए ही। इसके अलावा एक घडी। पानी के दो घड़े, दो गिलास, दो चार खजूर या ताड के पत्तों की बनी चटाइयाँ। घडे, गिलास आदि आदि बड़े मामूली सामान हैं। चन्द रुपये से ही हो जाएगे। पहले वाले कई सामान के बारे म ही चिन्ता है। इन सब चिन्ताओं से रात को उसे अच्छी नींद नहीं आई। सवेरे उठते ही दूसरे दिनो से तेज रफ्तार वह रत्नहाटा की ओर चलने लगा। हो जायगा, किसी न किसी तरह सबकुछ हो जायगा। 'बिना उद्यम के पूरा होता भला किसका मनोरथ।' कुर्सी-स्टूल मिल जाएगे—यह दोनों अभी वह बाबू के घर से ही ले लेगा—कुछ न हो, मोढे से भी काम

चल जायगा। पेंकिंग केस खरीदकर एक मेजब नवा लेगा। अब सिर्फ घडी और ब्लैकबोर्ड की फिक्र रह जाती है। यहाँ का यामिनी बनर्जी घडी मरम्मत करता है और जरूरत पडने पर नयी घडी भी मगवा देता है। उससे एक टाइम पीस खरीदने से ही हो जायगा। सात-आठ रुपय होने से ही होगा। हालांकि एक क्लाक होता तो बेहतर होता। आधे घटे पर बजेगी, हर घटे पर ठीक-ठीक घटे की आवाज देती रहेगी, बच्चे गिनेंगे—एक दो, तीन, चार—। जापानी घडी सस्ते मे मिलती है इस समय, पन्द्रह, सोलह रुपये मे मिल जायगी। न हो तो यह रुपया वह उधार ले लेगा। लेकिन ब्लैकबोर्ड ? सोचते सोचते इस समस्या का भी समाधान उसने कर डाला। थोडा-सा कटहल का तख्त मिल जाय तो रत्नहाटा के मजे हुए मिस्त्री सतीश से एक छोटा-मोटा बोर्ड बनवा लिया जा सकता है। कटहल की लकडी पर पालिश अच्छा चढेगा, अच्छी तरह पालिश चढाकर मिट्टी के तेल मे तारकोल मिलाकर हल्का सा अस्तर चढा देन से ही हो जायगा। फ्रेम के बदले ऊपर दो कुडे लगा, रस्सी बाध दीवार पर गडे हुक स टाँग दने से ही हो जायगा।

रत्नहाटा पहुँचते ही सतीश मिस्तरी के पास जाकर उसन सारी व्यवस्था कर डाली। जाया करने लायक समय अब कहा ? 'समय बदलता जाय नदी का प्रवाह प्राय' यामिनी बाडुज्जे से एक क्लाक घडी का भी इन्तजाम कर डाला। इसके बाद रुपए का हिसाब लगाया। उसका अपना जो सबल था उससे चार रुपए तो कटहल का तख्ता खरीदने में खच हो गया। और भी दो रुपय मिट्टी का तेल, तारकोल, लोहे की कीलें, कुडा आदि के दाम चुकाने मे। इसके अलावा डोमो से चटाइयाँ भी खरीदनी पडी है। अब सम्बल रह गया कुल छह रुपए।

दोपहर वह बाबुआ के घर के कमरे म खामोश बैठा था। छह रुपय कई बार ठोकने बजाने के बाद एक ठडी साम लेकर उसन तय किया, अब एक टाइमपीस ही ठीक रहेगा। आह, काश मनोरमा पहले आ गयी होती ! उससे कुछ रुपए ले लेने से ही काम बन गया होता। उसे मालूम है मनोरमा का अपना कुछ सचय है। बडी भली सचयी लडकी है। तीस चालीस रुपए हैं उसके पास। जब भी उसे जो कुछ मिला है, सब सचय कर रखा है—पैसा, इकन्नी, दुअन्नी, चौवन्नी, अठन्नी, रुपया सब मिल मिलाकर उसका सचय है। रेजगारी बदल कर रुपया बनाने का ख्याल भी उसे नही हुआ। केवल एक बार उसन खच किया है—कान की पुरानी तरकी तोडकर नई पारसी तरकियाँ बनवाई हैं और अगूठी तुडवाकर लाल नग लगवाकर अगूठी बनवाई है।

अचानक वह उठ खडा हुआ। उपाय उसे सूझ गया है। कमरा बन्द कर वह सीधे केष्टो सुनार के घर जा पहुँचा। नाक की नोक पर आ लटकने वाला चश्मा पहनकर केष्टो काम कर रहा था। चश्मा और भवो के दरार से सीताराम की ओर देखकर बोला, आओ पडित। अपने बेटे को मैं तुम्हारी ही पाठशाला मे दूँगा। बडी मोटी अक्ल है उसकी। जरा ख्याल रखना। बैठो। सामने ही कुछ

मोड़े रखे थे, केष्टो ने उसी ओर सकेत किया।

सीताराम ने अपने हाथ से दो अगूठियाँ खोलकर दी, जरा देखिए तो कितना वजन है। सोना तो गिन्नी साना है, मुझे मालूम।

अगूठियो म एक दी है उसके पिता ने और दूसरी दहेज मे मिली है। बेच दू मैं?

सुनार ने दोनो अगूठिया हाथ म लेकर एक बार सीताराम के मुख की ओर देखा फिर दोनो अगूठियो को दोनो हथेलियो पर लेकर वजन का अनुभव से अनुमान लगाता हुआ बोला, डेढ तोला होगा या छह आना याने एक तोला छह आना होगा। इसके बाद नन्हा तुला यत्र निकाल कर वजन किया। तराजू के सिर पर के धागे को सावधानी से उठाकर बाट की ओर दो घुघचियाँ रखीं, तराजू की काँटी स्थिर हो खडी हो गयी। केष्टो ने हँसकर कहा, एक तोला साढे छह आने।

अगूठियाँ बेचकर सैतीस रुपये कुछ आने हो गए। आज उसने युद्ध के बाजार को धन्यवाद दिया। युद्ध छिडने के कारण बाजार मे मानो आग सी लग गई है। पिछले नवम्बर में युद्ध थम गया है लेकिन आग आज भी बुझी नहीं। सीताराम ने खुद ही कितनी बार कहा है, काल-युद्ध। लेकिन आज सोना बेच इतने सारे रुपये मिल जाने से वह युद्ध छिडने के लिए खुश हुआ। सन उन्नीस सौ उन्नीस माना युद्ध का बाजार।

रुपया लेकर वह पहले ही अनन्त बैरागी के घर गया। बैरागी सिर पर बिसात लिए फेरी करता फिरता है। माला डोरा-आईना कंघी, तेल साबुन और कुछ गिलट के गहने। उसने देखा है बैरागी की दुकान मे काले मखमल के छोटे छोटे खाने म तरह तरह की अगूठियाँ रखी रहती हैं। दो अगूठियाँ छाँटकर उसने खरीद लीं कुछ कुछ उसकी अपनी अगूठियो की तरह। अपने बाबा और मनोरमा को वह यह बात जानने नहीं देना चाहता। बाबा दुखी होंगे, उनकी दी हुई अगूठी उसने बेच डाली है। शायद डाँटें भी, बोलें, तू ही लछमी को भगाएगा। मनोरमा शायद मुह लटका ले, शादी की अगूठी, उसके बाप की दी हुई चीज उसने बेच डाली है।

वे उसके दिल की बात तो नहीं समझेंगे।

इसके बाद वह गया रघुनाथ राजमिस्त्री के घर। तय कर आया, कल सबेरे से ही वह अपने लोगो को लेकर साहा के बखार शुरू हो जाएगा। छोटी मोटी मरम्मत जो कुछ है कर देगा और चूने से घर और बरामदे की सफेदी कर देगा। रघुनाथ को ही चूना और कूची के लिए पैसा दे आया। थोडी दूर आकर फिर लौट गया और बोला, थोडी सी नील लिये बिना ठीक नहीं होगा। नील भी थोडी-सी खरीद लेना।

रघुनाथ ने कहा, तो फिर थोडी सी चीनी भी इसके साथ दीजिए। वर्ना

पकड़ेगा नहीं, बदन का घिस्सा लगते ही सफेदी उठ जाएगी। खल्वाट वाले सिर की तरह नीचे की मिट्टी उघड़ आएगी।

अच्छी बात। कितनी लगेगी बताओ।

चीनी लगेगी आधा पाव और नील। ख़ैर, चार आना पैसा दे जाइए।

जरा और सोच लेने के बाद सीताराम बोला, और भी एक काम का जिम्मा तुमको लेना पड़ेगा। घर का जिम्मा तो तुम्हारा है। बाहर आँगन को भी सलोतर बना देना होगा। सलोतर ढंग से छील-छालकर गोबर मिट्टी से पुताई कर देना पड़ेगा। एक फालतू मजूर और मजूरिन ले लेना। ठीक है न ?

अच्छी बात। यह भी करा दूंगा।

कल हमारा सारा काम खत्म हो जाना चाहिए। आज है मंगल। कल बुध को तुम सबकुछ निबटा दोगे। परसों से ही मेरी पाठशाला खुल रही है, समझे ?

सो आप देख लीजिएगा। शाम को चार बजे आ जाइएगा। सब कम्पिलीट कर रखूंगा। अगर न हो तो मेरा कान उमेठ दीजिएगा, बस।

चार बजे तक वह धीरज न धर सका। छात्रों को पढ़ाकर उसने पोखर में नहाने का काम निबटा लिया। झरने तक जाने की फुर्सत नहीं है आज। नहाकर खाना खा लिया और सीधे पाठशालागृह में जा पहुँचा। सारा काम खत्म कराकर जब वह निकला तो सिर से पैर तक चूने की गर्मी से कट गए हैं। खुद भी वह रघुनाथ के साथ खटता रहा। तिपहर के पाँच बज रहे थे। कुरता-बनियान-जूते पोखर के किनारे रख वह पानी में उतर गया।

तिपहर को घूमने जाना भी नहीं हो पाया। और भी बहुत-सारे काम बाकी हैं। आज उसने जरा चाय पी। मेहनत की है, दो बार पोखर में नहाया भी। चाय पीकर फिर चल पड़ा वह। अब असबाब बाबुओं की कोठी से एक कुर्सी मिली है—साहा ने भी एक दी है। सतीश मिस्त्री के घर से छोटा शेल्फ, मेज और ब्लैकबोर्ड मँगवा लिए उसने। ठीक दरवाजे के सामने दीवार से सटाकर उसने अपनी कुर्सी रखी, उसके सामने मेज, कुर्सी के दाहिने हाथ दीवार पर उसने ब्लैकबोर्ड टाँग दिया, इस ओर बड़े दो हुकों से पैकिंग बाक्स से बने शेल्फ को जड़ दिया। कुर्सी के ठीक सिर के ऊपर ढाई इंच लम्बी कील मजबूती से ठोककर उस पर क्लाक घड़ी लगा दी। दम देकर घड़ी को चालू कर दिया। मुहल्ले के छोटे छोटे लड़के इकट्ठे हो गए थे। उनके उत्साह की भी कोई ओर-छोर नहीं। उनके लिए पाठशाला बन रही है, यहीं वे पढ़ेंगे। इसी बीच वे सीताराम को मास्टर जी कहकर पुकारने लगे हैं। घड़ी को चालू कर उन्हीं लड़कों में से एक सयाने को बुलाकर कहा, साहा जी की दुकान से पूछ आना कितने बजे हैं। कितने बजकर कितने मिनट ठीक ठीक पूछ कर आओगे।

दूसरे एक से कहा, तुम जाओ, यह चाबी लेकर धीरानन्द बाबू के घर चले

जाओ। कन्हाई राय होगा, उसका देना, कहना, मास्टरजी की लालटेन दे दीजिए।

फिर वह घड़ी की सूई घुमाने लगा। नौ पर सूई थी। सावन का महीना, शाम हो आई है। इस वक्त कम से-कम साढ़े छह, पौने सात बजा होगा। दस, ग्यारह, बारह—टन्न-टन्न शब्द से घड़ी टकोर बजा रही है। बढ़िया आवाज और तेज आवाज!

मास्टर जी!

सीताराम चौंक पड़ा। धीरा बाबू की आवाज है। वह झट कुर्सी से उतर पड़ा। कमरे से बाहर निकल आया। उसका दिल आवेश से भर आया। आप धीरा बाबू?

धीरानन्द ही है। वह अकेले नहीं, श्यामू-देबू भी आए हैं, साथ कन्हाई राय के दो हाथों में दो लालटेन। उनमें से एक सीताराम की है।

धीरानन्द बोला, देखने आया कि आपकी पाठशाला कैसी हुई? श्यामू-देबू भी आए हैं।

सीताराम ने देबू को गोद में उठा लिया। देबू अपनी हँसी छिपाने की कोशिश में दाँतों से होंठ दबाये मुह फेरे रहा।

धीरानन्द बोला, वाह! बहुत अच्छा, बहुत खूब!

अकारण ही सीताराम शर्मा गया। फिर कुंठित स्वर में बोला, पाठशाला जो है।

धीरानन्द बोला, पाठशाला से कहीं बेहतर बना है। वाह! घड़ी तो नई देख रहा हूं।

सिर झुकाये सीताराम ने कहा, क्यों खूबसूरत है न?

इसी क्षण सीताराम ने खुद ही एक ऐब ढूढ लिया। बगल की दीवार पर जैसे घड़ी लगी है वैसा ही उधर वाली दीवार पर अगर एक चित्र होता।

धीरानन्द ने कहा, बहुत अच्छा हो। एक दीवार पर नहीं, तीन दीवारों पर तीन—स्वामी विवेकानन्द, महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और एक—विद्यासागर का चित्र तो मिलता नहीं एक माता सरस्वती का चित्र! बड़ा ही अच्छा लगेगा।

धीरानन्द की बात सीताराम को भा गई। उसके मुह की ओर देखता रहा। उसे लगा, काश यह लड़का छोटा होता! यह अगर उसका छात्र होता। ऐसा न हो तो छात्र ही क्या!

धीरानन्द बोला, इसके बाद हाथी, घोड़ा, शेर, गाय भैंस, साँप इनके कुछ रंगीन चित्र मंगवा लीजिएगा। दीवार पर टाग दीजिएगा। लड़कों को बेहद पसन्द आएँगे।

फिर उसने कहा, पाठशाला का नाम क्या रखा आपने? नाम दीजिए—सन्दीपन पाठशाला। सन्दीपन मुनि की पाठशाला में श्रीकृष्ण ने पढ़ाई की थी।

इस बरामदे की दीवार पर मोटा-मोटा लिख दीजिए। या खुद ही एक साइन-बोर्ड बना डालिए।

सीताराम विस्मय से मुग्ध-सा सुन रहा था। पहले दिन बाहर से इस लड़के की बातें सुनकर जैसी अद्‌भुत लगी थीं, इन दस दिना के बाद फिर उसकी बातो से वैसा ही विस्मय जाग उठा।

कन्हाई राय बोला, चलिए भैया साहब।

चलो। धीरानन्द उठा।—आप भी आइए मास्टर जी।

आप चलिए। मैं जरा बाद मे आ रहा हूँ। लेकिन देबू तो सो गया है।

धीरानन्द बोला, यह बड़ा चचल है, जरा स्थिर होते ही सो जाता है। रामजी, तुम उसे ले लो।

वे चले गए। सीताराम अकेला बैठा रहा। मेज पर लालटेन रख, कुर्सी पर बैठे बाहर अँधेरे की ओर देखता रहा वह। उसकी पाठशाला! बच्चे शोर मचाते पढते रहेंगे, वह बैठा रहेगा। तीखी नजरो से देखता रहेगा, जिसकी जहाँ गलती होगी सशोधन करता रहेगा। वे सारे लोहे के पिंड हैं। वह लुहार है। वह लोहे के पिंड से तरह-तरह का हथियार बना डालेगा। अथक मेहनत से उसके बदन से पसीना चू पड़ेगा। जतन से उनके धार पर सान चढाकर तेज करेगा। साल-दर-साल लड़कों मे कुछ तो लोअर प्रायमरी पास कर चले जाएगे, वे बड़े स्कूलो मे जायेंगे, वहा से कालेज चले जायेंगे। कितने लोग जीवन में कृती बनेंगे। भेंट होते ही सविनय सम्मान से 'पंडित जी' कहकर उसको सम्बोधित करेंगे! यहाँ पढाते पढाते वह प्रौढ हो जाएगा, वृद्ध होगा, सिर के बाल सफेद हो जायेंगे, क्षीण दृष्टि वाली आँखों पर ऐनक चढाए वह तब भी पढाता रहेगा। वे उसके चारो ओर रहगे, नन्हें-नन्हें मुख कलरव करते हुए पढेंगे।

घडी मे टन्न-टन्न दस बज गये। काफी रात हो गयी है, बाबू की कोठी मे भोजन समाप्त होने का समय हो आया। वह उठा। लालटेन लेकर फिर एक बार कमरे को देखा। फिर दरवाजे पर ताला लगाकर आँगन में उतर आया। उसकी पाठशाला। आह!

आँगन मे एक बगीचा सा बनाना है। छोटे छोटे कुछ खुरपे और दो छोटी छोटी बालटियाँ खरीदेगा। लड़के पौधो के लिए जगह खोदेंगे, पोखर से पानी लाकर जड़ें सींचेंगे,—चारों ओर फूल खिले रहेंगे, सुन्दर शोभा होगी।

लड़कों को एक फुटबाल भी खरीदकर देना है। कई कदम जाकर उसे याद आया, घडी के नीचे दम भरने का दिन लिख देना होगा—बुधवार, सन्ध्या सात बजे।

रोजाना सबेरे उठकर वह पुण्य श्लोकों का स्मरण करता है। बचपन से ही पिता से उसने यह सीखा है। बाबा जो कहते हैं बचपन में जो उसने सीखा था उसमें कुछ गलतियाँ हैं। इस समय वेशक वह शुद्ध श्लोक ही कहता है। आज उसने प्रगाढ़ भक्ति के साथ उस श्लोक का उच्चारण किया। सरस्वती की

मूर्ति मन-ही-मन कल्पना की और सिद्धिदाता गणेश का स्मरण किया। फिर उसने पुण्यश्लोक महात्माओं का स्मरण किया। रामकृष्णदेव को प्रणाम किया, उस नामल पास पंडित जी का स्मरण किया, प्रणाम किया, यहाँ के हेडमास्टर का भी स्मरण किया, प्रणाम किया। साथ ही साथ उसे याद आ गयी महात्मा हाजी मोहम्मद महसीन की मूर्ति। उनको भी प्रणाम कर वह दरवाजा खोल कर निकल आया। बाहर निकल कर वह बहुत खुश हुआ। सामने ही बाग में भोर के झुटपुटे में पक्की वेदी पर धीरानन्द बैठा था। अहा, भले आदमी का मुख ही देखा, दिन अच्छा बीतेगा। आज दिन अच्छा जाने का मतलब हुआ— उसकी पाठशाला का भविष्य अच्छा होगा। पिछली रात वह घर नहीं गया। सवेरे से ही बहुत-सारा काम करना है। मुस्कराते हुए आगे बढ़कर उसने धीरानन्द से कहा, वाह आप तो बहुत सवेरे उठते हैं!

धीरानन्द कुछ लिख रहा है। उसने कहा, जी। लिखता ही रहा वह। सीताराम ने इस छोटे-से उत्तर की प्रत्याशा नहीं की थी। वह जरा खिन्न हुआ। फिर भी कुछ क्षण खड़े होकर बोला, आज आपको प्रणाम करूँगा।

क्यों? प्रणाम क्यों करेंगे?—बिना मुख उठाए ही धीरानन्द बोला।

आज अपनी पाठशाला खोलूँगा।

लेकिन मैं तो किसी का भी प्रणाम नहीं लेता, अपने सगे लोग, याने— भाई-बहनों के सिवा।

मैं भी तो आप लोगों का अपना ही बन गया हूँ।

धीरानन्द लिखता ही रहा, जवाब नहीं दिया।

सीताराम विस्मित नहीं हुआ, लेकिन उसे लगा, यह धीराबाबू की अधिकाई है, कुछ कुछ भानबाजी जैसी ही। वह बिना प्रणाम किए ही धीरे धीरे निकल गया और भरसक जल्दी लौट आया। बहुत-सारा काम है। शुभ कार्य, अपने जीवन की साध पूर्ण करने वाला कार्य आरम्भ करेगा वह। गाँव के सारे देव मन्दिरों में प्रणाम करना है। फिर यहाँ के ग्राम देवता—जाग्रत बूढ़ी काली माता के थान पर पूजा कराएगा। पूजा के अन्त में निर्माल्य लेकर कपड़े के टुकड़े में बाँधकर पाठशाला के दरवाजे के सिर पर बाँध देगा। माँ का प्रसादी सिंदूर लेकर दरवाजे के सिरे पर लिखेगा—सिद्धिदाता गणेश जयति! उसके नीचे पाठशाला खोलने की तारीख लिख रखेगा, २० श्रावण, सन् १३२६ बंगाब्द।

झरने से लौटकर देखा, धीरानन्द अब और लिख नहीं रहा है, लिखा हुआ पढ़ रहा है। गड़ुवा रखकर, बनियान-कुरता पहनकर निकल जाने के लिए सीताराम ने कमरे में ताला लगाया। सवेरे सवेरे जाकर मन्दिरों में प्रणाम कर आएगा।

धीरानन्द बोला, कितनी दूर घूम आए?

झरना तक।

मैं भी रोज सवेरे टहलने जाता हू लेकिन आज हो न सका। बड़ी नींद आ रही है।

शायद बहुत सवेरे उठे होंगे, इसलिए।

नही, कल रात को बिल्कुल सोया ही नही। रात-भर मे एक कविता लिखी है।

कविता—सीताराम दग रह गया, इतना-सा लड़का कविता लिखता है! उसने पूछा, कविता लिखी आपने?

जी। लेकिन अभी फिर कहाँ जाएँगे?

देवी-देवताओं को जरा प्रणाम कर आऊँ। एक शुभ कार्य करने जा रहा हू।

जरा चुप रहने के बाद घोरानन्द ने कहा, लेकिन एक बुरी खबर दे रहा हू। रघुनाथ राज का बेटा आया था आपकी खोज मे। कल रात को कुछ लोग पाठशाला के आँगन मे उपद्रव मचाते रहे। उन लोगो का घर नजदीक ही है। उन लोगो ने देखा है। दारू आदि पीकर नाचते-कूदते रहे हैं शायद। कुछ नुकसान भी पहुँचाया है। बाबू टोले के चन्द लोगो के नाम भी बताए।

सीताराम का दिमाग झनना उठा। वह फौरन भागने लगा।

ठहरिए, मैं भी जाऊँगा।

••

पाठशाला में घुसकर सीताराम स्तम्भित रह गया।

साफ सुथरे आँगन और बरामदे को कदर्य रूप से गन्दा कर गये हैं। जूठे पत्तल, माँस का अवशेष हड्डियो के टुकडे चारों ओर पड़े हैं। मिट्टी की जूठी हाँडी तोड़कर चारो ओर बिखेर दी गयी है। बगाबग सफेद दीवार पर लकड़ी के कोयले से लिखा है—किसान-किसान किसान, कलवार कलवार-कलवार। एक सस्कृत श्लोक भी लिखा है। उसकी भाषा विचित्र है और भाव भी—

"अश्वपृष्ठे गजस्कन्धे यदि वा—
दोलायाम् याते—
न किसान सज्जनायते।"

आँगन दुर्गन्ध से भर गया है। नीचतम ढग से आँगन को मैले से भर दिया है। इसी बीच दर्शक भी बहुत-सारे इकट्ठे हो गए थे। नाक कपड़े से दबाए उनमे से कुछ तो इन बुरी हरकत करने वालो को बुरा भला कह रहे हैं और कोई-कोई इस रसिकता कि रसग्राही जैसे मुस्कराकर धीमे स्वर मे उनकी तारीफ कर रहे हैं। सीताराम मिट्टी का बुत सा बना निर्वाक निस्पन्द-सा खड़ा रहा। ऐसे निष्ठुर और नीच अपमान का दुःख उसको जीवन मे कभी झेलना नहीं पड़ा था। कहीं शिवकिंकर उसे पकड़कर रास्ते पर हजार लोगों के सामने बेवजह जूता खोल कर मारता तो भी इतना दुःख न हुआ होता। ज्योतिष साहा भी आ पहुँचा, वह भी शुरू में सन्नाटे म आ गया। फिर वह सजग हो उठा। निगाह घुमाकर चारों ओर के लोगो को देख उसने व्यस्त भाव से कहा, ऐ, जरा मेरे

घर जाकर झाड़ू-पंजा तो लेते आना। रघुनाथ, रघुनाथ हो ?

रघुनाथ था। उसने कहा, जी।

सफेदी है और ?

हाँ शायद थोड़ी-सी बची है।

हो तो बेहतर, वर्ना देखभाल कर ले आओ। दीवार पर की लिखावट घिस कर पोंछकर सफेदी पोत दो। जाओ, जाओ, देर मत लगाओ। यह लो, झाड़ू पंजा ले आए ? अरे भाई, चार आने पैसा दूँगा, कोई पंजा से खुरचकर सारा मैला फेंक दे।

किसी ने भी आहट नहीं दी। सभी लोग खिसकने लगे। जी, यह काम कौन करेगा ?

आठ आना पैसा दूंगा।

एक ने कहा, अजी, समूचा एक रुपया देने पर भी यह नहीं होगा। मतिया मेहतर को बुलवा भेजिए।

अचानक ही एक विस्मयकर घटना घटित हो गयी, धीरानन्द ने आगे बढ़कर पंजा उठा लिया, बिना कुछ कहे सुने !

फिर बोला, परेशान मत होओ ज्योतिष ! मतिया को ग्यारह बजे से पहले नहीं पाओगे।

लेकिन, तो फिर आप क्यों ! लाइए, लाइए मुझे दीजिए।

मुझे इसकी आदत है। मतिया से झगड़कर अपने घर का ड्रेन मैं सालभर साफ करता रहा हूं। मुहल्ले में कुत्ता मरने पर उस लावारिस सड़ते जानवर को मैं ही फेंक आता हूं। धीरानन्द हँसा।

सीताराम इस बार आगे बढ़ आया, उसकी निस्पन्द जड़ता इतनी देर में एक विपरीत भाव के आघात से दूर हो गई। उसने कहा, नहीं, मुझे दीजिए। मेरी पाठशाला है।

उसका चेहरा तमतमा रहा है, होंठ फड़क रहे हैं। धीरानन्द बोला, यह तो मैं फेंक आऊँ। इसको लेकर खींचातानी करने में तो कोई फायदा नहीं। यही उसने किया, मैला फेंक आया और पंजा सीताराम के हाथ में देते हुए बोला, आपकी पाठशाला है, आप तो करेंगे ही लीजिए।

सारी कीच मानो धीरानन्द ने पोंछ दी। फिर सारा का-सारा साफ-सुथरा कर, नहा-धोकर जब वह देवस्थान में जाने के लिए तैयार हुआ तो उसका मन दिव्य प्रसन्नता से भर उठा था। सभी देवस्थानों में प्रणाम कर बूढ़ी काली माता को पूजा चढ़ाकर वह पाठशाला जा पहुँचा। उतनी देर में मुहल्ले के मातबर लोग बरामदे पर आ जमकर बैठ गए थे। ज्योतिष साहा ने किसी मजदूर से आम के पल्लव मूंज की सुतली में पिरोकर बरामदे के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक टंगवा दिए हैं, दरवाजे के दोनों ओर दो जल भरे कलशों के मुख पर भी आम्रपल्लव हैं। और इन दो कलशों के बगल में केले के दो छोटे छोटे दरख्त।

आँगन मे लडको की भीड। वे शोरगुल कर रहे हैं। सीताराम प्रसादी निर्माल्य लेकर आँगन में ही खडा हो गया। उसे बडा अच्छा लगा। सुबह मन जितना दु ख से बोझिल हो गया था, क्षोभ से जहरीला हो उठा था, उससे कही ज्यादा सुख और आनन्द से उसका दिल भर उठा। दुनिया मे बुरे आदमी जितने हैं, नेक आदमी उनसे कहीं ज्यादा हैं पाप से पुण्य अधिक है। इसमे उसे आज कोई सन्देह नही। भगवान के सिरजे हुए जो है वे ! इस क्षण भगवान का फिर एक बार स्मरण कर, प्रणाम कर, वह बरामदे पर उठ आया।

निर्माल्य बाँधना, नाम लिखना खत्म कर वह कुर्सी पर बैठ गया।

ज्योतिष बगल की कुर्सी पर बैठा। लो, भरती शुरू करो। मेरे बेटे का नाम लिखो पहले—सीतेश चन्द्र साहा। ओ बेटा सीतेश, मास्टरजी को प्रणाम कर। दे, भरती की फीस दे दे। हाँ। क्यो स्वणकार काका, तुम्हारा बेटा कहाँ है जी ?

एक-एक कर सोलह लडके भरती हुए। उसके प्रसन्न मन को यह सोलह सख्या भी बेहद भा गई। सोलह, शुभ सख्या है, पूर्णता का लक्षण।

तिपहर को चार बजे छुट्टी। छुट्टी दे, सबकुछ सहेज, दरवाजे पर ताला बन्द कर जब वह रास्ते पर निकल आया, थकान से वह चूर चूर हो रहा था। चाबी साहा जी को देनी है, उन्होने सोने के लिए एक आदमी की व्यवस्था की है।

एक भूल हो गयी है। टिफिन के वक्त भी याद पडी और छुट्टी के वक्त भी। एक घण्टा चाहिए। टन टन ध्वनि के साथ स्कूल बैठेगा। टन-न न न शब्द के साथ स्कूल मे छुट्टी होगी। उसे अपने पाठयजीवन की बातें याद हो आईं। स्कूल लगने का घटा बजता मानो वह पुकारता रहता। फिर छुट्टी का घटा। अहा ! यह आवाज लडको के कानो मे कितनी सुहावनी लगती। घटा एक चाहिए ही।

एक अफसोस ! धीराबाबू ने ऐसा बरताव किया, माँ ने इतना आशीर्वाद दिया, लेकिन श्यामू-देबू को उसकी पाठशाला मे किसी तरह से भी भरती नहीं किया। उन्होंने कहा—कई तरह के सोहबत-सगत से बचने के लिए ही तो घर पर तुमको रखा है बेटा ! तुम्हीं तो उनको पढाओगे।

ट्रेन की सीटी बजी कही दूर, गाँव के स्टेशन पर, सीताराम चौंक पडा। पाँच बजे वाली ट्रेन से मनोरमा आएगी। जी मे आया लपक कर जाय। अगले ही क्षण वह अपने से झेंप गया। आज नही, यह तो कल है। आज बृहस्पतिवार है।

●●

पाँच

बृहस्पतिवार को ही छुट्टी ली थी उसने बाबुओं की कोठी से। शुक्रवार सबेरे उसे ख्याल हुआ कि शुक्रवार की भी छुट्टी उसे लेनी चाहिए थी। आज मनोरमा को लेकर बाबा आएँगे। पाठशाला खोलने की तरह यह भी उसकी साध का एक दिन है। लेकिन मारे लाज के वह बता नहीं सका। मनोरमा के आने से पूर्व जो-जो काम उसने करने को सोच रखे थे उनमें प्राय कुछ भी वह नहीं कर सका। कई रोज ये बातें सोचने का मौका ही उसे नहीं मिला, मौका क्यों, मानो ध्यान ही से उतर गयी थीं। कमरे को खेत-मजूर और उसकी बीवी ने खड़िया मिट्टी से पोत दिया है। बाबा ने बड़ा तख्तपोश मरम्मत के लिए भेज दिया था, मतिलाल बढ़ई ने उसे पहुँचा दिया है, लेकिन वह बाहर ही पड़ा है। बड़ा शेल्फ जो उसने बनवाया है, वह भी रत्नहाटा के सतीश मिस्त्री के घर से लाया नहीं गया। नायब जी अलगनी ले आए हैं, वह बाबुओं की कोठी में पड़ी है। ख्वाहिश थी चार पाँच रुपए से एक टाइमपीस या पाकेट वाच खरीदने की, रुपए में कमी होने से नहीं खरीद सका। उसे याद आया, वहाँ एक दवा की दुकान से दो पैकिंग केस उसने और खरीदे हैं। पुराने कपड़े या रंगीन अंगौछे से ढाँप कर रखने से अच्छा दिखेगा। एक के ऊपर रहेगा मनोरमा का बक्सा। दूसरा तख्तपोश के बगल में रखने पर लालटेन, पानी का गिलास, पान मसाला रखे जा सकेंगे। बिस्तर पर लेटे मनोरमा के न आने तक किताब इत्यादि पढ़ेगा वह, किताब रखी जा सकेगी। इच्छा है कि एक साप्ताहिक अखबार वह रखे। पाठशाला में टिफिन के वक्त कुछ पढ़ेगा, शेष रात को घर लौटकर पढ़ेगा, उसको भी उसी पर रखेगा। एक और इच्छा है उसकी, रात को घर लौटते समय बाबुओं की कोठी से कुछ फूल ले आएगा वह। बाबुओं की कोठी में रजनीगंधा, बेला, जूही फूल के कई पौधे हैं और एक है मालती लता की बेल, अनगिनत फूलों से लदी रहती है, शाम को सारी कोठी माना सुगन्ध से मतवाली बनी रहती। हर शाम कुछ फूल बाबुओं की कोठी का नौकर चुनकर धीराबाबू के पढ़ने के कमरे में दे आता है। कभी-कभी डंठल समेत रजनीगंधा काट कर ले जाता है। फूलदान में पानी भर उसमें लगा देने से, कहते हैं, बहुत दिन तक रहता है। रोजाना रात को वह फूल ले आया करेगा। फूलों को काँसे की तश्तरी पर सजाकर उसी बक्से पर रखेगा। लेकिन दोनों पैकिंग केस रत्नहाटा में हैं—उसी दुकान में पड़े हैं। खड़िया मिट्टी से पुती हुई दीवार पर खिड़कियों-दरवाजे-ताखे के ऊपर गेरू मिट्टी से चन्द अल्पना अंकित करने की इच्छा थी—सो भी नहीं हो सका। कुछ चित्र उसके संग्रह में हैं, हुगली में पढ़ते वक्त मासिक-पत्र से काट-काट कर एक कापी में रख दिया है, उनमें से कुछ को दफ्ती पर गोंद से चिपकाकर उसके चारों ओर काले कागज की बारीक पट्टी जैसी लगाकर टाँगने की कल्पना भी उसकी है। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। न

हुआ हो, होगा। सबसे बड़ा काम तो हो गया है, पाठशाला तो खुल गयी है। यही उसका सबसे बड़ा आनन्द है। अब यह सब भी वह एक एक करके कर डालेगा। जय भगवान—कहकर वह लेट गया।

सबेरे उठ कुरता, बनियान, लालटेन, लाठी, छाता लेकर निकलने के बाद भी गांव के सिवान से वह लौट आया। किसी तरह से भी उसे जाने की इच्छा नहीं हुई। सबेरे से दस बजे तक सहेज लेने पर वह काफी कुछ सहेज लेगा।

खेत मजूर को लेकर उसने पहले ही तख्तपोश को कमरे मे लाकर रख दिया, कमरे के दक्षिण पूर्व कोने मे। सिरहाने एक खिड़की और बगल मे भी एक। खिड़की हालांकि नाम से ही, यो चौड़ाई में एक हाथ और लम्बाई मे बस डेढ़ हाथ। खैर जो है सो है। पुराने जमाने का घर है। छोटी है तो क्या, है तो खिड़की ही। फिर उसने खेत-मजूर से कहा, रत्नहाटा चला जा तू। दौड़ते हुए जाना और आना पड़ेगा। पहले जाना बाबुओ की कोठी मे। बताना, इस बेले मैं जा नही सका। अगर पूछें, क्यो ? तो बताना,—। वह चुप हो गया।

क्या बताऊ ?

बताना—। और भी कुछ देर सोचा, झूठमूठ तबियत खराब होने की बात बताते सकोच हुआ। सच्ची बात उम्दा ढग से कैसे बतायी जाय इसको सोच न पाने पर उसने कहा, बताना, यह तो वे ही आकर बताएगे। हाँ, वहाँ जिस कमरे में मैं रहता हू उस कमरे मे एक नई अलगनी, लकड़ी की बनी अलगनी, नायब जी बर्धमान से खरीद लाये हैं, उसको ले लेना, कन्हाई राय से कहते ही वह निकाल देगा। यह रही कमरे की चाबी। दवा वाली दुकान मे दो लकड़ी के बक्से खरीदे रखे हैं। बताना, सीताराम मास्टर का किसान हू मैं, मुझे दे दें। हल्के बक्से हैं, उन दोनो को लेने के बाद सतीश बढ़ई के पास जाना। वहा और एक लकड़ी का सामान है।—सतीश से कहना, लकड़ी वाली वह टॉड दे दो। वह भी बहुत हल्की है। एक के ऊपर दूसरा, दूसरे के ऊपर तीसरा—यों सजाकर सिर पर धरे सनसनाते हुए चले आना, समझे ? तेज चाल जाना और तेज चाल आना। इसके लिए तुझे दो आने पेशगी दे रहा हू, जल्दी जल्दी लौट आओ तो और दो आने मिलेंगे।

खेत मजूर चला गया। खेत मजूर की बीवी से कहा, कमरे की फर्श और आँगन को अच्छी तरह लीपपोत दो भौजाई। तुमको भी दो आने मिलेंगे।

किसान वधू कोई तरुणी नहीं है, अधेड़ उम्र की है, उसने सीताराम को किशोर वय से देखा है, देवर का सम्बन्ध बनाकर बातचीत करती है, हँसकर बोली, आज पैसा नही लूंगी। आज तुम्हारी दुल्हन आएगी, आज जो कुछ भी कहोगे अच्छी तरह कर दूगी। लेकिन दुर्गा पूजा में कपड़ा लूगी। क्यो, भागते क्यो जी ? ओ देवर !

अभी आया। सीताराम लपककर निकल गया। अच्छी जवाबदेही मिल गई उसे। खेत-मजूर को पुकार कर लौटाया और बोला, अगर बाबुओं की कोठी मे

पूछें क्यों नहीं आया तो बताना—

जी हाँ, कहूँगा, वह तो वे आकर बताएँगे।

नही। बताना—बाबा घर पर नही हैं, घर का कोई काम है, इसलिए इस बेले नही आ सके। सीधे पाठशाला आएगे। क्यो?

जी, ऐसा ही बताऊगा।

यकायक ही सच्ची बात कितने बेहतरीन ढग से उसे याद आ गयी है। बात बताकर खुश खुश वह घर लौट आया। रास्ते मे एक गली में घुसकर थोडा सा जाते ही जुलाहो का घर है। दो बढ़िया रगीन अगोछे लाने हैं। ओफ! बडी गलती हो गयी। कुछ छोटी कीलें लाने के लिए कह देता। उसने आकाश की ओर देखा। आँगन मे छाया देखी। किसी जमाने मे आँगन की छाया देखकर वह स्कूल जाया करता था। सावन के महीने मे शायद यहाँ—सीढ़ी के बीच पूरब वाले घर की छाया आ पडने पर साढे नौ बजते थे और, और वे स्कूल जाते थे। अब भी काफी समय है। पाठशाला ग्यारह बजे है, वह यहाँ से दस बजे जाएगा। तंतुवाय के घर से अगोछा खरीद लाने के बाद उसने चित्र निकाले। गोद तैयार कर वह चित्रो को तैयार करने लगा।

बाबुओ के साथ सम्पर्क करने मे उसे मानो कोई सकोच है। हाथ का काम अधूरा छोड उसी समय वह बाबुओ की कोठी की ओर दौड पडा। ठीक वक्त पर ही वह पहुँचा—साढे दस से पाच मिनट पहले ही। इरादा था कि वहा नहाकर खाना खा लेगा, फिर पाठशाला जाएगा। लेकिन रत्नहाटा पहुँचने के बाद बाबुओ की कोठी के नजदीक आकर उसने एक सकोच का अनुभव किया। अगर न आने का कारण पूछ बैठें? पूछें, कौन सा ऐसा काम था जी? तो वह क्या कहेगा? आज मनोरमा आएगी, उसी के लिए घर द्वार जरा सहेज कर रख रहा था—यह क्या कहा जा सकता है? इसके अलावा, सीताराम का दिल धडक उठा, अगर कहें—इस तरह नागा करने से क्या काम चलता है? कहना कोई नामुमकिन तो नही है। माँ शायद मधुर लहजे मे कहेंगी, हीराबाबू घुमाफिरा कर। लेकिन वह मँगा नायब जी शायद सीधे-सीधे ही कह डाले, यहाँ तक कि कन्हाई राय भी कह सकता है। उस मध्यपदलोपी कर्मधारय और उपपद इन दोनो पर क्रमश मानो उसका मन विरूप होता जा रहा है। नायब का नाम रखा है उसने मध्यपदलोपी कर्मधारय, सभी कुछ में हैं कोई भी नहीं हैं, लेकिन वे ही सबकुछ घटित कराते हैं। कन्हाई राय नितान्त अप्रधान होते हुए भी सभी बातो मे है, अधिकार हो चाहे न हो, रोब झाडेगा ही, इसलिए उसका नाम रख छोडा है 'उपपद।' वे अगर जवाब तलब करें तो जवाब न देने से शायद उसकी इज्जत बरकरार रहेगी, लेकिन बिना काम किये खाने के लिए जा पहुँचने पर, अपमान उसका हो जायगा खुद ही कर बैठेगा, इससे न जाना ही बेहतर है। वह लौटा। बिना नहाये, बिना खाये आकर पाठशाला खोलकर वह बैठ गया।

छुट्टी के बाद वह बाबुओं की कोठी गया। लेकिन इस बार भी उसकी शका झूठी साबित हो गयी। नायब ने हँसकर कहा, क्यो पडित, मिठाई कहाँ ?

मिठाई ?

कन्हाई ने हँसकर कहा, ससुराल की।

नायब बोला, दुल्हन आयी ? अरे नही, शायद पाँच बजे वाली ट्रेन से आएगी !

सीताराम के कान शर्म से लाल हो उठे। वह समझ गया कि निगोडे खेत-मजूर ने सबकुछ बता दिया है।

कन्हाई बोला, जाओ, कोठी के भीतर तो जाओ। श्यामू-देबू जिद्द पकडे बैठे हैं, मास्टर जी की दुल्हन देखेंगे।

सीताराम आनन्द से उच्छ्वसित हो उठा और उस बेले के सकोच के लिए लज्जित अनुभव करने लगा। नायब और कन्हाई के प्रति विरूप मनोभाव के लिए ग्लानि भी कोई कम नहीं हुई। उसने निश्चय किया, ठगे जाना ही है अगर तो आदमी को नेक समझकर ठगे जाना ठीक है। बुरा सोचकर ठगे जाने से बढकर कोई अपराध नही, उसमें अपने ही निकट अपराधी बनना पडता है। इस क्षण उसने यही सकल्प लिया।

श्यामू और देबू लड झगड रहे थे। कोठी मे कोई और नही। अकेले मे द्वद्वयुद्ध काफी जोर पकडे है, श्यामू बडा है, देबू उससे मुकाबला नही कर पा रहा है, जमीन पर गिर रहा है, मुह लाल हुआ जा रहा है, लेकिन अजीब लडका है, रो नही रहा है। सीताराम जरा हँसकर आगे बढ गया, छोडो, छोड दो श्यामू !

ऐसे ही समय माँ निकल आयी। वे भी बोली, श्यामू ! देबू !

सीताराम ने देखा, माँ के गले की आवाज से करिश्मा हो गया, श्यामू हट आया लेकिन देबू उठा नही, निश्चल सा जमीन पर पडा रहा।

सीताराम ने सस्नेह उसे उठाना चाहा, लेकिन वह किसी कदर उठेगा नही। कोई अवलम्बन न मिलने से वह आँगन को ही नाखून से खरोचकर पकडना चाहता था। सीताराम ने हँसकर उसे गोद मे उठा लिया। वह क्षण भर मे फफककर रो पडा और दोनो हाथो से पागल की तरह मास्टर के मुह पर घूसा-चाँटा मारने लगा। सीताराम परेशान सा हो उसे दोनो हाथो से झुलाये जरा दूर टागे रहा। वह अब दोनो पैर फेंकने लगा। अपनी पराजय की लज्जा से वह बेहद अपमानित और क्षुब्ध हो उठा है।

माँ ने फिर एक बार कहा, देबू !

देबू के पैर निश्चल हो गए, दोनो हाथ शिथिल पड गये, सिर झुक गया, लकवा मारे मरीज की तरह।

माँ बोली, सीताराम, उसे उतार दो यहाँ—उतार दो।

सीताराम उस आदेश का उल्लघन करने का साहस नही कर सका—उस कठस्वर के आदेश का।

माँ ने कहा, देबू, तुम्हारे इस कसूर के लिए तुम स्टेशन नहीं जा सकोगे, मास्टर जी की दुल्हन देखने के लिए। श्यामू ! तुम कमीज पहन लो।

सीताराम चुप खड़ा रहा। बड़े लोगों के घरों का शासन भी अजीब है। उसे लगा, इस मामले में वह मानो बहुत छोटा हो गया है। उसे लगा, ऐसी शासन पद्धति जिन लोगों की है, उनको पढ़ाने की योग्यता उसमें नहीं है। उसकी बड़ी इच्छा थी कि श्यामू का हाथ थामे और देबू को गोद में लेकर वह स्टेशन जाएगा। मनोरमा को दिखाएगा। दिखाएगा, उसके दो छात्र कैसे हैं। लेकिन इस घटना के बाद यह बात उठाने की हिम्मत नहीं पड़ रही है उसे।

माँ ने कहा, बहू को यहाँ नाश्ता पानी करा ले जाने में क्या कोई असुविधा होगी बेटा ?

सीताराम बोला, और एक दिन आ जाएगी। आज—। रूठ करके ही उसने यह कहा। वर्ना इच्छा थी उसकी। पाठशाला भी दिखाने की इच्छा होती है, लेकिन कुछ खिन्न मन से श्यामू को लेकर वह स्टेशन गया।

मनोरमा ट्रेन से उतरी। ट्रेन के अन्दर ही घूँघट के भीतर से उसकी आँखों की काली पुतलियाँ सीताराम को दिखाई पड़ीं, उसी को देख रही थी वह। होंठों पर मुस्कान खिल आयी है। सीताराम लजा गया, वह बहुत ही व्यस्त होकर चुस्ती से सामान उतारने में लग गया।

बाबा बोले, तू इतना परेशान मत हो, कहीं चोटाय जाएगा। किसान को उतारने दे न।

वह खेत-मजूर आया, वही सब सामान ले जाएगा, उसकी बीवी भी आई है और उनका बारह चौदह साल का बेटा भी। उन्हीं की तो मालकिन है। फिर पहली बार दुल्हन आ रही है तो सामान एक आदमी के लदान से भारी होगा, यह वे जानते हैं। श्वसुर ने काफी सामान दिया है।

सीताराम बोला, बाबुओं का मँझला बेटा, मेरा बड़ा छात्र देखने आया है।

बाबा बोले, कहाँ है ?

घूँघट के भीतर से मनोरमा की उत्सुक सवालिया आँखें सीताराम के मुख पर टिक गयीं। सीताराम ने हँसकर पीछे पलटकर देखा, श्यामू के बगल में कन्हाई राय देबू को भी गोद में लेकर जाने कब आकर खड़ा हो गया है। देबू शरारत से मुस्करा रहा है।

कन्हाई ने हँसकर कहा, माँ ने भेज दिया। बहू को नाश्ता पानी करा ले जाने के लिए कहा है।

सीताराम ने देबू को गोद में लेकर कहा, तुम चलो रायकाका, मैं जरा आ रहा हूँ।

बाबा किसान के सिर पर सामान-असबाब लादने में व्यस्त हैं। सीताराम ने धीमी आवाज में देबू से कहा, यह लो देखो मास्टर की दुल्हन—तुम लोगों की मास्टरनी। जाओ गोद में जाओ। साथ ही साथ मनोरमा ने हाथ बढ़ाया।

दाँतो से होठ दबाकर हँसी रोकते हुए देबू मास्टर से चिपक गया।

सीताराम ने हँसकर मनोरमा से कहा, बडा ही सजीला और जिद्दी है। आज मुझे पीटा है। तुम श्यामू को गोद मे ले लो।

मनोरमा ने श्यामू को गोद मे उठा लिया। सीताराम बोला, आओ, रानी माँ ने कहा है, उनके घर मे नाश्ता-पानी कर-घर जा सकोगी। मेरे छात्र तो हैं ही—जमीदार की कोठी भी है—भेंट भी हो जाएगी।

●●

माँ बोली, अच्छी दुल्हन है। बेहतरीन लडकी है। दो रुपये देकर आशीर्वाद दिया। बोली, खुद सुखी होओ, पति को सुखी बनाओ। सीताराम से बोली, तुम आज बहू को लेकर घर जाओ। श्यामू-देबू को आज छुट्टी दो, उनकी गुरु माँ आयी हैं।

बातें सुनकर सीताराम मुग्ध हो गया। ऐसी कुशलता से बातें करते किसी को उसने सुना नही था। श्यामू-देबू की छुट्टी उससे मजूर करवाकर उसको छुट्टी दे रहे हैं। उसने कहा, नही। मैं पढाकर खाना खाने के बाद जैसा जाया करता हू वैसा ही जाऊँगा। नही, वह कर्तव्य की अवहेलना और नही करेगा।

शाम के बाद लडको को पढ़ाकर खाना खाकर जाते वक्त उसने सब के अनदेखे कुछ मालती फूल चुन लिये। दिन को चुन नही सका था मारे शाम के। छुट्टी लेने मे उसे एतराज नहीं था, लेकिन ये फूल चुनना रह गया होता।

मनोरमा खुश हुई। बोली, पडित जो हो।

सीताराम हँसा। फिर बोला घर-द्वार पसन्द आया ?

मनोरमा बोली, मुझे तो लाज लग रही थी।

क्यो ?

बाबा ने घर मे घुसते ही कहा—वाह, यह कमरा तो सीताराम बडा बढिया बना रखा है ! वाह, वाह, वाह ! फिर बोले—बहू, सीता के साथ मेरा कमरा भी ऐसा ही बना देना बेटी। सुनकर मनोरमा को बडी लाज लगी।

सीताराम भी लजा गया। छी छी छी ! केवल छी छी ही नही, बेजा काम हो गया है उससे। बाबा का कमरा उसे पहले सजाना चाहिए था। छी !

मनोरमा बोली, तभी से देख रही हू और सोच रही हू, हो तुम पडित आदमी जी।

सीताराम ने उसे प्यार से सीने मे खींच लिया।

कधे पर मुह रखकर मनोरमा बोली, जब खबर पहुँची, तुम पास नही कर सके तो मुझे रोना आ गया था। छिपछिपकर रोयी थी मैं। लेकिन, अब मुझे कोई अफसोस नही। बाबुओ की कोठी मे तुम्हारी खातिरदारी देखी, छात्र देखा, यही मेरे लिए काफी है।

आवेश से सीताराम का दिल भर आया। उसे लगा, उससे सुखी व्यक्ति और कोई नहीं।

छह

सुखी सीताराम। सुख भरे जीवन मे बरसात के कारण सतेज दरख्त की तरह वह बढने लगा। स्वस्थ देह लिए सबल पदक्षेप से वह पथ पर चलता, उत्साह दीप्त आँखो से छात्रो के मुख की ओर देख वह निष्ठा से पढ़ाता है। उनको अपने मनमाफिक गढने के लिए वह भरसक प्रयत्न करता। दुलारता, डाटता, मारता भी। मनोरमा को सुखी करने की कोशिश करता, मनोरमा ने उसे सुखी बनाया है। बाबा की सेवा करता। लेकिन वही मानो अचानक एक काँटा-सा उभर आया है, दिनो रात करक रहा है—निष्ठुर रूप से दुखदायी है उसका स्पर्श। समझ मे नही आता—यह काँटा किस तरह कहाँ से उग आया।

न समझने पर भी सीताराम ने धीर भाव से इस दु ख को ग्रहण किया।

सुख और दु ख इन्ही को लेकर जीवन है। प्रकाश और अधकार, दिन और रात—यही लेकर काल है। धरती की मिट्टी, जिस मिट्टी मे फसल उगती है, जिस मिट्टी पर लेटने से लगता, माँ की गोद मे लेटा हूँ, उसी मिट्टी में पत्थर है, वह पत्थर बदन को कोचता है नाखून को चोट पहुँचाता है, उस पर गिर कर आदमी मर भी जाता है। जल, जो जल अग को शीतल करता, दिल को ठडक पहुचाता है वही जल कभी कभी बाढ बनकर सबकुछ बहा ले जाता है—यह सबकुछ सीताराम जानता है। इसलिए छोटे-मोटे बाधा विघ्न और दु ख के बावजूद वह अपने जीवन को सुख के जीवन के रूप मे ही जानता है।

इस दु ख के बीच अचानक एक दिन पिता रमानाथ चल बसे। यह आघात उसके लिए भयकर आघात था, मर्मातक हो उठा। चार साल की उम्र मे वह मातृहीन हुआ था, उसी समय से ही बाबा उसके पिता माता दोनो बन गये थे। मरते समय बाबा ने उससे कहा, रोना मत। मैं तो सुख का जाना जा रहा हू रे। तूने मेरे वश का मान बढ़ाया है, दस लोग तुझे पडित कहकर खातिर कर रहे हैं, घर मे लक्ष्मी के समान मेरी बहू है, मेरे जाने मे खेद किस बात का? जरा सी विषाद भरी मुस्कान के साथ कहा था, एक ही खेद रह गया, तेरे बेटे को देखकर नहीं जा सका। खैर—मैं ही तेरा बेटा बनकर फिर आ जाऊगा।

सीताराम पत्थर का बुत बना बैठा था। वह यदि चचल हो जाये, उसकी आँखो में यदि आसू देख लें तो शायद बाबा महायात्रा के समय चचल होंगे। एक कहानी उसे बार-बार याद आ रही थी। वह शातिनिकेतन गया था। उस समय शातिनिकेतन में सर्वत्र एक विषाद भरी छाया छायी हुई थी। इससे पूर्व जैसा देखा था गोया वैसा नहीं। पता लगा था, कविवर रवीन्द्र नाथ के बडे भाई ऋषितुल्य द्विजेन्द्र नाथ के बेटे दीपेन्द्रनाथ का हाल में देहान्त हो गया था। वह खुद भी दुखी हुआ था। हाय, बुढापे में यह कैसा शोक मिला उनको! इतना बडा आघात क्या कोई और हो सकता है? भगवान से कहा था, यह कैसा न्याय है तुम्हारा? लौटते वक्त द्विजेन्द्रनाथ के बगले के बगल से ही वह लौटा था। एक

बार उनको देखने की इच्छा थी। द्विजेन्द्रनाथ के बगले के सामने खुले बरामदे पर बोलपुर के वकील आकर बैठे हुए थे, हमदर्दी जताने आए थे। द्विजेन्द्रनाथ प्रशान्त चेहरा लिये उनसे बातें कर रहे थे, कुछ बातें उसके मन मे अक्षय बनी हुई हैं। देह का लय है मृत्यु, यह तो अवश्यम्भावी है। उसके लिए शोक—' बात को पूरी न करके ही वे मुस्कराये थे। अनोखी मुस्कान थी वह। ऐसी मुस्कान सीताराम ने जीवन मे और किसी के चेहरे पर नही देखी। इसके बाद वे दूसरी बातें करने लग गये। वकीलों म हर व्यक्ति का कुशल पूछने लगे।

वे अवश्य ही महापुरुष हैं, ऋषितुल्य मनुष्य, और वह है सामान्य जन। उनके साथ किसकी तुलना हो सकती है ? लेकिन महाजनो का अनुसरण ही तो मनुष्य को करना चाहिए। वह रोया नही।

लोगो ने लेकिन दूसरी बातें की, उसकी जघन्य निन्दा की। बोले, कहावत है न—बाप मरा बला टली, सीताराम को वैसा ही हुआ है। बूढा हर वक्त खिझाता रहता था, बूढा मर गया, उसको भी मुक्ति मिली।

इन दिनो बाबा का रुख कुछ ऐसा ही हो गया था। सुख के लिए जो गृहस्थी थी मानो उनके असुख का कारण बन गयी। सदा ही असन्तोष सताता रहता। कुछ भी पसन्द नहीं आता था। मनोरमा पर ही उनकी विरूपता सबसे अधिक थी, कोई भी सेवा करने जाती तो कहते, रहने दो बचवा रहने दो। 'बचवा' कहते थे, 'बेटी' नहीं।

मनोरमा अपराधिन-सी स्तब्ध खडी रह जाती थी।

बाबा इस पर भी गुस्साने लगते थे, गुस्सा मानो बढ जाया करता था, कहते थे, जाओ न बचवा, कुछ कामकाज हो, करो जाकर। जाओ, देखो सीता क्या माग रहा है।

आखिरी बात मे व्यग प्रच्छन्न रहता, राख की पतली तह से ढके अगारे की नाईं। उत्ताप की ज्वाला फौरन महसूस हो जाती थी।

एक दिन बाबा ने खाने की थाली उठाकर फेंक दी थी। उनको अरुचि हो गयी थी। सीताराम ने ही कहा था, रात को जरा हलवा बना दिया करना, स्वाद भी आयगा, घी दूध भी पेट मे जाएगा। किसान के घर में लइया ही नाश्ता है, गुड ही मिठाई है, सूजी-चीनी का इन्तजाम नही था। घी हमेशा से ही है, दूध की साढ़ी जमाकर घी निकाला जाता, हालांकि बिक्री के लिए ही निकाला जाता। सूजी चीनी सीताराम ने रत्नहाटा से ला दी थी। मनोरमा ने रात म हलवा की थाली उनके सामने रखी ही थी कि हाथ से कुरेद कर नाक से सूघ कर, बत्ती को तेज कर देखने के बाद पूछा था, यह भला क्या है ?

आपके लिए जरा हलवा बनाया है।

हलवा ? मोहन भोग ?

जी ! आप कुछ भी खा नहीं पा रहे हैं। खील दूध भी भला कितना खा सकते हैं ? इसलिए—

इसलिए हलवा बना है ?

इस बार डर गई थी मनोरमा । जवाब न दे सकी ।

चीनी क्या हमारे खेत मे पैदा होती है ? या रवा ही हमारे खेत में होता है ? इसके बाद आकस्मिक विस्फोट-सा ही वे फट पड़े थे, मैं किसान का बेटा किसान हूँ। नमक छोड़ कर खेत की उपज के अलावा और कुछ मैं तो मैं—मेरे चौदह पुश्तो में किसी ने खाया नही। मैं खाऊँगा हलवा ?—कहकर थाली फेंक के उठ गये थे। उस वक्त भी उनका अफसोस जारी था—लक्ष्मी को भगाया, तुम्ही ने मेरी लक्ष्मी को खदेड़ा है।

मुहल्ले भर मे वे यह बात कहते भी फिरते रहे। अलक्ष्मी बहू न मेरी लक्ष्मी को भगा दिया।

सीताराम को भी वे बड़े रूखे ढंग से बेवजह ही बीच बीच में डांटते-फटकारते थे। रविवार का दिन। वह अन्य दिन में भी घर में खाना खाता है, सुबह बाबुओ की कोठी मे जाकर लड़को को पढ़ाकर साढ़े दस बजे घर लौटता है, दिनभर घर ही पर रहता, शाम को फिर जाता, रात को रोजाना की तरह लौट आता। इसी रविवार को बाबा खेत से थके माँदे लौटे थे, सीताराम पंखा झलने गया था। हाथ से पंखा छीनकर उन्होंने कहा था, रहने दो बेटा, रहने दो, मैं किसान का बेटा किसान हूँ, धूप-पानी में खेतो में खट कर ही जिन्दगी बीत गई, बीत जाएगी भी। हम लोग कुर्सी पर बैठे पंडिताई नहीं करते। पंखे की हवा खान के हम आदी नही।

सीताराम स्तम्भित रह गया था।

बाबा फिर भी रुके नही थे, बड़े ही मीठे स्वर में बोले थे, रविवार छुट्टी का दिन है, आज थोड़ा ऐश मौज करो जाकर।

इसलिए सीताराम जरा दूर दूर ही रहा करता था। मनोरमा के लिए यह उपाय नहीं था, इसलिए वह मनोरमा को कभी कभी दिलासा देने की कोशिश करता था। लेकिन मनोरमा भी बड़ी अद्भुत लड़की थी, वह हँस कर कहती थी, तुम्हारे ही बाबा हैं वे मेरा कुछ भी नही ?

फिर भी लोगो ने ऐसी बातें कीं। कहने दो, उसके लिए सीताराम को कोई अफ्सोस नहीं। वह केवल बीच-बीच मे सोच कर देखने लगता है, पिता की सेवा मे उसने कोई त्रुटि की है या नहीं।

कभी कभी गहरी चिन्ता में तल्लीन होकर वह इसका हिसाब लगाता रहता है।

पाठशाला के लड़के भी उसकी अन्यमनस्कता और उदासीनता पर गौर करते हैं, एक दूसरे को इशारे से दिखाता है। बड़े लड़के कानाफूसियो मे गवेषणा करते रहते हैं।

पण्डित जाने कैसा हो गया है !

हाँ भाई।

बाप मर गया है जो।

हाँ।

जान बची। अब और मारता नहीं। आकू नाम का लडका खू खू कर हँसने लगता। छोटे लडके गवेषणा नही करते, वे आश्चर्य करने लगते। मास्टर अब और मारता क्यो नही भाई?

बाबा की मृत्यु के बहाने सीताराम को एक अनोखा अनुभव प्राप्त हुआ है जिस कारण उसने तय किया है कि लडको को वह मारेगा नहीं, कम से-कम बहुत सगीन अपराध न करने पर मारेगा नही। वह भी एक अनोखा अनुभव है।

बाबा की बीमारी का पहला चरण था उस वक्त। उसी दिन सबेरे बीमारी की गम्भीरता महसूस कर उसने डाक्टर बुलाया था। डाक्टर को दिखला कर वह उसके साथ ही रत्नहाटा आ गया, उस वक्त केवल साढे दस बजे थे। लडके पाठशाला मे आकर शोरगुल मचा रहे थे, वह पाठशाला मे जाकर उन लोगो से बोला, तुम लोग खुद बैठे-बैठे पढो। मैं एक बार डाक्टर साहब के दवाखाना जा रहा हूँ, दवा लेकर जल्दी ही आऊँगा मैं, समझे?

डाक्टर से दवा लेकर खेत मजूर के हाथ भिजवा देने को सोचा था उसने। लेकिन डाक्टर ने कहा, आप खुद ले जाइए। वह बतलाने में गडबडा देगा। पहले परगेटिव, फिर एक पौडर, उसके बाद मिक्सचर दो निशान, एक के बाद एक, तिपहर को फिर एक पौडर, यह वह समझेगा भी नही और न समझा ही सकेगा।

सीताराम बोला, जी हाँ, यह तो ठीक ही कह रहे हैं। वह फिर घर लौट आया। लौटते वक्त पाठशाला मे बता गया, पढो तुम लोग, मैं आ रहा हू। मेरे बाबा बीमार हैं, दवा देकर जल्दी ही लौट रहा हू।

एक बार मन हुआ कि छुट्टी दे दें। लेकिन हौसला न पडा। रत्नहाटा बडी वाहियात जगह है। यहा दस दिन की सेवा के बाद एक दिन के चूक के लिए माफी नहीं। उधर बडे स्कूल की पाठशाला की सजग दृष्टि उसी की त्रुटि की ओर है। इसलिए दवा देकर लौट आने का ही निश्चय किया उसने। घडी की ओर देखा, सवा ग्यारह बजे थे। दो मील का रास्ता, आने जाने मे चार मील। एक बजे के अन्दर ही वह लौट सकेगा। टिफिन के बाद से पढाई होगी। लेकिन घर जाकर देर हो गयी। खाया नही था, मनोरमा ने बिना खिलाये छोडा नहीं। पाठशाला लौटने मे दो बज गए। पाठशाला के बाहर दरवाजे के पास आकर वह ठिठक गया। सोच रहा था, पैर धोकर ही अन्दर जाना चाहिए। भीतर लडके कलरव कर रहे थे, अचानक भीतर से उसे सुनाई पडा—कोई कह रहा है

चल रे चल आज और आएगा नही। बकता था आकू। आकू बाबुओ के टोल का एक विचित्र जतु है, मूर्तिमन्त विघ्नराज। सीताराम उसे 'आकू' कहकर नही बुलाता, 'अक्रूर' कहता था। अक्रूर की बात सुनकर सीताराम को

हुती आई, व निकल आएँगे इस प्रत्याशा में वह दरवाजे के बाहर ही खड़ा हुआ, आकर ही ठिठर जाएँगे वे लोग। सुनाई पड़ा, ज्योतिष का भतीजा सीतेश बोल रहा है नहीं भाई, अगर आ ही जाए।

कभी नहीं। मैं कह रहा हू। मुझे ठीक-ठीक मालूम हो जाया करता है। मास्टर घर गया है और उसका बाप भी मर गया है। बस। अब एक महीने तक नहीं आएगा। एक महीने तक सूतक है। बड़ा मजा आएगा, एक महीना अब चोटे-मुक्को से छुट्टी!

सीताराम एड़ी से चोटी तक झनझना उठा। गुस्से से भीतर गरज उठा।

एक ने कहा, उसके बाद तो आएगा, तब सूद असल मिलाकर बकाया पूरा करेगा, लागू धमाधम्। लागू धमाधम्! बाप रे! वह लड़का मानो सिहर उठा।

आकू बोला, ठहर, मैं जरा ध्यान लगाकर देख लूँ। हाँ। सुन, ठीक उसी वक्त मास्टर की बीवी मर जायगी। बस, फिर एक महीना। उसके बाद सूतक जैसे ही खत्म होगा बस मास्टर खुद मर जाएगा। बस।

सीतेश बोला, ना भाई! हाय, पंडित ने कौन सा कसूर किया है जो उसे मरने को कह रहे हो?

बहुत मारता है भाई। बाप रे! मुझ ही को ज्यादा मारता है। कभी कभी तो लगता, इस बार मैं मर ही जाऊँगा।

सीताराम भीतर आया। पैर धोना वह भूल गया। चुपचाप अपनी कुर्सी पर जाकर बैठ गया। बहुत देर तक खामोश सोचता रहा। अचानक उसकी आँखों में आँसू आ गए। छोटे नन्हे शरीर में बहुत लगता है, बड़ी तकलीफ होती है उनको, उनको लगता है मर जाएँगे। नहीं, उन लोगों का कोई दोष नहीं। दोष उसी का है। नहीं अब वह उनको नहीं मारेगा।

●●

बाबा की मृत्यु के दो महीने के बाद उन बातों को वही सोच रहा था। आज भी लम्बी साँस लेकर वह सोच रहा था, इन्हीं के दीर्घनिश्वास के उत्ताप से शायद उसने अपने बाबा को खो दिया है। आज भी वह बाबा के बारे में सोच रहा था।

बाबा नहीं रहे। संसार भाँय भाँय कर रहा है। अशान्ति भी, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन बाबा का कितना रोब-दाब था। बातों का ढंग अगर छोड़ दो तो लाड़ले बच्चे और बाबा में कोई फर्क नहीं था। दूसरी ओर भी एक असुविधा आ पड़ी है—खेतीबारी की जिम्मेदारी उस पर आ पड़ी है। हालाँकि मनोरमा बड़ी विचक्षण औरत है, खेतीबारी के सारे कामों से वाकिफ है। किसमें क्या लगता है, कितना लगता है—सब जानती है। लेकिन खेत का हालचाल दुल्हन होकर वह देखने नहीं जा सकती। सीताराम को ही अब जरा ज्यादा तड़के उठना पड़ता है। घर से निकलकर खेतों में चक्कर लगाते वह रत्नहाट चला जाता है। भरपूर खेती के समय वह झरने के किनारे नहीं

बैठता, घर आता, खेत देखता है। इसके बावजूद खेती में कुछ गिराव आ गया है। उसका फिर चारा क्या ? यह बाबा कहा करते थे।

कभी कभी बाबुओं की कोठी वाली नौकरी छोड देने की सोचता। लेकिन श्यामू-देवू से बडी ममता हो गयी है। इसके अलावा माँ का स्नेह, धीराबाबू का स्नेह, वह भी उसके जीवन की बहुत बडी सम्पदा है। धीराबाबू अब कलकत्ते म पढ रहे हैं, अपने पढने के कमरे की किताबों का जिम्मा वे उस पर छोड गए हैं। सीताराम जब उस कमरे मे प्रवेश करता है, उसे लगता है कि एक नया राज्य है। किताबें पढता। किताबें घर ले जाता। किताब ले जाने की मनाही है धीराबाबू की। कहा है, कमरे मे बैठकर पढेंगे, लेकिन बाहर नही जाएँगे। हालांकि आप पर मैं अविश्वास नही करता, लेकिन यह मैं पसन्द नही करता। सीताराम कपडे मे छिपाकर किताब ले जाता है, फिर लौटा लाता, रख देता। आज अचानक याद पड गया, सारी किताबें लौटाई नही गयी।

ए, ए, क्या हो रहा है ?

पाठशाला के लडके हिसाब लगा रहे थे, चौंक पडे। अच्छे लडके स्लेट लेकर और भी सावधान होकर बैठे। कोई देख रहा है, नकल कर रहा है। जो देख रहे थे वे अपने स्लेट की ओर मनोयोगी बन गए। एकाध ऊँघ रहे थे, वे जाग कर हिल डुल कर बैठ गए। लेकिन सीताराम शर्मा गया,—छी छी ! अनमने ही उसने एक धमकी दे डाली है। मामले को सहज बनाने के लिए उसने सजीदेपन से कहा, हिसाब लगाओ। हो गया सबका ? खत्म करो। चुप हो गया वह। पुरानी बात फिर याद आ गई। बडा बेजा काम हो गया है, कई किताबें लम्बे अरसे से उसके घर पर पडी हैं। ये किताबें उसे अच्छी लग गई थी, इसलिए एकाध बार और पढने के लिए रख छोडी थी।

अब फिर सजग होकर पढाने लगा।

बाहर रास्ते पर कोई जोरदार आवाज मे बोल पडा, क्यो रे अर्वाचीन, आँचल म लइया लिए क्यो खा रहा है, आँचल जूठ जो हो जाएगा।

सीताराम के चेहरे पर मुस्कान खेल गई। उसी को व्यग्य करता हुआ कोई गया। वह पडित है, शिक्षक है, इसलिए भरसक शुद्ध उच्चारण करने की कोशिश करता है, फिर भी अपने अनजाने ही बचपन में सीखे उनके देहाती खेतिहर समाज की एकाध बातें मुह से निकल ही जाया करती हैं और उसमें भाषा का गुरु-लघु दोष आ ही जाता है। एक दिन एक लडके को आचल में लइया खाते देखकर, आँचल उच्छिष्ट हो रहा है इस विषय में उसे सचेतन करने मे जूठा के बदले देहाती 'जूठ' शब्द ही सचमुच मुँह से निकला था। रत्नहाटा के उच्चनासा लोगो को जाने कैसे यह मालूम हो गया और इसको लेकर वे व्यग करते हैं। शुरू मे क्यो के शहरिया लहजे पर जोर डालकर बाद मे ग्राम्य शब्द 'जूठ' पर जोर डालकर व्यग को प्रकट और प्रखर बना देते हैं वे, और इसकी जड मे है शिवकिंकर।

उसके पाठशाला मे छात्र ने ही यह बात पहले पहल कहना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि तनजिया तहजा भी जोड़ा है उसने और वह लड़का है चिरजीव आकू। उसी से सुनकर शिवकिंकर ने हाट-बाजार मे इसे फैलाया है। आजकल उसकी पाठशाला मे बाबुओ के भी कुछ लड़के आ रहे हैं। ज्यादा फीस और फीस देने की समस्या से बडे स्कूल की पाठशाला मे उनका पढ़ना असम्भव हो उठा है। यहाँ लड़को को पढ़ाना अभिभावकों के लिए बहुत सुविधाजनक लगा है। इसके अलावा ये लड़के भी बडे ही नटखट स्वभाव के हैं इसलिए बडे स्कूल की पाठशाला के मास्टरो ने फीस के लिए कड़े तकाजे के बहाने कठोर अनुशासन दिखाकर उनको भगा दिया है। यहाँ के पडितो ने बता भी दिया है, जाओ न बेटा, रत्नहाटा मे रत्न बनाने का अखाड़ा सीताराम की पाठशाला है। यहाँ क्या ? मजबूर होकर ही वे यहाँ आए हैं।

बडे स्कूल की इस प्रकार की बातो और बरताव से सीताराम को अफसोस होता। बुरे छात्रो को देकर उसकी पाठशाला से अच्छे छात्रो को वे बहका ले जाते हैं। छह महीने कोशिश करने के बाद पाठशाला को सरकारी ग्रांट मिली है मासिक चार रुपए। लेकिन वह ग्रान्ट रखना एक मुसीबत बन गया है। आज तक उसके एक भी छात्र को वृत्ति नही मिली। पिछली बार कैवर्तो के एक लड़के पर उसका बडा भरोसा था। वत्ति भी उसे मिली है। किन्तु उसकी पाठशाला से उसके छात्र के रूप मे नही, स्कूल वाली पाठशाला के मास्टर उसको बहका ले गए थे। वही से उसे वत्ति मिली है।

लड़को मे एक ने सवाल लगाकर स्लेट लाकर सामने रखा। सबसे अच्छा लड़का है यह। इसी पर उसे अब भरोसा है। आगामी वर्ष इस लड़के को अवश्य ही वृत्ति मिलेगी। इसको बडा स्कूल बहका नही सकेगा। यह लड़का ज्योतिष साहा का भानजा है। सीताराम ने स्लेट उठा लिया।

वाह वाह-वाह ! राइट। राइट। यह भी राइट। यह—यह क्या कर डाला रे ? किसने दिमाग खा लिया तेरा, अँय ? हाँ क्यो फादर मणि मेरे बाबामणि, यह क्या कर डाला माणिक अँय ? पाँच सत्ते कितना होता बेटा, कितना होता ?

पैंतीस जी।

पैंतीस का कितना बनेगा ? पाँच या सिफर ?

पाँच। पाँच ही तो लिखा है मास्साब।

यह रहा पाँच, जोड़ते वक्त क्या कर डाला ? खुद ही तुमने सिफर मान लिया है बेटा। बताता हू बार-बार तुमको बताता हूँ मानिकचाँद कि पाँच की गिनती ठीक-ठीक लिखना शुरू करो। सो तो करोगे नही। अब उसका नतीजा देखो। घडे भर दूध मे बूद भर गोमूत्र। सारा-का सारा बरबाद ! लेकिन प्रोसेस राइट है। खैर। जाओ, टिफन लेने घर जाना चाहते हो तो चले जाओ। पाँच मिनट बाकी हैं।

और एक आकर खडा हो गया। बाबुओ का बेटा आकू, जिसने उसको

बातो का विकृत प्रचार किया वही नौनिहाल। सीताराम जानता है, उसका कोई भी सवाल सही नही होगा। फिर भी आया है स्लेट देकर ही वह टिफन की छुट्टी पाँच मिनट बढवा लेगा। वक्र हँसी हँसते हुए बोला, क्यों, अक्रूर के सारे सवाल हो गए हैं? बलिहारी बलिहारी, लाओ देखें। निलज्ज लडका स्लेट के पीछे मुँह छिपाए हँस रहा है। उसने हाथ बढाकर स्लेट ले लिया।

अँय-अँय! अरे देखें-देखें। शो मी योर टीथ। दाँत दिखाओ, देखें। स्लेट रखकर सीताराम उठा और दोनो हाथ से उसके होंठ फैलाकर दाँतो को प्रकट कर डाला।

देखो, देखो तुम लोग। इसने दाँत नही माँजा है, देख लो तुम लोग।

वह लडका फिर भी हँसता रहा। अजीब बेहया लडका है। होंठ छोड उसने उसके कान पकड लिए। फिर भी वह हँसता रहा। जाओ, जाओ, दाँत माँज कर आओ, जाओ।

वह लडका मुख मे कपडा डालकर बोला, आज अभी तक खाना नही खाया है सर, लगे हाथ दाँत माँजकर खाना खा आऊँगा।

बाबुओ के लडकों की पढ़ाई का भाग्य जो कुछ भी हो, चाल बदस्तूर वही है। वे 'मास्साब' नही कहते, 'सर' कहते हैं। मारपीट करने से भी कोई फायदा नही, मार खाते-खाते उनकी पीठ पर घट्टे पड गए हैं। नित्यानन्द सा मार खाकर भी वे हँसते हैं। सीताराम उसे अक्रूर कहता है—फिर कहता है निर्यात ने सिद्ध।

टन्न से एक बजा। टिफिन की छुट्टी हो गयी।

घडी में इसी बीच एक खराबी आ गयी है, बडी सूई बारह के परपर पहुँचने के दो मिनट बाद टन्कोर बजने लगते हैं। लडके स्लेट लाकर रख गए। टिफिन की छुट्टी मे बैठे सीताराम स्लेट देखेगा। लडको मे कुछ खाना खाने जाएँगे तो कुछ खेलेंगे। छोटे बच्चो ने कचा खेलने के लिए आँगनभर मे गड्ढे खोद डाले हैं। रोजाना प्रत्येक दल मे एक झगडा होता है एक दल टूटकर नया दल बनता, नया गुच्छ बनाता। बनाने दो, रास्ते की धूल फाँकने से यही बेहतर। उन्ही के लिए तो यह आँगन है। आँगन क्यो सभी कुछ तो उन्ही के लिए है।

फिर घटा बजा, टिफिन खत्म हुआ। घटा एक खरीदा है उसने। और भी बहुत-सी चीजें खरीदी हैं। दो मैप, एक ग्लोब, कलकत्ते से खरीदा हुआ एक बढ़िया ब्लैकबोर्ड, दो कुर्सियाँ। बाबुओं की कुर्सी और साहा की कुर्सी उसने लौटा दी है। घटा बजते ही टिफिन के अत मे लडके आकर सब बैठ गए। लेकिन आकू? कहाँ है वह? 'दाँत माँजकर खाना खा आऊँ कहकर गया और अभी तक लौट नही आया। टिफिन की छुट्टी खत्म हो चुकी है। आधा घटा हो गया। इन सब लडकों से जब सरोकार पडता तो न मारने का सकल्प करके उसकी रक्षा नही की जा सकती। उसे लगा, ऐसा सकल्प करना ठीक नही। मार बद कर देने से आकू और भी पाजी हो गया है। राजा विक्रमादित्य की

गम गया है। एक बन्दर उनकी सभा में रोज सवेरे आ पहुँचता था, राजा को एक अशर्फी देकर पैरों के पास बैठ जाता था। राजा अपनी छड़ी से उसकी पीठ पर कई बार सटकारते थे। बन्दर चुपचाप वहाँ से चला जाता था। एक दिन मन्त्री ने सविनय प्रतिवाद किया, महाराज, यह कोई न्याय नहीं। बन्दर अशर्फी भेंट करता है और महाराज उसको मारते हैं।

राजा ने हँसकर कहा, मन्त्री ! कल से नहीं मारूँगा।

अगले दिन बन्दर आया, अशर्फी दी लेकिन राजा ने रोज की तरह उसको मारा नहीं। बन्दर कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद दाँत दिखाकर चला गया। अगले दिन भी उन्होंने प्रहार नहीं किया। उस दिन बन्दर ने राजा का कपड़ा पकड़कर खींचा। उससे अगले दिन प्रहार की प्रतीक्षा कर अचानक ही उछल कर सिंहासन के हत्थे पर बैठ गया। उसके बाद वाले दिन राजा की गर्दन पर जा बैठा। राजा ने उस दिन बन्दर को नीचे उतारकर हिसाब लगाकर सारे दिनों का बकाया सटकार उसकी पीठ पर अदा कर दिया। बन्दर फिर पहले की तरह चुपचाप चला गया। आज आकू को उसका पावना बकाया सारा चुका देना है। सीताराम ने हरिसाधन को बुलाया, साधन !

साधन लड़कों के बीच वयस्क लड़का है, पढ़ाई में कोई अच्छा नहीं, लेकिन फिर भी नेक लड़का है, निष्ठा है, कोई दुर्गुण वाली बुद्धि नहीं उसमें। साधन को देखते उसे अपनी बात याद आ जाती। खुद भी वह उसी ढंग का लड़का था। साधन आकर खड़ा हो गया। सीताराम बोला, तू एक बार आकू के घर चला जा। जाकर उसे बुलाना, कहना—मास्टर जी बुला रहे हैं। यदि घर पर न हो तो उसकी माँ या जिस किसी से भेंट हो जाय, बता देना—आकू टिफिन से पहले निकलकर अभी तक पाठशाला नहीं आया है। वह अक्सर ऐसा करता है। आज दो महीने से फीस नहीं दी है उसने। फीस कल भिजवा दीजिएगा वर्ना उसे पाठशाला और मत भेजिएगा। समझ गए न ?

जी।

अच्छा, क्या बताएगा, बताना तो जरा।

साधन तोता जैसा बोलता गया। सीताराम खुश होकर बोला, ठीक। चला जा तू। साधन जाते जाते पाठशाला के दरवाजे पर ही खड़ा हो गया। बोला, वह आ रहा है मास्सा।

आ रहा है ? ठीक है। नेपला, एक सन्टी तो काट ला।

नेपला सन्टी काटने में माहिर है। खुद मार खाने पर रोता नहीं दूसरा कोई पीटा जाता तो उसे बड़ी खुशी होती, हँसता है। सन्टी काटने में उसे बेहद उत्साह है।

आज बहुत दिनों के बाद पिटन्तस होगी उसने पूछ लिया, बाँस की कमाची या और किसी पेड़ की टहनी मास्सा ?

उससे पूर्व ही आकू चेहरा लटकाए उसकी मेज के पास आ खड़ा हो गया

और उदास स्वर में बोला, कलकत्ते म धीरानन्दबाबू को पुलिस ने बन्द कर लिया है सर, उनके घर चिट्ठी आई है। श्यामू देवू खडे हैं। रो रहे हैं।

धीरा बाबू को पुलिस ने गिरफ्तार किया है ?

नहीं सर। गिरफ्तार नही किया, बन्दी किया है—राजबन्दी !

सीताराम के सारे अग मे रोमाच हो उठा। राजबन्दी।

जी सर, महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन मे योगदान जो किया है।

सन उन्नीस सौ इक्कीस। देश मे असहयोग आन्दोलन चल रहा है। सीताराम के पास साप्ताहिक पत्रिका आती उसके मारे-के सारे पन्नो म यही सब खबरें होती—देशवरेण्य उन नेताओं के चित्र भी। धीरा बाबू के कमरे म उसे एक किताब मिली है—किताब का नाम है—'लाछितेर सम्मान'। सन उन्नीस सौ पाँच के आन्दोलन मे जो लोग निर्वासित हुए थे, उन्ही की कहानी और उन सब के चित्र भी हैं उसमे। 'लाछितेर सम्मान' बडा योग्य नाम है। लाछन सम्मान बन जाता है उन्ही की साधना से, माथे के गुण से ही पकतिलक चन्दनतिलक से भी अधिक सहनीय होता है। धीरा बाबू योग्य व्यक्ति है। अब धीराबाबू की तसवीर अखबार मे छपेगी, इस किताब के दूसरे खण्ड मे उनकी जीवन कथा होगी, चित्र भी।

वयस्क सा, विज्ञ सा आकू बोला, धीरा बाबू की माँ, सर बैठी है, मुह मे कोई बात नही, बस आँखो से टप्पटप्प आँसू टपक रहे है।

सीताराम उठकर खडा हो गया। बोला, छुट्टी, आज तुम लोगो की छुट्टी है।

खुद ही उसने टन टन घटा बजा दिया।

पाठशाला बन्द कर जमीन पर नजर गडाये वह तेज चाल बाबुओ की कोठी कीओर चल पडा। उसके दिल म उथल पुथल मची हुई थी।

माँ की मूर्ति देखकर वह स्तब्ध रह गया। वह समझ न सका, यह उनका सुख का रोदन है या दुख का। उसके मन मे भी मानो एसा ही द्वन्द्व चल रहा है।

अपराह्न मे झरन के किनारे जाकर वह उदास सा बैठा रहा। यहा छोटे-छोटे बन फूलो की झाडियाँ है उनम तीतरो के घोसले है। तीतर साझबले बाहर निकल भागते फिरते, कलरव करते, कीडे पकडकर खाते दीमको के बिमौट पर धावा बोलते। थोडी ही दूरी पर रत्नहाटा के एक बाबू का एक बगीचा है, बगीचे के चारो ओर ताड के पडो की पाँत। शाम को ताड के सिर पर सूरज का सुख प्रकाश आ पडता है फाख्ता घुघुआते है। इसी बीच वह बडे मजे म रहता मानो ध्यानस्थ बना रहता। आज उन सबकी ओर उसकी निगाह नही पडी। एक बार के लिए भी नही। कुछ सोचता रहा हो, ऐसी बात भी नही केवल उसकी आँखो के सम्मुख निरन्तर धीरा बाबू के कितने ही चित्र तिरते रहे।

शाम को श्यामू-देवू को लेकर वह बैठा।

श्यामू विषाद में भी गम्भीर बना हुआ है। देवू उसकी गोद में मुह छिपा कर फफक फफककर रोता रहा। उसके मुख पर जो हँसी दिगन्त के मेघ की गोद में विद्युत् चमक जैसी क्षण क्षण निःशब्द कौतुक से दीप्त हो उठती है, आज वह हँसी उसके चेहरे पर एक बार भी क्षीण आभास तक न दे सकी। वह मुख मानो आज वर्षामुखर श्रावण रात्रि के मेघ से ढक गया है।

वह उन लोगो को दिलासा देते हुए बोला, जानते हो, दादा ने कितना बड़ा काम किया है?

श्यामू ने सिर हिलाकर बताया, जानता हूँ।

देवू, जानते हो तुम?

देवू ने कोई जवाब नही दिया। वह रो रहा है।

रोओ मत। छी! सिर पर हाथ सहलाया उसने। फिर बोला, बड़े होकर तुम लोगो को भी दादा के साथ देश का काम जो करना है। जानते हो न—

महाज्ञानी महाजन जिस पथ पर कर सचरण
हो गए हैं प्रात स्मरणीय
उसी पथ को लक्ष्य कर स्वीय कीर्तिध्वजा थाम
हम लोग भी होगे वरणीय।

बाहर से नायब जी ने कहा, मास्टर, रहने दो। इन लोगो को इसकी सीख अभी से मत देने लगो।

कन्हाई राय ने हामी भरी हाँ। कुछ देर चुप रहकर उसने कहा, इतने में ही धक्का सँभालना मुश्किल हो जायेगा। बाद में समझोगे।

उपपद सत्पुरुष नाम उसका झूठा नहीं पड़ा। मध्यपदलोपी को फिर भी सहन किया जा सकता है।

रात को मनोरमा ने सबकुछ सुना, वह भी उदास हो गयी। सीताराम के स्पर्श को अद्भुत ढग से ग्रहण कर पाती है, धरती का धूपस्पर्श करने जैसा ही। उसका उदास भाव देख सीताराम ने कहा, बात दरअसल अफसोस करने वाली नही है मनु! हम लोग नाहक लोग हैं हम समझ नही पाते।

मनोरमा बोली, हाय कितने बड़े घर का लड़का है, कितना सुख का शरीर है, जेल की तक्लीफ और मान-सम्मान—

सीताराम उसे समझाने बैठ गया, यह देशसेवा के कारण कारावरण है, यह है परम गौरव की बात। होने दो न सुख की देह लेकिन मन की दृढता से असभव सम्भव हो जाता है बन्दूक के सामने सीना तानकर खड़ा हुआ जा सकता है।

अचम्भे से आँखें फाड़ फाड़कर मनोरमा अपने पति के मुख की ओर देखने लगी।

सीताराम बोला, हम लोग भला क्या कुछ कर सकेंगे? क्षमता भी भला कितनी है? जितना भर हो सके उतना भर तो करना ही पड़ेगा। चरखा खरीद

लाऊगा। पुराने जमाने वाला चरखा तो टूट ही गया है। चरखा कातूँगा। अपने धागे से हम लोगो का कपडा बनेगा। समझी ? और रामकपास का बीज लाऊगा, चारो ओर लगा दूगा।

अचानक ही मनोरमा बोली, तुम्हारा धीराबाबू कैसा है, एक बार भी देख न सकी।

सीताराम ने कहा, बिल्कुल श्यामू जैसा। उठकर शेल्फ के पास चला गया। 'लाछितेर सम्मान' नामक किताब ऊपर ही थी। उसी को अन्यमनस्क भाव से खोला। अचानक एक बात उसके मन मे आ गई। मनोरमा के हाथ मे देकर वह बोला, इस किताब के चित्रो को रोजाना देखना, प्रणाम करना।

इस बार मनोरमा माँ होगी। उसका घर भी अब बच्चे की किलकारी से आलोकित होगा। शिशु का हास्य स्वर्गीय वस्तु है। शिशु देवदूत होते हैं। कितनी ही किताबो मे उसने पढा है। और यह सत्य है, यह वह भलीभाँति समझता है। लेकिन ज्यो-ज्यो वह बडा होता जाता गडबडी होने लगती। शैतान आकर उसकी गर्दन पर सवार हो जाता है। लडको को वह दो हिस्सो मे बाँटता है। एक होता है—कुत्ते की जाति का, बचपन मे बडा ही सुदर होगा, ज्यों ज्यो बडा होगा खौरहा होता जाएगा। और एक है मोर की जाति का, जितना ही बडा होता जाएगा उतना ही विचित्र वर्ण के पखो मे सज्जित होता रहेगा, हर पख पर आकाश का चदा आ फसेगा। यह जाति बडी दुर्लभ होती है। धीरानन्द का ध्यान आया। श्यामू देबू जाने कैसे होगे। हाँ, बिल्कुल खराब नहीं होगे। कहावत है, सामने का हल जिस ओर जाय पीछे का हल भी उसी ओर जाए। व धीराबाबू जैसे न भी हो, उसके नजदीक तो पहुँचेंगे ही।

अपने बच्चे के बारे मे भी वह बहुत सी गुप्त आशाओ को सजोये है। तभी तो वह किताब मनोरमा को देकर चित्रो को प्रणाम करने की बात कही उसने। उसने सुना है इसका फल अच्छा होता है। महात्माओ का प्रभाव गर्भस्थ भ्रूण मे सचरित हो जाता है।

कई क्षण के बाद वह एकाएक चचल हो उठा। बडा बेजा काम हो रहा है, धीरा बाबू की किताब आज तक लौटाई नही।

●●

सात

चन्द दिनो के बाद सीताराम का ताऊजाद भाई सीताराम को ढूढ गया। तीन तीन बार।

सीताराम का ताऊजाद भाई पडित-दादा बडा भला आदमी है। शात

सीधासादा आदमी, गाँव में ही पाठशाला चलाता, गाँव की चिट्ठी पत्री दस्तावेज लिखा करता और इसके अलावा जप-जाप करता है। पंडित द्वारा पाठशाला सफर ही चला है। गाँव में कहीं भी रार-तकरार हो, समझौता करने के लिए खुद ही जाकर दोनों पक्षों से अनुरोध करता है। जमींदार की लगान-वसूली के वक्त गुमाश्ते की बैठक में भी खुद ही चला जाता है, लोगों का बाकी-बकाया का हिसाब देख देता, लोगों को लगान बकाया रखने के लिए डाँट-फटकार बताता, सूद-ब्याज माफ करने के लिए गुमाश्ते से भी अनुरोध करता।

उस दिन शाम के बाद तीन बार आकर उसने सीताराम की खोज की। सीताराम उस वक्त रतनहाटा से लौटा नहीं था। खाना खाना बना लेने के बाद मनोरमा ओसारे बैठी परसने के लिए रुई बट रही थी। किसान-बहू जरा दूर बैठी किसी काम के अभाव में अपने ही पैरों पर हाथ फेर रही थी, बीच-बीच में कह रही थी, जाने तुम लोगों की रस्म कैसी है? सनक हुई सवार चल मक्का के पार। दिनोरात चलना और चलना। इससे बेहतर है कि पैर में जरा एल-तेल लगाओ, मच्छर नहीं काटेंगे, सर्दी नहीं लगेगी। जब तक सीताराम लौट नहीं आता—किसान-बहू घर पर ही रहती है। बैठे-बैठे अपने ही तरंग में वह बड़बड़ा रही थी लेकिन मनोरमा के कानों में कुछ भी पहुँच नहीं रहा था, वह जरा चिन्तित हो गयी है। पंडित जेठ तीन-तीन बार क्या आए? यूँ तो पंडित जेठ आते नहीं!

किसान बहू बोल पड़ी, इसमें होना ओना क्या! अरे लगान लगान बाकी आकी पड़ गया हो तो मुच्छैल गुमाश्ते ने कुछ कहा सुना होगा। बस तड़-फड़ भागते चले आये पंडित महित।

मनोरमा लिख पढ़ नहीं पाती, लेकिन इस बार भी सीताराम ने लगान चुकाकर रसीद ला उसे रखने को दी है। उसको खूब याद है। घुमा फिराकर देखने के बाद उसने बक्से में रख दी है। बेशक लगान के बारे में कुछ नहीं। तो क्या?

किसान-बहू ने उसका भी फैसला कर दिया, तो फिर गाँव के काइयाँ-कमीने कुछ साजिश-आजिश रच-बच रहे होंगे।

यह मुमकिन है। मुमकिन क्यों, बेशक यही बात होगी। उसके पति को कोई अच्छी निगाह नहीं देखता। सभी कहते हैं, फेल करके जिसकी गर्दन पर पट्टे पड़ गए, वही आखिरकार पंडित बन गया! बहुत-से लोग कहते हैं, मैंने बड़े अच्छे आदमी से सुना है कि बाबुओं की कोठी में उसे वतन एतन कुछ भी नहीं मिलता, बस खुराकी भर मिलती है। बहुत से लोग बिला-वजह लानत मलामत करते हैं कहते हैं ज्यादा मत बढ़ो, आँधी में गिर जाओगे—गिरेगा, जल्दी ही गिरेगा देखते भी रहो।

किसान बहू ओसारे के एक छोर पर बैठी थी, धप से लेटकर बोली, तनिक लेट लो न।

उसके बारे में सोच-सोच मत करो। वह सब सफाचट हो जाएगा। कौन

क्या बिगाड सकता ? हजार हो आठ आने जमीदार की कोठी मे मास्टरी फास्टरी कर रहा है।—लो तनिक लेट लो। मालिश फालिश कर लो तनिक। हाँ सो नही ?

नही। तू लेटी रह। मैं आई। बस आ ही जाती हू।

जल्दी आना बचवा। अगर कही मैं सो गो गई तो इल्ली बिल्ली आकर असोई रसोई चाट जाएगी। दूध उध सभाल के रख जाना जी।

बाहर के दहलीज पर आकर मनोरमा फिर ठिठककर खडी हो गई। वह ताऊ के घर जा रही थी। किसी की माफत पडित जेठ से पूछ लेगी कि मामला क्या है। लेकिन उसे याद आ गया, उसके जाकर खडे होते ही उस घर की ननद बारी हँसी हँसकर बोलेगी, आओ मास्टरनी आओ।

स्टेशन पर सीताराम ने श्यामू देवू से कहा था, 'मास्टर की दुल्हन—मास्टरनी।' वही बात गाँव भर मे फैल गई है। या तो किसान बहू ने यह प्रचारित किया है या तो उस लडके ने। उन्ही लोगो ने सुनी थी यह बात। इसके अलावा, मनोरमा को भी वे कोई अच्छी निगाहो से नही देखते। कहते हैं, घमडी है। वह कौन सा घमड दिखाती है, मनोरमा की समझ मे नही आता।

दरवाजे पर खडी वह निरुत्साह हो गयी। इसी कारण शायद उसे घर की याद आई, किसान बहू की कुछ चोरी करने की आदत है। लकडी अकडी, फूस-पुआल खपचियाँ तो वह नियमित लेती ही है, तिस पर छोटी मोटी चीजें पल्लू मे छिपा लेती है। पकडे जाने पर भी शरमाती नही, शरमाना तो दरकिनार, ऊपर से झिडक उठती, घर से लूगी ऊगी नही तो क्या कल्लू-जगधर के घर से लूगी ? इसमे अजर नजर मत डालो बचवा। हाँ, तीन पीढी से तुम्हारे यहाँ दट अट रह हैं।

इसके अलावा उसके पाँव भारी हैं, प्राय आसन्न प्रसवा है। तबीयत कोई ठीक नही। रात को घर से निकलना भी ठीक नही होगा। अब तो घर के आँगन म उतरती ह औरतें, सुनत हैं पहले रात को घर मे भी अनछायी जगह मे कोई निकलती नही थी। वह लौट आई। इसी बीच किसान बहू की नाक बोलने लगी है। फिर म भी उसे हँसी आ गयी। भला नाक बोलने की आवाज तो देखा ? फर—फर। फिर फरफरत भी बीच बीच मे। वह रूई लेकर बैठ गई। लेकिन वह भी सुहाया नही।

उल्लू घुघुआ रहा है। बेशक काला उल्लू होगा। कै बज गए ? ऊपर घडी देखने के लिए वह उठी। सीताराम ने घर के लिए एक टाइम पीस खरीदी है। मनोरमा को कई बार उसने घडी देखना सिखाया है। मनोरमा की अक्ल मोटी है, यह मनोरमा खुद ही समझ पाती है।

सीताराम कहता, लोगो के दिमाग मे गाय का गोबर भरा होता है और तुम्हारे दिमाग मे गधे का गोबर भरा है।

गधे का कहीं गोबर होता है ! याद आते ही मनोरमा को हसी आ जाती।

पंडित लोग जितनी ही ऊटपटांग बातें करते हैं।

ऊपर उसे नहीं जाना पड़ा। सीताराम की आवाज

जेठ से ही बातें कर रहा है, तुझे दान के दुगने तीन बार

चला जा रहा हूं। लेकिन छोड़ क्यों रहे थे?

स्वाभाविक शान्त स्वर में पंडित, जेठ ने कहा, चल,

घर पर आकर जेठ ने कहा, ऊपर चल।

ऊपर? क्यों जी? ऐसी क्या बात है? सीताराम ने,

चल, बता रहा हूं। नीचे वह किरान-बहू बो है।

ऊपर जाकर दोनों बैठ गये। मनोरमा ने सीढ़ी पर खड़े

गया। उसका दिल धड़क रहा है। पंडित दादा ने कहा, शी

की खबर जिस दिन आई उस दिन क्या तूने पाठशाला में छु

सीताराम चौंक पड़ा। इस बात को उसने इस नजरिए

था। उसने कहा, हां खबर सुनी। सुना, बाबुओं की कोठी में

रो रही हैं, श्यामू देबू रो रहे हैं। उनके घर मैं पढ़ाता हूं,

लिखता भी एक है। मुझसे रहा नहीं गया, भागता गया। जाते व

पंडितदादा बोले, छुट्टी न भी देता तू। तेरे न रहने पर

आप ही भाग गये होते।

यह भी तो एक ही बात हुई। सीताराम हंसा।

नहीं। एक बात नहीं। यहां के लोगों ने सब इन्सपेक्टर के

भेजी है।

दरख्वास्त भेजी है? उसका दिल धक-सा हो रह गया।

हां। मैं आज एक सफाई दाखिल करने गया था। तो उन्ह

यह बात बताई। रत्नहाटा के किसी ने दरख्वास्त में लिखा है प

असहयोग का प्रचार भी करता है। धीराबाबू के जेल की खब

इसके पाठशाला में फौरन पाठशाला बन्द कर दी। घर में भी करार

तू क्या करना चाहता है?

चाहता हूं। सीताराम ने इतनी देर में अपने को संयत कर लि

तब तो पंडित दादा ने समूचे सिर पर सलवट। गंजे सिर पर

धमकी आयत है शुमार है—खासतौर से समस्या बोझिल होने के

सौवत वाला सलवट पर हाथ फेरने लगे।

सीताराम ने कहा, किया होता तो गिरफ्तार करने में कि

थी। फिर थोड़ी देर बाद बोला, कुछ ऐसा काम तो किया न

है, होगा।

रतनहाटा में प्रवेश करते ही मणिलाल बाबू से भेंट हो गई। मणिलालबाबू अपनी आदत के मुताबिक मूछों पर ताव दे रहे थे। जरा झुककर नमस्कार करते हुए सीताराम चला आ रहा था। मणिबाबू ने कहा, क्यों जी, सुना तुमने अपने जमींदार बाबू के जेल जाने के ऑनर में पाठशाला बन्द कर दी थी ?

थोड़ी देर चुप रहने के बाद सीताराम ने अपने को काफी मजबूत कर लिया। शुरू में दिमाग में दन्न-से आग की लौ की तरह गुस्सा लपलपा उठा था, अपने को सभालकर सविनय मुस्करा कर बोला, जी हाँ, सो तो बन्द कर दी थी। लेकिन इसलिए नहीं कि वे जमींदार बाबू हैं हमारे, बल्कि जो भी ऐसे गौरव का काम करेंगे उन्हीं के लिए करूंगा। आपका बेटा भी तो धीराबाबू का हमउम्र है, वे जायें तो उनके ऑनर में भी दूंगा।

मणिबाबू ने ऐसे उत्तर की प्रत्याशा नहीं की थी। चन्द समहे ठहरकर सीताराम मणिबाबू को पारकर चला गया।

रतनहाटा के इन सब बाबुओं को देखकर उसके मन में पहले की तरह विस्मय नहीं जाग उठता। उस विस्मय और भय में कोई फर्क नहीं। उसने सोचकर देखा है, भक्ति और भय मिलकर ऐसा होता है। जमींदार बाबू लोग, पक्की कोठियां, धन-दौलत—यह धारणा किसान रियाशत का बेटा होने की वजह से उसको भक्तिमान बना देती थी। पाठशाला में उसने देखा है, खाते-पीते घर के लड़के जो अच्छे कपड़े-लत्ते पहनकर आते हैं, नए किस्म की पेंसिल, लकदक नई किताबें, रंगीन कंचे जिनके पास होते, लाल-नीले लम्पट जेब में लेकर जो लोग पाठशाला में आते हैं उनका प्रेम पात्र बनने के लिए यहाँ तक कि केवल उनसे सटकर खड़े होने भर के लिए दूसरे लड़के लालायित हो उठते हैं। जो लोग कतई गरीब हैं वे नजदीक आकर भी जरा फासला बनाये रख आँखें फाड़ फाड़ कर देखा करते हैं। अमीर लड़के की कोई चीज जमीन पर गिर जाये तो वे झट झुक उसे उठाकर उसके हाथों में देकर कृतार्थ से हो जाते हैं। बाबुओं के प्रति भक्ति भी एक ही बात हुई—कोई फर्क नहीं।

और भय ? किस बात का भय ! अब उसे भय भी नहीं होता। एक बात वह समझ गया है। ये लोग हुंकार भरेंगे ही, इसकी आदत जो पड़ गयी है उनको। हुंकार के पीछे दो चार चपरासी होते हैं। हिम्मत से अगर इस हुंकार की उपेक्षा कर खड़े हो जाओ तो वे हक्काबक्का रह जाते हैं। और वह डरेगा भी क्यों, वे भी इंसान हैं और सभी लोग इंसान हैं।

यकायक पीछे से मणिबाबू ने पुकारा, सुनो, सुनो ऐ छोकरे !

साथ ही साथ बाबू का चपरासी सआदत शेख भागते हुए आकर उसके सामने खड़ा हो गया, तुम्हें बुला रहे हैं बाबू।

सीताराम ने स्थिर दृष्टि से उसके मुख की ओर देखकर कहा, मुझे इस वक्त फुरसत नहीं। बाबू से जाकर बता दे।

फुरसत नहीं ! सआदत दंग रह गया।

पडित लोग कितनी ही उद्भट बातें करते हैं।

ऊपर उसे नहीं जाना पड़ा। सीताराम की आवाज सुनाई पड़ी। पडित जेठ से ही बातें कर रहा है, मुझे शाम से तुमने तीन बार ढूढा ? मैं तो अभी चला आ रहा हू। लेकिन खोज क्यो रहे थे ?

स्वाभाविक शान्त स्वर मे पडित, जेठ ने कहा, चल, तेरे घर ही चल।

घर पर आकर जेठ ने कहा, ऊपर चल।

ऊपर ? क्यो जी ? ऐसी क्या बात है ? सीताराम भी उत्कठित हो उठा।

चल, बता रहा हू। नीचे वह किसान-बहू जो है।

ऊपर जाकर दोनो बैठ गये। मनोरमा से सीढी पर खडे हुए बिना रहा नहीं गया। उसका दिल धडक रहा है। पडित दादा ने कहा, धीराबाबू के जेल जाने की खबर जिस दिन आई उस दिन क्या तूने पाठशाला मे छुट्टी दे दी थी ?

सीताराम चौंक पडा। इस बात को उसने इस नजरिए से कभी सोचा नहीं था। उसने कहा, हाँ खबर सुनी। सुना, बाबुओ की कोठी मे चिटठी आई है, माँ रो रही हैं, श्यामू देवू रो रहे हैं। उनके घर मे पढ़ाता हू, वे जमींदार हैं, यह रिश्ता भी एक है। मुझसे रहा नही गया, भागता गया। जाते वक्त छुट्टी दे गया।

पडितदादा बोले, छुट्टी न भी देता तू। तेरे न रहने पर सभी लडके अपने आप ही भाग गये होते।

वह भी तो एक ही बात हुई। सीताराम हँसा।

नहीं। एक बात नही। वहाँ के लोगो ने सब इन्सपक्टर के पास दरख्वास्त भेजी है।

दरख्वास्त भेजी है ? उसका दिल धक सा हो रह गया।

हाँ। मैं आज एक सफाई दाखिल करने गया था। तो उन्होने मुझे चुपके से यह बात बताई। रत्नहाटा के किसी ने दरख्वास्त मे लिखा है, पाठशाला मे तू असहयोग का प्रचार भी करता है। धीराबाबू के जेल की खबर आते ही तूने उसके सम्मान मे फौरन पाठशाला बन्द कर दी। घर में भी चरखा कातता है। तू क्या चरखा कातता है ?

कातता हू। सीताराम ने इतनी देर मे अपने को सयत कर लिया था।

सब तो पडित दादा के समूचे सिर पर खल्वट। गजे सिर पर हाथ फेरना उनकी आदत मे शुमार है—खासतौर से समस्या बोझिल होने के समयो पर। पडित दादा खल्वट पर हाथ फेरने लगे।

सीताराम ने कहा, किया होगा तो शिवकिंकर वगैरा ने किया होगा। करते है। फिर थोडी देर बाद बोला, कुछ बेजा काम तो किया नहीं। जो कुछ होना है, होगा।

केवल शिवकिकर या उसका गुट ही नहीं, सीताराम दग रह गया, करीब करीब सारे भद्र लोग ही मानों उत्तेजित हो उठे हैं और इस दरख्वास्त में बहुतों की ही प्रेरणा है। इसका प्रमाण उसे अगले दिन सबेरे ही मिल गया।

रतनहाटा में प्रवेश करते ही मणिलाल बाबू से भेंट हो गई। मणिलालबाबू अपनी आदत के मुताबिक मूछों पर ताव दे रहे थे। जरा झुककर नमस्कार करते हुए सीताराम चला आ रहा था। मणिबाबू ने कहा, क्या जी, सुना तुमने अपने जमींदार बाबू के जेल जाने के ऑनर में पाठशाला बन्द कर दी थी ?

थोड़ी देर चुप रहने के बाद सीताराम ने अपने को काफी मजबूत कर लिया। शुरू में दिमाग में दन-से आग की लौ की तरह गुस्सा लपलपा उठा था, अपने को सभालकर सविनय मुस्करा कर बोला, जी हाँ, सो तो बन्द कर दी थी। लेकिन इसलिए नहीं कि वे जमींदार बाबू हैं हमारे, बल्कि जो भी ऐसे गौरव का काम करेंगे उन्हीं के लिए करूंगा। आपका बेटा भी तो धीराबाबू का हमउम्र है, वे जायें तो उनके ऑनर में भी दूगा।

मणिबाबू ने ऐसे उत्तर की प्रत्याशा नहीं की थी। चन्द लमहे ठहरकर सीताराम मणिबाबू को पारकर चला गया।

रतनहाटा के इन सब बाबुओं को देखकर उसके मन में पहले की तरह विस्मय नहीं जाग उठता। उस विस्मय और भय में कोई फर्क नहीं। उसने सोचकर देखा है, भक्ति और भय मिलकर ऐसा होता है। जमींदार बाबू लोग, पक्की कोठियां, धन-दौलत—यह धारणा किसान रियाया का बेटा होने की वजह से उसको भक्तिमान बना देती थी। पाठशाला में उसने देखा है, खाते-पीते घर के लड़के जो अच्छे कपड़े-लत्ते पहनकर आते हैं, नए किस्म की पेंसिल, लकदक नई किताबें, रंगीन कचे जिनके पास होते, लाल-नीले कम्पस जेब में लेकर जो लोग पाठशाला में आते हैं उनका प्रेम पात्र बनने के लिए यहाँ तक कि केवल उनसे सटकर खड़े होने भर के लिए दूसरे लड़के लालायित हो उठते हैं। जो लोग कतई गरीब हैं, वे नजदीक आकर भी जरा फासला बनाये रख आँखें फाड़ फाड़ कर देखा करते हैं। अमीर लड़के की कोई चीज जमीन पर गिर जाये तो वे झट झुक उसे उठाकर उसके हाथों में देकर कृतार्थ से हो जाते हैं। बाबुओं के प्रति भक्ति भी एक ही बात हुई—कोई फर्क नहीं।

और भय ? किस बात का भय ? अब उसे भय भी नहीं होता। एक बात वह समझ गया है। ये लोग हुंकार भरेंगे ही, इसकी आदत जो पड़ गयी है उनको। हुंकार के पीछे दो चार चपरासी होते हैं। हिम्मत से अगर इस हुंकार की उपेक्षा कर खड़े हो जाओ तो वे हक्काबक्का रह जाते हैं। और वह डरेगा भी क्यों, वे भी इन्सान हैं और सभी लोग इन्सान हैं।

यकायक पीछे से मणिबाबू ने पुकारा, सुनो, सुनो ऐ छोकरे !

साथ ही साथ बाबू का चपरासी सआदत शेख भागते हुए आकर उसके सामने खड़ा हो गया, तुम्हें बुला रहे हैं बाबू।

सीताराम ने स्थिर दृष्टि से उसके मुख की ओर देखकर कहा मुझे इस वक्त फुरसत नहीं। बाबू से जाकर बता दे।

फुर्सत नहीं ! सआदत दग रह गया।

नहीं। उसी स्थिर दृष्टि से वह उसकी ओर देखता रहा।

सआदत ने कहा, चले चलो भाई इस बार। क्यों हम से हंगामा-हुज्जत कराओगे?

हाथ की लालटेन, छाता, लाठी, कंधे का कुरता यह सब सीताराम ने रास्ते पर रख दिया। सआदत ने कहा, साथ ही से चलो पण्डित। ये कोई भारी थोड़े ही हैं?

सीताराम जवाब में सीना तान कर खड़ा हो गया और बोला, हामापाई हंगामा करोगे? या लाठी लोगे? कहो तो लाठी उठा लूँ।

किसान का बेटा, बचपन से ही मेहनत मशक्कत करके उनको बड़ा होना पड़ता है, तिसपर जन्म से ही उसका कदकाठ बलिष्ठ है। लेकिन इस ढंग से जिन्दगी में वह कभी खड़ा नहीं हुआ था। कभी कभार अन्याय का विरोध करता रहा है लेकिन उसमें और इसमें बड़ा फर्क है। आज उसे लगा कि आज खून हो जाने को भी वह तैयार है। उद्धत अपमान को वह बरदाश्त नहीं करेगा।

बलिष्ठ देह लेकर उसका इस तरह खड़ा होना बेतुका नहीं लगा, सआदत भी चौकन्ना हो गया। अगर व्यक्तिगत मामला होता तो फौरन हंगामा छिड़ गया होता। सआदत भी ताकतवर है, लेकिन सआदत की ओर से यह मालिक का काम है, हुक्म के मुताबिक करना होगा, खासतौर से मालिक जब यहीं खड़े हैं। उसने हाँक लगाकर कहा, पण्डित कह रहा है, उसको इस वक्त फुरसत नहीं।

मणिबाबू की कचहरी थोड़ी ही दूरी पर थी, वे अपनी आँखों से ही सबकुछ देख रहे थे। वे बोले, रहने दो। तुम चले आओ।

सआदत बोला, तुम्हारे साथ मारपीट करने मैं नहीं आया था पण्डित भाई। मुझ पर तुम नाराज मत होना। भला बताओ, मैं करूँ तो क्या करूँ? गरीबगुर्बा जाहिल मनई, इसी तरह खट कर खाता हूँ। वह चला गया।

सीताराम जरा लज्जित हुआ। वाकई सआदत पर इतना गुस्सा करना वाजिब नहीं था। सआदत का क्या कसूर? लेकिन यह मणिलाल बाबू? ये लोग भी क्या हैं? छाता, लाठी, लालटेन, कुरता उठाकर वह बाबुओं की कोठी में दाखिल हुआ।

पाठशाला के दरवाजे पर ही ज्योतिष साहा खड़ा था। साहा बोला, पण्डित, उस दिन का काम कोई ठीक नहीं हुआ।

साहा के वक्तव्य का मतलब क्षणभर में सीताराम समझ गया। फिर वह सवालिया निगाह से देखता रहा।

धीराबाबू के जेल की खबर सुनकर पाठशाला में छुट्टी देना कोई ठीक काम नहीं हुआ।

सीताराम जमीन की ओर नजर गड़ाए सोचता रहा।

स्कूल सब इन्सपेक्टर साहब ने तुमको एक बार बुलवा भेजा है। एक

बार हो आओ।

सीताराम बोला, साहा जी, अगर स्कूल का एड देना वह बन्द कर दे तो आप लोग —तो क्या आप लोग भी पाठशाला—

साहा ने बीच मे टोकते हुए कहा, पहले से ही इतना सब सोच रहे हो पण्डित ? एक सफाई देते ही सबकुछ निबट जाएगा। यह मुझे सब इसपेक्टर साहब ने कहा है। इसके अलावा इसपेक्टर रजनीबाबू भले आदमी, धार्मिक और महाशय व्यक्ति हैं। जाओ, तुम एकबार चक्कर लगा आओ।

स्कूल सब इसपेक्टर रजनीबाबू सचमुच बडे नेक हैं। जरा ज्यादा मात्रा मे ही भलेमानुस हैं। रामकृष्ण देव के भक्त हैं किसी प्रकार से भी झूठ नही बोलते, किसी भी पण्डित से जर्रा भर चीज भी स्वीकारते नही। सिर्फ दो लक्षण है उनके। सज्जन होम्योपैथी का इलाज करते हैं, इमार बीमार पडने पर उनकी दवा सेवन करने पर वे खुश होते हैं और रामकृष्णदेव, श्री श्रीमाँ व विवेकानन्द का आविर्भाव या तिरोधान उत्सव मनाने पर रजनीबाबू उसे हृदय से स्नेह किए बिना रह नही पाते।

सीताराम का दुर्भाग्य है कि उसकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी है, उसने कभी रजनी बाबू की दवा नहीं ली। और रत्नहाटा गाव रत्नो का ही हाट है, यहाँ मणिलाल और शिवशंकर जैसे रत्न इतने प्रबल हैं कि रामकृष्ण देव का जन्मोत्सव करना यहाँ आज तक सम्भव नही हो सका है। एकबार आयोजन हुआ था, धीरानन्द के हम उम्र और उसी के कुछ मित्रो ने प्रयत्न किया था लेकिन शिवशंकर दल ने उसको चौपट कर दिया था। उन लोगो ने सलाह की थी, उत्सव होने पर एक बकरा लाकर वे उसका उत्सव क्षेत्र मे बलिदान करेंगे।

मणिलाल बाबू की चाल कुछ स्वतन्त्र किस्म की है। जमीदारी कूटचाल। उन्होने रजनी बाबू को कहला भेजा था, हाल मे उनको सुनाई पडा है, रजनीबाबू आजकल कुछ नाबालिग लडको के सहारे गाँव के भीतर आ-जा रहे हैं। वे अर्थात मणिलालबाबू विश्वास करते हैं कि रजनीबाबू ईमानदार और भद्र व्यक्ति हैं, उनका कोई बुरा अभिप्राय नही है या हो नही सकता, लेकिन चूंकि उनके आने जाने के कारण गाँव की बहू-बेटियो को असुविधा होती है इसलिए वे सविनय प्रतिवाद कर रहे हैं। दस्तावेज के मसौदे जैसी पक्की और पेचीदा भाषा की यह उक्ति सुनकर रजनीबाबू के हाथ पाँव और उगलियो के सिरे सचमुच ठण्डे पड गए थे। उन्होने सारा आयोजन बन्द कर दिया था। अगले वर्ष से वे बडे स्कूल के बोर्डिंग में, वहाँ के छात्र और शिक्षको को लेकर इन पावन दिवसों का पालन किया करते हैं। हफ्ते मे एक दिन शाम को बोर्डिंग के छात्रो को लेकर आधा घण्टा रिलिजियस क्लास लगाते हैं, गाना होता—

"माँ मुझे कृपा कर बच्चा सा बनाए रखना, शरीर चाहे बढता रहे कोई नुकसान नही पर दिल बच्चा जैसा ही बना रहे।'

लेकिन सीताराम ने इनमें से किसी मे भी योगदान नही किया। उसका

कारण यह नहीं कि सीताराम मे भक्ति की कमी या अविश्वास हो। उसका कारण यह है कि उस बड़े स्कूल के किसी आयोजन मे वह किसी प्रकार भी जाना नहीं चाहता है, जा नहीं सकता। बड़े स्कूल के हेडमास्टर की पहले दिन वाली स्नेहशून्य और सहानुभूतिशून्य बातें उसे हमेशा याद आती रहती हैं। हेडमास्टर ने श्लेष के स्वर मे ही कहा था, साहा केवट इन्हीं को लेकर तुम पाठशाला करो। पुण्य भी होगा—अंधेरे से उनको प्रकाश मे भी लाना होगा। वही वह कर रहा है। फिर भी उसका एक निगूढ़ अभिमान है। इसके अलावा, स्कूल के किसी भी उत्सव में वे उसे निमन्त्रण भी नहीं भेजते। दूसरे मास्टर भी उससे घृणा करते हैं। यहां तक कि, शिवकिंकर-आविष्कृत 'अंबरे मे लड्या क्यो ला रहा है, आँचर जूठ हो जाएगा'—इस वाक्य को लेकर भी ठिठोली किया करते करते हैं। हालांकि सीताराम अगर चाहे तो इस व्यंग के उत्तर में व्यंग कर सकता है। उस स्कूल के मास्टरो मे बहुत से लोगों का उच्चारण खराब है, कोई 'एवम्' और 'केवल' का उच्चारण करते हैं 'अयवम्' और 'कैवल'। कोई 'आमेन' को कहते हैं 'एमीन'। कोई वक्तव्य' को कहते हैं—कोरतव्य। यह सब लेकर व्यंग कर सकता है, लेकिन वह ऐसा करता नहीं। बल्कि उनके ससंग से वह कतरा कर चलता है। इसलिए रजनीबाबू को खुश करने के सुयोग की उपेक्षा करके भी बड़े स्कूल की धर्मसभा मे वह योगदान करने नहीं जाता।

वहाँ जाने की बात ख्याल मे आते ही उसे एक कथा याद आ जाती है। नदी म एक स्वर्णकुम्भ और एक मृतकुम्भ बहते चले आ रहे थे। स्वर्णकुम्भ ने मृतकुम्भ को बुलाकर कहा था, हम दोनो ही जब कुम्भ हैं, चलो एक ही साथ चलें। नजदीक आ जाओ। मृतकुम्भ ने नमस्कार करते हुए कहा था, हे मूल्यवान स्वर्णकुम्भ, तुम को धन्यवाद। लेकिन तुम्हारी अनमोल उदारता की झकार सहन करने की शक्ति मुझमे नहीं है। मेरा दूर रहना बेहतर है। इसलिए वह दूर ही रहता है। रजनीबाबू इसको बुरा मानते हैं या नहीं, उसे नहीं मालूम। लेकिन भरोसा यही है कि रजनीबाबू अन्याय करने वाले व्यक्ति नहीं हैं। अन्याय वे नहीं करेंगे—इसका विश्वास सीताराम को है। फिर भी आज चिन्तित सा सविनय नमस्कार कर सामने आ खड़ा हो गया। रजनीबाबू बोले, तनिक बैठो। बैठना पड़ेगा। इन लोगो का काम निबटा दूं।

स्कूल सब इन्सपेक्टर का दरबार। इस सर्कल की पाठशालाओं के पण्डितो मे दो चार जने रोजाना ही आते हैं। वेशभूषा में गरीबी की छाप, चेहरे पर क्षीणता, विनीत दृष्टि, सब इन्सपेक्टर के चबूतरे पर बही-खाता लेकर बैठे रहते हैं। रत्नहाटा के बाबू लोग सिगरेट का धुंआ उड़ाते झकझक पोशाक पहने चले जाते हैं, वे भावशून्य देखते रहते हैं। शायद ही कभी पुराने जमाने के बूढ़े पण्डित यहाँ के बाबुओं के किसी लड़के को अकेला या बुलाकर उससे बातें करते हैं। फिर अकस्मात् ही कठिन हिज्जा, जटिल मानस गणित पूछने लगते, बाबुओं के लड़कों के लाजवाब हो जाने पर खुश होते, चेहरे पर सन्तोष की मुस्कान झांकने लगती। लेकिन दो एक लड़के ऐसे भी हैं, जो लोग यहाँ के भावी

शिवकिंकर हैं, वे शुरू मे ही घुडकी लगा देते हैं, शट् अप् ! कौन होते हो तुम पाठ लेने वाले ? अंग्रेजी मे कहते—हू आर यू ?

एक के बाद एक को रजनीबाबू पुकारते, महेशपुर पाठशाला के पडित जी ! भीतर आइए !

जी, आया साहब। वृद्ध पडित हाथ जोडकर खडे हो गए। मासिक चार रुपए की सहायता मिलती है पडित को। महामहिम महिमाणव रत्नहाटा सर्कल के सब इंसपेक्टर महोदय के समीप अधीन की एक मात्र विनीत प्रार्थना यह है कि चार रुपए वाली सहायता मे वृद्धि कर पाँच रुपए सहायता का आदेश करें।' वृद्ध पडित ने कहा, बाबू साहब, आज पैंतीस साल से पाठशाला चला रहा हू, शुरू मे सहायता मिलती थी दो रुपए की। लेकिन आज भी वह पाच रुपए नही बन सकी। हुजूर विवेचक हैं, अधीन क्या कहेगा ? आज पतीस वर्षों की परीक्षा का फल देखें।

रजनीबाबू बोले, आपके तो और भी जरिया माश हैं पडित जी। गुमाश्ते के कागजात ठीक कर देते हैं, दुकान का बही खाता लिखते हैं। एक रुपए का एड बढने पर क्या कुछ मिल जाएगा आपको ?

पडित ने हाथ जोडकर कहा, गुमाश्ते के कागजात लिखकर मुझे कुछ भी नही मिलता। जितने रोज लिखता हू उतने रोज के लिए दो मुठठी भोजन मात्र मिलता है। लेकिन दुकान का जो बही खाता लिखता हू, दुकानदार मुझे महीने मे दो रुपए देता है। थोडा चुप रह कर पडित ने फिर कहा, हुजूर ने हालांकि सही बात बताई है, एक रुपया भला है भी कितना ? बात सही है। लेकिन हुजूर, मेरी बडी साध है, एकाग्र वासना है, मेरा एड पाँच रुपए हो जाय। आस-पास की पाठशालाएँ पाँच रुपए पाती हैं और मैं चार रुपए—मुझे शर्म लगती है। यह मेरी अन्तिम साध है, मेरी—

पडित के वाक्य प्रवाह म बाधा डालते हुए रजनीबाबू बोले, मैं आपकी दरख्वास्त ऊपर भेज दे रहा हू। अब कोतालघोपा के पडित जी आवें !

कोतालघोपा ब्राह्मणप्रधान गाँव है। सो भी तांत्रिक ब्राह्मण। वहा का पडित आकर खडा हो गया। पडित जाति से कायस्थ है, धर्म मत से वैष्णव, दुर्बुद्धिवश पडित ने एक ढीठ लडके को डाटने मे असावधानतावश शाक्त तान्त्रिकों की बकराबलि और कारण (मदिरा) बनाना लेकर श्लेष वाक्य कहा है, क्यो बेटा नाहक मुझे क्लेश पहुँचाते हो और खुद भी कष्ट पाते हो ? ऐसा कुलकर्म है, अनुस्वार विसर्ग लगाते ही मन्त्रम् हो जावेम्, और सत्सग दो घुटम् कारणम् ! बस, तुम्हारी रोटी कौन छीन सकता है ? क्यो यह कष्ट उठाते हो ? इसी हेतु उसके खिलाफ दरख्वास्त दाखिल किया गया है।

रजनीबाबू बोले, यह सब क्यो बोले आप ? वे ब्राह्मण हैं आप कायस्थ हैं।

पडित ने हाथ जोडकर कहा, जी साहब, कायस्थ होने पर भी मैं आदमी हू, सहन करने की भी एक सीमा होती है। यह लडका बिल्कुल छुट्टा सांड है।

सिर खुजलाते हुए लज्जा प्रगट करते हुए बोले, तमाकू पीता हू हुजूर—तो यह लडका तमाकू कोयला कुछ भी शेष नही रखता। तिस पर किसी को मार रहा है तो किसी को पीट रहा है। किसी की किताब फाड रहा है। उस दिन एक का कान दाँतो से काट लिया—मार लहूलुहान मामला। कान उमेठा तो आँखें लाल लाल कर कहने लगा—खबरदार, कायस्थ होकर मेरा कान मत छुओ। ये कान मेरे गुरु के हैं, मैं मन्त्र ले चुका हू।

रजनीबाबू बिगड पडे—सटी ? सटी क्या हुई आपकी ? सटी से पीटा क्यो नही आपने उसको ? बहुत अयोग्य व्यक्ति है आप !

पडित बोला, तो फिर किसी दिन अधेरे मे अचानक ही किसी ढेले से मेरा सिर फूट जाएगा हुजूर। ब्राह्मण नही हू, निरीह शिक्षक हू—वह तो, गोवध हो जाएगा साहब।

रजनीबाबू इस बार हँस पडे—क्या मुसीबत ! तो फिर करेंगे क्या आप ? मैं भी भला लिखूगा क्या ? जरा सोच कर बोले—अच्छी बात। फिर कभी एसी बातें न करिएगा।

जी नही फिर कभी नही कहूगा हुजूर। इसके बाद उसने कहा, जी साहब रामकृष्ण कथामृत का दाम क्या है ? मै एक मगवाना चाहता हू, दुकान का पता अगर लिख दें। कायस्थ की अक्ल बडी तेज होती है चिन्ता न होते हुए भी सीताराम ने तारीफ की। कायस्थ पडित ने बडे कायदे से रामकृष्ण कथामृत का प्रसग छेड दिया है।

इसके बाद पलाशबुनी के वृद्ध पडित की बारी आई। इसी पडित जी के साथ सीताराम इतनी देर से बातें कर रहा था। पडित अपना दुखडा सुना रहे थे। जिस गाँव मे पाठशाला खाली है वहाँ पाठशाला खोलने की सम्मति प्राप्त करने के लिए जमीदार की कचहरी मे रसोइए का काम स्वीकार करना पडा था। उन दिनो जमीदार के इस इलाके मे आने पर उनका खाना बनाना पडता था। जमीदार के ग्राम्यदेवता की पूजा करनी पडती थी। इसमे हालाकि फायदा था। इस कारण ग्राम्य पुरोहित का पद उनको मिल गया था। ईख पेरते वक्त शालपूजा कर गुड पाते थे, इतुपूजा करके ऊडद पाते थे। लेकिन पडित ने हँस कर कहा, बेटा सवेरे से डेढ पहर दिन तक पाठशाला, फिर स्नान, फिर पूजा। इसका मतलब दिन के तीन पहर तक बिना खाए गुजारना पडता था। खाना हालांकि उतना बच जाता था, लेकिन उसके फलस्वरूप अब बीमारी आ जुटी है, तिस पर यह कन्यादाय भी है। जिन्दगी खतम हो गई। बस दो एक वर्ष रह गए। थोडा चुप रहने के बाद बोले, तुम लोगों का जमाना तो सुनहरा जमाना है बेटा। गृहस्थो ने घर लडके के लिए धरना नही देना पडता। लडके का बाप नहीं कहता मेरा बेटा पढ लिखकर भला क्या करेगा ? लडके की माँ-बुआ नही कहती, इस वश मे तो पढाई नही की जाती पढाई खेल भी लेगा लडका ? सयानत होगी। नहीं-नहीं, कोई जरूरत नहा उसकी ? तुम तो बेटा साहा-बेटा

के बेटा को लेकर पाठशाला कर रहे हो अब। अब सभी मे पढाई-लिखाई के लिए एक उत्साह है। और भी होगा। हम लोग नही देख सकेंगे, तुम लोग देखोगे।

सीताराम ने यह बात मान ली, बोला, सो तो ठीक ही कहते हैं आप। साथ-ही-साथ उसने अपने को भाग्यवान समझा। रजनीबाबू ने पुकारा, पलाशबुनी के पडित जी।

ब्राह्मण हाथ मे जनेऊ पकडे सामने आ खडे हो गए, बोले, हुजूर, मैं गरीब ब्राह्मण हू, यही मेरा अन्न है। यह भी मारा जाय तो बच्चो को लेकर मुसीबत मे पड जाऊँगा। तिस पर कन्यादाय भी है।

वृद्ध पडित ने कन्या के लिए रिश्ता तलाशने मे दस-बारह दिन पाठशाला से नागा किया है।

रजनीबाबू सहृदय व्यक्ति हैं। वृद्ध के मुख की ओर देख प्रसन्न हँसी हँसते हुए बोले—बैठिए, बैठिए आप।

बैठने को होकर पडित रो पडे।

रजनीबाबू बोले—मुझे भी तो बताकर आप जा सकते थे। इन्सपेक्शन पर जाकर मैंने देखा, पाठशाला बन्द है। लोगों ने कहा—आप इस तरह नागा अक्सर किया करते हैं।

पडित बोले, डर से, साहब डर से मैंने आपसे—। फिर रो पडे वह। फिर बोले, साहब, सोलह साल की बेटी गले म फाँसी जैसे अटकी हुई है, रात को नींद नही, दिन को भोजन नही, उस दिन प्रतिज्ञा करके निकला था—पात्र ढूढे बिना लौटूगा नही।

मिला कोई पात्र ?

—जी, मिला है। एक वृद्ध तिआह वाला। खैर उसी से करूँगा। करूँ भी तो क्या ! पडित उद्भ्रान्त-सा हो उठे।

रजनीबाबू ने लम्बी साँस लेकर कहा—खैर, जाइए—आप। लेकिन इस तरह बिना बताए लगातार दस-बारह दिन का नागा फिर कभी न करें।

पलाशबुनी के पडित चले गए। अब और कोई नही।

सभी को विदाकर रजनीबाबू ने बुलाया, सीताराम !

सीताराम नमस्कार कर खडा हो गया। रजनीबाबू बोले, बैठो। बडे लिफाफे मे से एक दरख्वास्त निकालकर उन्होने खुद पढ़ी। फिर बोले, तुम्हारे गाँव का पडित, वह तो तुम्हारा दादा है, उससे सबकुछ बताया है, सुना है तुमने ?

जी हाँ।

तुम तो अग्रेजी भी कुछ जानते हो। पढकर देखो—सरसरी तौर पर सब समझ जाओगे। उन्होने सीताराम के हाथों में दरख्वास्त दिया।

टाइप किया हुआ दरख्वास्त—टू द डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट। सीधे मजिस्ट्रेट

साहब के पास दरख्वास्त भेजी है। साहब ने स्कूल सब इंसपेक्टर के पास तहकीकात के लिए भेजी है।

दरख्वास्त का कारण, असहयोग आन्दोलन मे धीरानन्द मुखर्जी के जेल होने की खबर आने पर सन्दीपन पाठशाला के शिक्षक सीताराम पाल ने उसके प्रति सम्मान प्रदर्शन करने के लिए पाठशाला बन्द की है। इसी से सिद्ध होगा धीरानन्द के प्रति उसका अनुराग। सीताराम धीरानन्द की रिआया है, उसी के घर मे वह रहता है और उसी के आदश से प्रेरित है। इस मतिभ्रान्त उच्छृंखल प्रवृत्ति का युवक धीरानन्द इस समय अहिंसा आन्दोलन मे योगदान करने पर भी दरअसल वह हिंसक आन्दोलन के साथ युक्त है। सीताराम धीरानन्द के परामर्श से और आदश से पाठशाला के लड़को को राजद्रोह सिखाता रहता है।

सीताराम ने बड़े ही कमजोर आदमी की तरह धीरे धीरे दरख्वास्त को रजनीबाबू के सामने उतार दिया। एक दुर्वार भय से उसका मन मानो अभिभूत हो पड़ा था। धीरानन्द हिंसक आन्दोलन से जुड़ा है। सीताराम उसके परामर्श और आदश से पाठशाला के लड़को को राजद्रोह की शिक्षा देता है। उसे लगा, पाठशाला का एड बन्द होगा—यह तो मामूली बात है, इससे पुलिस भी उसको पकड़कर ले जा सकती है।

रजनीबाबू ने पूछा, पाठशाला क्यो बन्द कर दी थी तुमने? इस बारे में मैं क्या लिखू?

अपने को संयत कर सीताराम धीरे धीरे बोलने लगा, मैंने उस ढग से पाठशाला बन्द नही की थी। मैं उनके घर मे रहता हू, वे मुझे घर के लड़के की तरह देखते हैं, जब उनकी इस विपदा के बारे मे सुना, माँ रो रही हैं, मेरे दोनो छात्र रो रहे हैं, तब मैं—

रजनीबाबू बोले क्या तुमने कोई ऐसी बात की थी कि आज धीरानन्द देश के लिए जेल गए हैं उसीलिए पाठशाला बन्द हुई।

जी नहीं साहब। आप मुझसे जो सौगन्ध खाने को कहिए, खाने को तयार हू। आप लड़को से पूछ सकते हैं। ज्योतिष साहा जी हैं, उनसे पूछ सकते हैं'।

रजनीबाबू बोले, मैंने साहा जी से पूछा है। उन्होंने हालांकि वही बताया जो तुम कह रहे हो। जरा चुप रहकर वे बोले, खैर, मैं यही लिखे दे रहा हू। लेकिन इसके बाद से तुम बल्कि जरा सावधान रहना—

जरा चुप रहने के बाद वे जरा सकोच के साथ ही बोले, हो सके तो तुम धीरानन्दबाबू के घर मे रहना छोड दो। उससे भला ही होगा। समझे?

सीताराम चुप किए रहा। श्यामू देबू को पढाना छोड दे? उनके घर के साथ रिश्ता छोड दे? ऐसी विपदा के समय?

रजनीबाबू बोले देखो ये सारे आन्दोलन, यह राजनीति, यह हमारे देश की नही है। यह है विदेशी चीज। इससे हमारे देश का कल्याण नही होगा। हम लोगो का एक मात्र पथ है धर्म का पथ, धर्म-नीति के बीच से ही हम लोगो की

मुक्ति आएगी। परमहंसदेव, स्वामी जी बार बार यह बता चुके हैं।

सीताराम ने आँखें घुमाकर देखा, रजनीबाबू की दीवाल अलमारी में किताबें कतार में सजी हैं। रामकृष्ण कथामृत से स्वामी जी की पुस्तकें—'वीरवाणी', 'परिव्राजक', कितनी ही पुस्तकें!

रजनीबाबू विवेकानन्द प्रवर्तित सेवाश्रम के बारे में कहते जा रहे थे। वे बता गए हैं, मैं भारतवासी हूं। भारत की मिट्टी मेरे लिए स्वर्ग है। भारतवासी मेरा भाई है।

बाहर से किसी ने आवाज दी, रजनीबाबू हैं क्या?

कौन? मास्टर जी?

जी। आज की जोरदार खबर। सी० आर० दास अरेस्ट हो गए हैं।

सच? रजनीबाबू बाहर निकल गए। सीताराम ने 'वीरवाणी' पुस्तक खींच ली।

यह क्या कर डाला? थर्रा दिया इन्होंने तो।

हाँ।

आज कोई भी लड़का क्लास में आएगा नहीं।

हँसकर रजनीबाबू बोले, आप लोग बेंच थामे बैठ रहिए, वर्ना इस गाँव का कोई भरोसा नहीं। शायद दरखास्त ठोक दें। बेचारे सीताराम के खिलाफ दिए हुए दरखास्त के बारे में तो जानते ही होंगे? हालांकि बेचारे ने उस ढंग से पाठशाला बन्द नहीं की थी। धीरानन्द के घर पर रहता है, विपत्ति का समाचार सुनकर बेचारा वहाँ चला गया था। विपदा में जिस प्रकार आदमी आदमी के घर जाता है।

अचानक कोई मजदूर या किसान तबके का आदमी बोल पड़ा। जी बाबू साहब—

सीताराम कमरे में ही बैठा था। 'वीरवाणी' लेकर उलट-पुलट कर देख रहा था। अचानक उसे अपने खेत मजूर के बेटे की आवाज सुनाई पड़ी।

जी, यहां सीताराम पंडित तो आये हैं न?

क्या है रे, क्या बात है?—सीताराम बाहर आ गया।

जी, कन्या सन्तान हुई है जी। इसलिए बप्पा ने कहा इत्तला कर आओ।

मनोरमा ने एक कन्या सन्तान प्रसव किया है। वह लज्जित हो गया।

रजनीबाबू ने कहा, जाओ, तुम घर जाओ। फिक्र मत करना। मैं सबकुछ ठीक कर दूंगा।

जरा पथ आगे बढ़ाकर सीताराम ने कहा, अच्छे हैं न जच्चा-बच्चा?

जी हाँ, बप्पा ने नहीं बताया। मालकिन ने ही कहा। लेकिन शरीफ लोगों के सामने बप्पा का नाम ही लिया।

सीताराम जरा हँसा। छोकरे में अक्ल है। छोकरा पीछे से बोल पड़ा, जी जेब से किताब गिर पड़ेगी, बाहर निकल आई है।

किताब ! जेब मे उसने किताब निकाल ली। उसका सारा शरीर सनसना उठा। रजनीबाबू की 'वीरवाणी' पुस्तक उलट-पुलट कर देख रहा था, जल्दी में उठ आते समय उसे जेब मे डाल लिया है !

●●

पीला सा चेहरा लिये मनोरमा लेटी हुई थी। गोद के पास अभी जन्मी शिशु कन्या। अद्भुत ! ठीक तौर से आखें नही खोल पा रही है, उगलियां से मुट्ठी बन्द कर रही है, थर-थर काप रही है। बडा अच्छा लगा सीताराम को !

मनोरमा ने हँसकर कहा, तुम पर पड़ी है।

सीताराम बोला, तब तो बहुत खूब। शादी करने मे ही आँखें कपार पर चढ़ेंगी। मुझ जैसी बदसूरत !

टोकती हुई मनोरमा बोली, हाय अम्मा ! कैसी वाहियात बात करते हो। बदसूरत कहाँ से हो गये तुम ? या अपने को बदसूरत बताने पर बडी दिलेरी हो जाती है ?

सीताराम हँसा। फिर बोला, यह बात अगर तुम्हारा छल न हो तो तुम्हारे लिए चश्मा मगवाना पडेगा।

बात का मर्माथ न समझ पाने से मनोरमा ने एक बेतुका मजाक किया। जवाब मे बोली, चश्मा देना, जूता देना, एक टोपी भी खरीद देना, तुम्हारे स्कूल में तुम्हारे एवज मे काम कर आया करूगी।

सीताराम ने लडकी की ओर देखकर कहा, काली बदसूरत हुई भी तो क्या, उसको मैं पढ़ी लिखी बनाऊगा। अच्छी शादी अगर न हो तो उसकी शादी मैं करूगा ही नहीं। शिक्षित करूगा उसे, वह खुद किसी स्कूल मे मास्टरी कर लेगी। वक्त कट जायगा।

कैसी मनहूस बातें हैं तुम्हारी !

क्यो ?

मास्टरी कैसे करेगी, औरत भी कभी मास्टरी करती है ?

यहाँ रत्नहाटा विद्यालय में ही स्त्री मास्टर आ रही हैं।

स्त्री मास्टर आ रही हैं ? ईसाई हैं क्या ?

ऊँ हूँ ऽ। ईसाई क्यो होगी—हिन्दू कायस्थ की बेटी है।

मनोरमा दग रह गई। कायस्थ घर की लडकी नौकरी कर रही है ? शादी नहीं की उसने ?

मुझे मालूम नही।

मनोरमा ने खुद ही अनुमान लगा लिया, शादी हो जाने पर पति भला उसे क्या नौकरी करने देगा ? शादी नहीं हुई होगी।

सीताराम बोला, यही तो बता रहा ▌ अच्छा पात्र, पढा लिखा पात्र अगर न मिला तो बेटी की शादी मैं करूगा ही नहीं। समझी।

मनोरमा बोली, ढेर-सा रुपया देना, शादी की कौन-सी चिंता ?

ढेर सा रुपया ! सीताराम हँस पड़ा।

मनोरमा बोली, हाँ। तुम्हारे जितने सारे छात्र हैं उनसे ले लोगे—एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, दस रुपया, जो जिस हैसियत का हो—

सीताराम को पलाशबुनी के कन्यादायग्रस्त वृद्ध पंडित की याद आ गई। वह अनमने ढंग से 'वीरवाणी' पुस्तक को उलटने लगा।

अचानक मनोरमा को भी याद आ गई, पिछली शाम जेठ की बातें। उसने कहा, वह जो दरखास्त की बात पंडित जेठ बता रहे थे, उसका क्या हुआ ?

मामले को भरसक हल्का और संक्षिप्त कर सीताराम ने रजनी बाबू के यहां का ब्योरा दिया।

●●

आठ

रजनीबाबू को सीताराम कसूरवार नहीं ठहरा सकता, रजनीबाबू ने अपनी कोशिश में कोई कोताही नहीं की। रिपोर्ट में उन्होंने क्या लिखा था, न देखने पर भी सीताराम जानता है, उसको बचाते हुए ही उन्होंने रिपोर्ट दाखिल की थी। कसूर शायद सीताराम के भाग्य का ही है। इसके अलावा और कुछ भी उसे दिखाई नहीं पड़ा।

अचानक उस दिन पाठशाला के दरवाजे पर एक मोटरकार आकर खड़ी हो गई। मोटर से पुलिस साहब उतरे। आकू लपककर बाहर निकला फिर फौरन ही लौट आया। पुलिस साहब, मास्साब !

पुलिस साहब ?

जी। दफादार से पूछा, दफादार ने बताया।

सीताराम हड़बड़ाकर बाहर निकल आया। पुलिस साहब दरवाजे के सिर पर लकड़ी पर लिखा नाम पढ़ रहे थे—सान्दीपन पाठशाला। सान्दीपन, पिक्यूलियर नेम ! दरोगा की ओर पलटकर उन्होंने पूछा, हू इज दिस सान्दीपन ? हू इज ही ?

दरोगा ने कहा, मुझे ठीक मालूम नहीं सर।

सीताराम नमस्कार कर खड़ा हो गया। उसका दिल तुरन्त भय से काँप-काँप रहा है। ग्राम्य पाठशाला में साहब लोग खास कोई आते नहीं, आते भी हैं तो एस-डी ओ या मजिस्ट्रेट साहब आते हैं। पुलिस साहब का पाठशाला में आना और लकड़हारा के पास लकड़ी का बोझ उठाने के लिए यमराज का आना—इन दोनों में कोई फर्क नहीं। कहानी के लकड़हारे ने यम को पुकारा था, लौट जाने को कहने पर लौट भी गया था। लेकिन यह तो बिन बुलाये खुद

ही आ धमका है यह क्या यू ही लौट जायगा ।

पर्याप्त सम्मान दिखाते हुए सीताराम नमस्कार कर खड़ा हो गया । दरोगा ने कहा, यही पाठशाला के पंडित हैं सर ।

तीखी नजरो से सिर से पैर तक उसे निरखकर साहब बोले, यू पंडिट ? सीताराम पाल ?

जी हाँ हुजूर ।

साहब ने बगला मे कहा, सन्दीपन पाठशाला ! क्या मतलब ?

सीताराम बात का मतलब समझ नही सका, परेशान और सिटपिटाया सा वह बोला, जी ?

पाठशाला का नाम सन्दीपन क्यो है ? सन्दीपन कौन है ?

सीताराम जरा विस्मित हुआ । बगाली साहब, हिन्दू का बेटा, सुना है साहब किसी बड़े वैद्यवश के हैं, सन्दीपन कौन है, यह साहब नही जानते ! उसने हाथ जोड़कर कहा, हुजूर, श्रीकृष्ण के गुरु का नाम है । सान्दीपनि मुनि । उन्ही की सन्दीपन पाठशाला मे कृष्ण बलराम पढ़े थे ।

आई सी ! स्थिर दृष्टि से साहब कुछ देर तक सीताराम की ओर देखते रहे । इसके बाद बोले, तुम्हारी उपाधि तो पाल है ! सदगोप किसान के बेटे हो ?

जी हाँ ।

तुम्हारा गाव भी छोटे किसानो का गाँव है ?

जी हाँ हुजूर । यही नजदीक ही—कोस भर मे ।

यस, यस । आई नो, आई नो । जरा चुप रहकर बोले, पाठशाला का नाम सन्दीपन क्यो रखा ? ऍम परित्राणाय साधुनाम् ? वे जरा हँसे । फिर बोले, यह तुम्हारे दिमाग से आया है ? ऍय ? कृष्ण बनाने का कारखाना ?

सीताराम की समझ मे नही आया, इस नामकरण म अपराध कहाँ छिपा हुआ है ! लेकिन बिना भयभीत हुए रहा नही गया । साहब की बातें धमकी नही, लेकिन रूखी तीखी और निर्दय हैं, हथौड़े की तरह आघात नही करती, धारदार छूरे की नाई स्वच्छन्द अनायास काटती चली जाती हैं । सीताराम ने महसूस किया, साहब बिल्कुल पेन्सिल छीलने की तरह उसको छीलते चले जा रहे हैं ।

साहब ने फिर प्रश्न किया, किसने पाठशाला का नामकरण किया है ? तुमने ?

सीताराम बोला, जी धीरानन्द बाबू ने ।

आइ सी । चलो, तुम्हारी पाठशाला देखूगा ।

●●

ऐसे वक्त पर क्या करना पड़ता है यह सभी पाठशालाओ के लड़के जानते हैं । इसी बीच व अपनी-अपनी जगह पर मनोयोग के साथ पढ़ने बैठ गये हैं यहाँ तक कि आकू भी । साहब के भीतर प्रवेश करते ही वे ससम्मान खड़े हो

गए, नमस्कार किया उन लोगो ने। सीताराम ने कुर्सी झाड दी। मेज पर सारी कापियाँ उतारकर रख दी। साहब ने उनको बाएँ हाथ से ठेलकर सरका दिया। वे कमरे का असबाब-सामान तीखी नजरो से देखने लगे।

लडको मे कुछ आगे बढकर नमस्कार कर कविता पाठ करने लगे

"आओ सब खडे हो जायें कतार मे
दरशक आए हैं आज विद्यागार मे
प्रणाम तुम्हारे चरणो मे मतिमान
आशीर्वाद करो हम बनें ज्ञानवान।"

साहब ने हँसकर कहा, बहुत खूब। गुड !

सीताराम ने लडकों को इशारा किया, वे रुक गये।

साहब यकायक उठे, चारो ओर की दीवार के पास जाकर अच्छी तरह से कुछ देख आए। वे दीवार पर लडको द्वारा पेन्सिल से लिखी इबारत पढ आय— बन्देमातरम्, बन्देमातरम्, भोला चोर है, आकू डाकू है, बन्देमातरम्, गांधी महाराज की जय, बन्देमातरम्।

साहब लौटकर कुर्सी पर बैठ गए। लडको की ओर देखकर कहा, तुम लोग भारतवर्ष के सम्राट का नाम जानते हो ?

सीताराम ने ज्योतिप साहा के भतीजे से कहा, बोलो, डर क्या है ?

उसने हाथ जोडकर कहा, इगलडेश्वर सम्राट पचम जाज।

साहब बोले, महामान्य इगलडेश्वर सम्राट पचम जाज। गुड ! क्यो, तुम लोग भारतवर्ष के सबसे बडे आदमी का नाम जानते हो ? रुपये से बडा नही— भला आदमी, बडा आदमी।

ज्योतिप साहा का भतीजा विह्वल दृष्टि से मास्टर के मुख की ओर देखता रहा। कुछ ऊपर की ओर मुख किए सोचने लग गये। आकू अपनी आदत के मुताबिक मुस्करा रहा था। साहबकी आँखो से आँखें मिलते ही वह मुस्कराकर सिर झुकाए बोला, महाराज गांधी।

ज्योतिप साहा का भतीजा फौरन बोला पडा, चित्तरजनदास।

एक ने कहा मोतीलाल नेहरू।

आकू फिर बोल पडा, सुभाषचन्द्र बोस। जवाहरलाल नेहरू।

सीताराम के हाथ पाँव सचमुच ठडे पड गये। वह पसीने से तरबतर हो रहा था।

साहब बोले, बस, बस। जाओ, तुम लोगों की छुट्टी। जाओ।

लडको के चले जाने के बाद साहब ने पूछा, तुमने यह सब सिखाया है !

चाकू से पेन्सिल काटते-काटते किसी समय पेन्सिल भी सगीन रूप से नुकीली और धारदार बन जाती है। भय की अन्तिम सीमा तक पहुचकर मनुष्य बहुधा अभय न मिलने पर भी निर्भय हो उठता है। उसने अब मुँह उठाकर कहा, जी नहीं। मैंने नही सिखाया। यह सब आजकल किसी को सिखाना नहीं

बाद ज्योतिष साहा ने कहा है, पंडित, अपने सामान ले जाओ भाई। मुझे माफ कर दो तुम। सीताराम ज्योतिष को कोई दोष नही दे सका। बातें करते वक्त साहा की आँखो से आसू टपकने लगे थे। इसके बाद चुपके चुपके उसने बताया है, अगर तुमको पाठशाला के योग्य कमरा मिल जाये पंडित, तो देखना, किराया हर माह मैं ही दूगा।

सवेरे से बारह बजे तक पाठशाला के ओसारे पर बैठे सीताराम बस रोता ही रहा। वह लडको के इतजार मे बैठा था। उसके समर्थ शरीर में मानो बूँद-भर शक्ति नही रही। लडको के आने पर लडको से ही ये सब बिखरे सामान सहेज कर जैसा भी कोई इतजाम करेगा, यही उसने सोचा था। लेकिन बारह बजे तक कोई लडका नही आया। उनके बदले उनके बाप एक एक कर आए, सभी अपने बेटे का सर्टीफिकेट ले गए। बडे स्कूल से सलग्न पाठशाला मे उनको वे भरती कर देंगे। यहाँ पढाना अब खतरे से खाली नही। हालांकि हर एक ने ही कहा, तुम्हारा कोई दोष नहीं है पंडित, यह हम लोगो को मालूम है। लडका भी रो रहा है। तुमको चाहता भी है, और बडे स्कूल के मास्टर हमारे लडको की बडी जलालत भी करते हैं। लेकिन करें भी क्या बताओ ? अगर पकड ले जाते।

चार बजे तक रजिस्टर पर केवल पाँच लडको के नाम रह गये। ज्योतिष साहा का भतीजा—और तीन बिना फीस के छात्र। और रह गया आकू—आकू के बारे मे उसके पितामाता को कोई फिक्र नही।

ठीक इसी समय देबू और श्यामू आ गए। साथ मे कन्हाई राय मजदूर और घर की बैलगाडी ले आया है माँ के निर्देश से। पाठशाला का साजो-सामान ले जाने के लिए आया है। उन्ही लोगो ने सब कुछ सहेज लिया। सीताराम कठपुतली-सा उनके साथ आया। माँ ने काफी चिरौरी कर खाना खिलाया, लेकिन वह भी नाममात्र ही खाना खा सका। फिर टूटी हुई घडी को सामने रखकर वह निर्बोध स्तम्भित सा बैठा है। उस घडी के साथ साथ उसके जीवन का चलना भी आज सवेरे से बन्द हो चुका है।

●●

तिपहर को अपनी आदत के मुताबिक वह झरने के पास जाकर बैठ गया। धीरानन्द के जेल जाने की खबर जिस दिन आई थी, उस दिन जिस प्रकार उदास दृष्टि से उसने दुनिया की ओर देखा था, उसी दृष्टि से, शायद और भी गहरी उदासीभरी दृष्टि से देखता वह बैठा था। उस दिन फिर भी बार-बार धीराबाबू का चेहरा उसके सामने तिर गया था। आज दृष्टि के सम्मुख कुछ भी नही तिरा। सबकुछ खो गया है, सबकुछ भाँय भाँय कर रहा है।

सीताराम !—किसी ने पीछे से पुकारा। परिचित कण्ठस्वर—लेकिन आज सीताराम भाँप न सका। पीछे पलटकर देखा रजनी बाबू आ रहे हैं उधर से। सीताराम ठडी साँस लेकर थका सा उठकर खडा हो गया।

हुजूर, यह देश की हवा मे है। उन लोगो ने खुद ही सीखा है। भय से पीछे हटने की अन्तिम सीमा पर आकर उसे अनोखे ढग का धीरज और साहस अनुभूत हो रहा था, उसने शान्त और धीर भाव से ही जवाब दिया।

साहब ने धीरानन्द के बारे और कुछ प्रश्न किए। सीताराम निडर जवाब देता रहा। जरा भी झूठ नही कहा उसने। इसके बाद साहब चले गये।

सीताराम मानो पत्थर बन गया, वही स्तब्ध बैठा रहा। दिमाग मे मानो सभी कुछ गडबडा गया है। कोई स्पष्ट चिन्तन नही। दिमाग मे केवल एक क्षोभ मानो घूम-फिर कर चक्कर लगा रहा है।

टन टन। घडी मे चार बज गये।

सीताराम लम्बी साँस लेकर उठा। एकाएक घर-द्वार बन्द करने लगा। फिर अचानक ही कुर्सी पर बैठ गया। बैठा ही रहा।

ज्योतिष साहा आया।—पडित !

आइए।

हाँ आया। मामला तो बडा बिगड गया पडित !

सीताराम बोला, बताइए क्या करूँ ?

ज्योतिष जरा चुप रहकर बोला, मुझे भी एक बार धमका गए, तुमने घर क्यों दिया है ? तो मैने कहा, हुजूर, मैंने तो घर किराए पर दिया है। जरा चुप रहकर ज्योतिष ने फिर कहा, मेरे लिए तो बडी दिक्कत है। मैं तो एक तरह से सरकारी नौकर ही हू। शराब गाँजे का लायसेन्स रखता हू। मुझे हुक्म मिला है, किरायेदार हटा दो।

सीताराम बोला, मुझे एक महीने की मोहलत दीजिए। एक जगह खरीद, छप्पर उठाकर भी मैं पाठशाला चलाऊँगा। पाठशाला मैं बन्द नही करूँगा। इन चन्द क्षणो म फिर वह जाग उठा है।

●●

चन्द दिनो के बाद। इस बार चरम धक्का आया।

सीताराम की पाठशाला म पुलिसी खानातलाशी हो गयी।

कन्हाई राय—सीताराम का उपपद सत्पुरुष ! उसने कहा, पत्थर से सिर ज्यादा सख्त नही होता सीताराम, समझे ? साहब के हाथ-पाँव पकड लेते—लेकिन —। होठो के छोर मे कन्हाई ने एक विचित्र शब्द किया। इसके बाद फिर बोला, हाँ सिर तुम्हारा मजबूत हो न हो, अडियलपन बहुत मजबूत है।

बाबुओ की कोठी मे अपने कमरे म सीताराम स्तब्ध बठा। तख्तपोश पर उसी के सामने सन्दीपन पाठशाला की क्लाक घडी रखी थी। घडी का शीशा टूट गया है। फश पर एक किनारे भारतवष का एक बडा सा मैप पडा है। मप फट गया है। शीशा टूटे कई चित्र एक किनारे पडे हैं। ब्लैक-बोड के एक ओर के फ्रेम की जोड टूट गई है।

आज ही सबेरे पाठशाला की खानातलाशी हो चुकी है। खानातलाशी के

बाद ज्योतिष साहा ने कहा है, पंडित, अपने सामान ले जाओ भाई। मुझे माफ कर दो तुम। सीताराम ज्योतिष को कोई दोष नहीं दे सका। बातें करते वक्त साहा की आँखों से आँसू टपकने लगे थे। इसके बाद चुपके चुपके उसने बताया है, अगर तुमको पाठशाला के योग्य कमरा मिल जाये पंडित, तो देखना, किराया हर माह मैं ही दूंगा।

सबेरे से बारह बजे तक पाठशाला के ओसारे पर बैठे सीताराम बस रोता ही रहा। वह लडकों के इन्तजार मे बैठा था। उसके समय शरीर में मानो बूंद-भर शक्ति नहीं रही। लडकों के आने पर लडकों से ही य सब बिखरे सामान सहेज कर जैसा भी कोई इन्तजाम करेगा, यही उसने सोचा था। लेकिन बारह बजे तक कोई लडका नहीं आया। उनके बदले उनके बाप एक एक कर आए, सभी अपने बेटे का सर्टीफिकेट ले गए। बडे स्कूल से सलग्न पाठशाला मे उनको वे भरती कर देंगे। यहाँ पढाना अब खतरे से खाली नहीं। हालांकि हर एक ने ही कहा, तुम्हारा कोई दोष नहीं है पंडित, यह हम लोगों को मालूम है। लडका भी रो रहा है। तुमको चाहता भी है, और बडे स्कूल के मास्टर हमारे लडकों की बडी जलालत भी करते हैं। लेकिन करें भी क्या बताओ ? अगर पकड ले जाते।

चार बजे तक रजिस्टर पर केवल पाँच लडकों के नाम रह गये। ज्योतिष साहा का भतीजा—और तीन बिना फीस के छात्र। और रह गया आकू—आकू के बारे मे उसके पितामाता को कोई फिक्र नहीं।

ठीक इसी समय देबू और श्यामू आ गए। साथ में कन्हाई राय मजदूर और घर की बैलगाडी ले आया है माँ के निर्देश से। पाठशाला का साजो सामान ले जाने के लिए आया है। उन्ही लोगों ने सब कुछ सहेज लिया। सीताराम कठपुतली सा उनके साथ आया। माँ ने काफी चिरौरी कर खाना खिलाया, लेकिन वह भी नाममात्र ही खाना खा सका। फिर टूटी हुई घडी को सामने रखकर वह निर्बोध स्तम्भित सा बैठा है। उस घडी के साथ साथ उसके जीवन का चलना भी आज सबेरे से बन्द हो चुका है।

●●

तिपहर को अपनी आदत के मुताबिक वह झरने के पास जाकर बैठ गया। धीरानन्द के जेल जाने की खबर जिस दिन आई थी, उस दिन जिस प्रकार उदास दृष्टि से उसने दुनिया की ओर देखा था, उसी दृष्टि से, शायद और भी गहरी उदासीभरी दृष्टि से देखता वह बैठा था। उस दिन फिर भी बार-बार धीराबाबू का चेहरा उसके सामने तिर गया था। आज दृष्टि के सम्मुख कुछ भी नहीं तिरा। सबकुछ खो गया है, सबकुछ भाँय भाँय कर रहा है।

सीताराम !—किसी ने पीछे से पुकारा। परिचित कण्ठस्वर—लेकिन आज सीताराम भाँप न सका। पीछे पलटकर देखा, रजनी बाबू आ रहे हैं उधर से। सीताराम ठंडी साँस लेकर थका सा उठकर खडा हो गया।

बैठो तुम, बैठो। रजनी बाबू उसके बगल में बैठ गए। फिर बोले, मैंने सबकुछ सुना है।

सीताराम चुप किए रहा।

रजनी बाबू बोले, इच्छा थी कि सब के बाद ही एक बार पाठशाला जाऊं। अपनी आँखों देख आऊं। लेकिन यहाँ के मास्टर लोगों ने मना किया। कुछ देर चुप रहने के बाद फिर बोले, सुना था, तुम रोजाना इस झरने के पास घूमने आते हो, सो चला आया।

सीताराम मूढ़-सा प्रश्न कर बैठा, क्यों ?

रजनी बाबू उसकी पीठ पर सस्नेह हाथ रख अब बोले, तुम बेहद मायूस-सा हो गये हो। ऐसा मायूस हो पड़ने से तो काम नहीं चलेगा।

सीताराम ने आँखें मूँदकर कहा, जी नहीं। जरा मुस्कराने की भी कोशिश की उसने।

रजनी बाबू बोले, मणिबाबू के साथ तुम्हारा क्या हुआ था—जमींदार मणिलाल बाबू के साथ ?

सीताराम कुछ भी याद नहीं कर सका, सविस्मय उसने कहा, जी कहाँ, कुछ भी तो—। वह स्तब्ध हो गया, अब उसे याद आ रहा है।

क्या कहा था तुमने उनको ?

सीताराम ने अकपट सारी बात बता दी।

वे ही इस मामले के मूल में हैं। उन्होंने ही पुलिस साहब को यह सब बातें बताई हैं।

सीताराम ने अब एक गहरी लम्बी साँस ली।

रजनीबाबू बोले, पहले जो दरख्वास्त दिया गया था वह मेरी रिपोर्ट से ही ठीक हो गया था। कोई गड़बड़ी नहीं हो सकती थी।

सीताराम का बदन सख्त हो उठा, मणिलाल बाबू के द्वारा यह सब किया कराया गया है—इस समाचार ने ही उसे कड़ा बना दिया। उसने जरा हँसकर कहा, यह मेरा भाग्य है।

बहुत देर चुप रहने के बाद रजनीबाबू बोले, क्या करोगे ?

सीताराम ने प्रश्न किया, क्या मुझे पाठशाला और खोलने नहीं देंगे ?

चाहे तो गवर्नमेंट क्या नहीं कर सकती ? वैर कानूनी संस्था कहकर बन्द करवा सकती है, लेकिन—। रजनी बाबू हँसे बोले, ऐसा नहीं करेंगे, उसमें भी एक शर्म हुआ है। एक पाठशाला—। नहीं इतना नहीं करेंगे। लेकिन एड का रुपया बन्द हो जाएगा।

फिर कुछ देर चुप रहने के बाद वे बोले, लेकिन अभी कुछ दिन चुपचाप रहना ही बेहतर होगा। बाबुओं के बेटे पढ़ रहे हैं, उसी के साथ अगर दो चार लड़के और ले लो तो तुम्हारा गुजारा किसी तरह हो जाएगा। इसके अलावा दोपहर को अगर सब रजिस्ट्री के दफ्तर में लोगों की अर्जी-दरख्वास्त लिख दोगे

तो भी कुछ कमाई हो जाएगी तुम्हारी। पाठशाला से बेहतर ही होगी। मैंने सब रजिस्ट्रार बाबू से कहा है। वे भी सारा मामला सुनकर दुखी हुए। बोले, —अच्छी बात, भेज दीजिएगा।

सीताराम ने लम्बी साँस ली। बोला, देखें।

बाबुओं की कोठी में लौटते ही कन्हाई ने कहा, माँ जी तुम्हें बुला रही हैं।

धीरानन्द की माँ इस मामले को लेकर काफी लज्जित हो गयी थी। किसी तरह से भी भूला नहीं पा रही थी कि इसके लिए धीरानन्द जिम्मेवार है। धीरानन्द जेल गया है, धीरानन्द का सीताराम आदर करता है धीरानन्द के भाइयों को पढ़ाता है, उनके घर में रहता है, तभी उसका ऐसा दुर्भाग्य है। बड़ी मेहनत से बेचारा किसान सदगोप का बेटा, थोड़ा सा पढ लिखकर भद्र तरीके से जीवन बिताने के लिए पाठशाला खोल बैठा था, वह पाठशाला ही मात्र टूट गई, ऐसा नहीं, शायद उस बेचारे का उस पथ को अपनाकर चलना भी इस बार के लिए खत्म हो गया। उनकी जिम्मेवारी केवल इतनी ही नहीं, सीताराम केवल बेटों का गृहशिक्षक ही नहीं, वह उनकी रिआया भी है। उन्होंने उसे बुलवाकर धीरानन्द के पढ़ने के कमरे में बिठाया। बोली, बैठो बेटा। उस वेले तुमने अच्छी तरह खाना नहीं खाया। पहले खाना खा लो।

सीताराम ने आपत्ति नहीं की। भूख भी लगी थी, पेट भरकर खाया। माँ बोली, सुनो बेटा, मैं यह भूल नहीं पा रही हूँ, धीरा के लिए तुमको यह तकलीफ उठानी पड़ी।

सीताराम की आँखों में अचानक ही आँसू आ गए। उसने आँखें पोंछकर कहा, जी नहीं माँ। यह सारा बवाल कराया है मणिलाल बाबू ने।

मणि देवर जी ने ?

जी हाँ। उसने सारी बातें बतायीं।

माँ हँसी—कड़वी सी धारदार हँसी। यह हँसी सीताराम को आश्चर्यजनक सी लगी। यह हँसी इनके अलावा और कोई हँस नहीं सकता।

माँ बोली, जानते हो बेटा, जंगल का सिंह मर जाता है तब दूसरे जंगल का सिंह आकर इस जंगल के आश्रितों पर अत्याचार करता है। लेकिन उसका भी प्रतिकार किसी वक्त हो जाता है। सिंह के छौने जब बड़े हो जाते हैं तब वे इसका बदला चुकाते हैं। माँ गंभीर चेहरा लिये बैठी रही कुछ देर तक। फिर एक लम्बी सी सांस लेने के बाद बोलीं, मेरे बेटे भी कभी बड़े होंगे। लौट आने दो धीरा को।

सीताराम नीरव बैठा रहा। माँ की ये बातें उसे बहुत कठोर सी लगीं। उनके बेटे सिंह हैं और वे आश्रित हैं।

माँ बोली सुनो बेटा आज जिसलिए तुमको मैंने बुला भेजा है। क्या करोगे तुम ? पाठशाला तो उठ गयी।

सीताराम हड़बड़ाकर बोल पड़ा, जी नहीं, उठ नहीं गयी है, लेकिन हाँ, एड

बन्द हो जायगी।

लड़के भी तो सभी सर्टीफिकेट लेकर चले गये।

जी हाँ।

तो फिर?

सीताराम को इसका जवाब ढूंढे नहीं मिला। माँ बोली, हम लोगों के लिए ही तुम्हारा यह कमाई का जरिया बन्द हुआ। मैं सारा दिन ही सोचती रही। तुम एक काम करो बेटा। हमारे सरिश्तेखाने में तुम काम करो। तुम्हारा गाँव, इस ओर सुरभिपुर, रामचन्द्रपुर ये तीनों गाँव बगल-बगल हैं। इनकी वसूली ले लो और सदरसरिश्तेखाने के कागजात की देखभाल करो। उससे पाठशाला से बेहतर कमाई होगी। तनख्वाह होगी, तहरीर होगी, दाखिल खारिज की फीस का हिस्सा होगा।

अच्छा होगा। अच्छा होगा। उपपद सत्पुरुष कन्हाई राय जाने कब आकर दरवाजे के सामने डकडू हो बैठा था।

माँ बोली, इसके अलावा बेटा, मेरा भी एक स्वार्थ है। तुम मेरे सन्तानतुल्य हो। केवल यही नहीं, तुम अच्छे स्वभाव के हो, ईमानदार हो तुम। हमारे नायब जी की सेहत खराब है। उनके बाद तुम्हारे ही हाथों में मैं सारा भार सौंपना चाहती हूं। लम्बी साँस लेकर बोली, धीरा ने जो पथ अपना लिया है, उससे उस पर मेरा अब कोई भरोसा नहीं।

सीताराम इसके लिए तैयार नहीं था। वह चंचल हो उठा। क्षण भर में कल्पना में नायब जीवन का रूप उभर आया उसके सामने। जमींदार कोठी का नायब! पीछे पीछे कन्हाई राय सिर पर पगड़ी बाँधे, कन्धे पर लाठी लेकर चलेगा। तख्तपोश पर छोटी सी गद्दी के आसन पर सामने कैशबाक्स लेकर वह बैठेगा। इसके अलावा—सिंह का आश्रित बनकर वह नहीं रह सकेगा।

कन्हाई राय बोले, लग जाओ, लग जाओ। भला के रोज लगेंगे सीखने में? मैं सब सिखा दूंगा।

सीताराम कुछ देर चुप बैठा रहा। फिर बोला, सोचकर देख लूं माँ। सम्मति देने को होकर भी उसका गला रुंध गया। दिल जाने कैसा करने लगा।

●●

मनोरमा उत्कंठित सी उसके लिए प्रतीक्षा कर रही थी। पाठशाला की खानातलाशी की खबर उसको सवेरे मिल चुकी थी। आसपास के पाँच छह गाँवों में यह खबर फैल चुकी थी। मनोरमा ने हलवाहे को भी भेजा था, वह रत्नहाटा में दो बार आकर पता लगा गया है। लेकिन सीताराम से उसने बातें नहीं की। मनोरमा की मनाही थी। उत्कंठित होने पर सीताराम नाराज होता है।

सीताराम के आते ही वह अपने को सभाल नहीं सकी, रोने लगी। सीताराम सस्नेह उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए बोला, रोती क्यों हो?

मनोरमा बोली, अगर पकड़ ले जायें ?

नहीं, पकड़ नहीं ले जायगा कोई।

नहीं ले जायगा ?

नहीं। मुस्कराकर सीताराम ने फिर कहा, और अगर ले ही जाय तो क्या हुआ ? यह कोई चोर-डकैत का जेल तो है ही नहीं।

मनोरमा ने विरोध करते हुए कहा, नहीं।

नहीं ? अब सीताराम हँसा।

तुमको, भई यह सब करने की जरूरत नहीं।

क्या ?

पाठशाला—आठशाला। हाँ और अगर करना ही हो तो अपने गाँव में करो। उस घर के पंडित जेठ बता रहे थे, मैं तो अब ससुराल जाकर ही रहूँगा, तो फलाँ वहीं पाठशाला क्या नहीं करता !

सीताराम चुप किए रहा।

मनोरमा लाड जताती हुई बोली, गाँव के लड़के मुझे 'गुरु माँ' कहकर पुकारेंगे उस घर की दादी की तरह। हाँ।

सीताराम ने उसाँस छोड़ी। जमींदार कोठी की नायबी, गाँव की पाठशाला, किसी से भी उसका मन खुश नहीं हो पा रहा है। उसके बड़े जतन, बड़ी साध से बनी रत्नहाटा की सान्दीपन पाठशाला ! उस पाठशाला के सिवा किसी से भी उसका मन नहीं भरेगा। शायद राज्यपद पाने पर भी नहीं। बरसात में धान खेत की तरह उसकी पाठशाला की उमंग उठी थी। गदले पानी से भरे खेत में धान का पौधा रोप दिया जाता है, शुरू शुरू में ये पौधे दिखाई नहीं पड़ते—गदले पानी से भरा खेत जनभरी परती जमीन सा लगता है, देखते ही देखते धान के पौधे हुमक कर हरियाली से सारे खेत को भर देते हैं। उस समय दूर से उसकी हरियाली का लालित्य लोगों की आँखों में पड़ता है आँखें जुड़ा जाती हैं। उसकी पाठशाला भी इसी तरह जमने लगी थी। साहाटोला, सुनारटोला, केवटटोला में एक सनसनी आ गई थी। कमरे की फर्श, बरामदा लड़कों से भर उठे थे। शोर मचाते व पढ़ा करते थे, तरन्नुम से पहाड़ा पढ़ते थे—दो एकके दो, दो दूना चार, दो तिया छह। मानो एक गीत हो। मुहल्ले के लोग कहते, पाठशाला में पढ़ाई हो रहा है। रास्ता चलते राहगीर ठिठक कर खड़े हो जाते थे। जो लोग पढ़ना जानते थे, वे इस साइनबोर्ड को पढ़ते थे—रत्नहाटा सान्दीपन पाठशाला, शिक्षक—सीताराम पाल।

●●

नौ

अगले दिन भी वह लाठी, छाता और लालटेन हाथों में लेकर सवेरे रत्नहाटा गया। बुझे दिल से आकर ही वह श्यामू-देवू को पढ़ाने बैठ गया।

कुछ दिन हुए श्यामू बड़े स्कूल में भरती हो गया है। देवू अब भी घर ही में पढ़ता है। दस बजे उनको छुट्टी देकर सीताराम ने एक ठंडी साँस ली। नहाने की कोई जल्दी नहीं। पाठशाला बन्द है। आँखों में आंसू आ गए, आँसू छिपाने के लिए ही वह तख्तपोश पर लेट गया। कुछ देर बाद ही उठकर बैठ गया। किसी भी तरह से उसे शान्ति नहीं मिल रही है। अचानक मन में क्या आया कि टूटी हुई घड़ी को दीवार की एक कील से लटकाकर उसको चलाने की, कोशिश में जुट गया। एक बार दाहिने सरका कर फिर जरा सा बाएँ ठेलकर दीवार और घड़ी की पीठ के बीच एक कागज ठूंस पेंडलम डुलाकर आवाज सुनने लगा है। हाँ, अब आवाज कुछ कुछ ठीक आने लगी है। बहुत देर तक वह घड़ी की ओर ताकता रहा। चल रही है घड़ी। फिर फटे हुए मैप को लेकर बैठ गया। जरा मैदे की लेई चाहिए और थोड़ा सा बारीक कपड़े का टुकड़ा। फिर यह भी दुरुस्त हो जाएगा।

पंडित!

कौन?

शिशु कन्या के एक बच्चे को गोद में लेकर उसकी विधवा माँ आई है। जरा इसकी नाड़ी तो देख लो पंडित! कल रात से बुखार है। तुमको बिना दिखाये हम लोगों का काम नहीं चलता बेटा। देख लो एक बार।

इन कई वर्षों में सीताराम ने इस एक विद्या पर भी अधिकार प्राप्त कर लिया है। नाड़ी देखना सीख लिया है उसने। कफ पित्त-वायु आदि के आधिक्य दोष का भी निर्णय वह कर सकता है।

देखूँ? दाहिना हाथ। दाहिना हाथ कौन सा है जी? अच्छा? जिस हाथ से खाना खाते हो। वाह। बायाँ हाथ लड़के की कोहनी के नीचे रख दाहिने हाथ से उसने नाड़ी दबायी।

बुखार तो काफी है—अन्दाजन एक सौ एक होगा। दो दिन लगेंगे। पित्त दोष हुआ है जी।

लड़के ने कहा, पाठशाला क्या नहीं लगेगी मास्सा?

मलिन हँसी हँसते हुए पंडित बोला, लगेगी क्यों नहीं। पहले चंगे हो जाओ, फिर चलकर आ जाना।

मुझे टिफन का घंटा बजाने देंगे मास्सा?

दूंगा। तुम ही घंटा बजाओगे। सिर और पीठ पर हाथ फेरकर मास्टर ने

कहा, देखना, ठड न लगे।

वह फिर मैप लेकर बैठ गया। जरा मैंदे की लेई चाहिए। महीन कपडा थोडा सा। कोठी के भीतर जाने के लिए वह उठ खडा हुआ।

कौन ? कोई शायद बाहर से झाक रहा है।

मैं हू सर। आकू आकर सामने खडा हो गया।

आकू ?

जी हाँ। आकू दरवाजे के पलडे को पकडे उसी पर मुख रखकर बोला, पाठशाला कहा लगेगी सर ?

पाठशाला ?

हाँ।

सीताराम चुप्पी साधे रहा। भला क्या जवाब दे वह ? पाठशाला लगेगी नही—यह वाक्य उसके मुख से निकलना ही नही चाहता।

आकू बोला, मैं सर, आपकी पाठशाला के सिवा और कही नही पढूगा। कही नही।

बैठो, यही बैठ जाओ।

आकू बैठा। एक बार किताब खोली, फिर उठकर पडित के बगल मे आकर बैठ गया। मैंदे की लेई ले आऊँ ? लेई से चिपका क्यो नही देते। ले आऊँ लेई ?

ला सकोगे ?

जी हाँ। बिल्कुल ले आऊँगा।

बाबुओ की कोठी मे हीराबाबू की माँ से कहना, पडित ने जरा मैंदे की लेई और थोडा सा लत्ता माँगा है।

आकू चला गया। भागता हुआ। ब्लैकबोर्ड के टूटे जोड पर एक कील ठोकनी है। बस काम चल जायेगा। रस्सी से बाँधने से भी चल सकता है। सीताराम एक कील ढूँढता फिरता रहा।

कौन ? यह क्या, आप ?

आकू की माँ आकर खडी थी।

आकू की माँ बडी ही भली और अनोखी है। बेटे को लाड देकर चौपट करने की अशेष योग्यता के साथ और भी एक दुलभ योग्यता उनमे है। दुनिया के लोगो को सुदुलभ प्यार करना जानती हैं, उसका स्वभाव मानो एक मधु की हाँडी हो और कहानी के मधुदादा के दिए हुए अक्षय भाड की तरह कभी न खत्म होने वाली। वह अकूत मीठा रस जिसकी जीभ पर वह डालना शुरू कर देती हैं उसे अन्त तक वह हलका बनाकर छोड देती हैं। आकू की माँ के हाथ म एक कटोरी म थोडी सी मैंदे की लेई और थोडा-सा लत्ता है। आकू की माँ हँस कर बोली वह यहा है ?

आकू देबू के घर के अन्दर गया है, जरा लेई और—

आकू की माँ ने लेई की कटोरी रख दी, बोली, यह लो लेई। वह बाबुओं की कोठी में थोड़े ही गया है? वह गया था मेरे पास। बोला, मैदे की लेई चाहिए। लेई करते हुए कमरे में घुसकर देखा, आकू अपना पोशाकी कपड़ा दाँतों से काट रहा है। यह क्या है रे? कहा तो मास्टर को महीन लत्ता चाहिए। रुक रुक। मैं देती हूँ, मैं देती हूँ। वह माने नहीं, कहे, अभी दो। तभी सदूक खोल फटे कपड़े निकालकर कपड़ा फाड़ दिया, तब कहीं शांत हुआ। उधर मैदे की लेई जल गयी, फिर नये तौर से बनाई तो बोला, तुम्हीं दे आओ। मैं जाता हूँ।

पंडित स्तब्ध बना रहा, इस बात का कोई जवाब वह नहीं दे सका। आकू! सुना है चंडाल में ही शिव छिपे रहते हैं। यह क्या वही है? उसकी आँखों की बाधा तोड़ आँसू निकल आए।

आकू की माँ बोली, आकू का यह कपड़ा लेकिन तुम्हें रफू कर देना पड़ेगा पंडित। ज्यादा नहीं। बस दाँत से इतना भर काटा था। तुम्हारे हाथ का रफू बड़ा अच्छा होता है।

यह हुनर भी सीताराम के पास है। बचपन से ही वह मातृहीन है, बाप खेतीबारी के काम में लगे रहते थे। सभी से उसे इस विद्या का ककहरा आ गया था। कुरते की बटन सिलने से शुरू कर, छोटा मोटा फटा कपड़ा भी वह अपने हाथों सिलता था। अब यह मानो एक शौक में बदल गया है। मनोरमा के हाथ की सिलाई मोटी है, उनके समाज के सगे सम्बंधियों में जीवन का ढर्रा ही मोटा है, महीन चीज की तारीफ वे बेशक करते हैं लेकिन उनका उपयोग करने के लिए उनमें कोई व्यग्रता नहीं। किन्तु सीताराम को यह पसन्द नहीं। सिलाई का काम वह खुद ही करता है। क्रमश यह उसके शौक में शुमार हो गया है। शिक्षक जीवन में यह काम उसे कुछ सहायता भी करता है, पाठशाला में पढ़ाने के अवकाश में बैठे असीम धैर्य के साथ वह कीमती कपड़ों का रफू अनोखी दक्षता के साथ करता। इसमें उसे आनन्द भी मिलता और विनिमय में लोगों का स्नेह भी अर्जित करता है।

पंडित ने कहा, दीजिएगा। कर दूंगा। हो जाए तो आकू के हाथ भिजवा देना।

यह लो, दिए जा रही हूँ। इनको बुलाने गया था सर! आकू आकर सामने खड़ा हो गया, दोपहर के घाम में घूमकर उसका चेहरा लाल हो गया है। आकू के पीछे पीछे तीन लड़के आकर खड़े हो गए—ज्योतिष का भतीजा, केवटों के गोपाल और हरिलाल। आदतन हँसकर वह बोला, बुला ले आया सबको।

फिर लड़कों से कहा बैठ जाओ, सब बैठ जाओ। आज यह सब मरम्मत करना है।

सीताराम से कुछ भी बोला नहीं गया। लड़के उत्साह से मरम्मत के काम में जुट गए। कुछ ही देर में वह भी उनके साथ काम में लग गया। उन्हीं के

प्राणरस से वह सजीवित हो उठा।

कन्हाईराय ने आकर कहा, नहाओ, खाना खाओ। घर मे रसोइया परेशान हो रहा है। कब तक खाना लेकर बैठा रहेगा ? फिर कमरे म घुस मॅप मरम्मत करना देख मुँह टेढा कर उपेक्षा की पीक थूकते हुए बोला, फिर यह सब लेकर बैठ गये हो ? तुम्हें कभी भी अक्किल नही नसीब होगी।

सीताराम ने जवाब नही दिया।

राय इस बार काफी विज्ञ की मुद्रा मे, स्वर मे सजीदापन लाकर बोला, माँ ने जो कुछ कहा है, वही करो सीताराम। भला होगा। उसे जमीदारी के काम में डालकर कन्हाई राय को कौन-सी सुविधा होगी, उसी को मालूम। शायद उससे प्यार है। या सोचता है, सीताराम के नायब हो जाने पर उसके अधिकार बढ जायेंगे, वही तो उसे इस घर मे लाया है या शायद और कोई बात हो। सीताराम सोचकर कुछ भी तय नही कर सका।

जवाब न मिलने से कन्हाई राय क्षुब्ध हुआ, बोला, फिर एक दिन आकर फाड दूँगा।

जवाब दिया आकू ने। बोला, फिर लेई से लत्ते से चिपकाऊगा, है न सर ? फिर अगर फाड दें तो फिर हम लोग जोड लेंगे, है न भाई ? इस बार उसने अपने साथियो से कहा।

वे सभी बोले, हाँ।

कन्हाई राय बोले, ऐसा ही करो। फटी कथरी की तरह सिलाई करो, सिलाई ही करते रहो। सिलाई ही करते रहो।

●●

कन्हाई राय सचमुच दुखी हुआ था। सीताराम से उसे प्यार है और उस पर एक अधिकार का दावा भी वह मन-ही-मन पोषण करता है। वह दावा उसके गोपन दावे में परिणत हो चुका है। उसे प्रकट करने का उसे साहस नही होता। पहले दिन जिस रोज सीताराम इस कोठी में आया था और माता जी ने उसके बैठने के लिए आसन देने को कहा था और मुँह से कहा था, तुम हो इस घर के लडको के शिक्षा गुरु, उसी दिन उसी क्षण से शायद वह अपने दावे को ससकोच गोपन करने को मजबूर हो गया था। उसके बाद से ये कई साल वह देख रहा है, सीताराम और उसके बीच का पार्थक्य बढता ही जा रहा है। सीताराम की बातचीत, हँसी-मजाक सभी अलग किस्म के हैं। फिर सीताराम के साथ कलह-बेसह करने का भी कोई अवकाश नहीं। सीताराम उसकी उपेक्षा नहीं करता। सीताराम के कामकाज के प्रसग मे कोई तक छेडने का उसे कोई मौका नहीं। मन-ही-मन वह क्लेश सहता था। इसलिए आज जब माँ ने उसे जमीदारी सरिश्तेखान मे काम करने के लिए बताया तो यही सोचकर वह खुश हुआ कि सीताराम उसकी पहुँच मे आ जाएगा। चाहे नायब क्यो न बन जाये, कन्हाई राय की सलाह उसे लेनी पडेगी। इसलिए यहीं वह ठडा नहीं पड गया। तिपहर

को सीताराम के घर जाकर किसान बहू की मार्फत मनोरमा को वह अपना सत्परामर्श दे भी आया। सीताराम ने पंडित-दादा से बताया। चन्द बड़े-बूढ़ों से भी।

"सीताराम को तुम लोग समझाओ। तुम्हारा अपना आदमी है। इसमें भलाई है छोकरे की। इसके अलावा, तुम लोगों का अपना आदमी अगर नायब बन जाय, तो मान लो तुम्हीं लोगों की सहूलियत होगी।"

बात सभी को जँच गई। कन्हाई राय जैसा ही गुप्त और अज्ञात क्षोभ सभी लोगों में था। अचानक घर का एक लड़का भगवा वस्त्र पहन कर ब्रह्मचारी बन बैठे तो जैसी उलझन आदमी महसूस करता है वैसी उलझन ही सब लोग महसूस करते थे।

रात को घर लौटते ही किसान बहू ने शुरू कर दिया, मैं कहूँ, अजी मानिक जी!

टूटेफूटे सामान को जोड़जाड़ कर सीताराम का मन आज बड़ा प्रसन्न था। कन्हाई राय ने कहा था फटी कथरी सिलने की तरह सीताराम जोड़जाड़ रहा है। हाँ जोड़ा है उसने, जोड़ का दाग भी मौजूद है और रहेगा भी, लेकिन निर्जीव प्राणशून्य कथरी की जोड़ाई उसने नहीं की है। मनुष्य की देह में चोट लगती है, मांस फट जाता है, हड्डी टूट जाती, उसकी जोड़ाई करने पर भी दाग रह जाता है, लेकिन दाग रह जाने पर भी वह अंग प्रत्यंग फिर से कार्यक्षम हो जाता है वह पुष्ट होता है बढ़ता है। यह जोड़ाई उसकी वह जोड़ाई है। फिर से उसकी पाठशाला लगेगी, पाठशाला बड़ी होगी, पाँच से दस, दस से पन्द्रह, बीस-पच्चीस लड़के हो जाएंगे। वह पढ़ाएगा—

"स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।"

किसान बहू फिर बोल पड़ी, अजी ओ मालिक जी! सुन-उन पा रहे हो कि कान वान से ऊँचा सूचा सुनने लग गए?

सीताराम ने हँसकर कहा, व्यक्त करो, क्या वक्तव्य है तुम्हारा?

यह लो। ये सटर पटर बातें हमारी समझ अमझ में नहीं आतीं।

मैं कह रहा हूँ आप क्या कह रही हैं कहिए।

मैं कहती, बाबू लोग तुमको नायब सायब बनाना चाहते हैं, तो तुम लेना ऐसा नहीं चाहते, ऐसा क्या कहते हो?

सो तुम नहीं समझोगी। तुम्हारे मस्तिष्क में यह प्रवेश नहीं करेगा।

मनोरमा हँसकर सविनय बोली, तुम पंडित सनही हो, समझाकर बताओगे तो क्यों नहीं समझ पाऊँगी? समझाकर बताओ।

सीताराम ने उसके मुख की ओर विस्मय से देखा। मनोरमा तो ऐसी नहीं। वह मामूली पाठशाला का पंडित है लेकिन मनोरमा उसको संसार का सबसे बड़ा पंडित समझती है। उसी भय से मनोरमा के पैर जमीन पर नहीं पड़ते। सीताराम जो कुछ कहता है वही उसके लिए ध्रुव सत्य है। तो फिर? आज

मानो मनोरमा की बातों मे एक नया स्वर ध्वनित हो रहा है।

मनोरमा बोली, पाठशाला के पंडित से लायब बाबू बनोगे, चपरासी, लगदी, परजा सभी लोग परनाम करेंगे, खातिर करेंगे, गाँव मे तुम्हारी कितनी इज्जत होगी ! पकड़ लाओ फलां को, वह हाथ जोड सामने आ खडा हो जाएगा। नवान-लक्ष्मी के त्योहार मे लोग लोटा भर-भर के दूध दे जाएगे, बेटी के ब्याह मे वक्त चंदा माँगना, लोग चन्दा देंगे।

किसान-बहू ने कहा, जमीन जमीन के पानी-आनी के बारे मे नाफिकर। कोई भी मेड एक के आस पास से नहीं फटकेगा। घर मे लेटे मजे से कान म तेल डालकर सोते रहो, हाँ।

मनोरमा बोलती रही, षष्ठी पूजा मे पुरोहित आकर पहले पूजा कर जाएगा, लक्ष्मी पूजा नवान्न मे देवताओ का भोग हमारा ही पहले चढ़ेगा। पुरोहित-बूढा कहेगा, न अब की घरवाली की पूजा भई पहले निबटा दूँ, ठहरो जी।

सीताराम एक लम्बी साँस लेकर हँसा, बोला नहीं।

••

सवेरे ही पंडित दादा से भेंट हो गई। शान्त उस व्यक्ति ने कहा, कल रात तुम्हारे पास गया नही। कन्हाई राय आया था। बता रहा था—

सीताराम बोल पड़ा, नही दादा, मुझसे यह नही होगा।

पंडितदादा खुद पाठशाला का पंडित है, वसूली-उगाही के वक्त जमीदार के सरिश्ते मे भी जा बैठता है। शुरू-शुरू में जब वह बैठता था तब उसका मन भी विरूप हो उठता था, लेकिन फिर भी उसको जाना पडता था। बारहयारी कालीतला मे पाठशाला लगती है, जमीदार ही उसका मालिक है क्योंकि वह पुजारी है, इसी मजबूरी मे गुमाश्ता उसको वसूली के हिसाब किताब मे सहायता करने के लिए बुलवाता था। और गाँव क लोग भी इसे पसन्द करते थे, वे विश्वास करते थे, उन्ही के गाँव के लडके की लेखा मे कोई मारपेच नही होगी। पंडितदादा सीताराम की वितृष्णा को समझ सका, वह जरा चुप किए रहा, फिर बोला, हाँ। पंडिताई करने के बाद यह सब अच्छा नहीं लगता। फिर बडा ही पाजी काम है, दस लोगो के साथ हँगामा, वह होकर रहेगा। खैर, तो अच्छा ही है। लेकिन—

फिर एक बार पंडितदादा थमक गया फिर बोला, लेकिन पुलिस ने जब एक बार हँगामा कर डाला, तो—फिर क्या पाठशाला करना ठीक होगा ?

सीताराम बोला, देखें।

तो मैं तो चला जाऊँगा। श्वसुर ने कहा है—बूढा हो गया हूँ, अब देखभाल कर लो। तो तू गाँव मे मेरी ही पाठशाला लेकर क्यों नही बैठ जाता ? पंडित दादा को ससुराल की जायदाद मिल रही है। वही जाएंगे।

सीताराम बोला, अपने मझले भाई को तुम पाठशाला में बिठा दो। मैं

देखूँगा, वहीं—उसी रत्नहाटा में ही देखूँगा ! दादा, मना मत करो तुम। उस पर जिद्द सवार है, वह देख कर रहेगा।

दादा बोला, यह तेरी सनक है। यह भी पाठशाला है और वह भी पाठशाला है। यहाँ अगर तू बेखटके रह सके, घर बाहर दोनों ही देख सके तो उस पाठशाला पर तेरा ऐसा झुकाव क्यों है ?

इस बात का जवाब सीताराम ने नहीं दिया।

●●

दस

सीताराम ने दादा की बात का जवाब नहीं दिया। रत्नहाटा की सन्दीपन पाठशाला पर उसकी अजीब ममता है। पुश्तैनी घर के प्रति मनुष्य का जैसा आकर्षण होता है, वैसा ही प्रबल है उसका यह आकर्षण। बहुधा सोचा है, गाँव ही में यदि 'सन्दीपन पाठशाला' नाम देकर पाठशाला खोल दे, तो यह सारा बवाल शायद मिट जाय। लेकिन नहीं। दिल में एक कसक है। किसी तरह भी मन को यह भाया नहीं। सन्दीपन पाठशाला अगर रत्नहाटा में ही नहीं रही तो फिर सन्दीपन पाठशाला किस बात की ? इस गाँव की सन्दीपन पाठशाला के साथ धीराबाबू, मणिबाबू—इन लोगों का सम्पर्क नहीं रह जाएगा।

जीवन में उसकी आकांक्षा थी, नामल पास कर शिक्षकता की नौकरी लेकर वह परदेश जाएगा। वहीं घर लेगा, मनोरमा को ले जाएगा। शिक्षित समाज में स्थान मिलेगा, कितने ही महान लोगों से परिचय का सौभाग्य प्राप्त होगा, उन लोगों की सोहबत में कितनी ही नयी शिक्षाएँ मिलेंगी। छुट्टियों में सपरिवार गाँव लौट आएगा। गाँव के लोग भी उससे मिलने आएँगे, हँसमुख कुशल मंगल पूछेंगे। बड़े बूढ़ों को वह प्रणाम करेगा, मित्रों को आलिंगन में बाँध लेगा, कनिष्ठों को सस्नेह आशीर्वाद देगा। गुरुजन का आशीर्वाद, मित्रों का प्रेम सम्भाषण, कनिष्ठों का प्रणाम—सभी कुछ में और भी कुछ रहेगा, मनुष्य के जीवन में वही शायद श्रेष्ठ काम्य है। रहेगा आदरमिश्रित विस्मय। बड़े बूढ़े कहेंगे, हाँ, तुमने हम लोगों का मुख उज्ज्वल किया है। लड़कों से कहेंगे, देखो, सीताराम को देखकर सीखो। मित्रों के प्रति सम्भाषण में भी स्वीकृति रहेगी, हाँ भाई तुम हम लोगों में श्रेष्ठ हो। कनिष्ठों के प्रणाम में अनकही कामना होगी, आशीर्वाद करो, हम लोग भी तुम जैसे बन सकें।

वह आशा उसकी आकाश कुसुम में परिणत हो चुकी है। भाग्य तो है ही, लेकिन अपनी अक्षमता को भी वह स्वीकारता है। इसीलिए तो उसने जीवन में अपनी सामर्थ्य और योग्यता के अनुरूप पाठशाला के पंडित का पद लेकर ही

सन्तोष कर लिया है। गाँव छोड़कर रत्नहाटा मे पाठशाला खोली है, उसका कारण यह है कि इस गाँव से रत्नहाटा के समाज में मर्यादा कही अधिक है। शिक्षितो का समाज, मर्यादाशील वित्तमानो का समाज है रत्नहाटा। इसके अलावा, उससे उसके परदेश मे नौकरी करने की साध आशिक रूप से तप्त होती है। सवेरे उठकर जाता है, रात दस बजे लौटता है, सप्ताह मे सोमवार से शनिवार—ये छह दिन वह गाँव वालो के लिए परदेशी के समान ही है। उनके साथ रविवार को मुलाकात होती है। रविवार दोपहर को गाँव की बैठक मे जा बैठता है, रत्नहाटा की बातें सुनाता है। अपने जमीदार की कोठी की बातें, *रीति रिवाज की बातें, उनके अभिजात सुलभ मर्यादाज्ञान की बातें करता है,* मणिबाबू के बारे में बताता है, बड़े स्कूल की खबरें सुनाता है, वहाँ के समाज मे देश-देशान्तर के जो समाचार आते हैं, वह सब भी सुनाता है। वे थोड़ा बहुत विस्मित जरूर होते हैं। मुग्ध होकर सुनते हैं। फिर बाजार भाव की बातें भी करता, शनिवार शाम तक धान चावल का सही भाव उनको बताता है, उन लोगों के काम आता है। फिर यह सूचना देता है कि रत्नहाटा मे इस बार मोटरगाड़ी आ रही है, बड़े स्कूल के सस्थापक बड़े बाबू लोगो ने अब की बार कलकत्ते मे मोटरकार खरीद ली है, चन्द दिनो मे ही आ रही है। और भी बताता है, शिवशंकर जैसे बाबुओ के लड़को के साथ अपने विरोध के बारे मे। कहता, मैं ऐसे बाबुओ की परवाह नही करता। इन्ही सब बातो मे उसकी परदेश मे नौकरी की आकांक्षा थोड़ी बहुत पूरी हो जाती।

इसके अलावा इतने दिन रत्नहाटा मे पाठशाला करने के बाद एक आकर्षण और पैदा हो गया है। आज कई वर्षों से वह पाठशाला कर रहा है। रत्नहाटा के लड़को से उसे प्रेम हो गया है। जिन सब गृहस्थो के लड़के पढते हैं उनके साथ भी उसका एक घनिष्ठ प्रेम का सम्बन्ध बन गया है। शुरू मे उसने सुनारो और केवटो के लड़के लेकर पाठशाला खोली थी—कुछ कुछ जिद् के मारे ही। बड़े स्कूल के हेडमास्टर ने हँसी मे ही उसे कहा था, उनको लेकर पाठशाला करने पर पुण्य होगा—अज्ञान के अन्धकार से प्रकाश मे लाने का पुण्य होगा। उसी बात पर उसने जिद् के मारे उन्ही को लेकर ही पाठशाला खोली थी, साथ-ही साथ उसने यह भी आशा की थी कि इनके लड़को को, जिनकी बड़े स्कूल के मास्टर उपेक्षा करते हैं, उन्ही को कृती बनाकर वह अपनी शिक्षकता का कृतित्व प्रतिष्ठित करेगा। जी जान लगाकर पढ़ाएगा वह। साल दर साल इन्ही के लड़को को वह वृत्ति दिलाएगा। अपने ही मन मे वह इसका दृष्टान्त ढूँढ लेता। नामल स्कूल मे पढ़ते समय उसने शिक्षको से पडित वोपदेव के सम्बन्ध मे प्रचलित कहानी सुनी थी। वोपदेव के शिक्षक उसके बारे मे निराश होकर बोले थे, उसका कुछ भी नहीं होगा। वोपदेव मन के दुःख से देशत्याग कर चल पड़े थे। रास्ते मे वे विश्राम के लिए एक सरोवर के पक्के घाट पर बैठ गए थे। वहाँ उन्होंने देखा, पत्थर काट काट कर छोटे छोटे कटोरो के आकार के गढे बनाए

देखूँगा, वहीं—उसी रहाहाटा में ही देखूँगा। दादा, मन पर जिद सवार है, वह देख कर रहेगा।

दादा बोला, यह तेरी हाक है। यह भी पाठशाला है है। यहाँ अगर तू बेखटके रह सके, घर बाहर दोन पाठशाला पर तेरा ऐसा झुकाव क्यों है?

इस बात का जवाब सीतराम ने नहीं दिया।

●●

दस

सीतराम ने दादा की बात का जवाब नहीं दि पाठशाला पर उसकी अजीब ममता है। पुश्तै आकर्षण होता है, वैसा ही प्रबल है उसका यह ही में यदि 'सन्दीपन पाठशाला' नाम देकर सवाल शायद मिट जाय। लेकिन नहीं। दिल भी मन को यह भाया नहीं। सन्दीपन पा रही तो फिर सन्दीपन पाठशाला किस बात के साथ धीराबाबू मणिबाबू—इन लोगों

जीवन में उसकी आकांक्षा थी, नामर वह परदेश जाएगा। वहीं घर लेगा, मन में स्थान मिलेगा, कितने ही महान लोग उन लोगों की सोहबत में कितनी ह सपरिवार गाँव लौट आएगा। गाँव के कुशल मंगल पूछेंगे। बड़े बूढ़ों को व बाँध लेगा, कनिष्ठों को सस्नेह आशीर्वा प्रेम सम्भाषण, कनिष्ठों का प्रणाम—र के जीवन में वही शायद श्रेष्ठ काम्य है बूढ़े कहेंगे, हाँ, तुमने हम लोगों का मुर देखो, सीतराम को देखकर सीखो। रहेंगी हाँ भाई तुम हम लोगों में श्रेष्ठ कामना होगी, आशीर्वाद करो, हम लो

वह आशा उसकी आकाश कुसुम में पा लेकिन अपनी अक्षमता को भी वह स्वीकार अपनी सामर्थ्य और योग्यता के अनुरूप पाठ

और एक मछली देकर निलज्ज हास्य मुख पर लिये खडा हो गया।

सीताराम बोला, क्या है रे ?

लडके का बाप दुकडि भी आया था, उसने कहा, पंडित जी, आज से बेटे को पुश्तैनी पेशे म लगा दिया।

और पढ़ेगा नही ?

नही, सिर खुजलाते हुए दुकडि ने कहा, हमारे लडके पढ लिखकर क्या करेंगे भला ? क के पीछे ख लिखना सीख गया है, यही तो काफी है। जल-करके खसरे पर दस्तखत कर सकेगा, पढ के देख-सुन लेगा, बस इतना ही काफी है।

केवटो की पढाई और शिक्षा के लिए इस मामूली कोशिश के पीछे शौक के साथ साथ इसका भी तकाजा है। शरीफ लोगो से वे पोखर तालाब ठेके पर लेते हैं, जमीदार से नदी के जलकर का ठेका लेते हैं। पहले यह कारोबार निपट विश्वास पर चलता था। जुबानी बातें हो जाती थी, वे जाकर मालगुजारी का रुपया दे आते थे, एक से बीस तक गिन सकते थे—एक कौडी, दो कौडी, रुपया की गड्डी लगाकर, जलकर मालिक के पैरो की धूल लेकर चले आते थे। अब दर्रा बदल चुका है। अब मुहजबानी कोई बन्दोबस्त नही हो पाता, दस्तावेज—'डेमी कागज पर दो प्रतियाँ बनती हैं, रुपया देकर रसीद लेनी पडती है। सो भी पहले वे अगूठे की छाप रसीद लेकर चले आते थे सरल विश्वास से, लेकिन ज्यो ज्यो वक्त बीतता जा रहा है त्या-त्या गडबडियाँ बढती जा रही है। आजकल खसरे दस्तावज मे गलतियाँ निकल आ रही हैं, कई मामलो मे उनके रुपए पानी म गये। इसलिए नाम दस्तखत करने और दस्तावेज पढ सकने लायक शिक्षा मात्र ही वे चाहते है उससे अधिक नही। इससे सीताराम की पाठशाला को खास कोई नुकसान नही होता। एक साल और पढ लेने पर उसे सालभर की फीस और मिल गई होती। वह नही मिलती, इतना भर ही नुकसान है। लेकिन सीताराम उस लाभ हानि का हिसाब नही लगाता। वह उनसे प्यार करता है इसलिए वह चाहता है, उनमे से एक भी प्रकृत शिक्षा पावे, क के पीछे ख लिखना सीख जाना ही पर्याप्त शिक्षा नहीं है—यही बात वह उन लोगो को समझाना चाहता है कम-से कम एक लडके को शिक्षित बनाकर। उसने सुना है, सथाल लोग ईसाई बन पढ लिखकर डिप्टी बन गये है। सुना है, ये लोग जो छोटी जात के रूप मे परिचित हैं, पढ-लिख लेने पर ही गवनमट की नौकरी पा जाते हैं, किसी तरह से एक को भी अगर वह इस लायक बना सके तो उसकी आशा पूरी हो। शिवकिंकर ने कहा था, वही पहले दिन, किसान, किसान पंडित, कलवार छात्र, मछुए छात्र ! हा हा करके हसा था, उसके उस व्यग का, उसकी उस हँसी का फिर तो योग्य जवाब मिल जाये।

रत्नहाटा की सन्दीपन पाठशाला वह किसी कदर छोड नही सकता, नायवी वह करेगा ही नहीं। नायवी ! लोगो पर अत्याचार का काम है नायवी। मनुष्य को ठगने का काम है नायबी। नीच काम। वह यह काम नही करेगा। रत्नहाटा

गए हैं। बोपदेव ने सरोवर के मालिक को आशीर्वाद दिया। वे दीर्घजीवी हों। सुविवेचक मालिक, । गरीब पथिकों के खाने के लिए सुन्दर जगह बना रखी है। जिनके पास थाली कटोरी गिलास नहीं है, वे अनायास इन पत्थर में खुदे आधारों में भोज्य को भिगोकर सान कर खा सकेंगे। किन्तु कुछ देर बाद ही उनका भ्रम टूटा। उन्होंने देखा, नगर की नारियाँ आकर घड़ों में जल भर उन गढ़ों पर घड़ों को बिठा नहाने लग गई। तब वे समझ सके कि ये गढ़े मालिक ने नहीं बनवाए हैं, दिन-व दिन एक ही स्थान पर घड़े रखने के कारण घड़ों के घर्षण से वे गढ़े बन गए हैं। साथ-ही साथ बिजली की तरह उनको लगा कि इस प्रकार के नियमित घिसने से अगर पत्थर भी घिसा जाता है, तो उनकी बुद्धि कितनी भी स्थूल क्यों न हो उनके लगन के फलस्वरूप नियमित पाठाभ्यास से क्यों तीक्ष्ण नहीं होगी? वहीं से वह दृढ़ संकल्प लेकर लौटे। उसी के फलस्वरूप बोपदेव भारत विख्यात पंडित मुग्धबोध प्रणेता बोपदेव बने।

यह कहानी ध्यान में रखकर उनको कृती छात्र बनाने के लिए वह परिश्रम करने लगा था। छात्रों में कोई भी कृती नहीं बन सका, उसकी आशा सफल नहीं हो सकी। किन्तु दूसरी ओर उन लड़कों से और अभिभावकों से वह विचित्र ढंग से प्यार के बंधन में बँध गया है। वे उससे प्यार करते हैं कितना भर प्यार करते हैं इसका हिसाब वह नहीं लगाता। लेकिन अपने प्यार का परिमाण वह जानता है। वे उसको दस्तावेज लिखाने, अर्जी लिखाने को बुलाते हैं, हारी बीमारी पर नाड़ी देखने बुलाते हैं, रेशम पशम के कपड़े रफूगिरी के लिए देते हैं—उसमें स्वार्थ भी है, प्यार भी है। यह प्रगट होता है उनके सादर सम्भाषण में, नवान्न लक्ष्मीपूजा में भेजे हुए उनके मिष्ठान्न में। केवट लोग मिठाई नहीं भेजते कभी-कभी ताजा मछली या साग सब्जी देकर अपना प्यार जता जाते हैं। सीताराम का यह प्यार एक चरम परिणति प्राप्त कर चुका है। उसकी साध, उसकी आकांक्षा है कि उनके लड़कों में कम-से कम एक को भी पढ़ाई का आस्वाद चखा कर शिक्षित मनुष्य बना जायेगा।

माहा स्वर्णकार के लड़के पढ़ते हैं कि थोड़ा-बहुत पढ़ लिख लेना चाहिए अनपढ़ रहना लज्जा की बात है। इसलिए पाठशाला की पढ़ाई खतम कर बड़े स्कूल में चार क्लास किसी तरह पारकर पढ़ाई छोड़ अपने अपने धंधे में लग जाते हैं। केवट के लड़कों की पढ़ाई पाठशाला में ही खतम हो जाती है। बिल्कुल शोचिया मामला है। पाठशाला की पढ़ाई भी खतम नहीं कर पाते। बारह-तेरह साल का होते ही हल-बैल और खेती लेकर जुट जाते हैं—जो लोग मछुआ केवट होते हैं वे कंधों पर जाल लादे मछली पकड़ने के धंधे में लग जाते हैं।

अभी उसी दिन की तो बात है दुखाइ मछुए के बेटे ने पाठशाला छोड़ दी। लड़का पाई पुरा नहीं था। एक साल और पढ़ लेता तो पाठशाला की पढ़ाई पूरी हो गई होती। अचानक सिर पर जाल लादे आकर उसने प्रणाम किया

और एक मछली देकर निलज्ज हास्य मुख पर लिये खड़ा हो गया।

सीताराम बोला, क्या है रे?

लड़के का बाप दुकड़ि भी आया था, उसने कहा, पंडित जी, आज से बेटे को पुश्तैनी पेशे में लगा दिया।

और पढ़ेगा नहीं?

नहीं, सिर खुजलाते हुए दुकड़ि ने कहा, हमारे लड़के पढ़ लिखकर क्या करेंगे भला? क के पीछे ख लिखना सीख गया है, यही तो काफी है। जल-करके खसरे पर दस्तखत कर सकेगा, पढ़ के देख-सुन लेगा, बस इतना ही काफी है।

केवटों की पढ़ाई और शिक्षा के लिए इस मामूली कोशिश के पीछे शौक के साथ साथ इसका भी तकाजा है। शरीफ लोगों से वे पोखर-तालाब ठेके पर लेते हैं, जमींदार से नदी के जलकर का ठेका लेते हैं। पहले यह कारोबार निपट विश्वास पर चलता था। जुबानी बातें हो जाती थीं, वे जाकर मालगुजारी का रुपया दे आते थे, एक से बीस तक गिन सकते थे—एक कोड़ी, दो कोड़ी, रुपया की गड्डी लगाकर, जलकर मालिक के पैरों की धूल लेकर चले आते थे। अब दर्रा बदल चुका है। अब मुहजबानी कोई बन्दोबस्त नहीं हो पाता, दस्तावेज—'डेमी' कागज पर दो प्रतियाँ बनती हैं, रुपया देकर रसीद लेनी पड़ती है। सो भी पहले वे अंगूठे की छाप रसीद लेकर चले आते थे सरल विश्वास से, लेकिन ज्यों-ज्यों वक्त बीतता जा रहा है त्यों-त्यों गड़बड़ियाँ बढ़ती जा रही हैं। आजकल खसरे दस्तावेज में गलतियाँ निकल आ रही हैं, कई मामलों में उनके रुपए पानी में गये। इसलिए नाम दस्तखत करने और दस्तावेज पढ़ सकने लायक शिक्षा मात्र ही वे चाहते हैं, उससे अधिक नहीं। इससे सीताराम की पाठशाला को खास कोई नुकसान नहीं होता। एक साल और पढ़ लेने पर उसे सालभर की फीस और मिल गई होती। वह नहीं मिलती, इतना भर ही नुकसान है। लेकिन सीताराम उस लाभ हानि का हिसाब नहीं लगाता। वह उनसे प्यार करता है इसलिए वह चाहता है, उनमें से एक भी प्रकृत शिक्षा पावे, क के पीछे ख लिखना सीख जाना ही पर्याप्त शिक्षा नहीं है—यही बात वह उन लोगों को समझाना चाहता है कम-से कम एक लड़के को शिक्षित बनाकर। उसने सुना है, संथाल लोग ईसाई बन पढ़ लिखकर डिप्टी बन गये हैं। सुना है, ये लोग जो छोटी जात के रूप में परिचित हैं, पढ़ लिख लेने पर ही गवर्नमेंट की नौकरी पा जाते हैं, किसी तरह से एक को भी अगर वह इस लायक बना सके तो उसकी आशा पूरी हो। शिवकिंकर ने कहा था, वही पहले दिन, किसान, किसान पंडित, कलवार छात्र, मछुए छात्र! हा हा करके हंसा था, उसके उस व्यंग का, उसकी उस हँसी का फिर तो योग्य जवाब मिल जाये।

रत्नहाटा की सन्दीपन पाठशाला वह किसी कदर छोड़ नहीं सकता, नायबी वह करेगा ही नहीं। नायबी! लोगों पर अत्याचार का काम है नायबी। मनुष्य को ठगने का काम है नायबी। नीच काम। वह यह काम नहीं करेगा। रत्नहाटा

छोड़कर गाँव में पाठशाला खोलना पर भी उसे संतोष नहीं होगा।

सवेरे यथानियम वह रत्नहाटा जा रहा था। अचानक पीछे से एक बात कानों में आई—रत्नहाटा के पंडित रत्न जा रहे हैं।

पीछे पलटकर उसने नहीं देखा फिर भी गले की आवाज से समझ सका कि यह बात उसीका दोस्त चंडी कह रहा है। चंडी अब गाँव में डाक्टर बनकर बैठा है। रत्नहाटा के दवाखाना में चन्द रोज वह कम्पाउंडर का असिस्टेंट बनकर काम करता रहा था, वहाँ खास कोई सुविधा न कर पाने से अब गाँव में आकर डाक्टर बन बैठा है। उसकी बात सुनकर सीताराम विषाद से मुस्कराया। चंडी को रत्नहाटा में ठाँव नहीं मिली इसलिए सीताराम से ईर्ष्या है, सीताराम को ठाँव मिल गई है।

किसी दूसरे ने कहा, लेकिन भाई, पगले से चला तो रहा है।

चंडी बोला, पगला तो पुलिस साहब ने पकड़ ही डाला है। अब पाठशाला करने से तो रहा।

सीताराम जरा तेज कदम चलकर गाँव से निकल आया।

●●

लेकिन पाठशाला खोलेगा भी तो कहाँ?—यही चिन्ता उसे व्याकुल करती रही। बाबुओं की कचहरी का बरामदा उसे मिल सकता है। लेकिन वहाँ पाठशाला करने का मन नहीं करता उसका। वह उपपद सत्पुरुष, वह मध्यपद लोपी—कन्हाई राय, टिपका नायब हजार बातें करेंगे, मजाक मखौल उड़ाएंगे, लड़कों को घुड़कैंगे लड़कों के शोरगुल मचाने पर झुंझलाएँगे। लड़के भी वहाँ जाने में कुछ संकोच का अनुभव करते हैं डरते हैं। उनकी हजार उदारता, असीम अनुग्रह, धीराबाबू का वैचित्र्य, माँ का मधुर स्नेह सबकुछ के बावजूद वह बाबुओं को अपना नहीं सोच पाता उन पर अपने मन की विरूपता को वह किसी तरह से भी दूर नहीं कर पाता है। इसके अलावा रजनीबाबू ने उसे धीराबाबू के घर से सम्बन्ध छोड़ने को कहा ही है सो हालाँकि वह नहीं छोड़ेगा अकृतज्ञ वह नहीं बन सकता। लेकिन ऐसे क्षेत्र में, धीराबाबू के बैठकखाने में पाठशाला लगाना किसी तरह से भी उचित नहीं होगा। इसके अलावा वे सब हैं सिंह। सीताराम हँसता।

लेकिन जगह तो उसे कहीं नहीं मिलेगी। पुलिस के इस हँगामे के बाद उसको कोई भी किराए पर कमरा नहीं देगा। तो फिर?

वह ठिठक कर खड़ा हो गया। चेहरे पर मुस्कान उभर आई। दुखभरी मुस्कान। साथ-ही साथ आँखों से आँसू भी आ गए। अपनी उधेड़ बुन में बाबुओं की कोठी न जाकर अन्यमनस्क ही पाठशाला गृह के दरवाजे पर आ खड़ा हो गया है। दरवाजे के सिर पर साइन-बोर्ड अब भी झूल रहा है।

दीर्घनिःश्वास छोड़ वह लौट चला। फिर ठहर गया। रास्ते के इस ओर पाठशाला गृह की विपरीत दिशा में एक पक्के चबूतरे वाले पीपल के नीचे लड़के

खेल रहे हैं। छायाघन पेड के नीचे छाया के कारण घास नही उगती। उसे अचानक ही शान्तिनिकेतन याद आ गया। शान्तिनिकेतन मे आम के पेड की छाया मे स्कूल लगता है। उसने देखा है। अनोखी शोभा है उसकी।

क्षणभर मे उसका सारा अवसाद बिला गया। यही वह पाठशाला लगाएगा। बरसात आने मे अभी काफी देर है। वर्षा के समय यही वह छप्पर डालेगा। वह जानता है, यह जगह धीराबाबू के ताऊजाद दादा की है। यह वृक्ष उनकी माँ द्वारा प्रतिष्ठित वृक्ष है। धीराबाबू की माँ से कहकर इस पेड के तले की जमीन वह लगान पर बन्दोबस्त कर लेगा। जरूरत पडे तो शर्त लिख देगा—प्रतिष्ठा किए हुए वृक्ष पर उसका कोई अधिकार नही रहेगा। पेड के तले पक्का चौरा बना ही हुआ है—थोडा सा और पक्का करा लेगा, सामने पुरानी सन्दीपन पाठशाला के पास ही साहाटोला, सुनारटोला, केवटटोला है, जिनके लडको से उसका सरोकार है उन्हीं के बीच यही इसी पेड के तले वह पाठशाला शुरू करेगा। उसने मन मे निश्चय कर लिया।

●●

लेकिन इसमे भी बाधा आ पडी। धीराबाबू के ताऊजाद भाइयो ने पेड का तला दे दिया, सीताराम ने पाँच रुपया नमस्कारी के रूप मे दिया, छप्पर बना कर लगान देने को भी राजी हो गया। बाधा उधर से नही आयी, बाधा दी—अष्टावक्र गोविन्द बैरागी ने, जाने कहाँ से सहसा आकर खडा हो गया।—यह मैं नही दूँगा। किसी तरह से भी नही।—यह जगह मेरी है।

गोविन्द जन्म से विकलांग है। हाथ-पैर टेढे मेढे असमान, शरीर की बनावट अजीब है उसकी, एक पैर छोटा—एक पैर बडा, मुखडे की शक्ल भी वैसी ही, नाक बैठी हुई—ठाडी दबी हुई। और उसका क्रोध भी बडा भयकर! वह भीख माँग कर खाता है। किसी समय उस पेड के नीचे एक झोपडी बनाकर वह रह चुका था। किसी से भी उसने अनुमति नही ली थी, इन लोगो ने भी अनुमति देने की कोई आवश्यकता नही समझी थी। कुछ दिन के बाद आँधी मे वह झोपडी उड गई तब उसने ताड के पत्तो से छपवाया था—लेकिन बरसात का पानी ताड के पत्तो से न रुक सका—वर्षा से वह घर गिर गया था। गोविन्द ने भी फिर घर बनाने की कोशिश नही की। इस जगह को छोड वह जिस किसी के ओसारे-चबूतरे पर रहने लग गया है। वह आकर खडा हो गया—हाथ मे लाठी लेकर—यह जगह मेरी है सिर फोड दूगा मैं। ज्यादा चालाकी करोगे तो मणिबाबू को बेच दूगा। हाँ।

मणिबाबू का नाम सुनते ही सीताराम बौरा गया। उसने खप्प से गोविन्द का हाथ पकड लिया। बोला मरोड कर तेरा हाथ मैं तोड दूगा।

गोविन्द का शरीर विकृत है—मन भी शायद ऐसा ही हो। पैतिक पाप की सजा भुगतने के लिए ही उसका जन्म हुआ। दुरन्त है उसका क्रोध। क्रोध से चिल्लाकर उसका हाथ दाँतो से काट लिया। कुछ देर में ही दाँतो से कुछ

माँस काट उसने मुख उठाया, उस वक्त उसके दाँतों से दोनों ओर से खून चू रहा है। सीताराम के हाथ के घाव से भी झर-झर खून झर रहा है। सीताराम दंग रह गया था।

गोविन्द खुद भी स्तम्भित हो गया अपने इस काँड से। वह मूढ़ सा आँखें फाड़ फाड़ कर देखने लगा। कन्हाई राय ने आकर उसे मदा से पकड़ा—हराम जादे! राक्षस!

गोविन्द—ववर गोविन्द हतवाक् हो गया है। वह देख रहा है—सीताराम के हाथ का खून। कन्हाई राय ने उसकी गदन पकड़ी तो वह बोल पड़ा—सही कहते हो, मैंने राक्षस जैसा ही काम किया है। मारो, तुम लोग मुझे मारो।

सीताराम बोला, नहीं। छोड़ दो कन्हाई काका। छोड़ दो। बचारे ने यकबयक यह कर डाला है। मैं समझ गया हूँ। छोड़ दो।

●●

गोविन्द बहुत देर तक हक्काबक्का सा बना बैठा रहा। फिर बोला—मैं भिखमगा हूँ वैष्णव हू, यह जगह भी मेरी नहीं। लेकिन दूसरे की मंत्रणा से—।

बार-बार अफसोस से उसने सिर हिलाया। फिर हाथ जोड़ कर बोला—तुम यहाँ पाठशाला खोल लो भाई। गाली-गलौच कर डाला मैंने। छी छी छी! यह क्या कर डाला मैंने? बताओ भला। राधाकृष्ण! अब उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे।

सीताराम ने उसको भी पाँच रुपये दिए। बोला, मैं दे रहा हूँ तुमको। खुशी से दे रहा हूँ।

गोविन्द ने रुपया लेकर कहा—तो भाई मेरे मगूठ की एक छाप ले लो। और लिखपढ़ लो। वर्ना समझे न—मन है, मतिभ्रम भी हो सकता है। इस गाँव को तो जानते हो! और—। भाई!

रुक रुक कर संकोच से ही वह बोला,—एक छप्पर तो खड़ा करेगा ही सीताराम, वहाँ अगर रात को वह उसे सोने दे—तो वह दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद करेगा। इसके एवज में वह उसकी पाठशाला बुहारेगा। लड़कों के लिए घड़े में पानी भरके लाएगा।

—अच्छी बात। सीताराम हँसा।

●●

ग्यारह

पीपरा तले सीताराम की पाठशाला लगी। घड़ी भर भाड़ यह सब असबाब कमरे में ही बन्द रहा। केवल पेड़ के तने पर खड़िया से लिख दिया—रत्नहाटा

संदीपन पाठशाला। केवल पाँच लड़के !

लोग आश्चर्य करने लगे। बहुतों ने कहा, यह आदमी पागल है। शायद पागल ही हूँ सीताराम ने हँसकर कहा—पागल तुम सभी लोग हो। किसी न-किसी पागलपन के न होने से वक्त कैसे कटेगा। धीराबाबू का जेल जाना पागलपन है, इस गाँव के अन्य बाबुओं में—किसी का है जमींदारी की रौब झाड़ने का पागलपन, शिवकिंकर का शराब पीना पागलपन है तो मेरा पागलपन है पाठशाला।

गोबिन्द बैरागी ने कहा—बहुत अच्छा कहा है सीताराम तुमने, बहुत अच्छा।

वह सवेरे ही आ गया है। खुद ही कहीं से झाड़ू लाकर झाड़ू-बुहारू लगाया है, घड़े भर पानी लाकर चारों ओर छिड़क दिया है, थोड़ा सा गोबर भी कहीं से लाकर जमा किया है। पाठशाला खत्म होने पर वह जगह को लीप-पोत देगा।

बहुत खुश होकर सीताराम ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर कहा था—इतनी मेहनत क्या कर डाली तुमने बाँका चाँद ? अष्टावक्र गोविन्द को बहुत-से लोग बाँका चाँद कहकर पुकारते हैं। गोविन्द उस नाम से खुश होता है। गोविन्द बोला—कर डाली, अपनी खुशी।

—तुमने क्या वह बात याद कर रखी है गोविन्द ?

—जब कर ही डाली है तो बताओ उसे भूल कैसे जाऊँ ? लेकिन उस कारण मैंने नहीं किया। तुमको दाँतों से काटकर मैंने खून बहाया है, तुम चाहो तो सिर फोड़ दोगे। उसके लिए नहीं। समझे, ये कई रोज तुम्हारे बारे में जितना ही सोचता रहा उतना ही तुम अच्छे लगे। लोग चोरी करते, बुरे काम करते, लोगों को ठगते, मार-पीट करते, जाने क्या क्या करते, और तुम इन बच्चों को पढ़ाओगे ! इसमें भी जाने क्या-क्या वारदात, कितने ही लोगों का रोष है। इस लिए, इसीलिए तुमसे प्यार कर बैठा।

हँसने लगा गोविन्द।

फिर बोला, छप्पर छवा लो तुम। मैं भी तुम्हारे यहाँ डेरा डालूंगा। समझे न, मैं भी तुम्हारी पाठशाला का एक जना बन जाऊंगा।

सीताराम अब दिल खोलकर हँसा, बोला, पढ़ोगे तुम ?

पढ़ा भी जा सकता है। आकू और मैं एक ही साथ पढ़ेंगे। मैं फास्टो, आकू सेकन। क्या रे आकू ? लेकिन मैं पढ़ूगा नहीं। मैं तुम्हारे स्कूल का सेकन मास्टर होऊँगा। घंटा बजाऊँगा—झाड़ू बुहारू लगाऊँगा। तुम नहीं रहोगे तो इन बच्चियों को सम्भालूगा, समझे।

ठीक ऐसे ही समय शिवकिंकर आकर रास्ते पर खड़ा हो गया। उसे ऐन वक्त पर खबर मिल गई है, सीताराम ने पाठशाला शुरू कर दी है। वह आकर रास्ते पर खड़ा हो गया। फिर हँस कर आकू को बुलाकर कहा, ऐ आकू !

क्या ? भवँ सिकोड़ आकृ जाकर खड़ा हो गया।

हाराधन के दस बेटों के बारे में जानता है न ?

जानता हूँ।

बता तो—'हाराधन का एक बेटा रोवे जार जार' इसके बाद वाली लाइन क्या है ?

"दुख के मारे बन गया रहा न कोई ससार।"

शिवकिंकर हँसते-हँसते चला गया। सीताराम ने कोई भी प्रतिवाद नहीं किया, चुपचाप बैठा रहा। अच्छी बात, उसके भी दिन आने दो, शिवकिंकर को एकदिन बुलवाकर लड़का से वह कविता भी पढ़वा कर सुनवा देगा जिसमे हाराधन के दस बेटे वापस आ जाते है।

लेकिन मणिलालबाबू अब और बोलते नहीं। वह भी मणिलालबाबू को नमस्कार नहीं करता। सीधे सिर उठाए चला आता है।

अचानक धीराबाबू के नायब आकर खड़े हो गए, साथ म देवू।

सीताराम जरा चकित हुआ—फिर क्या बात हो गयी ? उसने पूछा, क्या है नायबबाबू ?

नायब बोले—मा ने देबू को भेज दिया, तुम्हारी पाठशाला म भरती होगा।

—मेरी पाठशाला मे ? सीताराम हैरान हो गया। यह कैसा सौभाग्य है उसका !

गोविन्द बोला—जय राधा-गोविन्द की। लो मास्टर—भरती कर लो।

उस दिन देबू पढ रहा था—

नहीं है हमारी कोठी पक्की
नही है हमारा वित्त,
गव केवल इतना हमरा
भरा नहीं है चित्त।
दिन मजूरी करता लेकर
थकामांदा शरीर,
कुटिया और हूँ लपकता
ले अकथ अकूत पीर।

सीताराम ने कहा, हाँ। तो क्या हुआ ? यह बातें किसने कही ? यह एक दरिद्र व्यक्ति कह रहा है याने गरीब आदमी, जिसके पास दालान, पक्की कोठी नहीं है। जिसके पास वित्त अर्थात् पर्याप्त धन सम्पदा, याने ढेर-सा रुपया-पैसा या सोना दाना नहीं है, जो रोज मेहनत मजदूरी करके खाता है, जिसके पैरों में जूते नहीं, बदन पर कुरता नहीं, दो जून पेट भर खाना जिसको मिलता नहीं ऐसा ही एक आदमी कह रहा है एक गरीब आदमी कह रहा है। कह रहा है—

क्या कह रहा है, बताओ ?

दबू ने कहा, हम लोगो के पास पक्की कोठी नही है। हमारे पास रुपए पैसे भी नही हैं। फिर भी हम लोगो का अहकार है कि हमारा मन मर नही गया है।

सीताराम बोला, मन मर नही गया है, बताना तो कैसे ?

मुसीबत बस आकू को लेकर। कोई भी बात लेकर घुमघुमाने लग पडा है। सभी लडको को चचल बनाए दे रहा है। आजकल सीताराम आकू का कठोरता से शासित नही कर पाता है। वह किसी तरह से भी भूल नही पाता आकू की उस दिन की बातें, आकू के उस दिन के काम।

वह न होता तो शायद ठीक इसी तरह से इतनी जल्द यह टूटी पाठशाला फिर खडी न हो सकी होती। वह जी-जान से कोशिश कर रहा है, ताकि आकू का मन अच्छाइयो की ओर जाय, लिखाई पढाई म ध्यान दे। लेकिन वह किसी तरह से भी मुमकिन नही हो रहा है। उस दिन वह हलवाहा' नाम की एक कविता पढा रहा था—'सब साधको से बडा साधक है हमारे देश का हलवाहा।' उसने पूछा था, हलवाहा किसे कहते हैं ?

आकू बोल पडा था, आप लोग सर।

गुस्से से दिमाग झनझना उठा था। जी म आया था कि सटी की मार से इस लडके की पीठ लहूलुहान कर दे। लेकिन पुरानी प्रतिज्ञा का स्मरण कर उसने अपने को सभाल लिया था। फिर उसको समझाया था, जो आदमी हल जात कर खाता है, अपने हाथ से हल चलाता है वही हलवाहा होता है। कौशल से प्रसगवश उससे बताया था, वे जाति म सद्गोप हैं, सद्गोप लोग हल जात कर खाते हैं इसलिए लोग उनको हलवाहा कहते हैं।

आकू ने कहा था, गाँव के लोग कहते हैं, तुम लोगो का मास्टर हलवाहा है।

आकू का कोई दोष नही। मणिलालबाबू का गाँव, शिवकिंकर का गाँव, भद्र सभ्य बाबुओ के गाँव रत्नहाटा की भाषा ही यही है और चाल भी।

किसी किसी दिन बाहर आत्मसवरण करने पर भी अन्तर के आक्रोश का दमन नही कर पाता है वह। उस दिन वह अपनी पूव प्रतिज्ञा की रक्षा नही कर पाता है। ज्यादातर एसी बात पाठशाला के समाप्त होने की ओर होती है, शरीर के थकान मे एक एक दिन वह बिल्कुल विक्षिप्त-सा हो उठता, अपने सिर के बाल नोचने की इच्छा होन लगती। सबकुछ भूल भालकर वह उस वक्त निदय कौशल से छात्रो को सताता। कान के नीचे जुल्फी के बालो को निममता से खीचता, दो उगलियो के बीच पेंसिल रखकर जोर से दबाता रहता, पेट का माँस बकोटता, अन्त म सामने के बाल मुट्ठी मे दबा घसीट कर गदन को नीचे झुका देता और कई झटके देकर छोड देता। लडकों को मारूँगा नही, यही सौगन्ध रख नही सका सीताराम। नही रख सकेगा। रखा नही जा सकता।

दिन गुजरते हैं।

चन्द महीनों में ही उसने एक छप्पर खड़ा कर लिया। बाँस और लकड़ी कुछ तो उसने अपने घर से मँगवायी और कुछ रानी माँ ने दी। भरसक कम खर्च में ही बन गया। मजदूर का काम उसने खुद किया और साथ दिया लँगड़े गोविन्द ने। श्रीमान बाँकाचाँद ! अब नीचे भी पक्का बनाना है।

इसी बीच पाठशाला में कई लड़के बढ़ गये हैं। पाँच लेकर शुरू हुई थी—उसके बाद देखो, फिर और पाँच। लोगों का भय मानो कुछ घट गया है। कुछ दिन पहले गोविन्द ने ही उसे कहा था—पण्डित, एक बार तुम लड़कों के मुरब्बियों के पास क्यों नहीं जाते।

विषादपूर्ण हँसी हँसकर सीताराम ने कहा था—क्या होगा ?

—होगा जी होगा। बैशाख जेठ में बैसाखी आँधी आती। असाढ़ में हवा रुख बदलती—तब बारिश होती। हवा रुख बदल रही है जी। मैं सुन आया हूँ। लोग बतिया रहे हैं। बड़े स्कूल में फीस ज्यादा है, मास्टर गाय बैल को पीटने की तरह बच्चों को पीटते हैं—अनाप सनाप बकते हैं। समझे न, इन्दरशाह का बेटा मार डरके स्कूल ही नहीं जाता, सड़कों पर घूमता फिरता है।

तो कह रहे थे—सीताराम के यहाँ ही दिया जाय—जो होना है सो होगा। इसके बाद फीस के कारण ननी धीवर के बेटे का नाम काट दिया है। तुम एक बार जाओ भी।

सीताराम गया था। बताया था, जो होगा सो तो मेरे ही साथ होगा। वे तो बच्चे हैं, उनको तो जेल नहीं भेजेंगे—यह बात आप लोग सोच विचार कर देखें।

इसका फल मिला। और पाँच लड़के आ गए। अब ग्यारह लड़के हैं।

●●

उस दिन पाठशाला में पढ़ाने बैठकर वह अन्यमनस्क हो सोच रहा था। हाथ में एक चिट्ठी। एक ओर तो डर के मारे उसके सीने के भीतर खुश्क हो गया है दूसरी ओर आनन्द और गौरव से उसकी आँखों में आँसू आ रहे हैं। जेल से धीराबाबू ने उसे पत्र लिखा है—जेलखाने के आकाओं का दस्तखत किया हुआ पत्र। उन लोगों ने पास कर दिया है। सीताराम सोच रहा है—जेलखाने से बेशक उसका नाम फिर पुलिस के खाते पर चढ़ गया है। हाय धीराबाबू क्या हम आप इस तरह जकड़ रहे हैं। मैं गरीब हूँ मामूली आदमी हूँ, भला मैं क्या आप लोगों के साथ पथ पर चल सकता हूँ ?

लेकिन लिखा बहुत अच्छा है। बड़ा ही सुन्दर मानो मन प्राण सब जुड़ाए जा रहा है। 'पंडित—आपकी तुलना मैं रामायण के भगीरथ से करता हूँ। जानते हैं क्या ? मेरे निकट शिक्षा ही सचमुच पतित पावनी धारा है अशिक्षा के अभिशाप से अभिशप्त भस्मावृत लोगों की आत्मा को मुक्ति दिलाती है। वे सशरीर मुक्ति पाकर उच्चता के स्वर्गलोक में उठ आते हैं। केवल यही नहीं

पडित,—मनुष्य के अतर के मर्त्यलोक मे स्वर्गमन्दाकिनी की धारा उतर आती है, प्रबल कल्लोल से बहती जाती है, मनुष्य के ऊसर अतर को उदारता की उवरता से उवर बना देती है, विनय से उसे स्निग्ध बना देती है, श्यामलता से सुश्यामल सुदर। उसके तट-तट पर पवित्र महत्त्व के तीर्थस्थल बन जाते हैं। देश देशातर के लोगो के साथ भाव विनिमय की समृद्ध बदरगाह बन जाती है।"

और भी बहुत सारा लिखा है इन्होने। बीच-बीच मे दो चार शब्द, चन्द सतरें किसी ने काट दी है, ऐसे काटा है कि पढ़ा नही जा सकता। यह सब जेल के आका लोगो ने काटा है।

अचानक गोविन्द पर उसकी निगाह पडी। गोविन्द किसी के साथ इशारे मे बातें कर रहा है। उसकी आंखो और भवो की भगिमा देखकर सीताराम को हँसी आ गई। वह चिट्ठी की ही ओट लिए रहा। आकू के साथ इशारेबाजी चल रही है। आकू कुछ माँग रहा है, गोविन्द गरदन हिला रहा है भौंह और आख के इशारे सीताराम को दिखाई दे रहे हैं। कुछ भी नही, गोविन्द ने आकू की बीडी, दियासलाई या नसवार की डिबिया छीन ली होगी, जिसे आकू वापस माँग रहा होगा। गोविन्द सीताराम की ओर सैन करके बता रहा है—बता दूगा मास्टर को।

गोविन्द बडे ही आश्चयजनक ढग से उसके जीवन मे आ गया। फिर भी सीताराम को डर लगता। किसी भी दिन अगर उसमे वह पाशव क्रोध भडक उठे तो! किसी लडके पर ही। लेकिन उसने सतर्क निगरानी रखी है। कुछ भी उसकी निगरानी से बच कर निकल नही पाता। वह पाठशाला आता, रास्ते म पेड की आड में खडा हो जाता, दूर से देखता रहता है कि गोविन्द क्या बोल रहा है या कर रहा है। गोविन्द उसके आसन के पास हाथ में छडी लिए बैठा रहता और कान म कलम खोसे रखता। चिल्लाता—ऐ ऐ चुप चुप! पढो, सब लोग पढो। ऐ आकू! ऐ लातू! बेवकूफ—बुद्धू कही के।

आकू आकर खडा हो जाता—मर यह जगह समझ मे नही आ रही है।

समझ नहीं पा रहे हो? डॉगी मॉकी कही के। यहाँ लिखा है "भली भाँति पढो पाठशाल, वर्ना कप्ट झेलो अतकाल।" या कह देता, मैं हेड मास्टर हूँ—यह सब छोटा मोटा सबक मैं नही पढाता। सेकन मास्टर को आने दो। उसी से पढना, समझना।

किसी दिन अग्रेजी पढ़ाता है

पढो सब—बी ए सी—

साहब बने देसी।

के-ई जे—

दुम लगी पीछे।

एल एम एन—

राम जी हुक्म देन।

एस टी-आर—
छलांग जरा मार।

इतना यह कर ही वह लगड़े पैर से एक छलांग मारता। किसी किसी दिन छलांग मारने मे बेचारा गिर भी पडता। सीताराम को बड़ा अच्छा लगता। कभी कभी सोचता, विकलांग भिखमगा लडको की माया मोह म फँस एक अनचाहा रस पाकर धन्य हो गया। उसके द्वारा कोई अनिष्ट होना असम्भव है।

सीताराम के आते ही गोविन्द लज्जित-सा कहता—लो जी, तुम्हारी पाठशाला सम्भालो। मैं चला। पाँच दरवाजा पर माँग आऊँ।

तिपहर को छुट्टी से पहले ही आ जाता, घण्टा वही बजाता है।

●●

चिट्ठी को सरका कर गला खँखार कर वह अच्छी तरह सेवँठ गया। फिर बोला—इशारा किस बात का है गोविन्द ?

गोविन्द बोला—इमली। पडित,—आकू इमली खा रहा था। यह इत्ता सा—यह देखो। मैंने कहा, अम्ल रोग हो जाएगा—तो सुनेगा ही नही। हाथ जोडकर कहता—द दो, दे दो।

—आकू ! तुम इमली खा रहे थे ?

आकू भी विचित्र है। वह उठकर खड़ा हो गया और बोला,—सर— एक चरखा—एक चरखा लेकर जा रहा है।

चरखा ?

जी हाँ। कुली ले जा रहा है बक्से के ऊपर लाद कर। बगल ही स्टेशन का रास्ता है। आकू ने रास्ते की ओर उँगली उठाकर दिखा दिया।

होन दा। बैठो।

आकू टप्प से बैठ गया, बोला, स्कूल का सब इन्सपेक्टर आ रहा है सर। साथ मैं कोई है। औरत। आकू फौरन सामने पीछे डोलते हुए पढने लग गया, "अनेक नद नदियां म मगर पाए जाते हैं। मगर पानी म रहता है और पानी के भीतर रहकर शिकार करने मे बडा दक्ष है।" वह पाठशाला का बहुदर्शी छात्र है, वह जानता है, स्कूल सब इन्सपेक्टर पाठशाला का हर्ता कर्ता विधाता है। भला बुरा कुछ दखते ही इन्सपेक्टर के खाते पर सर सर कुछ लिख मारेगा

सीताराम इस बार अपनी कुर्सी छोडकर उठ खडा हुआ। बगल ही स्टेशन का रास्ता है। वाकई सतीश हाडी सिर पर एक बक्सा लादे जा रहा है उसके ऊपर एक चरखा है। चरखा कौन ले आया ? बिना पूछे उससे भी रहा नही गया।

चरखा किसका है सतीश ?

जी, पडित जी, चरखा है लडकियो के स्कूल की दीदी जी का।

लडकियों के स्कूल की दीदी जी ?

हाँ जी, हाँ। नयी आई यहाँ। वो आ रही हैं। जमाने के साथ जान बचा

वेश और देखूँगा पंडित जी। मेहरिया कुर्सी पर बैठे पढ़ाया करेगी—पैरों में जूते। बो देखिए न।

सीताराम उत्सुक-सा खड़ा रहा। उसने हालांकि हुगली में रहते शिक्षित नारियाँ देखी हैं, फिर भी यहाँ जो आई हैं, वे कैसी हैं—देखने के लिए उसके कौतूहल की कोई सीमा नहीं थी। खासतौर से यह महिला चरखा लेकर आई है। बिल्कुल इसी कारण उसने उनके प्रति एक विशेष आकर्षण का अनुभव किया। बहुत दिनों से दीदी जी के आने की बात सुनता भी आ रहा था।

वो देखो, रजनीबाबू के साथ एक महिला चली आ रही है—चौबीस पच्चीस वर्ष की साँवली लम्बी है वह महिला—खद्दर की साड़ी, खद्दर का ब्लाउज पहने, पैरों में सैंडिल, हाथों में दो दो चूड़ियाँ। सिर पर घूंघट नहीं, रूखे बालों का सादासूदा जूड़ा। यह महिला कोई सुन्दरी नहीं, काले रंग की, फिर भी साफ-सुथरी वेश भूषा में बड़ी सलोनी सी लग रही है। उस महिला की आँखों और बालों में भी श्री है।

सीताराम ने रजनीबाबू को नमस्कार किया। रजनीबाबू ठहर गए।

नयी शिक्षिका को भी नमस्कार करने की इच्छा सीताराम की थी लेकिन उससे हो न सका। लज्जा और कुंठा पर वह विजय न पा सका।

रजनीबाबू बोले, मैं चला जा रहा हूं सीताराम।

चले जा रहे हैं? ट्रांसफर हो रहे हैं?

हाँ। उसाँस छोड़कर रजनीबाबू बोले। मुझे अफसोस रह गया, तुम्हारे लिए कुछ भी न कर सका। खैर, मैंने ऊपर नोट भेज दिया है। यहाँ भी रखे जा रहा हूं। जो आ रहे हैं वे भी बड़े नेक सज्जन हैं। उनसे मिलो, मेरा विश्वास है, वे तुम्हारा काम कर देंगे। जरा चुप रहकर वे बोले, एक और बात तुमसे बता जाऊं। हमारे देश में नये स्वायत्तशासन कानून के बारे में जानते होगे? अभी कुछ ही दिन पहले कानून सभा में वोट हो गया?

सीताराम ने हल्के हँसकर कहा, जानता हूं। हल्के से हँसा, इसका कारण कांग्रेस आन्दोलन, धीराबाबू का जेल—सभी इस वोट के मामले को लेकर जो है। पाला स्वायत्तशासन। अखबार में लिखा जाता है 'मटेगू माकाल[1]'।

रजनीबाबू बोले, वही कानून। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड अब और मजिस्ट्रेट के कब्जे में नहीं रहेगा। नया इलेक्शन होकर नान आफिशियल चेयरमैन होगा। हमारे यहाँ राय साहब मुकर्जी खड़ा हो रहे हैं, और भी कई लोग खड़े हो रहे हैं। तुम एक काम करना राय साहब के चुनाव में जरा दौड़ धूप करना। तो वे अगर चेयरमैन बन गए तो तुम्हारा एड आसानी से मिल जाएगा। एड होगा डिस्ट्रिक्ट

---

१ माकाल एक छोटा सा खूबसूरत लाल रंग का फल है जिसके भीतर के बीये कड़ुए और काले हैं। ऊपर से सुहावनी किन्तु सर्वथा बेकार चीज की तुलना माकाल फल से की जाती है।

बोर्ड के चेयरमैन के हाथों में।

वे चले गए, महिला को साथ लेकर।

रजनीबाबू के ट्रांसफर की खबर सुन सीताराम आंतरिक रूप से दुखी हुआ। वाकई, ऐसा नेक आदमी शायद ही और हो। कोमल चित्त धार्मिक व्यक्ति, कभी किसी से कड़ी बात नहीं करते। साथ-ही साथ उसके दिल में एक गहरा अपराध-बोध भी जाग उठा। उनके घर से अन्यमनस्क हो मुनी के जन्म दिन पर वह उनकी वीरवाणी पुस्तक ले आया था। उसे मारे शर्म के वह लौटा नहीं सका। उसको किस तरह वह लौटाएगा? एक बार जी में आया, दौड़कर उनके पास जा सारी बातें खोल कर बता दे, और रजनीबाबू के पैर पकड़कर क्षमा मांग ले। लपका भी वह। लेकिन दुःसह लज्जा ने उसका गला घर दबाया। रजनीबाबू ने पूछा, फिर कैसे आए पंडित? कुछ कहना है? सीताराम कुछ भी न कह कर उनके पैरों को छू प्रणाम कर उठ खड़ा हो गया, केवल आंखों के कोर से दो बूंद आंसू ढुलक पड़े। रजनीबाबू ने फिर एक ठंडी सांस ली, फिर बोले, तुम्हारा भला होगा सीताराम। शिक्षकता मत छोड़ना तुम।

वे फिर खड़े नहीं रहे। चले गए। सीताराम खड़ा ही रहा। पीछे से यह महिला बड़ी जँच रही है। सबसे भला लगा उस महिला का आश्चर्यजनक शांत, धीर और अकुंठित स्वभाव। शिक्षा न होने पर मनुष्य प्रकृत मनुष्य नहीं बन पाता है। यह बात पुरुष और स्त्री दोनों के लिए लागू है।

●●

छुट्टी के बाद वह बाजार के रास्ते से आ रहा था। एक दुकानदार मित्र ने पूछा, अरे पंडित, तुम इधर से?

सीताराम इस सवाल से बेवजह नाराज हो गया, बोला, क्यों क्या हम लोगों को इधर नहीं आना चाहिए?

उसने हँस कर कहा अरे बिगड़ क्यों गए भाई! मैं कह रहा था कि इधर तो तुम आते नहीं। तुम तो झरने के किनारे बैठकर तपस्या करते हो। इसलिए पूछ रहा हूं।

सीताराम बोला, इधर ही जाऊँगा आज, जरूरत है।

चले जाना। आओ थोड़ा बैठकर तो जाओ। हम लोग तुम्हारी तारीफ करते रहते हैं। कहते हैं, हाँ, सीताराम में साहस है। इसके अलावा इतनी सारी तकलीफों के बावजूद जिस आदमी ने पंडिताई नहीं छोड़ी उसी के पास लड़कों को पढ़ने भेजना चाहिए। शिवकिंकर और मणिलाल बाबू की हम लोग निंदा करते हैं। समझे?

सीताराम को इतना तो अच्छा लगा। वह बैठ गया। चन्द मिनट बाद ही वह हड़बड़ाकर बोल पड़ा, आज चलें भाई।

कहाँ जाओगे? क्या काम है?

सीताराम बोला, एक बार रजनी बाबू के पास जाऊँगा, वे यहाँ से चले जा रहे हैं। यह बात उसने झूठ बनाई। वह बालिका विद्यालय की ओर जा रहा था। शिक्षिका उसे बड़ी अच्छी लगी है। कही एक बार उसका देख सके -इस उद्देश्य से वह जा रहा था। वह जानता है, यह उसके लिए अनुचित है बहुत ही अनुचित, बार बार उसने अपने दिल को समझाने की कोशिश की है, फिर भी वह अपने को सयत नही रख सका।

●●

गाँव के बाजार वाले रास्ते के किनारे ही बालिका विद्यालय है। ईंट की बनी दीवारो के ऊपर टीन का छाजन। सामने खम्भे वाला बरामदा। बरामदे के कोने मे छोटा सा बगीचा। इतने दिनो तक स्कूल मे वद्ध ही मास्टरी करते रहे हैं। हाल मे ऊपर के निर्देश से शिक्षिका नियुक्त हुई। यह महिला ही पहली शिक्षिका है। स्कूल के बगल मे बने मिट्टी के घर मे उसे रहना है।

सीताराम रास्ते पर खडा हो गया।

कमरे का दरवाजा बन्द है। खिडकी खुली हुई, खिडकी पर पर्दा लटका दिया है। इतने भर से ही उसकी परिष्कृत रुचि का पता चल जाता है।

शिक्षिता महिला है, वह क्या घूमने नही निकलती ?

दूर से कोई आ रहा है। यहाँ इस तरह खडे रहने की उसे और हिम्मत नहीं पडी। वह दनदनाकर तेज कदमो से आगे बढ गया। थोडा सा आगे बढकर ठहर गया। वहाँ से लौटकर फिर आकर उस मकान के सामने खडा हो गया। कमरे मे बत्ती जल रही है पर्दे पर रोशनी आ पडी है। उस प्रकाशित पर्दे पर उसने उस महिला के मुख की छाया देखी बायस्कोपके परदे पर जिस तरह काया की छाया पडती है हूबहू उसी तरह। सिर का जूडा भी छाया मे उभर आया है, दोनो होठ हिल रहे हैं। शायद किताब पढ रही है। नही। अकेला सो कोई इस ढग से किताब नही पढता। खामोश ही पढता है। तो ? तो क्या अपने ही मन हल्की आवाज मे गाना गा रही है ?

अचानक वह खुद ही चौंक पडा। यह वह क्या कर रहा है ? छी ! छी ! छी ! वह तेज चाल चलने लग गया। मानो भाग रहा हो। सीधे रजनीबाबू के मकान के सामने ही आकर रुका। जेब मे हाथ डाला। 'वीर वाणी उसकी जब मे ही है।

रजनीबाबू ने बुलाया—सीताराम ? आओ ! आओ ! रजनीबाबू ने अपना रजिस्टर खोल दिया। बोले—पढो।

अगरेजी में लिखा हुआ मन्तव्य। रजनीबाबू की लिखावट बडी साफ है पूरा पढ गया। सीताराम अगरेजी का अच्छा ज्ञाता नही, सभी शब्दों का अर्थ वह नही समझ सका, लेकिन इतना वह समझ सका कि रजनीबाबू ने लिखा है, निर्दोष पडित पर अन्याय हुआ है। ग्राम्य षड्यत्र के कारण ही सरकार-पक्ष के मन म भ्रान्त धारणा का उद्भव हुआ है। पडित ईमानदार और निष्ठावान

आदमी है। उस सज़ा देने की वजह से एक हानि और हुई है, गाँव के अति दरिद्र और उपेक्षित तबका के सब्कों की पढ़ाई में काफी हानि पहुँची है।

और भी बहुत कुछ लिखा है उन्होंने। पढ़कर सीताराम की आँखों में आँसू आ गए। कैसे आभार प्रगट करे, यह उसकी समझ में नहीं आया। जेब की बीर वाणी पर वह हाथ रखे हुए था। उसको भी वह निकाल नहीं सका। इसके बाद कैसे निकाल सकेगा वह ? रजनी बाबू की सारी धारणा पलट जाएगी। दिल धड़कने लगा। नहीं—रहने दिया जाय। इस पाप की सज़ा वह परलोक में ही लेगा। यहाँ उससे नहीं हो सकेगा।

रजनी बाबू ने हँसकर कहा, तुम्हें एक और पते की बात बता जाऊँ सीताराम। नये सब इन्सपेक्टर जो आ रहे हैं—वे सूरन खाना बहुत पसन्द करते हैं। सूरन, बेल और भी जान क्या-क्या सब ? यानी डिसपेप्टिक हैं। समझे न ? भेंट करते वक्त एक बढ़िया ज़मीकन्द लेकर जाना। और एक बात, तुम लोगों के धीरा बाबू कहानी लिखते हैं। नये इन्सपेक्टर साहब आधुनिक साहित्य पर बेहद नाराज़ हैं। समझे ! तुम धीराबाबू की कहानियों की निन्दा करना। समझे ? निन्दा अगर न भी करो, तारीफ कभी न कर बैठना। वर्ना वह बूढ़ा बिगड़ जाएगा। मेरे साथ एक बार बहस हुई थी। अंत में एक पेपरवेट उठा कर मेरे सिर की ओर फेंका। गनीमत, मैंने सिर ज़रा हटा लिया था। रजनी बाबू हँसने लगे—यह भी तुम लोगों के लिए मुसीबत है। हम लोगों का मन रखकर चलना। हमारी समझ के मुताबिक चलना।

लौटती राह सीताराम अभिभूत-सा चलने लगा। वह मानो खो गया है। रजनीबाबू के स्नेह और काली छाया से अंकित चित्र के सौंदर्य से—जान वह कैसा-कैसा हो गया है।

●●

बारह

दो महीने के बाद उस दिन मनोरमा रो रही थी।

सीताराम ने उसे निर्दयता से डाँटा है, अपमान किया है। उसका अपराध क्या है यह वह समझ नहीं सकी। इसीलिए वह ज़्यादा रो रही है। इन दिनों सीताराम की साफ़-सुथरेपन की सनक क्रमशः मानो मात्रा पार किए जा रही है। कपड़े मैले हैं, बिस्तर गन्दा है, यहाँ बदबू निकल रही है—यही लेकर वह दिनोरात नाक-भौं सिकोड़ता रहता है। केवल यही नहीं, उसका स्वभाव भी मानो अत्यन्त रूखा हो उठा है।

आज सीताराम घर लौटकर मुँह हाथ धो खाना खाने बैठा था, मनोरमा के

आकर सामने भात रखते ही वह बोल पडा, भात ले जाओ। मैं नही खाऊँगा।

खाओगे नही ? क्यो क्या हुआ ? खाने बैठ—

ले जाओ भई, ले जाओ। भात मुझे रुचेगा नही।

कहकर ही सीताराम उठ खडा हुआ। बोला, तुम्हे क्या कोई गध नही मिलती ? तुम्हारी धोती से कैसी बदबू आ रही है और तुम्हे पता ही नही ?

मनोरमा लज्जित हुई। सचमुच इस धोती से बदबू निकल रही है। छोटे बच्चे की माँ है वह, तिस पर भीगी धोती हवा से लिपट सिमट गयी थी, धूप नही मिली। धोती गन्दी भी हो गयी है। इसका वह क्या करे ? गोद मे बच्चा है, घर मे चौका रसोई आदि काम का कोई अन्त नही, अकेली प्राणी है वह, वह क्या साफ-सुथरी हो सिंगार-पटार कर बैठ रहना चाहे तो बैठ सकती है ? इसके अलावा जो धोती वह पहने हुए थी वह रेशम का कपडा है, शुद्ध कपडा। यह कपडा कौन है जो बारह महीने सज्जी से धोता हो ? उसने ऐसा ही जवाब दिया था, क्या करूँ ? शुद्ध कपडा जो है। यह कपडा क्या रोज रोज धोया जाता है ? इसमें जरा बू ही आ जाती है। लो, बैठ जाओ। खाना खा लो।

सीताराम ने व्यग के स्वर मे कहा था, शुद्ध कपडा !

हाँ, देखते नही, रेशमी कपडा है।

अशुद्ध कपडा। जिससे बदबू निकलती हो, जो साफ न हो वही अशुद्ध होता है।

सुनो, जो जानते नही, उसके बारे म बकवास मत करो। पडित हो तो पाठशाले मे हो, घर के आचार आचरण के बारे मे तुम्हे क्या मालूम ?

सही बात। आचार-आचरण के मूरख ही पडित बनते हैं। यह भी मालूम हो गया।

मनोरमा को उस मूरख शब्द से ही ज्यादा ठेस लगी है। जवाब मे उसने कहा था, अच्छी बात, मैं मूरख ही सही। कुछ भी जानती नही। लेकिन यह धोती और पाँच ठो खरीद दो न, रोजाना एक फीच लूगी। फीचूगी भी क्यो, धोने का इतजाम करा देना, धोबी को दे दिया करूँगी। उस वक्त तो सभी लोगो ने खुशामद की, बाबू लोग नायबी देना चाहते हैं ले लो। लेकिन—

टोककर सीताराम ने कहा, तुम कमीनी हो। बेहद कमीनी हो।

मैं कमीनी हूँ ? इतनी बडी बात तुमने मुझे कह दी ?

हाँ तुममूख हो, कमीनी हो लालची हो। सीताराम अब तक आसन पर ही खडा था, अब जाकर मुँह हाथ पानी से धोने लगा।

अभिमान से और रुँधे हुए रोदन से मनोरमा के दिल मे उस वक्त हलचल मचा हुआ था। वह सन्नाटे मे आ खडी रही। किसान बहू लेटी हुई थी, अचभे से सबकुछ सुन रही थी, अब उठकर बैठ गयी। बोली, मैं कहू मालिक जी, तुम्हारा यह चलन बोलन कैसा है जी ?

सीताराम उसको धमकाकर बोला, तू चुप रह। जो समझती नही, उस

आदमी है। उसे सजा देने की वजह से एक हानि और हुई है, गाँव के अति दरिद्र और उपेक्षित तबके के लड़के की पढ़ाई म काफी हानि पहुची है।

और भी बहुत-कुछ लिखा है उन्होने। पढकर सीताराम की आँखो म आँसू आ गए। कैसे आभार प्रगट करे, यह उसकी समझ मे नहीं आया। जेब की वीर वाणी पर वह हाथ रखे हुए था। उसको भी वह निकाल नही सका। इसक बाद कैसे निकाल सकेगा वह ? रजनी बाबू की सारी धारणा पलट जाएगी। दिल धड़कने लगा। नही—रहने दिया जाय। इस पाप की सजा वह परलोक म ही लेगा। यहाँ उससे नही हो सकेगा।

रजनी बाबू ने हँसकर कहा, तुम्हें एक और पते की बात बता जाऊँ सीताराम। नये सब इसपेक्टर जो आ रहे है—वे सूरन खाना बहुत पसन्द करते हैं। सूरन, बेल और भी जाने क्या क्या सब ? यानी डिसपेप्टिक हैं। समझे न ? भेंट करते वक्त एक बढ़िया जमीकन्द लेकर जाना। और एक बात, तुम लोगो के धीरा बाबू कहानी लिखते हैं। नये इसपेक्टर साहब आधुनिक साहित्य पर बेहद नाराज हैं। समझे ! तुम धीराबाबू की कहानियो की निन्दा करना। समझे ? निन्दा अगर न भी करो, तारीफ कभी न कर बैठना। वर्ना वह बूढा बिगड जाएगा। मेरे साथ एक बार बहस हुई थी। अन्त मे एक पेपरवेट उठा कर मेरे सिर की ओर फेंका। गनीमत, मैंने सिर जरा हटा लिया था। रजनी बाबू हँसने लगे—यह भी तुम लोगो के लिए मुसीबत है। हम लोगो का मन रखकर चलना। हमारी सनक के मुताबिक नाचना।

लौटती राह सीताराम अभिभूत-सा चलने लगा। वह मानो खो गया है। रजनीबाबू के स्नेह और काली छाया से अंकित चित्र के सौन्दर्य से—जाने वह कैसा-कैसा हो गया है।

●●

बारह

दो महीने के बाद उस दिन मनोरमा रो रही थी।

सीताराम ने उसे निर्दयता से डाँटा है, अपमान किया है। उसका अपराध क्या है यह वह समझ नही सकी। इसीलिए वह ज्यादा रो रही है। इन दिनो सीताराम की साफ-सुथरेपन की सनक क्रमश मानो मात्रा पार किए जा रही है। कपडे मले हैं, बिस्तर गन्दा है, यहाँ बदबू निकल रही है—यही लेकर वह दिनोरात नाक भौं सिकोड़ता रहता है। केवल यही नहीं, उसका स्वभाव भी मानो अत्यन्त रूखा हो उठा है।

आज सीताराम घर लौटकर मुँह हाथ धो खाना खाने बैठा था, मनोरमा के

आकर सामने भात रखते ही वह बोल पडा, भात ले जाओ। मैं नही खाऊँगा।

खाओगे नही? क्यो क्या हुआ? खाने बैठे—

ले जाओ भई, ले जाओ। भात मुझे रुचेगा नही।

कहकर ही सीताराम उठ खडा हुआ। बाला, तुम्हे क्या बाई ग ध नहीं मिलती? तुम्हारी धोती से कैसी बदबू आ रही है और तुम्ह पता ही नही?

मनोरमा लज्जित हुई। सचमुच इस धोती से बदबू निकल रही है। छोटे बच्चे की माँ है वह, जिस पर भीगी धोती हवा से लिपट सिमट गयी थी, धूप नही मिली। धोती गन्दी भी हो गयी है। इसका वह क्या कर? गोद मे बच्चा है, घर मे चौका रसोई आदि काम का कोई अन्त नही, अकेली प्राणी है वह, वह क्या साफ-सुथरी हो सिंगार-पटार कर बैठे रहना चाहे तो बैठ सकती है? इसके अलावा जो धोती वह पहने हुए थी वह रेशम का कपडा है शुद्ध कपडा। यह कपडा कौन है जो बारह महीने सज्जी से धोता हो? उसने ऐसा ही जवाब दिया था, क्या करूँ? शुद्ध कपडा जो है। यह कपडा क्या रोज रोज धोया जाता है? इसमें जरा बू ही आ जाती है। लो, बैठ जाओ। खाना खा लो।

सीताराम ने व्यग के स्वर मे कहा था, शुद्ध कपडा!

हाँ, देखते नही, रेशमी कपडा है।

अशुद्ध कपडा। जिससे बदबू निकलती हो, जो साफ न हो वही अशुद्ध होता है।

सुनो, जो जानते नही, उसके बारे म बकवास मत करो। पडित हो तो पाठशाले म हो, घर के आचार-आचरण के बारे मे तुम्ह क्या मालूम?

सही बात। आचार-आचरण के मूरख ही पडित बनते है। यह भी मालूम हो गया।

मनोरमा को उस मूरख शब्द से ही ज्यादा ठेस लगी है। जवाब मे उसने कहा था, अच्छी बात, मैं मूरख ही सही। कुछ भी जानती नही। लेकिन यह धोती और पाँच ठो खरीद दो न, रोजाना एक फीच लूगी। फीचूगी भी क्यो, धोने का इतजाम करा देना, धोबी को दे दिया करूँगी। उस वक्त तो सभी लोगो न खुशामद की, बाबू लोग नायबी देना चाहते हैं ले लो। लेकिन—

टोककर सीताराम ने कहा, तुम कमीनी हो। बेहद कमीनी हो।

मैं कमीनी हूँ? इतनी बडी बात तुमने मुझे कह दी?

हाँ तुममूख हो, कमीनी हो लालची हो। सीताराम अब तक आसन पर ही खडा था, अब जाकर मुँह हाथ पानी से धोन लगा।

अभिमान से और रुँधे हुए रोदन से मनोरमा के दिल मे उस वक्त हलचल मचा हुआ था। वह सन्नाटे मे आ खड़ी रही। बिमान बहू लेटी हुई थी अचभे से सबकुछ सुन रही थी, अब उठकर बैठ गयी। बोली, मैं बहू मालिक जी, तुम्हारा यह चलन बोलन कैसा है जी?

सीताराम उसको धमकाकर बोला, तू चुप रह। जो समझती नहीं, उस

बारे मे बोलना नही चाहिए।

अरे मैं बहू, समझूंगी क्यो नहीं ? मूरख मूरख मनही हैं, छोटी-खोटी जाति वालों लेकिन इसलिए कोई बोदी सोदी वा नही। समझूं काहे न ? चिड़चिड़ा मिजाज लेकर तो घर आए तुम और एक बहाना अहाना ढूंढकर बीवी को डांट फटकार रहे हो।

सीताराम किसी बात का जवाब न देकर ऊपर उठ गया। किसान-बहू की बात उसके दिल मे तीर की तरह जा पैठी।

ऊपर आकर अकेले बैठे बहुत देर तक वह सोचता रहा—देखा, सचमुच बात ऐसी ही है। बहुत ही मामूली बात पर उसने मनोरमा का निर्दयता से अपमान किया है। क्यो उसका दिल एसा रूखा हो गया ? क्या हो गया है उसे ? सोचते हुए वह सिहर उठा। क्या वाकई ऐसी बात है ?—हाँ बात यही है। इसमे अब कोई भूल नही। लेकिन यह तो अपराध है ! हाँ, अपराध तो है ही। केवल मनोरमा के निकट ही अपराध नही, यह उसके चित्त का कलुष है, उसका यह अपराध भगवान के निकट भी है। इसके अलावा यह तो उसकी धृष्टता है। वह पाठशाला का एक मामूली पडित है, और वह महिला, शिक्षिता नारी है। यह बात अगर किसी तरह से भी उसके कानो म पहुँच जाय, तो वह कैसी कठोर दृष्टि से उसकी ओर देखेगी, कैसी टेढी मुस्कान उसके होठो पर उभर आएगी, कल्पना करते हुए भी वह सिहर उठा।

आज करीब महीना भर हुए वह आयी है। माह भर से ही मानो किसी जुनून मे दोनो वक्त उसको देखने के छिपे उद्देश्य से वह आ-जा रहा है। इतने दिनो का आने जाने का नियमित पथ बदलकर आजकल वह नए पथ से याने बालिका विद्यालय के सामने वाले बाजार के रास्ते यातायात कर रहा है। सबरे गाँव से निकलकर काफी चक्कर लगाकर उसी रास्ते से वह बाबुओं की कोठी जाता है। आजकल दिन-ढले वह झरने की ओर नही जाता। बाजार के रास्ते उसी मकान के सामने से जाता है और थोडी देर बाद उसी रास्ते से लौट आता है। उस वक्त शाम हो जाती है। उसके कमरे मे बत्ती जलती, परदे पर उसके मुख की छाया पडती, वही देखकर वह लौट आता है। महीने भर मे सिर्फ दो ही तीन बार उसको वह बाहर देख सका है।

काली लम्बी महिला, जतन से जूडा बाँधे, धुली साफ खद्दर की साडी पहने, बदन पर ब्लाउज, परो मे सडिल, हाथो मे एक एक सोने की चूडी। सीताराम देखकर मुग्ध हो जाता है। एक दिन उसे पोस्ट-ऑफिस मे देखा था, एक दिन बडे हैडमास्टर के मकान के दरवाजे पर तो एक दिन अपने ही मकान के बरामदे म वह अनमनी-सी खडी थी।

कितने ही दिन उससे बातें करने के कितने हो तरीके के बारे म वह सोचता रहा है। वह महिला चरखा कातती है। एक दिन कुछ रामकपास की रुई ओट कर क्यो न उसे भेंट किया जाए ? बालिका विद्यालय की नौकरानी प्राय

राजाना ही यहाँ की लायब्रेरी स उसके लिए किताब ले जाया करती है घीरावावू की बहुत सारी किताबें है, क्या नौकरानी से वह न दिया जाए—उनसे कहना, उनको एतराज न हो तो मैं किताब दे आऊँगा और फिर लौटा भी लाऊँगा। लेकिन कुछ भी वह कर न सका। केवल भूत ग्रस्त सा उसके मकान के सामने से चलता फिरता रहा है।

नही। यह उसके लिए अनुचित है। वह पाठशाला का एक शिक्षक है। उसके जीवन मे कोई कलुष नही रहना चाहिए। यह मोह उसको त्यागना ही पडेगा। एक उसाँस ली उसने। ऐसा ही करेगा वह। उसने बार बार मन ही मन भगवान को पुकारा, भगवान मुझे बल दो।

भगवान को प्रणाम कर फिर से जी-जान लगाकर वह फिर पाठशाला मे जुट गया। इस एक महीने मे उसकी पाठशाला मे दो लडके और बढ गये। तेरह लडके। एक ठडी साँस ली उसने। तेरह लडको मे एक भी बहुत अच्छा लडका नही है। सौ लडको की बजाय अगर उसे एक भी अच्छा लडका मिल जाय—अगर—सचमुच का अच्छा लडका मिल जाय उसे तो वह अपने को भाग्यवान समझेगा। देबू पर उसे भरोसा था। लेकिन वह भरोसा दिन ब दिन क्षीण होता चला जा रहा है। देबू क्रमश अधिक चचल और पढाई म अमनो योगी बनता जा रहा है। ज्योतिष का भतीजा जाने कैसा बोदा होता जा रहा है दिन-ब दिन। कभी कभी अपने पर उसे सन्देह होने लगता है। यह क्या उसी का नकारापन नही है? उसी के लिए क्या उन लोगो की परिणति ऐसी हो रही है?

वह अब जी जान से जुट गया।

आकू का कुछ भी नही होगा। उसको पाठशाला स बिदा कर देना चाहिए। लेकिन बिदा वह लेगा नही। वह लडका बीडी पीना सीख गया है। और भी तरह तरह की बुरी बातें उसके दिमाग मे उभर आई है। अबकी बार प्रायमरी पास का सर्टीफिकेट देकर वह उसे बिदा कर देगा। आकू ने फिर एक शगूफा छेडा है—पाठशाला म फुटबाल टीम बनानी है। इन सब बातो मे गोविन्द उसका वकील है। गोविन्द अच्छी वकालत कर लेता है। कहता, यह तो मानते हो न कि लडके कोई गरीब अमीर मे फर्क नही करते। उनकी साध होगी ही। बडे स्कूल के लडके गेंद खेलते हैं। वे भी भला क्या न खेलें? तो फिर तुम्हे एक कहानी सुनाता हू, सुनो। बहुत बडा बादशाह था एक। बडी लम्बी दाढी। गुस्सा भी गजब का। रोब दाब भी वैसा ही। समझे! एक दिन बादशाह दरबार मे आकर आँखें लाल करके बोले मेरी दाढी पकडकर अगर कोई खीचे तो उसकी सजा क्या है? सभी लोग सिहर उठे। हुजूर की दाढी पकडकर खींचना? यह भी क्या कोई कर सकता है? बादशाह बोले—सकता है क्या, सका है, खीचा है खीचा है?—तो फिर उसे सूली पर चढा दो। नही-नही, उसकी बोटी-बोटी काट डालो। कुत्ते को खिला दो बोटियाँ। लेकिन वजीर खामोश

रहे। बादशाह बोले, वजीर, तुम तो कुछ भी कह नहीं रहे हो। वजीर बोले—हुजूर—क्या बताऊं ? बादशाह की दाढ़ी पकड़कर अगर किसी ने खींची हो तो वह उनका छोटा बच्चा होगा। मैं कहता हूं कि उसका हाथ सोने से मढ़वा दिया जाय। कहानी उसे सचमुच बड़ी अच्छी लगी। देहात की पाठशालाओं में ये सब टंटे नहीं हैं, वहां पंडित लोग छुट्टी देकर ही नजात पा जाते हैं। लेकिन रत्नहाटा जैसे गांव में नजात लेने से तो काम नहीं चलेगा। यहां बड़े स्कूल से संलग्न पाठशाला के लड़कों के लिए फुटबाल खेलने की व्यवस्था है। लड़कों के लिए यह एक बहुत बड़ा आकर्षण है। इसके अलावा उसकी पाठशाला के लड़के मुंह लटकाये उनके फुटबाल ग्राउंड के किनारे जाकर खड़े रहते हैं इससे भी उसका दिल दुखता है। इसलिए अपनी पाठशाला में यह रखना होगा। एक अन्य कारण से भी यह उसे अच्छा लगा। तिपहर का अगर वह लड़कों के खेल के पास जाकर बैठ जाये तो उस महिला के मोह से उसे मुक्ति मिलेगी।

अब बिना दुविधा किये फुटबाल का आर्डर देकर चिट्ठी आकू के हाथ में दी और कहा, डाल आ।

आकू उछलते कूदते चला गया, "सन्दीपन पाठशाला फुटबाल टीम।" चलेंज चलेंज—हाई स्कूल की प्रायमरी फुटबाल टीम के साथ।

लड़के खुशी से चंचल हो उठे।

पढ़ो। पढ़ो। पढ़ो सब देबू साहा, गणित लिखो। एक मन सन्देश (मिठाई) का दाम अगर चालीस रुपया दस आना छह पाई हो तो उस दर पर सन्देश खरीद कर कितना रुपया सेर बेचने पर एक सौ पच्चीस रुपया मुनाफा होगा? गणेश, गोकुल अपना पाठ सुनाओ तुम लोग। किताब बन्द कर महात्मा हाजी मुहम्मद महसीन की कहानी बताओ।

खामोश दोपहर। लड़के धीमी आवाज में पढ़ रहे हैं, मधुचक्र में मधुपानरत मधुमक्खियों की गुंजनध्वनि-जैसी मधुर ध्वनि। पढ़ो, पढ़ो। विद्या ही संसार का श्रेष्ठ मधु है। आकंठ पान करो इसे सब लोग। जीवन को धन्य करो। देबू और साहा के स्लेटों पर पेन्सिल चल रहे हैं—टक टक शब्द हो रहे हैं। गणेश कह रहा है मुसलमानों का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है मक्का। इस मक्का तीर्थ में जो हज करके लौटते हैं उनको हाजी कहा जाता है। मुहम्मद महसीन मक्का की जियारत कर आए थे इसलिए उनको हाजी कहा जाता है।

वाह! वाह! ठीक है बोलते रहो। पढ़ो पढ़ो, तुम लोग पढ़ो। जी लगाकर पढ़ो। ध्यान लगाकर पढ़ो। मेरे पास जितना भर है ले लो उसका सारा तुम लोग ले लो। वसूल कर लो। लेने में कोई दिक्कत हो तो बताओ। फिर जाओ बड़े स्कूल में। वहां से जाओ कालेज, विश्वविद्यालय में। तुम लोगों का कल्याण हो उन्नति हो तुम लोगों की, देश के जाने माने बनो देश का मंगल करो, देश का मुख उज्ज्वल करो। सन्दीपन पाठशाला धन्य होगी। सीताराम पंडित मामूली आदमी है गड़्गोर विमान का बेटा है उसका नाम तुम्हारी कीर्ति में अमर

बना रहेगा, वह स्मरणीय बना रहेगा।

साढे तीन बजे ट्रेन की सीटी बजी।

सर, साढ़े तीन बज गये।

हाँ, पहाडा पढ़ डालो, पढाओ, आज देबू पढाओ।

देबू अकेला खडा हो गया। लडके बस्ता बाँधकर बैठ गये। देबू बोलने लगा, एक से चन्द्र।

समस्वर लडके बोल पडे, एक से चन्द्र।

दो से पक्ष।

दो से पक्ष। क्रमश अरसी नब्बे पारकर नौ दस नब्बे आया फिर दस दस—एक सौ।

अब कौडी-दमडी का हिसाब। एक कौडी—पाव गडा।

स्वर तेज होने लगा। थके शरीर मे सीताराम को यह सुर अच्छा लगता है। ऊर्जा सी आने लगती है।

पहाडा खत्म हुआ। इस इलाके मे कहते हैं पहाडा—घोपा—याने घोषणा करते हुए पढना। अब छुट्टी है।

दो छोटे लडके आकर खडे हो गये, कल षष्ठी है मास्सा। कल छुट्टी।

माँ के छोटे लडके हैं शायद ? खैर, एक जून की छुट्टी। टिफन के बाद आओगे। पाठशाला मे छोटे लडको की छुट्टी की तालिका अधिक है। षष्ठी पूजा मे आधे दिन की। नवान्न मे छुट्टी। लक्ष्मी पूजा मे छुट्टी। अहा, बच्चो की टोली ! उन्ही लोगो के लिए ही तो आनन्द है।

छुट्टी के बाद लडके स्टेशन के किनारे मैदान की ओर दौडे। सीताराम बैठा रहा। वे सभी फावडा लेकर मैदान बनाने लग गये। ओफ ! कितनी उमग है उनमे ! बडा ही अच्छा लगा।

आजकल शाम के बाद श्यामू एक मास्टर के पास अगरेजी पढने जाता है। कन्हाई राय लालटेन लेकर साथ जाता है। देबू अब अकेला पढता है। आज खेलने जाकर देबू के पैर मे मोच आ गयी है, वह पढने नही आया।

सीताराम निकल पडा। जरा मैदान के किनारे जाकर बैठेगा। सुन्दर जुन्हाई छिटकी हुई है। जुन्हाई से धुले मैदान मे बैठे-बैठे सोचेगा अपनी नियति के बारे मे, अपने दु ख के बारे मे। दु ख के बारे मे सोचते हुए उसे भला लगता है। दु ख पाने पर वह मानो जगा रहता है। उसाँस लेकर मानो उसे स तोष होता। वह मणिलाल बाबू के आक्रोश के बारे मे सोचता, शिवकिंकर-द्वारा कटकौशल से उस पर अत्याचार करने के बारे मे सोचता। पाठशाला की खाना-तलाशी के बारे मे सोचता। प्रकाशित परदे पर छाया मे उभर आए एक मुख के बारे में सोचता।

राह चलते चलते वह अचानक चौंक पडा। यह क्या ! मदान के किनारे जाने का सकल्प लेकर वह निकला और कहाँ वह आ पहुचा है। सामने ही

रास्ते के किनारे कमरे की खिड़की में उज्ज्वल परदे पर छाया से अंकित एक मुख उभर आया है। अंधेरे पेड़ के नीचे वह खड़ा रहा। बिल्कुल उसी ढंग से वह बैठी हुई है। गर्दन पर ढीला जूड़ा डोल रहा है। बीच-बीच में आज हाथ आँखों के पास चला आ रहा है। लगता है, कुछ है उस हाथ में। आज शायद सिलाई कर रही हैं। अचानक सिर के ऊपर पेड़ पर उल्लू घुघुआ उठा कर्कश स्वर में। वह चौंक उठा। अगले ही क्षण मानो उसमें चेतना लौट आई। अब तक वह अपने आपे में नहीं था। उसे लगा—यह क्या? छी छी छी! यहाँ क्या आया है वह? अन्यमनस्क हो मैदान न जाकर वह यहाँ आ गया है। दिल की यह छलना भी अद्भुत है।

वह भाग नहीं गया। नहीं, इतना अधिकार तो उसका रहे। पाठशाला का पंडित है वह, पाठशाला के पंडित को क्या कोई सुख भी नहीं सकता? भला लगना क्या अपराध है? अपराध शायद होता हो लेकिन फिर भी भला लगता। पाठशाला का पंडित है तभी भला लगने वाली बात हमेशा के लिए अजानी रह जाती है। शायद दिल ही में वह बात लिखी रहती है। पंडित मरता है, मरने के बाद पंडित की देह के साथ वह बात राख हो जाती है।

उसके साथ भी ऐसा ही होगा। यह गुप्त अधिकार उसका बना रहे, इसको वह छोड़ नहीं सकता। मन ही मन मनोरमा से उसने बार बार क्षमा प्रार्थना की। तुम मुझे क्षमा करना, तुम्हारा असम्मान मैं कभी नहीं करूंगा। तुम लक्ष्मी हो, तुम देवी हो। केवल मेरे इतने से गोपन अपराध को तुम क्षमा कर देना।

रात को लौटकर उसने मनोरमा को बहुत लाड़ प्यार जताया।

उसके लाड़-प्यार से विगलित हो मनोरमा ने हँसकर कहा, तुम पंडित मनहीं हो, इतनी सारी बातें तो मुझे नहीं मालूम।

उत्साहित हो सीताराम ने कहा हमारी मुन्नी को हम लोग पढ़ाएंगे। साथ ले जाया करूंगा। बालिका विद्यालय में देकर पाठशाला चला जाऊंगा। दीदी जी से कहूंगा, जरा देखते रहिएगा। फिर पाठशाला खत्म होने पर साथ लेकर चला आऊंगा।

●●

तेरह

दिन बीतते। महीने बीतते। एक साल बीत गया। पाठशाला चलती रही।

पाठशाला की पढ़ाई खत्म कर लड़कों का एक दल बड़े स्कूल में चला गया। नया एक दल आया हाथ में प्रथम भाग वाली पुस्तक और स्लेट लेकर। नई धोती, नया कुरता पहने, कुछ की आँखों में काजल। वाह! वाह! वाह!

उस दिन मास्टर बैठे रफू कर रहा था।

लड़के बैठे पढ़ रहे हैं। नए लड़कों का जत्था। देबू, ज्योतिष साहा का भतीजा और उसके सहपाठी यहाँ की पढ़ाई खत्म कर चले गये हैं। आकू वाला गिरोह भी बिदा ले चुका है। लेकिन वे कुछ चेले रख गये हैं—बीड़ी पीते हैं एक ही कक्षा मे दो तीन साल रहते हैं, झूठ बोलते हैं। इनको सही तौर पर आकू वाले गिरोह के चेले नहीं कहा जा सकता। सीताराम ने काफी सोच-विचार कर तय किया है, वे हैं प्रथम भाग पुस्तक मे वर्णित राखाल नामक नट खट लड़के के चेले। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी ने सर्वप्रथम उसको पाठशाला मे भरती कर उनका हक उनको दे दिया है। वे रहेंगे ही। आकू ने नाम से ही पाठशाला छोड़ी है। बदमाश छोड़कर भी नहीं छोड़ रहा है। आकू पाठशाला मे पढ़ता नहीं लेकिन एक बार आएगा जरूर। घटे-दो घटे रहकर फिर कहीं चला जाता है। आता और सीताराम को दुनिया भर की खबरें सुना जाता है। कुछ काम-काज भी कर देता है। इसमे मड़ी म काभी करना मुख्य है। और, लड़कों की हाजिरी लेता—नाम पुकारता। गोविन्द से गप्प लड़ाता। नमस्कार लेता। लड़कों को कभी कभी घुड़की भी लगाता। यही उसका काम है। और काम है तिपहर को सन्दीपन पाठशाला फुटबाल टीम मे ह्वीसल् बजाना। सीताराम मना नहीं कर पाता है। आकू चहाल चाहे हो लेकिन सीताराम को उसी म कहीं शिव ढूँढ़े मिल गया है।

नन्हे नन्हे कोमल चेहरे सबके।

सीताराम को सबसे बड़ी खुशी अबकी बार सचमुच उसे एक अच्छा लड़का मिल गया है। बाबुओं की कोठी की नौकरानी का बेटा है वह। सीताराम ने अचानक ही उसका आविष्कार कर डाला। गोरा चिट्टा लड़का, चमकती हुई आँखें, उसके मुख की ओर देखते ही सीताराम की छाती चौड़ी हो जाती है। बाबुओं की कोठी की-नौकरानी का बेटा—नाम जयधर।

गोरा चिट्टा बेटा लेकर उसकी विधवा माँ बाबुओं की कोठी मे नौकरानी का काम लेकर आई। उस दिन शाम के वक्त बाबुओं की कोठी मे सीताराम बगीचे की वेदी पर बैठा था।

वह लड़का रोते रोते बैठक का बरामदा पारकर कोठी की ओर जा रहा था। सीताराम ने उसे पुकारा—कौन हो तुम ? अजी। आ सुना ! सुनो सुनो।

कोई भी लड़का देखते ही सीताराम के मन मे एक पेशेवर शिक्षक जाग उठता है। पाठशाला मे भरती करने पर मासिक आय म चार आने की बढ़ोतरी।

पुकार सुनकर लड़का खड़ा हो गया, रोते रोते ही कहा—क्या ?

—तुम रो क्या रहे हो ? क्या नाम है तुम्हारा ?

उसने जवाब दिया—मैं जयधर हूँ।

—रो क्या रहे हो ?

—मिठाई में गुठली थी, मैंने खा डाली है।

—मिठाई में गुठली थी, खा डाली है ? सीताराम हँस पड़ा। मामला समझने में उसे कोई दिक्कत नहीं हुई। आज तिपहर को उसने भी गुठलीवाली मिठाई खाई है। यानी हड़ का मुरब्बा। हड़ की गुठली उसी में रह जाती है। बेचारा देहाती लड़का ! शायद बाबुओं की कोठी में किसी नए देहात से कोई आया होगा ! हड़ की गुठली निगल गया है। हँसकर उसने कहा, उसमें डर क्या है ? तुम्हारे पेट में कोई पेड़ नहीं उगेगा।

लड़का ठिठक गया, उसका रोना भी रुक गया।

सीताराम ने पूछा, तुम्हारा नाम जयधर है, जयधर क्या ?

—जयधर घोष।

—यहाँ कहाँ आए हो ?

—माँ यहाँ काम पर करने आई है।

सीताराम समझ गया, कौन सा काम है। ब्राह्मण के घर में घोष घराने की औरत नौकरानी के काम के अलावा भला कौन सा काम करेगी ? नौकरानी का बेटा। उसने फिर सवाल किया, तुम ? तुम क्या करोगे ?

—मैं ? माँ ने कहा है, बड़ाबाबू के आने पर उसका नौकर हो जाऊंगा।

—पढ़ना जानते हो ?

—हूँ ऽ। कहकर ही उसने शुरू कर दिया—'क'—गाय चराने चल। गाय ने मुह मारा घास में

अब सीताराम ने उठकर उसे दौड़ा दिया। अब की बार वह बोलेगा—'फूँक जरा पण्डित के कान में।' निहायत चालू लड़का है। सीताराम ने दौड़कर कहा—'पकड़ तो लड़के का कान जरा।'

वह लड़का उस दिन दौड़कर भाग गया। इसके बाद लगभग दो महीने उसने उस लड़के की ओर कोई ध्यान न दिया। उस लड़के पर ध्यान देकर वह करेगा भी क्या ? हालाँकि वह लड़का आता था, फतिंगे पकड़ता फिरता था, यही उसका नशा था। बाबुओं की गायों के चरवाहे के पास बैठा रहता था। कन्हाई राय को वह लड़का फूटी आँखों न सुहाता था, वह कहता—वाहियात लड़का। जानते हो सीताराम—यह विधवा के बेटे और राजा के बेटे में कोई फर्क नहीं। इस छोकरे का दिमाग चढ़ा रखा है—इसकी माँ ने। मैंने एक दिन उससे पैर दबाने के लिए कहा तो हरामजादे ने, पैर चाँपना तो दरकिनार, अपनी माँ से जाकर शिकायत कर दी। उसकी माँ रोते रोते रानी माँ के पास जा पहुँची। बड़ा ही बदजात है।

सीताराम भी ऐसा ही सोचता था। अचानक एकदिन उसका भ्रम दूर हो गया। वह चौंक पड़ा। उसने आविष्कार कर डाला—दरिद्र कुश्रिता, मलिनता के बीच उसकी बुद्धि की हीरक दीप्ति था।

जाडे के दिन। वह लडका देबू श्यामू के पढने के कमरे के बाहर दरवाजे के पास बैठा दोहर ओढ़े लइया खा रहा था। श्यामू-देबू गणित लगा रहे थे—वह खुद किताब पढ रहा था। गणित खत्म कर श्यामू ने कहा—सर, अब प्राइज वाली कविता कण्ठस्थ करूँ।

बडे स्कूल मे प्राइज दिया जाएगा, श्यामू रवीन्द्रनाथ की 'भारततीर्थ' नामक कविता कठस्थ सुनाएगा। उसी को लेकर वह जुटा हुआ है। सीताराम ने एक लम्बी साँस लेकर कहा—पढ़ो। वही पढो। उसके स्कूल म प्राइज नही दिया जाता। न दिया जाएगा।

श्यामू पढने लगा। पढना खत्म कर वे घर के अन्दर चले गए। सीताराम तेल मालिश करने बैठा। अचानक उसके कान मे आया, बाहर दरवाजे के पास बैठा वह लडका अपने ही मन पाठ याद कर रहा है—

ध्यान गम्भीर एइ जे भूधर नदी जपमाला धृत प्रान्तर
हेथाय नित्य हेरो पवित्र धरित्रीरे
एइ भारतेर महामानवेर सागर तीरे।

विस्मय से वह वाकशून्य रह गया। जयधर रवीन्द्रनाथ की कविता कठस्थ कर पाठ करता जा रहा है। वह बाहर निकलकर खडा हो गया। बोला—यह तूने किस तरह सीख लिया ?

वह लडका अपने चमकते चेहरे को उठाकर बोला—सुनकर सीख गया। मझले बाबू पढ़ जो रहे थे। कमरे मे भाषण करता जो पढ़ता है।

—सुन-सुनकर सीखा ?

—जी।

—कहाँ, बोल, बोल तो जरा। कितना सीख डाला।

जयधर बहुत सारा पाठ कर गया। अन्त म—

पश्चिमे आजिखुलियाछे द्वार
सेथा हते सबे आने उपहार

यहाँ तक पढ़ने के बाद वह हँसकर बोला—

—इसके बाद सीख नहीं सका।

सीताराम उत्साहित हो बोलने लगा—

'दिबे आर निबे मिलाबे मिलिबे जाबे ना फिरे।
एइ भारतेर महामानवेर सागर तीरे।'

जयधर भी साथ-साथ दोहराता रहा। सीताराम ने उससे पूछा, और भी कुछ सीखा है ?

कई कठस्थ कविताएँ उसने सुना दी। ये देबू की पाठ्य पुस्तक की कविताएँ थी।

सीताराम ने जयधर का हाथ पकडकर कहा, तू तो सोना है सोना, तू तो गुदडी का लाल है रे। उसने तेल लगे बदन मे उसे गोद मे उठा लिया। अद्भुत

लडका है ! श्रुतिधर है। वह बोला—मेरे साथ पाठशाला जायगा, चल। मैं तुझे पढ़ाऊगा। किताब स्लेट सब खरीद दूगा। कपडे-लत्ते भी दूगा। तू तो जज मजिस्ट्रेट बनेगा।

उसी दिन से उसे लाकर उसने पाठशाला म भरती कर दिया है। किताब दी। स्लेट दिया। कपडे दिए। इसके अलावा रोज सबेरे घर से आते वक्त आधा सेर दूध लाकर जयधर की माँ के हाथ मे दे देता है।—जयधर को पिलाना।

छोटा लडका—वह शरीर से बढेगा—मन से बढेगा—यह उसके बढने का समय है, लेकिन पुष्टि न मिलने पर बढेगा कैसे ? दूध है अमृत। वह देह पुष्ट करेगा, लुनाई देगा, मेधा बढाएगा। सिर्फ भात और लइया खाकर—बडे लोगो के बेटो से कैसे मुकाबला कर सकेगा ?

आश्चय की बात है, बदमाश जयधर—उस पहले रोज गोद मे लेकर दुलारने के बाद से ही मानो बदल गया। उसने नही कहा—नही पढूगा ! ही ही करके हँसा भी नही। पहले ही दिन सीताराम ने देखा—वह अ आ क ख भी जानता है। पहचानता भी है। चन्द महीनो म ही वह लडका द्रुत गति से आगे बढने लगा। अब जयधर सरपट दौड रहा है। दौड रहा है। अद्भुत लडका ! सीताराम बीच-बीच में कहता—जयधर मेरी सन्दीपन पाठशाला की जय ध्वजा है।

कभी कभी उसे लगने लगता, उसका भाग्य अब अच्छा चल रहा है। लम्बे अरसे के बाद उसने एक छप्पर बनवा डाला है। अठपहला एक छावन मात्र। अनेक बाड लाकर लगा दिया गया है। घडी मैप, यह सब अभी टागने का साहस नही होता। चारों तरफ से खुला छप्पर, अगर कोई ले जाये या तोड जाये। शिवकिंकर का दल अब भी है। हालाँकि अब उनका आक्रोश पहले जैसा नही रहा, लम्बे अरसे मे हीनबल न होने पर भी मानो उनका उत्साह शिथिल पडता जा रहा है। दूसरी ओर समार की गति म मणिबाबू की भी दीप्ति मानो मलिन पडती जा रही है।

सीताराम स्पष्ट देख पाता है, केवल मणि बाबू ही नहीं, इस रत्नहाटा के बाबुओं का बाहरी चेहरा क्रमश मैले पडते हुए कपडे-लत्ते की तरह होता जा रहा है। प्रणाम है गान्धी महाराज को, प्रणाम देशबन्धु को, प्रणाम यतीन्द्रमोहन को प्रणाम सुभाषचन्द्र को। साथ ही साथ धीरानन्द को भी वह प्रणाम करता। तुमको भी प्रणाम ! तुम्ही ने तो यहाँ का मान रखा है। इस स्वदेशी आन्दोलन के बाद से बाबुओ के चेहरो पर मानो काल की छाप पडी है। जमींदारो में, महाजनों म जो लोग साहब लोगो के पीछे थे वे मानो पुराने गणित की प्रक्रीति की पाठय पुस्तक से निकाल दिये जा रहे हैं। तीन पाई से एक पैसे की, चलन के बाद कौडी-दमडी के हिसाब जैसा ही मान्यता खो चुके हैं। हाल म चारू वाक्य पद्धति से लिखी किताबें चलने के बाद उस जमाने के विद्यासागरी बडे बडे कठिन शब्दों स भरी किताबों की तरह ये बाबू अप्रचलित होने जा रहे

हैं। सीताराम भलीभाँति जानता है, इस गाँव का प्रभावशाली व्यक्ति इसके बाद बनेगा धीरानन्द। इस बारे मे उसे कोई सन्देह नही। धीराबाबू दीर्घजीवी बनें। उसमे उसे परम आनन्द मिलेगा। धीरा बाबू उनके जमीदार हैं इसलिए यह आनन्द नही, धीराबाबू ने उसे प्रेमभरे नयनो से देखा है, वह उससे प्यार करता है, यही उसका आनन्द है। आह, धीराबाबू अगर उसका मित्र न होकर छात्र होता तो उसका आनन्द सर्वाधिक होता!

धीराबाबू आएगा—वही बाट जोह रहा है वह। उसकी उन्नति हो रही है, किन्तु उसमे भी एड न मिलने का दुःख उसे रातोदिन सालता है। रजनीबाबू ने कहा था, वोट से रायबहादुर की सहायता करने को, उसने वैसा किया था। फिर भी उसे एड नही मिली। हजार हो, हैं तो रायबहादुर ही। मजिस्ट्रेट साहब, पुलिस साहब, इन लोगो से बिगाड करके वह कुछ भी करने की हिम्मत नही करते। धीराबाबू के आने पर, उनको लेकर वह एक बार इसके लिए लडेगा। धीराबाबू रिहा कर दिए गए हैं। लेकिन—। उसने एक ठंडी साँस ली।

जेल से मुक्ति पा जाने के बाद भी कुछ दिनो तक पुलिस ने उसको नजरबन्द कर रखा था। उससे भी धीराबाबू को रिहाई मिली है। लेकिन यहाँ नही आया। माँ गई थी बेटे से मिलने के लिए। देबू श्यामू को साथ ले गई थी। गम्भीर-सा चेहरा लिए माँ लौट आई हैं। देबू और श्यामू रोए थे, अब भी कभी कभी रोते हैं। दादा घर नही लौटेगा।

धीराबाबू ने यहाँ की जायदाद से भी अपना रिश्ता छुडा लिया है। अपने हिस्से की जायदाद भाइयो को दे दी है।

देबू ही अचानक एक दिन बोल पडा, दादा ने वहाँ एक कायस्थ की लडकी से शादी कर ली है। भाभी बी ए पास है। इसीलिए मा के साथ झगडा हुआ।

सीताराम चौंक पडा था।

देबू ने कहा था, बताइएगा नही वर्ना माँ मुझे डाँटेगी।

अनोखी शिक्षा है! अद्भुत धैर्य है माँ का! किसी दिन भी इस बारे में एक शब्द भी नही कहा उन्होने। ये छोटे से लडके! इन लोगो ने भी नही।

एक-एक बार सीताराम के जी मे आता, माँ से कहे हाथ जोडकर अनुरोध करे, धीराबाबू को, उसकी दुल्हन को ले आइए। वह दुल्हन चाहे आपकी स्वजाति की न भी हो, वह पढी-लिखी लडकी है, उसे ले आइए आपका घर उज्ज्वल हो उठेगा, हँसने लगेगा, पवित्र होगा। सारी जातियो के अतिरिक्त और भी दो जातियाँ ससार में हैं—शिक्षित और अशिक्षित। आपके बेटे की जाति और आपके बेटे की दुल्हन की जाति में कोई फर्क नहीं। वे सचमुच एक ही जाति के हैं। यह मैं अपने प्राणो से जान सका हूँ।

लेकिन ये बातें करने की उसे हिम्मत नही पडी। बीच-बीच मे अब भी जो करने लगता है। वह केवल दीर्घनिश्वास छोडकर चुप बना रहता। वह जानता है कि कितना भी स्नेह वे करें, फिर भी इन लोगो से उसका बडा फासला है।

सोचते सोचते उदास हो वह स्तब्ध बैठा रहता। यकायक किसी समय उसके कानों से आ टकराता, लड़के शोर मचा रहे हैं। उसकी अन्यमनस्कता का सुयोग पाकर वे चंचल हो उठे हैं। वह अपने को संयत कर सजग हो बैठता, ऐ ! ऐ ! चुप ! पढ़ो, पढ़ो सब लोग !

साधारण लड़के पढ़ने में मन लगाते। दो बाबू घराने के लड़के अपनी-अपनी शिकायत लाकर पेश करते।

उसने सर, मुझे मारा। मुक्का मारा है।

उसने मुझे उल्लू कहा है सर। दोनों ही बाबुओं के बेटे हैं।

सीताराम का जी करता, इनको बेधड़क पीट दे। उसका दुर्भाग्य है कि बाबुओं के जितने पाजी लड़के हैं वे हाई स्कूल की पाठशाला के जूठन की तरह उसी की पाठशाला में आकर इकट्ठा हो जाते हैं। उसका जी करता, चिल्ला कर कहे अरे तुम सब बाबुओं के बेटे हो, तुम्हारे घर में अन्न है सन्दूक में रुपये हैं। दलान कोठे के ईंटे और चूने में दबकर तुम लोगों की इज्जत बरकरार है तुम लोगों को इसका क्या दरकार है ? क्यों गरीब के लड़कों की पढ़ाई में अड़चन डाल रहा है ? आकू ने आकर उसका परित्राण किया। उसने उन दोनों को छुड़ा दिया। उसके पीछे लगड़ा गोविन्द चिल्लाता—यह चिल्लाना उसका अभिनय है। सीताराम का गुस्सा ठंडा कर उसको हँसाने के लिए ही वह यह अभिनय करता। एकदम प्रह्लाद के गुरु षंडामार्क जैसा—मार ही डालूँगा। खा ही डालूँगा। मुर्ता बनाकर खा जाऊँगा। बेंत पिटाई करूँगा। उल्लू पिटाई करूँगा। सीताराम को अन्त तक हँसना ही पड़ता।

●●

इस वक्त पाठशाला में बाईस लड़के हो गए हैं। वह जानता है कि संख्या और भी बढ़ेगी। क्रमशः साहा-सुनारों में पढ़ाई के प्रति रुझान बढ़ा है।

कभी-कभी उसकी इस उदासीनता को तोड़ देता है जयधर।

मास्टर जी !

ऊँ ?

यहाँ जरा देखिए।

उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेर सीताराम हँसकर कहता, कौन-सी जगह बबुवा ?

यह, यहाँ।

सीताराम उसे कहता, बैठो। यहाँ बैठो। इसके बाद वह उसको समझाने लगता है।

कोई दिन वह आता, मास्टर जी यह सवाल गणित की किताब में दिए उत्तर से मिल नहीं रहा है।

सीताराम जयधर का निकाला हुआ सवाल अच्छी तरह से देखता है। कहीं पर कोई गलती नहीं। खुद भी एक बार निकालकर देख लेता है। जयधर ने

हेल के साथ उसका हल मिल जाता। वह कहता, उत्तर गलत लिखा है। काट कर अपना उत्तर लिख दो। फिर वह अदभुत भाषा मे जयधर को प्यार करने लगता।—अरे कुरकुरी की माँ! भुरभुरी का छौना! इसका मतलब क्या है, उसे भी नही मालूम। यह उसने हुगली मे अपने पंडित से सीखा है। वे भी खुश होने पर यही कहकर प्यार करते थे। वह ो करता है। जी खोलकर अकारण ही हसता। उसकी सबसे बडी खुशी है, जयधर बिल्कुल गरीब लडका है, बाबुओ की कोठी की नौकरानी का बेटा।

जयधर छोटे से बडा होगा! सामान्य जयधर असामान्य असाधारण बन जायगा—यही उसका सबसे बडा आनन्द है। वह अगर इन बाबुओ का बेटा होता तो इतना आनन्द न हुआ होता। कभी कभी उसके जी मे आता कि चिल्लाकर कहे, अरे, अरे, ओ बाबुओ के लडके, तू सब देख ले! देख ले इसे।

जयधर को वृत्ति मिलेगी—इसमे कोई सन्देह नही। जयधर पढता है—निर्भ्रांत जवाब देता है। उसकी पढाई मे एक असामान्य तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय मिल जाता। बीच मे देवू की पढाई मे अमनोयोग देखकर दुःख के बदले उसे खुशी हुई। कभी इस कोठी की नौकरानी का बेटा जयधर, इस घर के अन्यतम उत्तराधिकारी को मलिन कर खिल उठेगा। अगले ही क्षण वह अपने आपसे लज्जित हो जाता। नही ऐसी कामना करना उसके लिए उचित नही। कामना न करने पर भी अवश्य ही ऐसा ही होकर रहेगा, यह वह जानता है, फिर भी कल्पना में आनन्द अनुभव करना उसके लिए अनुचित होगा। इस घर का उस पर बहुत ऋण है। अचानक एक लडके के रोदन से उसके चिन्तन का आनन्द स्वप्न टूट गया।

मारा है रे मारा! एक लडके की नाक से खून टपक रहा है। क्या हुआ? अरे, ऐं राधेश्याम, क्या हुआ? किसने मारा?

राधेश्याम घोनरो का लडका है! नाक से टप टप खून टपक रहा है। क्षण भर के लिए भी अगर शांति मिल जाय! किसने मारा? गोबरा ने?

नही सर।—आकू ने झट जवाब दिया। वह राधेश्याम की शुश्रूषा कर रहा था, बोला, नाक मे पेन्सिल घुसेड दी है।

पेन्सिल?

जी। इतनी बडी एक स्लेट-पेन्सिल नाक मे घुसेड दी है।

क्या मुसीबत! सीताराम घबडाकर उस लडके को ले बैठा। लगता है, आखिरकार डाक्टर के पास ले जाना पडेगा। लेकिन आकू ने उपाय बता दिया। बोला, नसवार दीजिए सर, छीकते ही निकल आयगी। सीताराम को यह बात तक सगत लगी। आकू ने अपनी नसवार की डिबिया सीताराम के हाथ म दी।

ऐन उसी वक्त गोविन्द आ धमका, लगडे पैरो से फुदकते हुए आकर बोला सबइसपेक्टर आ रहा है पण्डित!

सर!

सब इ्सपेक्टर ! उसके लिए सीताराम परेशान नहीं हुआ। एड ही नहीं मिलती है। उसकी पाठशाला को अभी तक मजूरी ही नहीं मिली, सब इ्सपेक्टर के आने पर परेशान होने की क्या जरूरत है उसे ? उससे भी ज्यादा तकाजा है, राधेश्याम की नाक से खून गिर रहा है। सीताराम ने नाक में नसवार दिया।

बाहर सायकिल की घंटी बजी। उस लड़के ने फन्द् मे छींक मारी, साथ ही साथ पेंसिल बाहर निकल आई। बाइसिकिल की घंटी फिर बजी। सब इ्सपेक्टर बाहर से ही बुला रहे हैं, पंडित ! सीताराम ! नया सब इ्सपेक्टर अजीर्ण का रोगी है, जमीकन्द पसन्द करने वाला, आधुनिक लेखक से उन्मीत सब इ्सपेक्टर !

●●

हालांकि सब इ्सपेक्टर अच्छा समाचार लेकर आए हैं। नये डिस्ट्रिक्टबोर्ड का इलेक्शन फिर कुछ दिन पहले हो चुका है। इलेक्शन का नतीजा निकला है। रायबहादुर का गुट हार गया है। कांग्रेस लगभग सभी थानों मे जीत गई है। सब इन्सपेक्टर ने हँसकर कहा, अब तुम्हारा काम होगा सीताराम।

काम होगा ? सीताराम मानो विश्वास नही कर पा रहा है।

होगा जी होगा ! बस नए बोर्ड के बनने की अपेक्षा है।

सीताराम ने सब इ्सपेक्टर को प्रणाम किया।

सब इ्सपेक्टर बोले पंडित, हम लोग सरकारी नौकरी करते हैं। नौकरी के लिए अपने को बेच चुके हैं। देश का पक्ष लेकर बात करने का कोई उपाय नहीं। मामली अपराध के लिए तुम्हारे ऊपर जो कुछ गुजरा है उससे मन ही मन दुखी हुए है लेकिन कर कुछ भी नही सके। रजनीबाबू बार-बार तुम्हारे बारे म बता गय थे—सो इस बार होगा। बोर्ड फॉर्म हो जाने के बाद एकबार चेयरमैन के कानो तक पहुँचाने की बात है। बस ! तुम्हारे स्कूल के छात्रों ने कहा है, महात्मा गाधी देश के श्रेष्ठ व्यक्ति हैं। चेयरमन तुम्हारी पाठशाला को डबल ग्रांट देंगे। मैं कोशिश कर रहा हूँ इस मामले को उनके कानो तक पहुँचाने की।

●●

प्रवीण सब इ्सपेक्टर साहब भले आदमी हैं। रजनीबाबू जैसे ही नेक आदमी। सज्जन जरा बीमार रहा करते हैं इसलिए बीच बीच में अकारण ही गुस्सा हो उठते हैं। फिर फौरन ही ठंडे पड़ जाते हैं। एक तरह से देखा जाय तो रजनीबाबू से भी अच्छे हैं कम-से-कम पंडितों के लिए। पंडितों का पक्ष लेकर वे ऊपरवालों से वादानुवाद करते रहते हैं।

●●

सीताराम आज न केवल खुश ही हुआ बल्कि उसने सब इ्सपेक्टर के प्रति कृतज्ञताबोध किया। अगले दिन ही सवेरे वह एक बड़ा सा जमींकन्द हाथ म

लेकर सब इंसपेक्टर साहब के मकान पर जा पहुँचा। सकृतज्ञभाव उसको रखने के बाद उसने कहा, यह सर, हमारे घर का पैदा हुआ है।

सब इंसपेक्टर साहब अभिभूत हो गये, बेहतरीन, बेहतरीन सूरन है। बहुत खूब! वह रोजाना सूरन का चोखा खाते हैं। जहाँ भी जाते हैं वहीं पता लगाते हैं, पंडित, तुम्हारे यहाँ अच्छा सूरन मिलता है न? आज सीताराम के हाथ मे जमीकन्द देखकर वे खुद ही गल गये। वाह, वाह वाह!

जमींकन्द रख आने के बाद बोले, कहो सीताराम, तुमको फाइल ही दिखा दूँ। देखना, मैंने तुम्हारे लिए कितना-कुछ लिखा है। हो जायगा, मैं बता रहा हूँ, तुम्हारा हो जायगा। और चुपके-चुपके तुमको एक खबर बताये दे रहा हूँ। कांग्रेसी बोर्ड के जो चेयरमैन होंगे—वे तुम्हारे धीरानन्द को बहुत चाहते हैं जी। उनका अभिमत है कि धीरानन्द एक दिग्गज लेखक है। सुना, कभी रवि ठाकुर के पास गये थे, ठाकुर ने उनसे कहा है—उनमे तत्त्व है। समझे? धीराबाबू के कारण तुम्हारा ग्राट जाता रहा, वही ग्राट अब डबल होकर लौटेगा। हँसने लगे वे।

सीताराम उसी दिन के लिए आशा लिए प्रतीक्षा कर रहा है। वही उसके जीवन का सवश्रेष्ठ दिन होगा। आशाभरी दृष्टि से वह भविष्य की ओर देखता।

नन्हे-नन्हे कोमल चेहरे वहा पढ़ेंगे। आने दो वह दिन, पाठशाला के लिए वह भवन बनाएगा। पक्का फर्श। उनके लिए बेंच का इन्तजाम करना पड़ेगा। कुर्सी, मेज, ब्लैकबोर्ड, क्लाक घड़ी, मैप, ग्लोब, चाक, पेंसिल डस्टर जाने कितने सामान-असबाब मगवाने हैं! उसने कहा—तो आज मुझे इजाजत दें।

—ठहरो! एक दुअन्नी देकर सब इंसपेक्टर साहब बोले—यह लेकर जाओ। सूरन का दाम। अँऽ हैऽ। लेना ही पड़ेगा। वर्ना यह तो मेरे लिए घूस लेने में शामिल हो जायगा। विचित्र व्यक्ति!

●●

तिपहर के बाद वह अपनी आदत के मुताबिक झरने के किनारे जाकर बैठ गया। आज उसने अपनी कल्पना को पिंजरे का दरवाजा खोल पंछी की तरह उड़ा दिया। इस बार उसको एड मिलेगी। उसकी साध पूरी होगी। वह मानो इतने दिन पंडितो के सम्मुख हुक्का पानी बन्द बिरादरी बाहर बना हुआ था। अब वह बिरादरी मे शामिल कर लिया जायगा। माफी मागकर, कसूर कबूल कर बिरादरी में लिए जाने का मामला नहीं। अपनी जिद्द को बरकरार रखकर वह बिरादरी मे दाखिल होगा। भविष्य की पाठशाला का शानदार रूप फौरन उसकी आँखो के सामने तिर जाता।

"सन्दीपन पाठशाला, रत्नहाटा। शिक्षक—श्री सीताराम पाल।' धूप-बारिश से लिखावट अस्पष्ट हो जायगी। हर बार उसके ऊपर वह स्याही से नये तौर पर लिखेगा। उसके बाल सफेद हो जाएंगे, आँखों की रोशनी कम हो

जाएगी, ऐनक लगाकर वह पढ़ाएगा। लड़के बैठे पढ़ेंगे। नन्हे नाजुक चेहरे। एक दल जाएगा, एक दल आएगा। उनकी पढ़ाई खत्म कर वह आशीर्वाद देगा, मेरा जीवन तो दुख से ही भरा है, दुख कष्ट का भाग्य लेकर ही ससार म आया हू। लेकिन तुम लोग तरक्की करो, सुखी होओ। वही देखकर मुझे सबसे बड़ा सुख मिलेगा।

घर-गृहस्थी का कष्ट उसका कुछ बढ़ा है। कुछ बढ़ कर ही छुटकारा नही, दिन-ब दिन बढ़ता ही जा रहा है। बाप के श्राद्ध के समय उसने कुछ ऋण लिया था, सोचा था, पाठशाला की आय से ही वह हर माह चुकाता जायगा। लेकिन सो भी नही हुआ। इतने दिनो तक पाठशाला की आय भी क्या कुछ थी। दूसरी ओर धान की कीमत भी दिन ब दिन घटती जा रही है। थोड़ी सी जमीन खेत की आय! वह और भी घट गई है। एड मिल जाय इसबार तो कुछ सुविधा हो। महीने म पाँच रुपए की आयवृद्धि उसके जैसे आदमी के लिए कोई कम नही।

अगले ही क्षण उसे हँसी आई। पाँच रुपए! हाय रे! दुनिया दिन ब दिन बदलती जा रही है। बाजार के रास्ते चलो तो नित नयी चीजें दिखाई पड़ती हैं। दिल कगलापन करने लगता है। पाँच रुपए की आय बढ़ने पर, उसका एक कणभर भी क्या वह पा सकेगा? कभी कभी कितनी ही चीजें खरीदने की ख्वाहिश होती। लेकिन लम्बी साँस लेकर वह अपने मन को धमकाता, तुम पाठशाला के पडित हो उस ओर मत देखो तुम। "छोटे से घर मे बड़ा-सा मन लेकर तुमको रहना है। कभी कभी उसकी यह चिन्ता सुदूरप्रसारी बन जाती है। वह भविष्य के बारे म सोचने लगता है। कन्या का विवाह है। उसके और मनोरमा के जीवन म हारी-बीमारी है। अगर वह ही बीमार हो, कई महीने बिस्तर पकड़ ले, तो?

उसे रजनीबाबू के दफ्तर मे कन्यादायग्रस्त वृद्ध पंडित की बातें याद आ जाती है। वृद्ध पडित ने रुपए के अभाव मे अपने ही समवयस्क किसी वृद्ध क साथ बेटी की शादी की थी। कन्या विधवा हो गयी है। उसके सौतेले बेटो ने उसे खदेड़ दिया है। वह लड़की किसी बाबू के घर अब खाना बनाती है। वृद्ध पडित की हालत भी इस वक्त शोचनीय है। पडिताई करने की अब उसम सामर्थ्य नही, वह अब भीख माँगता है। गाँव गाँव घूमता, सम्पन्न लोगो के घर म दो एक दिन रह जाता है स्तव-स्तुति कर दो आना चार आना लेकर पन्द्रह बीस दिन के बाद घर आता है।

वह सिहर उठता। क्या उसकी भी दशा आखिर तक ऐसी ही हो जाएगी? उसकी एकमात्र तसल्ली यही है कि उसके पास कुछ जमीन है। दूसरी तसल्ली सन्तान! बस उस कन्या के अतिरिक्त नही हुई। बड़ी साध थी उसकी एक पुत्र-सन्तान के लिए। उसको वह अपने मन के मुताबिक गढ़ता। लेकिन खैर! भगवान अब उसके घर कोई सन्तान न भेजें। दरिद्र शिक्षक है वह किस सम्बल

स वह उसे इन्सान-सा इन्सान बना सकेगा ?

कल्पना चिन्ता के बीच ही उसका मन सचेतन हो उठता। किसी दिन सिर के ऊपर से उल्लू घुघुआ कर चला जाता है, किसी दिन सिर के ऊपर चमगादड के डनो की आवाज होने लगती है तो कभी नजदीक ही सियार फेकरने लगते हैं। वह सचेतन हो आकाश की ओर देखने लगता। अधकार-भरा आकाश कसौटी-से काले आकाश मे तारे खिल गए ह। चाँदनी रात चारो ओर जुन्हाई से झलमलाने लगती है, जमीन पर उसकी छाया पडती दिखाई देती। उसके मन मे तिर जाती, प्रकाश प्रतिबिम्बित परदा लटकाती एक खिडकी, परदे पर काली छाया मे जाग उठा है—एक मुखडा, नुकीली नाक, पीछे की ओर ढीला जूडा। वह चलने लग पडता। आकर बालिका विद्यालय के सामने खडा हो जाता। कुछ देर खडे खडे देखने के बाद लौट आता।

आजकल शाम को उसे अवकाश भी मिला हुआ है। श्यामू बहुत दिन पहले ही से रात को दूसरे मास्टर के पास अगरेजी पढने लगा है। कुछ दिन हुए देबू भी वही पढने जा रहा है। आजकल वह काफी समय लेकर यह चित्र देख पाता है।

मनोरमा शिकायत करती, रात को जब पढाना नही पडता तो छुट्टी के बाद घर भी तो चले आ सकते हो।

सीताराम कहता, दिन को पाठशाला की नौकरी, तिस पर घर की नौकरी। थोडी सी भी छुट्टी नही दोगी मुझे ?

किसान बहू अपने पैरो पर हाथ फेरते हुए कहती, सुनो पडित मालिक !

क्या ?

मैं कहू तो मान सुन लिया न तुमने ?

क्या मान लिया ? सीताराम हँसता।

यही, हमारी मालकिन की मिल्कियत हकूमत ? मालकिन जो कहा करेगी वही मानोगे ? तो अब तुमने परिवार को हुजूर कहा !

मनोरमा हँसती कहती धत मरी !

सीताराम बोला, तुझसे जो कहा कि तर बेट मे बडी बुद्धि है, उसे पाठशाला मे दे। तो क्या हुआ उसका ?

लो देखो। बावडी का बेटा पढ-लिखकर कोई हाकिम हुक्काम तो बनगा नही। नाहक बखत क्यो अरबाद बरबाद करे ?

सीताराम ने अब दिल्लगी करत हुए उनसे कहा, तो तू ही मेरी पाठशाला मे भरती हो जा। तेरी जैसी अक्ल शक्ल है तुझे वत्ति इत्ति मिल इल ही जायगी। आज तूने मुझे ऐसी पकड-धकड मे बाँध डाला है कि क्या बताऊँ ! वह हसन लगा।

चौदह

और भी दो साल के बाद।

सीताराम को लगा कि दुनिया में उससे बढ़कर सुखी शायद दूसरा कोई नहीं है। लगा, इसी दिन के लिए वह आजन्म तपस्या कर रहा था।

मणिलालबाबू उसकी पाठशाला में आए। उससे पूर्व विचित्र घटना घटित हो चुकी थी। पहले जयधर को वृत्ति मिली। जिले भर में वह अव्वल आया। उसको रिकार्ड मार्क्स मिले। उसके बाद ही पाठशाला की जय-जयकार हुई। मणिबाबू आए उस जय जयकार के बाद।

इस समय पाठशाला को मंजूरी मिल चुकी है, ग्रांट मिल गयी है। पाठशाला का मकान भी बन गया है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन स्वयं उसकी पाठशाला में आए। धीराबाबू दीर्घजीवी हों। धीराबाबू ही लेकर आए।

इस सबसे पूर्व अचानक एक दिन धीराबाबू आए थे। अकेले ही आये थे। माँ ने चिट्ठी लिखी थी, तुझे एक बार देखने की इच्छा हो रही है लेकिन अकेले ही आना।

धीराबाबू, वही धीराबाबू!

सीताराम को बाहों में बाँधकर बोले थे, पंडित, तुम्हें मैं सचमुच प्यार करता हूं।

धीराबाबू को उससे प्यार है, यह सुन वह कृतार्थ हो गया था। कितनी ही सारी बातें की थीं, अपने दुख दर्द की बातें। फिर धीराबाबू से उसकी बीवी के बारे में पूछा था।—भाभी? उनको क्या नहीं ले आए?

वे तो नौकरी करती हैं। वे ढाका में गर्ल्स स्कूल में शिक्षिका हैं। मैं कलकत्ते में रहता हूं। इन दिनों एक छोटे से मेस में रहता हूं। पहले एक टिन के मकान में रहता था, पाइस-होटल में खाता था।

टिन के मकान में रहते थे? पाइस होटल में खाते थे?

हाँ। उस समय जैसी कमाई थी उसी तरह रहता था पंडित! जानते ही हो, लिख कर कमाना हमारे देश में कितना मुश्किल काम है। वे हँसे।

धीराबाबू लेखक हैं। किताब लिखकर वे अपनी आजीविका कमाना चाहते हैं। आश्चर्यजनक व्यक्ति हैं। धीराबाबू अपनी किताबें उसे दे गये हैं। उसने पढ़ी हैं। अच्छा लिखा है, बेहतरीन लिखा है धीराबाबू ने। शादी की है—बीवी नौकरी करती हैं। हालाँकि उनके घर में अन्न की कोई कमी नहीं! विचित्र!

वे किताबें पाकर उसदिन उसकी लज्जा की कोई सीमा न थी। साथ ही साथ उसे याद पड़ गया था कि धीराबाबू की वे चन्द किताबें आज भी उसी के घर में हैं। एकबार मन में आया, धीराबाबू के दोनों हाथ थाम कर वह बात प्रगट कर दे। लेकिन सो भी उससे नहीं बन सका। उन सारी पुस्तकों में एक

की तलाश भी की थी धीराबाबू ने याद है वह किताब तो मैंने खरीदी थी।

सीताराम फक पड़े चेहरे से खड़ा था, बड़ी कोशिश कर उसने कहना चाहा था, मैं एकबार अपने घर मे खोज कर देखूगा। लेकिन उसके मुंह से दो बार सिर्फ निकला था, मैं, मैं—।

धीराबाबू साथ ही साथ बोल पड़े थे, देखा होगा या श्यामा, किसी को दे आए होग।

धीराबाबू ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन को लेकर आए। बीस पच्चीस रुपये खर्च कर सन्दीपन पाठशाला के प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन के लिए किताबें ले आए।

सीताराम ने पाठशाला की रिपोर्ट लिखी थी। धीराबाबू ने देख ली। कांपते स्वर म उसने रिपोर्ट पढी। सन्दीपन नाम का इतिहास पौराणिक है। सीताराम ने लिखा था, भगवान् श्रीकृष्ण का गुरु। धीराबाबू ने काटकर लिखा था, "महामानव श्रीकृष्ण के शिक्षागुरु सान्दीपन मुनि की पाठशाला के नाम पर इस पाठशाला का नामकरण हुआ है।"

उस दिन गाँव क बहुत सारे भद्रलोग आए थे। बड़े स्कूल के मास्टर भी मौजूद थे। बालिका विद्यालय की शिक्षिका भी आई थी। काली लम्बी महिला कुछ ज्यादा ही काली लग रही थी। इस महिला के जीवन मे भी मानो कहीं दुख है। शायद वह काली है इसलिए उसे कुछ लज्जा भी हो। बड़े ही सम्भ्रम के साथ सारा समय बैठी रही।

चेयरमैन ने कहा था, जिस पाठशाला का छात्र भारत के श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप म अहिंसा और सत्य की प्रतिमूर्ति महात्मा गांधी का नाम ले सकता है, उस पाठशाला को मैं देश का अन्यतम श्रेष्ठ शिक्षा प्रतिष्ठान मानता हूं।

चेयरमैन ने मासिक छह रुपया एड मजूर कर दी है। पाठशाला के मकान के लिए एकमुश्त एक सौ रुपया दान मिला डिस्ट्रिक्टबोर्ड से। असबाब के लिए तीस रुपए।

भवन बन गया है। असबाब भी कुछ आ गया है। लेकिन और भी चाहिए। सो भी शायद हो जाएगा। गाँव के लोग प्रसन्न हैं। चेयरमैन की प्रशंसा मिली है उस, उसके जवाहर ने उसका जयध्वज फहरा दिया है।

इस बार भी एक अच्छा लड़का है—नरेन्द्रनाथ मुखर्जी। उसे भी वृत्ति मिलगी। यह बाबुओं का लड़का है। लेकिन सीताराम को इससे भी बड़ी खुशी है इस वजह से कि इस लड़के को भी बड़े स्कूल की पाठशाला से नामाकूल करार कर उसका वजन किया गया था। था भी नामाकूल। नटखट लड़का। लेकिन बड़ा ही खूबसूरत चेहरा था उसका। चेहरा देखकर उसकी ममता जाग आई। तभी उसने उसे ले लिया था। इसके बाद उसने आविष्कार किया, मीठी बात करने पर वह लड़का बड़ा नेक है। और यह भी आविष्कार कर डाला कि फीस का तकाजा करते ही वह स्कूल मे नागा करने लगता है, उसका नट

खटपन बढ जाता है। उसने उसकी फीस माँगना बन्द कर दिया। देखते ही देखते वह लडका बदल गया। उसे वृत्ति मिलेगी।

सीताराम उसी को पढा रहा था। यही उसकी विजय का दूसरा सोपान है।

अचानक मणिलाल बाबू पाठशाला आए। यही सीताराम की पाठशाला है। वाह! बहुत खूब! बहुत खूब! यह तो बडा अच्छा किया है जी।

सीताराम अपनी कुर्सी छोड उठ खडा हो गया। एक कुर्सी बढा दी उसने, बैठिए आप, बैठिए।

मणिबाबू बैठ गये। नाम तुम्हारा बडा अच्छा हुआ है पडित—सन्दीपन पाठशाला। सम्यक रूप से दीपन, जीवन को अग्निमय बनाना।

सीताराम बोला, यह नाम मेरा दिया हुआ नही है, यह धीराबाबू का दिया नाम है।

धीरानन्द! एक दीर्घश्वास छोड मणिलालबाबू बोले, हालाँकि सुनता हूँ, छोकरे ने अच्छा नाम यश कमा लिया है। लेकिन—। वे जरा रुके। फिर बोले, वश पर कालिख पोत दी उसने। आखिरकार एक कायस्थ की बेटी से शादी कर ली! सुनते हैं, बीवी नौकरी भी करती है।

सीताराम चुप किये रहा। कडा जवाब उसके जुबान की नोक पर आ गया था। बडी कोशिश से उसने अपने को सयत किया। हजार हो, इज्जतदार शख्स हैं, वे उसकी पाठशाला मे आए है, वे अतिथि हैं।

मणिलालबाबू ने किसी से कहा, कहाँ है रे? अँय?

उनका नौकर एक लडके का हाथ थाम अन्दर आ गया।

मणिबाबू का पोता! उनका बेटा धीराबाबू का हम उम्र है, वे सुद फाथ क्लास तक पढकर पढाई छोड चुके थे। यह उन्ही का बेटा है।

मणिबाबू बोले, मेरे इस पचू को, चिरजीत पचानन को तुम्हारी पाठशाला मे भरती कराने आया हू। लो भरती कर लो। एक बात और तुम्हें इसको प्राइवट भी पढाना पडेगा। मूल बात, इसकी बुनियाद तयार कर देनी है।

सीताराम को लगा, ऐसा शुभ दिन उसके जीवन म शायद कभी आया नहीं। मणिबाबू को प्रणाम कर उसने पचानन को भरती कर लिया। बोला, बाबू, प्राइवेट पढाना मेरे लिए अब सम्भव नही होगा। लेकिन आदमी मैं देख दूगा।

मणिबाबू जरा गम्भीर बने रहे। बोले, अच्छी बात, फिर कोई आदमी ही देख देना। मैं जानता हू कि तुम अच्छा आदमी ही दोगे। लेकिन तुम हो ईमानदार। तुम ही होते तो बेहतर होता।

सीताराम चुप्पी साधे रहा।

मणिलाल बाबू चले गये। सीताराम ने अपनी एक कापी म मन-तारीख नोट कर ली। इन कापी मे वह आन जीवन की स्मरणीय घटनाएँ लिख रखता है। धीराबाबू न कहा है, मास्टर, तुम्हारे बार म मैं एक किताब लिखूगा। तुम

बूढे हो जाओ। उस वक्त एक दिन मैं आऊँगा। आकर तुम्हारी जीवन कथा सुन जाऊँगा।

सीताराम ने इसीलिए जिल्दवाली कापी बनाई है। वह अपने जीवन की स्मरणीय घटनाए और तारीख लिखकर रखता। डिस्ट्रिक बोर्ड के चेयरमैन जिस दिन आए थे, वही तारीख उसका पहला इन्दराज है। उसके बाद जयधर की वृत्ति मिलन की तारीख। केवल दो ही तारीखें लिखी गयी हैं। उससे पूर्व—शुरू की ओर की कहानियो को सहेज कर रखा है। उसमे भी कई तारीखें हैं। जो तारीखें बाबुओ की कोठी की दीवार पर लिखी थी, वही तारीखें। सफेद कापी उलट पुलट कर उसे बीच बीच मे हँसी आती। अपन ही मन मे हँसता। क्या लिखेंगे धीराबाबू ? जीवन के रग मे कोई रौनक नही, सुर म कोई बहार नही, इसे लेकर चित्र नही बनता है, इसे लेकर गीत नही बनता ह।

फिर भी वह लिखकर रखता। आज भी रखेगा—५ फरवरी १६२६।

●●

आठ महीने बाद।

सन् १६२६ के २१ सितम्बर को कापी खोलकर उसने तारीख लिख डाली। और साथ ही साथ उसे बन्द कर डाला।

परसो छुट्टी होगी पूजा की। कुआर का महीना, नीले आसमान मे शरत् की धूप झिलमिला रही थी। बीच बीच मे सफेद बादल उडते जा रहे थे। बीच बीच में बगुलो की पाँत। अनोखी प्रसन्नता से दिगदिगन्त भर उठा है। लेकिन सीताराम को लगा—सबकुछ मलिन हो गया।

सीताराम उस दिन, उस वक्त लडको से चन्दे के लिए अपील कर रहा था, पूर्वी बगाल में बाढ आई है, कितने ही गाँव बह गए हैं कितनी ही जानें चली गई हैं फसल बरबाद हो गयी है। बडे-बडे नेता लोगो ने—सुभाषचन्द बोस, आचाय प्रफुल्ल चन्द्र राय ने सहायता के लिए देश के सम्मुख हाथ पसारे ह। चारा ओर चन्दा वसूला गया है। बडा स्कूल भी चन्दा वसूल रहा है। तुम लोग भी कुछ दो। जो जितना भी दे सकता है—दो आन, चार आने, जो जितना दे सकता। अभी से तो यह सब सीखना पडेगा। बडी बडी जगहो से चन्दा जायगा, उसके साथ मन्दीपन पाठशाला के शिक्षक और छात्रो की सहायता के नाम पर तो कुछ भेजना ही पडेगा। कम से कम पाँच रुपए। जो कुछ तुम लोगो स बन पडे दो, बाकी मैं दे दूगा।

अचानक आकू आ पहुचा। आकू अब ज्यादा बिगड चुका है। बीडी पीता, तमाकू पीता, रात को फीस्ट करता है। यहाँ पर ज्यादा आता नही। अडडा अब स्टेशन पर है, कुलियो की ओर से मुसाफिरो के साथ मोलभाव करता है झगडा भी। कुली उसे बीडी पिलाते है चाय का दाम दे देते हैं, आकू इसी मे खुश है। कभी कभी पाठशाला म वह आता और मास्टर जी का हालचाल पूछ जाता। गाँव का हालचाल सीताराम को बता जाता। गोविन्द भी आकू के साथ खिसक

गया है। वह अब आकू का अनुचर है। सिर्फ रात को यहाँ आकर लेटता है।

सीताराम ने उसे देख हँसकर पूछा, क्या खबर है आकू ?

आकू बीड़ी पी रहा था, फेंकी नहीं। आजकल वह फेंकता नहीं, कुशलता से उसे ढीली मुट्ठी के अन्दर छिपा लेता है। बीड़ी छिपा, दूसरी ओर मुंह फेर धुआँ छोड़ आकू बोला, बड़ी मुश्किल हो गई सर। थोड़ी-सी रस्सी चाहिए। बिस्तरबन्द का चमड़े वाला फीता टूट गया।

सीताराम हँसा। आकू परोपकार कर रहा है।

आकू बोला, बिस्तर में दुनिया भर का सामान भर दिया है। मैंने तब बताया तो उन्होंने सुना ही नहीं। पढ़ी लिखी हुई तो क्या ? है तो औरत ही! उस बालिका विद्यालय की दीदी जी हैं सर।

सीताराम हड़बड़ा गया, रस्सी— यह लो, यह रस्सी ले जाओ। उसने बच्चा के लिए खरीदे हुए स्किपिंग रोप की एक रस्सी दे दी।

अच्छा ही होगा। ठीक ही है। आकू बोला, बड़ी तरस आ गई सर, दीदी जी काफी दिन यहाँ रहीं। चली जा रही है, फिर तो यहाँ आएगी नहीं। मेरी बहन पढ़ती है वहाँ। उसी से मुझे बुलवा भेजा बोलीं, आकू, तुम जरा मेरे जाते वक्त जरा मदद करो, कुली बुलाकर तय कर दो तो अच्छा हो। बड़ी तरस आ गई उस पर। बहुत दिनों से थी हमारे यहाँ। फिर तो आएगी नहीं। सुनकर बड़ा अफसोस हुआ। इसलिए सबकुछ ठीक-ठाक कर दिया। लेकिन—रास्ते में बिस्तरबन्द का चमड़ा फट गया। गोविन्द को पहरे पर बिठा कर आया हूँ।

सीताराम को लगा, शरत् काल का यह अपराह्न अकस्मात् ही फीका पड़ गया। जा रही हैं। चली जा रही हैं! सीताराम अभिभूत सा आकू के साथ निकल आया।

अच्छी नौकरी मिली है इसीलिए जा रही हैं। रास्ते पर बिस्तर टूट पड़ा है। कुली को लेकर आकू बिस्तर बाँधने लगा। बिखरा सामान गोविन्द ने उठा उठाकर दिया। सीताराम ने भी। बिस्तर में वह परदा भी बँधा है। आकू चला गया। लेकिन वे कहाँ हैं ?

वे शायद दूसरे रास्ते से स्टेशन गई हैं। शाम के अँधेरे में प्रकाशित परदे पर यह मुख फिर कभी उभरेगा नहीं। वह वहीं खड़ा रहा।

ट्रेन आ रही है, घण्टी टनटना गयी है। घड़ी में तीन बजकर पन्द्रह हो रहा है। यकायक सीताराम दौड़कर पाठशाला लौट आया हथौड़ी उठाकर छुट्टी की घंटी बजा दी।

अरे, छुट्टी आज — छुट्टी! मुझे याद नहीं रहा। मुझे एक बार जंक्शन जाना है। आज छुट्टी! झटपट दरवाजा बन्द कर वह दौड़ पड़ा। उसे जंक्शन पहुँचना ही है। पहुँचना ही है।

ट्रेन आ गयी है। एक खाली इण्टर क्लास में वह बैठी हुई हैं।

स्कूल की लड़कियाँ आई हैं, उन्हीं की ओर देख रही हैं, बतिया रही

है। वह दौडकर गया, एक टिकट खरीदा, जकशन, एक इटर क्लास का। जक्शन यहाँ से सात मील है। वहाँ जाकर यह लाइन खत्म हो गई है। वहाँ गाडी बदलनी पडेगी। वह उसी डिब्बे के दूसरे छोर पर जा जमकर बैठ गया। ट्रेन चली।

उदास दृष्टि से वह महिला गाँव की ओर देख रही है। क्रमश वह उदासीनता बिला गई और चेहरे पर बेलौसपन उभर आया।

काली-सी लम्बी लडकी। बगुले के पख जैसी सफेद धुली खद्दर की, नीली किनारी वाली साडी, बदन पर आज हल्के लाल रग का ब्लाउज परो मे सडिल, सिर पर घूघट नही, परिछन्न निपुणता से बाल ढीले जूडे मे बधे। कन्धे से लटक रहा है खद्दर का एक झोला।

कई बार सीताराम के जी मे आया, एक बात करे, कहे— चली जा रही है आप? लेकिन किसी तरह से भी उससे न हो सका। नही नही, वह पाठशाला का पडित है।

उसने सोचा कि जक्शन स्टेशन पर कुली बुलवाकर वह उसकी मदद करेगा। लेकिन वह भी उससे नही हो सका। उन्होने खुद ही कुली बुला लिया। सामान चढाते वक्त भी वह एक बार आगे बढा, जाकर फिर पीछे हट आया। गाडी चली गई।

उसने अपनी कापी फिर खोली। सोचा था, तारीख काट देगा। लेकिन नही, रहने दो। बल्कि उसने और भी थोडा-सा लिख डाला।

"जीवन मे बूद भर रग था, रात के अधेरे मे, झुरपुटे मे आकाश की नीहारिका की तरह उभर आता था, वह भी पुछ गया २१ सितम्बर १९२६ को।"

उदास मन लिए वह रत्नहाटा की ट्रेन मे आ बैठा। काफी समय है हाथ मे। अचानक ख्याल आया, यहाँ की किताबो की दुकान से कुछ किताबें खरीद ली जाएँ तो कैसा हो। आजकल वह पाठशाला मे पाठ्य-पुस्तको का व्यापार करने लगा है। सभी पडित करते हैं। साल मे एक बार, पाँच सात रुपए का लाभ। महीने मे दस-पन्द्रह रुपए जिसकी आय हो उसके लिए साल मे पाँच सात रुपए भी बहुत होते हैं। कुछ कुजी वाली किताबें चाहिएँ। कुंजी वाली किताबों मे मुनाफा ज्यादा है। इनकी बिक्री सारा साल होती रहती है।

लेकिन नही, रहने दो। आज का दिन उसके जीवन की माला से अलग ही रखा जाए। आज उस काली लड़की के सिवा और किसी के बारे में वह नही सोचेगा। जीवन की गुप्त बात गुप्त ही रह जाए। केवल धीराबाबू से कहेगा, वह उस पर किताब लिखेगा। लेकिन इतनी सी बात के सिवा धीराबाबू से वह क्या कहेगा?

क्या लिखेंगे धीराबाबू?

उसके रगशून्य जीवन के बारे मे लिखेगा, उसकी सन्दीपन पाठशाला के बारे मे लिखेगा धीराबाबू?

●●

पन्द्रह

निवेदिता—कोमल कोमल मुख वाले सारे बाल-गोपाल चिरकाल संदीपन पाठशाला को प्रकाशित कर पाँतों में बैठ मधुर कंठों के कलरव से पढ़ते हैं—अ, आ, छोटी इ, बड़ी ई।

हाँ। फिर यह क्या है? बताओ भला। छोटी—। संकेत से सीताराम उसे समझाता। तुतलानी जुबान में वह लड़का कहता, छोता उ, बला ऊ।

वाह! वाह! बालो।

उत्साह से कोमल मुखड़ा सुबह के सूरज की छटा पड़े कमल की नाईं झलमला उठता, शुभ्र आँखें चमचमा उठतीं। हरी हरी घास पर ठहरी ओस की बूँदों की भाँति। वह पढ़ता जाता, ऋ। यह? यह क्या मात्रा?

यह मात्रा लृ कार है।

उस ओर लड़के पढ़ते अ और च और ल, अचल। अ ध और म, अधम।

हाँ! यह दोनों मानो अचल और अधम कभी मत बनना तुम।

ज ल, ग में छोटी इ की मात्रा और र में ए की मात्रा—जल गिरे।

सीताराम खुद ही कहता, प में आ की मात्रा और त, पात और ह में छोटी इ की मात्रा और ल में ए की मात्रा, हिले, पात हिले। जल गिरे, पात हिले। ज और ट जट, ह में छोटी इ की मात्रा ल में ए की मात्रा से—जट हिले। कहो, अपनी जटा तो हिलाओ एक बार। उस लड़के के सिर पर बड़े बड़े बाल, उसी में दो जटाएँ बन गई हैं। देवता के पास मनौती है। यहाँ के प्रचलित पद्य कहता सीताराम—जटा हिले, इमली गिरे और उसे दुलारता।

लड़का शर्म कर सिर झुकाये रहता है। इसी बीच उसे अपने सिर की जटा के लिए लाज लगने लगी है। सीताराम खुद ही उसकी जटा हिला देता। बड़ी कक्षा के लड़के पढ़ रहे हैं।

"हम लोग जिस देश में रहते हैं, उस देश का नाम है भारतवर्ष। भारतवर्ष के उत्तर में संसार की सर्वोच्च पर्वतमाला हिमालय है, दक्षिण में बंगोपसागर, भारत महासागर हैं।"

वे खड़े होकर तरन्नुम से पढ़ते—

"कोन देशेरइ तरुलता
सकल देशेर चाइते श्यामल?
कोन देशेते चलते गेले
दलते हय रे दुर्वा कोमल?
कोथाय फले सोनार फसल
सोनार कमल फोटे रे'
स आमादेर बाँगला देश—

सीताराम भाई? कुशल से तो हो?

कौन ? सीताराम कुर्सी से उठ खडा हुआ। वही पलाशवुनी वाले वृद्ध पडित जी। ईंय, यह कैसी शक्ल हो गई है उनकी ! शिथिल चम झूल आने से हड्डियाँ प्रगट हो आई हैं, कुबडा सा सुक गए हैं, लाठी थामे पाठशाला के आगन मे आ खडे हो गए हैं। मैली काली सी धोती पहने हैं, उनमे सिलाई के वडे वडे दाग काली मिटटी में दरार जैसे दिख रहे हैं। हडबडाकर उतरने के वाद आगे वढ गया सीताराम। आइए-आइए। कितना सौभाग्य है मेरा।

तुम्हारा सौभाग्य —हा-हा कर हँस पडे पडित।

सौभाग्य क्यो नही। अवश्य ही यह मेरा सौभाग्य है।

कल्याण हो तुम्हारा। भले आदमी हो तुम। अब कुछ खिलाओ तो भाई। बडी भूख लगी है। खिलाकर अपना सौभाग्य बडा लो।

सीताराम व्यस्त हो उठा, अरे ! गोविन्द पद, सुनो तो भई।

पडित बोलता ही रहा, जानते हो होगे भीख मांगता हू हाँ भीख ही है एक तरह से। गृहिणी को मुक्ति मिल गई है। तो श्राद्ध तो करना ही पडेगा। इसलिए पलाशवुनी गया था। हैं तो सब खेतिहर किसान ही लेकिन कभी के छात्र तो हैं सारे। कुछ भीख ईख मांगकर घर जाऊँगा। दोपहर हो गई विश्राम चाहिए, भूख प्यास भी लगी है। सो एक बार सोचा कि बाबुओ की ठाकुरबाडी चला जाय या किसी भी बाबू की कोठी मे। लेकिन मन नही किया। तुम्हारी ही याद आ गई। शास्त्र मे कहा है, ब्राह्मणस्य, ब्राह्मणम गति। बाबू ब्राह्मण और पाठशाला का पडित भिखमंगा ब्राह्मण तो कोई एक नही। तो मन मे आया, पाठशाले के पडितस्य पाठशाले के पडितम गति। सो यही चला आया। कहकर ही फिर से हा हा कर पडित हँसने लगे।

इस हँसी से सीताराम झेंप गया। उसे लगा, पडित उसकी खुशामद कर रहे हैं। उनको कुर्सी पर बिठाकर वह एक कापी की जिल्द से हवा करने लगा। बोला, अच्छा ही किया है आपने। आप पधारे है इससे मुझे कितनी खुशी हुई है, क्या बताऊं ? तेल मगाऊँ, नहा लीजिए।

स्नान ? तो—। पडित ने अपना अगौछा फैलाकर एक बार देखा। अगौछा धोती से भी ज्यादा मैला। तिस पर कितने ही छेद। दिखाकर बोले, साथ कोई धोती तो है नही। इसको पहन कर नहाना—। फिर हा हा कर हँस पडे पडित। फिर धीमे स्वर में बोले, समझे भाई, पलाशवुनी के मैदान वाले पोखर मे जाकर दिगम्बर होकर ही, समझे ? पडित की हँसी थमती ही नही।

कापी की जिल्द उनके हाथ मे देकर सीताराम बोले, आप तनिक इन बच्चो को देखते रहें। मैं अभी आया।

वह एक नयी धोती और शीशी मे थोडा सा तेल लेकर लौट आया। बोला, तेल मल लीजिए। नहाकर यह धोती पहन लीजिए।

बूढे के होठ काँपने लगे।

पंडित को विदा कर उसने एक ठडी साँस ली। दारिद्रयदोषो गुणराशि

नाशी। पंडित स्वयं यह बात बता गए। नहा कर खाने के बाद पंडित ने कहा था, भाई, लड़कों से दो पैसे चार पैसे चन्दा अगर वसूल कर देते। जानते ही हो पत्नीदाय। मातृदाय पितृदाय नहीं, वृद्ध ब्राह्मण का पत्नीदाय। कहकर फिर हा-हाकर हँस पड़े। लड़कों से एक रुपया सात आने इकट्ठे हुए, उसने खुद एक रुपया एक आना मिलाकर ढाई रुपए पूरे कर उनके हाथ में दे दिए।

जाते वक्त पंडित बता गए एक बात बताते जा रहा हूँ भैया! जानते होगे, वृद्धस्य वचनम् ग्राह्य। बूढ़े की बात याद रखना। ये बड़े-बड़े दालान कोठे बनते हैं, देखा है न? उसे राजमिस्त्री बनाते हैं, नक्शा बनाते, कारीगरी दिखाते हैं, वेतन लेते और विदा हो जाते हैं। बड़े लोग उनमें वास करते हैं कोठियाँ उन्हीं की होती हैं। फिर भी राजमिस्त्री अपने नाम लिख जाते हैं—फलाँ राज, फलाँ सन आदि आदि। कुल बात यह कि उनके नाम रह जाते हैं। मजदूरी भी उनको कोई बुरी नहीं मिलती। हमारे पंडितों से ज्यादा ही पाते हैं। लेकिन देखो, शुरू में जो लोग काम करते हैं नींव के लिए मिट्टी खोदते हैं—वे बस मिट्टी खोदने वाले मजदूर हैं उनको कोई भी याद नहीं रखता। उनकी मजदूरी भी सवेरे से तीन पहर तक मिट्टी काटने के बाद—कुल चार आने होते हैं। पेट भर खाना भी उससे नहीं जुटता। वे अपनी आखिरी उम्र में अनखाय मरते हैं। अगर वे बाबुओं की कोठी में जावें, कहें, बाबू साहब, मैंने आपके महल की नींव खोदी थी आज अनखाये मर रहा हूँ, लिहाजा मुझे कुछ भी भीख दीजिए। बाबू क्या करेंगे? पहचान भी नहीं सकेंगे। भैया भीख देना तो दर किनार, दरबान को बुलाकर निकाल देंगे। स्कूल कालेज के मास्टर हुए बड़े राज मिस्त्री छोटे राजमिस्त्री। और अभागे हम पाठशाला के पंडित हुए नींव के लिए मिट्टी खोदने वाले मजदूर। हम लोगों का कोई याद ही नहीं रखता। जाओ तो पहचानेंगे नहीं। भीख भी दें तो दो आने, चार आने, बस। इसीलिए कहता हूँ—। ढेर सी बातें कर वे हाँफने लगे थे। जरा ठहरकर फिर बोले, कुछ कुछ संचय करते रहो। समझे? हालांकि तुम्हारे पास कुछ जमीन खेत हैं, मेरी जैसी हालत तुम्हारी होने वाली नहीं। फिर भी बूढ़े की बात याद रखना। इस तरह से—जिस तरह अभी तुमने मुझे धोती दी, खाना खिलाया—इस तरह खर्च मत किया करना। कुछ कुछ जमा करने की आदत डालो।

दरवाजे के पास पहुंचकर वृद्ध ने फिर कहा भैया, एक बात और बताऊँ?

बताइए।

मुझे एक बंडल बीड़ी और एक माचिस खरीद दो।

••

सीताराम लौटकर पाठशाला की कुर्सी पर बैठा सोचने लगा। पंडित उसे अव साद में ग्रस्त कर गए। बूढ़ी चिन्ता आकर उस पर सवार हो गई है। पंडित ने कोई झूठ तो कहा नहीं। और भी बहुत-सारी बातें की थीं पंडित ने। दोपहर भर यह अनगढ़ बातें ही रहे। धोती और ढाई रुपए की सहायता पाकर

उन्होने हँसी और बातो के माध्यम से अपने जीवन की सारी बातें बताकर अपनी कृतज्ञता जताना चाही है।

अचानक वह अपनी कापी, वही नोट बुक निकालकर लिखने बैठ गया। आज है बारह जुलाई, उन्नीस सौ उनतीस सन्।

धीराबाबू ने कहा है, पडित, तुम्हारे बुढ़ापे मे आकर तुम्हारी बातें सुनूगा, तुम्हारी बातें सुनकर किताब लिखूगा मैं।

बूढ़े पडित की बातें उसकी अपनी बातें नही हैं। फिर भी उसने पडित की बातें लिख डाली। पडित की बातो मे और अपनी बातो म तो उसे कोई फर्क नहीं दिखाई पडता। वह लिख रहा है, धीराबाबू से बताएगा, इसी ढग से लिखो। तभी लिखना सही होगा। वर्ना, तुम जो लिखोगे वह शायद ठीक न हो। पाठशाला के पडित सीताराम की जीवन कथा नही होगी। बिल्कुल इसी तरह से लिखना।

"एक ब्राह्मण का बेटा। बाप किसानो के गाव मे पुरोहित का काम करते थे और ब्याह शादी, क्रिया-करम के घर म न्योते के अवसरो पर पकवान बनाने का ठेका लेते थे। लोगो म कोई कहता—किसान पुरोहित, दलिद्दर बामन, तो कोई कहता रसोइया। लेकिन इससे कितना ही अपमान उसका होता हो लेकिन मोटे तौर पर खाने-कपडे की कभी कोई कमी नही थी। लडके ने, उस जमाने के आधुनिक लडके ने उस जमाने के एम बी —मिडल वर्नाक्यूलर स्कूल मे छात्रवृत्ति तक पढा, वहा से पासकर उसने बाप का पेशा छोड पाठशाला का पडित बन गया। पडित का काम किसानो के पुजारी बामन के काम से कही अधिक सम्मानजनक था, रसोइया बाँमन की बात सोचते ही लाज लगती। वह बन गया पाठशाला का पडित। चमगादड पछी बना। सदगोप किसानो के एक गाँव, म गाव क मुखियो की सिफारिश पर, जमीदार के अनुग्रह से किसानो से जगह लेकर उसने पाठशाला खोल दी।'

आह, यह क्या हुआ? आँखो मे आसू आ गए क्या? लिखावट अस्पष्ट सी लग रही है, लिखन मे लाइन टेढी होती जा रही है। पेंसिल रख सीताराम ने हाथ से आखें पोछ डाली। हा, आँसू ही भर आए थे। आँसू पुछ जाने से निगाह साफ हुई। उसन फिर लिखा

"जमीदार की कचहरी मे पाठशाला खोलने का हुक्म मिला। वही वह रहेगा भी। मडल लोगो म हरएक महीने मे एक दिन भोजन का सीधा देगा। गाव म अट्ठाइस घर सम्पन्न मडल है, वे देंगे अटठाइस दिन का सीधा। शेष दो दिन उसको खुद ही चला लेना पडेगा। उसके लिए उसने चिन्ता नही की, अट्ठाइस दिन के सीधे मे से, दो दिन ही क्या, और भी सात दिन की खुराक बच जायगी। दैनिक पाँच पाव चावल से आधा सेर काट लेने से, अट्ठाइस का आधा चौदह सेर चावल बच जायगा। वह उसकी चौबीस पच्चीस दिन की खुराक है।"

खोफ छी छी ! फिर आँखो म आसू आ गए। कुछ दिनो से, यही शायद महीने भर से यह उत्पात शुरू हो गया है। आँखो से पानी टपकता है। खास तौर से तिपहर मे पाठशाला के आखिरी घटो मे ज्यादा पानी गिरता। सिर भी भारी हो जाता है। डाक्टर को दिखलाना पड़ेगा। खैर, बाद मे लिखेंगे। पडित की बातें अब भी कानो म गूज रही हैं। मन में बिल्कुल गुथ गई हैं यह क्या भुलाने वाली बात है ?

पडित न कहा है, भैया, आज लगता है, मति मारी गई थी मेरी। वर्ना जरा सोच विचार कर देखा, हिसाब लगाकर देख लो, पुरोहित का रोजाना का रोजगार पडित के रोजाना के रोजगार से कहीं ज्यादा है। चावल, धोती, दक्षिणा —हिसाब लगाकर देख लो। और ठेके पर पकवान बनाने के काम म कमाई भी दिन-ब दिन बढती ही जा रही है। एक वक्त एक रुपया, दो वक्त दो रुपए। रसोइया ब्राह्मण की माहवारी तनख्वाह ही अब खुराक पोशाक और आठ रुपये दस रुपये। इसके अलावा बाबुओ के नाते रिश्तेदार, आने जाने वाले, महीने मे दो रुपए बख्शीश के। पाठशाला की पडिताई करके जिन्दगी भर भुट्टयाँ ही छीलते रहे। कहकर ही हा हा कर हँस पडे।

फिर बोले थे, कुछ बुरा न मानना भैया! सच बात बताऊँ ?

तुमने भी मुझ जैसी भूल की है। सद्गोप किसान के बेटे हो। बाप दादा खेती-बाडी करते थे, अपनी जमीन, और भी दो चार जनो की दो-दस बीघा जमीन बटाई मे लेकर दूध भात खाते रहे। खलिहान मे धान, घर मे ऊडद, गेहूँ गुड जमा कर सुख से दिन काटते रहे। तुमने भी मेरी तरह घुइया भूनकर खाये भैया ! पुश्तैनी पेशा छोड लिखपढ पडित बनने म बेजा किया है।

अचानक उसका हाथ थामकर बोले थे, कुछ बुरा तो मान नहीं रहे हो भैया ?

नही, नही। आपने सच्ची बात बताई है। बुरा क्यो मानूगा ?

हाँ। तुम्हें जानता हू तभी कहने की हिम्मत पडी। वर्ना अब तो मैं भिख मगा हू मैं—

कुछ देर के लिए वे खामोश हो गए थे, फिर बडे ही धीमे स्वर में कहा था, भैया क्या यूँही कहता हू ? आज तुमसे कुछ भी छिपाऊँगा नहीं। विधवा युवती कन्या महाराजिन का काम करती है जानते होगे ? लेकिन काम छोडकर भाग आई है। जानते हो क्यो ? भाग आने को मजबूर हुई है। मतलब, समझ रहे हो न ? यहाँ बाबुओ का युवा पुत्र उसके पीछे पडा था। बताओ भैया, अब तो मान लो मैं हू, भीख माँगकर खिला रहा हूँ लेकिन मेरे बाद उसका क्या होगा ? सम्बल कुछ होता तो आज मैं चिन्ता न करता होता। मेरे बाद उसी सम्बल के सहारे अपने घर म आत्मरक्षा कर किसी कदर वह रह सकती थी।

सीताराम सोचता, उसके जीवन में क्या जाने क्या होगा। फिर उसकी आँखों में पानी आ गया। यह पानी आना वह पानी आना नहीं। यह उसक

मन रो रहा है, तभी पानी आ रहा है। आँखें पोछ डाली उसने।

पाठशाला के दरवाजे पर सायकिल की घंटी बजी। स्कूल सब-इन्सपेक्टर साहब ने प्रवेश किया। नए आदमी, थोड़े ही दिन हुए आए हैं, कम उम्र, कड़ा आदमी! साहब के दफ्तर मे जाकर देखा है मोटी मोटी अंगरेजी की किताबें पढते हैं। एक शेल्फ में चमाचम जिल्द लगी बंकिमचन्द्र, रवीन्द्रनाथ की किताबें। दो-तीन मासिक पत्र मंगवाते हैं। आप अति आधुनिक हैं। आप कहते हैं—तुम लोगो के धीराबाबू वाहियात लिखते हैं जो। बिलकुल प्रतिक्रियावादी, रिऐक्शनरी!

सीताराम इन दोनों शब्दो का ही अर्थ नहीं समझता। चुप किए रहता।

गम्भीर भाव से सब इन्सपेक्टर रजिस्टर बही आदि लेकर बैठ गए। नोट ले लिये। इन्सपेक्शन बुक पर मन्तव्य लिखा।

उनके चले जाने के बाद पाठशाला की छुट्टी हो गई। टन टन नन न-न।

फिर अगले दिन साढ़े दस बजे पाठशाला लगेगी। टन-टन-टन-टन।

साल-दर साल यही चलता रहेगा। सीताराम के बाल सफेद होंगे। माथे पर रेखाएँ उभर आएँगी। शायद अन्त मे उस वृद्ध पंडित जैसी दशा हो जाएगी। लिखेगा, धीराबाबू यही लिखेगा, यही तो उसका जीवन है।

जीवन मानो क्रमश श्रान्त-क्लान्त नीरस होता जा रहा है।

इसी बीच एक एक लहर आती। सूखी हुई नदी मे बाढ़ आ जाती है।

उस दिन सब इन्सपेक्टर ने आकर कहा, पंडित, तुम लोगो के यहाँ प्राय मरी टीचर्स कान्फ्रेंस होने की बात चल रही है। सुना है?

जी नहीं।

खबर तुम्हारे पास भी आएगी।

••

खबर आई। बड़े स्कूल की पाठशाला के हेडपंडित श्रीश बाबू ही इसके संयोजक है। वे अपने दल के साथ आए। श्रीशबाबू बहुदर्शी व्यक्ति योग्य शिक्षक और अत्यन्त मिष्टभाषी हैं। एकमात्र दोष है, वे दक्ष षड्यत्रकारी हैं। उसके बहुत सारे अच्छे लडको को वे बहका ले गए हैं। खैर, वे जब आये हैं और यह कान्फ्रेंस—जिला प्राथमिक शिक्षक सम्मेलन जब सभी की भलाई के लिए है, तब वह जी खोलकर साथ देगा।

उनकी दरिद्र दशा के बारे मे देश को बताया जाएगा, गवनमट के पास माँग रखी जायगी। दिल को मानो कुछ बल मिल रहा है।

स्वागत-समिति का गठन हुआ। इस थाने की पाठशालाओ के पंडितो से चन्दा उगाहकर सारा खर्च निभाना पड़ेगा। उनमे से पन्द्रह को स्वागत समिति म लिया गया। गोपालपुर का हृषिकेष दास वृद्ध पंडित है गोविन्दपुर का सौरीन मित्र उम्र से छोकरा है व्यापारी पाड़ा के मकतब क मौलवी मुहम्मद हुसैन रत्नहाटा के सभी बडे स्कूल के तीन जने और सन्दीपन पाठशाला का सीता

राम—इसी तरह से पन्द्रह लोग। धीशबाबू अध्यक्ष हैं।

सीताराम दो सहकारी मन्त्रियों में एक।

यह एक उत्साहजनक मामला था। ऐसी घटना जीवन में कम ही आई है, केवल एक बार और आई थी, उस बार जब धीराबाबू ने डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के काग्रेसी चेयरमैन को लाकर सभा की थी। फिर वैसा उत्सव हो न सका।

अचानक याद आ गई, उस सभा में एक काली लड़की बैठी थी।

हर साँस को आज भी वह ठंडी साँस भरता है। सालें सारी की सारी विरस हो चुकी है। अब और प्रकाशित परदे पर छायाछवि सा एक मुखड़ा उभर नहीं आता है। सीताराम की आँखों में कुछ नुक्स आ गया है। बिना चश्मा लिए गुजारा नहीं। पानी गिरता, धुंधला देखता, लेकिन फिर भी प्रकाशित परदे पर छाया की छवि में उभरा हुआ मुख अमावस के आकाश में शुक्रा-जैसा सुस्पष्ट है। नोट बुक में उसने लिखा—सन उन्नीस सौ तीस, छब्बीस जनवरी। उस तारीख पर जिला प्राथमिक शिक्षक सम्मेलन है।

लेकिन तारीख के लिए वह दुखी हुआ। उधर वही तारीख कांग्रेस का स्वाधीनता दिवस मनाने के लिए निर्धारित हुई है। लेकिन चारा भी क्या? मजिस्ट्रेट साहब उदघाटन करेंगे, उन्होंने ही यह तारीख ली है। उस तारीख पर देबू यहाँ कांग्रेस का झंडा फहराएगा, सकल्प वाणी का पाठ करेगा। धीराबाबू ने लिखा है, मैं नहीं आ पा रहा हूं, लेकिन रत्नहाटा गाव में स्वाधीनता दिवस नहीं मनाया जायगा, यह सोचते हुए मुझे मर्मान्तिक दुःख हो रहा है। तुममनाना।

धीराबाबू ने लहर भेज दी है। जय जयकार हो धीराबाबू का। लेकिन धीराबाबू, तुम आए क्यों नहीं? लहर क्या प्रवाह है? तुम्हारा काम क्या देबू से हो सकता है?

देबू और श्यामू के लिए उसे मर्मान्तिक क्लेश है। वे मैट्रिक पास कर बैठे हैं। श्याम आई०एस सी में फेल हो कर घर लौट आया है। देबू ने तीसरी बार की कोशिश में मैट्रिक पास किया है। देबू में क्या धीराबाबू का काम हो सकता है? लेकिन देबू का इस ओर एक रुझान है।

खैर, जाने भी दो यह बात। मामूली पाठशाला का पंडित है वह। अदरक का व्यापारी है वह, जहाज का हालचाल लेकर वह क्या करेगा? सम्मेलन के लिए उसने श्यामू देबू से एक भीख माँगी आधा मन मछली। मैंने कहा है मैं वसूल कर दूंगा। मेरी इज्जत रखनी है। सो उन लोगों ने दी है।

धीराबाबू को उसने चन्दे के लिए लिखा था। धीराबाबू ने दस रुपए भेज दिए हैं। उस दिन सबेरे उसे सबसे बड़ी खुशी हासिल हुई। मनोरमा ने उसके हाथ में एक रुपया दिया, तुम लोगों के उसमें वह क्या हो रहा है जो, उसमें यह मेरा चन्दा है। बेचारी सँकोच से शब्द उच्चारण नहीं कर सकती।

तुम्हारा चन्दा? मैंने तो दे दिया है, फिर?

तुम लोगों की तनख्वाह बढ़ेगी सम्मान बढ़ेगा और मैं चन्दा न दूं?

रुपया उसने ले लिया, लेकिन मनोरमा को आगोश मे लेकर, चूम कर प्यार जताने की फुरसत नही। रत्नहाटा मे ढोलक बज रहा है। उसकी आवाज यहाँ तक आ रही है, सुनाई पड रही है। रायबँशे नाच हो रहा है। लडके नाच रहे हैं।

यही एक विडम्बना है।

मजिस्ट्रेट साहब आएँगे, उद्घाटन करेंगे। साहब की सनक है, लाथ नृत्य की। साहब के आने के बाद से जिला मे इस नाच को लेकर हो-हल्ला करते फिर रहे हैं। शिव नाचे, ब्रह्मा नाचे और नाचे इद्र।—सरकारी हाकिम नाच रहे हैं, रायबहादुर लोग नाच रहे हैं, वकील नाच रहे हैं मुख्तार नाच रहे हैं, बडे स्कूल के लडके नाच रहे हैं, मास्टर नाच रहे हैं, अब उन लोगो की बारी है। पाठशाला के लडको को नाचना पडेगा और साथ ही साथ उन लोगो को भी। मुँह बद किये नाचना है। कुछ भी बोलोग तो सवनाश। रायपुर के व्योमकेश ने उस नाच का व्यग्य कर एक कागज छपाया था,—गाव देस मे जैसी तुकबदी प्रचलित है

"मेरी शादी तो ज्यो-त्यो
दादा की शादी मे रायबँशे नाच
आओ गटागट दारू पीके आज।"

इसके परिणाम व्योमकेश को जेल हो गयी है।

फिर भी गनीमत कि डिविजनल इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स रायसाहब मित्र साहब की कोई सनक नही। वे ही सभापति होंगे।

सन तीस की छब्बीस जनवरी!

सुसज्जित मडप मे अधिवेशन हुआ। सयोग से सीताराम को सभापति के आसन के पास ही खडा होना पडा।

अचानक अप्रत्याशित रूप से उसके जीवन की एक बडी साध पूरी हो गई आज। उसकी नजर पडी, सभा के बाहर जनता के बीच शिवकिंकर खडा है। वह इशारे से उसे ही बुला रहा है। सीताराम सावधानी से निकल गया।

शिवकिंकर अनुग्रह प्रार्थी की तरह सविनय बोला, मुझे भीतर कही बिठा सकते हो भाई पडित?

सीताराम की जुबान की नोक पर जवाब आ गया, नही। लेकिन अगले ही क्षण उसने आत्मसवरण कर सादर सम्भाषण से कहा, आइए।

उस समय सभापति का अभिभाषण शुरु हो गया था। एक अप्रत्याशित समाचार उन्होने सुनाया "नयी शिक्षा योजना बन रही है जिसमे देश के सवत्र, प्रत्येक गाव चाहे न हो, हर पाच सात गाँवो के केन्द्रो म अवैतनिक प्राथमिक विद्यालय स्थापित होगे। सारे देश के बच्चे अज्ञानता के अधकार से ज्ञान के प्रकाश म ससार को देखकर धन्य हो सकें, ऐसी व्यवस्था होगी। उन सब केन्द्रों मे जो शिक्षक होगे, आप ही लोग रहगे, जिससे उनका वेतन ऊँचा हो, उनके

अभाव-अभियोग दूर हो, इसके लिए भरसक कोशिश की जायगी। आप ही,लोग देश के आदिगुरु हैं। आप लोग कोई मामूली नही हैं।"

खुशी से सीताराम की आँखें नम हो गइ। उसकी दृष्टि शक्ति कम हो आई है। आज उसकी आखो के पानी मे क्षीण दृष्टि के सम्मुख सभी कुछ मानो सफेद कोहरे मे ढक गया।

उसदिन घर लौटकर अपनी नोट-बुक में उसने यह तारीख लिख ली—

"आज मुझे लगा, आकाश मे नीलापन झलमला रहा है। झील-तडाग में जल झिलमिला रहा है। पछियो के गीत मे आनन्द झर रहा है। बडा आनन्द है आज। आज मन मे बडी आशाएँ जाग उठी हैं।"

इसके बाद लिखा है—

"घर लौटने के रास्ते—देबू की फहरायी राष्ट्रीय पताका को छिपकर प्रणाम कर आया। सकल्प वाणी जेब में है। घर आकर उसको पढ़ा। आज २६ जनवरी १९३० सन है।"

सम्मेलन समाप्त होने के बाद वह वहाँ गया था जहाँ तिरगा ध्वज उड रहा था। अकेले खडे प्रणाम कर कहा था—मुह खोलकर कहने का साहस नही, लेकिन मेरा भी अन्तर कहता है—तुम्हारी जय हो ! तुम्हारी जय हो ! तुम्हारी जय हो !

●●

सोलह

२६ जनवरी १९३०। प्राथमिक शिक्षक सम्मेलन।

उसके बाद भी और कई तारीखें उसकी नोट बुक मे लिखी गयी हैं। तारीख के बगल मे घटनाओ के सक्षिप्त ब्योरे।

"१७ अगस्त १९३०। देबू—मेरे हाथो गढे हुए देबू ने भारतवष के स्वतन्त्रता युद्ध मे कारावरण किया। धीराबाबू कलकत्ते मे राजबन्दी के रूप में फिर पकडे गये हैं। देबू ने उन्हीं के पदचिन्हो का अनुसरण किया है। यह मैं जानता हूँ। लेकिन मैंने ही तो उसे बताया था

"महाज्ञानी महाजन जिस पथ कर गमन
हो गये प्रात स्मरणीय
उसी पथ को लक्ष्य कर स्वीय कीर्ति-ध्वजा धर
हम लोग भी होंगे वरेणीय।"

अन्त में उसने लिखा है—"आज गौरव से मेरा सीना तन गया है। यह बात किसी से कहने की नहीं। हाय ! इस गौरव के बारे में मुँह खोलकर कहने की हिम्मत नहीं मुझे। मैं दुर्बल हू, मैं अभागा हू।' इस सिलसिले उसका द ग

भी बहुत है। जिस दिन देबू को पुलिस गिरफ्तार कर ले गई, उस दिन स्टेशन पर कितनी भीड़ थी ! गाव के नर-नारी युवा वृद्ध शिशु सभी उसका अभिनन्दन करने आए थे। फूलमालाओ से देबू का गला भर गया था। वह भी माला गूंथकर ले गया था। लेकिन दरोगा को देखकर—देने का साहस नही हुआ। उसे बहुत दिन पहले की बात याद पड़ गई थी। उसकी क्षीण-दृष्टि आंखो के सम्मुख तिर आया था—सदीपन पाठशाला का चित्र। भय मे उसने वह माला अपने चदरे के नीचे छिपा ली थी। फिर ट्रेन के चले जाने के बहुत दिनो के बाद उसने देबू के घर मे प्रवेश किया था। मां से मिलेगा। मां को प्रणाम कर अपना जीवन सार्थक करेगा। उनके पास बैठकर एकबार रोएगा। बोलेगा—आपके देबू का मैं पंडित बना था—अभी मेरा जीवन धन्य हुआ। घर मे प्रवेश कर उसने चारों ओर देख कर कहा—कहाँ, माँ कहा ?

—माँ, मां, कहां है ?

बरामदे पर कोई बैठा था—उसीसे उसने पूछा। उन्होने जवाब दिया—सीताराम ! आओ बेटा। यह रही मैं।

सीताराम जरा झेंप गया।—मेरी आँखों की रोशनी—जरा कम हो गई है न। मैं पहचान न सका मां !

—बैठो बेटा, बैठो।

सीताराम बैठ गया। उसकी समझ मे नही आया कि क्या कहे। दुख जताने तो वह आया नही, दुख प्रगट करने से यह मां हँसेगी, यह वह जानता है। लेकिन किस भाषा म उनका अभिनन्दन प्रगट करे ? वह भाषा तो उसे आती नही। उसके दिल की बात यहाँ आकर लजा रही है। वह कहने आया था—जानती हैं मां, देबू को और श्यामू को मैं बचपन से यह सब सिखाता रहा हू। लेकिन ये बातें झेंपा रही हैं। ऐसी मा न होने पर क्या वैसे बटे होते है ? धीरानन्द क्या किसी मास्टर का गढा हुआ धीरानन्द है ? हाय रे हाय ! इस मां के तीन बेटो मे एक है धीरानन्द तो दूसरा है देवानन्द। और उसने व मीराबाबू के शिक्षकों ने जाने कितने लड़को को जीवन भर शिक्षा दी है। लेकिन दूसरा धीरानन्द और दूसरा देवानन्द कहाँ है ? इस मां के सामने क्या वैसा दावा किया जा सकता है ?

मां ने कहा—तुम रो क्यो रहे हो बेटा ?

सीताराम रो नहीं रहा था, उसकी आँखों से जिस प्रकार पानी टपकता है—वैसी ही एक धार ढुलक आई थी—वही मां को दिखाई पड गया है। आँखें पोछकर सीताराम बोला—नही मां ! मैं रोया नही। मेरी आंखो से कभी कभी पानी गिरता है। वर्ना क्या यह कोई रोने की बात है ! यह तो मेरे लिए सीना तानकर बतलाने वाली बात है। देबू मेरा छात्र है।

मां हसी—वह हँसी देखकर सीताराम का मुह उतर गया। बड़ी इमारत की नीव पर जिस मजदूर ने काम किया है वह अगर कभी आकर गृहस्वामी से

कहे—यह मकान मेरा बनाया हुआ है, उस वक्त गृहस्वामी करुणा की जो हँसी हँसता है—यह वही हँसी है। उसने झटपट कहा—आपकी संतान के सिवा इस गाँव मे और कौन ऐसा काम कर सकता है ?

माँ थोडा चुप रहकर बोली—यह भी ऐसा क्या कुछ किया है बेटा। देश के लिए बडे बडे लोग सर्वत्यागी संन्यासी बन गए हैं, सबकुछ न्योछावर कर दिया है उन लोगो ने। आन्दोलन के समय—हजारो मे लोग तीर्थयात्री जैसे चले जा रहे हैं। इनमें कुछ हलचल से खिंच भी गये हैं।

माँ हँसी, इसके बाद ही बात को पलटकर बोली—लेकिन तुम्हारी आँखो की यह हालत कब से हुई है बेटा ? यह कोई अच्छी बात नहीं। इलाज कराओ। ऐनक ले लो।

सीताराम कहने को हुआ—पैसे की बात। कहने को हुआ, इलाज करवाने में माँ, रुपया चाहिए। वह मुझे कहाँ से मिलेगा ? लेकिन रुक गया। यह कहने पर माँ शायद सोच लें कि वह रुपया भीख माँग रहा है। साथ ही-साथ बोल पडेंगी, बीस-पच्चीस रुपए मैं दे दूँगी, शेष तुम संग्रह कर लो। उसने कहा, जी हाँ, अब कराऊँगा। सोचा था, शहद-अहद डालने से ही यह दोष जाता रहेगा लेकिन गया नहीं। अब इलाज कराऊँगा। चश्मा लूंगा।

उठकर चला आया वह।

●●

रुपया उसे मनोरमा ने दिया। मधुमक्खी-सी संचयी मनोरमा ! पैसे जोड-जोड-कर रुपया बनाती है, दस रुपए हो जाते ही उसे नोट मे परिणत करती है। वह रत्ना के ब्याह के लिए रुपया जमा कर रही है। वह कहती यही है लेकिन बात दरअसल यह नहीं है—यही उसका स्वभाव है। वह साक्षात लक्ष्मी है। पचास रुपए हाथ में देकर बोली, आँखो की तुम जाँच करवा लो। और भी रुपया लगे, मैं दे दूँगी।

आँखो की जाँच करवा आया वह। कलकत्ते से नहीं, चालीसेक मील दूर संथालो के बीच क्रिश्चियन मिशनरियो ने मिशन खोला है। वहाँ अच्छा अस्पताल है। आँखो का इलाज वहाँ अच्छा होता है। उन्हीं से इलाज करवा आया। साथ आकू गया। सीताराम मोटे शीशे वाला चश्मा लेकर लौट आया। रोशनी काफी लौट आई है।

नोट-बुक खोलकर उसने प्रसन्न-मन लिखा—"विद्या ज्ञान कितनी अनोखी सामग्री है। मृतप्रायजन को सजीवित कर देती। अंधे को दृष्टि देती। आह, आज नीला आकाश देखकर जान मे जान आई। उन पादरी साहबो को लाख लाख प्रणाम करता हूँ। और मनोरमा को दोनो हाथ उठाकर आशीर्वाद करता हूँ। लेकिन मेरी यह दृष्टि क्या टिकी रहेगी ? मैं तो प्रतारक हूँ। मैं प्रतारक जो हूँ। मैंने मनोरमा से धोखा किया है। आज भी झरने के किनारे बठे मन-

ही मन सोचता हूं और मन की आंखो से घर की खिड़की के परदे पर उभरी काली छाया से बनी तस्वीर देखता हू।

●●

इसके बाद तारीख है ३० मार्च १६३५ !

समाचार आया है कि धीवरो के लडके शशीनाथ को वत्ति मिली है। आंखो की रोशनी वापस पाना सार्थक हुआ है। सार्थक हुआ है। यही शायद उसके सर्वोत्तम सुख का दिन है। धीवर शशीनाथ के अन्धकारमय जीवन पथ पर उसके हाथो मे दीपक दे सका है। आज बडे स्कूल के वृद्ध हेडमास्टर नहीं रहे। आकाश की ओर मुख उठाकर उसने मन-ही मन कहा, मुझे दिया हुआ आपका आशीर्वाद सफल हुआ है। पूरे पाँच रुपए खर्च कर वह देव-स्थान पर पूजा चढा आया।

सन्दीपन पाठशाला को उसने उस दिन मनोरम ढग से सजाया। लडको को मिठाई बाँटी। स्वय जाकर शशीनाथ को बडे स्कूल मे भरती कर आया।

असमय वृद्ध सीताराम को मानो नया जीवन मिल गया। वह फिर जवानी की उमग लेकर पढाने लग गया। लोग उससे सस्नेह मजाक कर कहते हैं— बलिहारी पडित !

वह हँसता। अब भी बाकी है। जयधर पिछली बार मैट्रिक मे वृत्ति पाकर कालेज में पढ रहा है। वह आइ०-ए० मे वृत्ति पाएगा, बी० ए० मे पाएगा, एम० ए० मे पाएगा। हाकिम बनेगा। नौकरी पर जाने से पूर्व वह उसे प्रणाम करके जाएगा। बोलेगा, आपको एकबार मेरे घर आना होगा। वह जाएगा। वहाँ पहुँचकर उसको आशीर्वाद कर आएगा। सब लोगो के निकट जयधर परिचय देगा, मेरे गुरु। इन्होने ही मुझे मेरे हाथो को पकड खीचकर अपनी पाठशाला ले जाकर भरती किया था।

वह कहेगा, बेटा माणिक का मूल्य उसका अपना ही मूल्य होता है। उसी मूल्य पर वह राजमुकुट पर शोभा देता है। जो मणिकार उसका आविष्कार कर, उसे काट घिस कर उज्ज्वल बनाता है उसका नाम उस माणिक के मूल्य की बदौलत अक्षय बन जाता है। उसका असली मूल्य मणि काटने वाले मजदूर की मजदूरी से अधिक नही।

पढो—पढो सब ! पढते रहो ! मेरे लाल—मेरे माणिक पढते रहो !

"भगवान बुद्ध ने कभी राज्य सम्पदा त्याग कर सन्यास ग्रहण किया था। मनुष्य के सवप्रकार दु खमोचन के लिए तपस्या की थी। दीनतम मूर्खतम लोगो मे भी उन्होने अपना तपस्यालब्ध फल वितरण किया था।' पढो—पढो।

—क्या है ! क्या है तुम्हारा ? अब की तुम्हारी बारी है। इसबार तुमको वत्ति लेनी होगी। क्या कहत हो ?

—हिसाब मिल नही रहा है सर।

—हिसाब नही मिलता ? देखें। है ऽहेऽ । यह क्या ? ज्योतिष पाँच को

शून्य की तरह लिखता था। लिखकर जोड़ने घटाने के समय खुद ही उसे सिफर मानकर गणित मे गलती कर बैठता था। उसी गलती के कारण उसे वृत्ति नहीं मिली। तेरा—नौ और एक को लेकर सारी गड़बड़ी है। नौ को एक जैसा लिखोगे और एक को नौ जैसा। मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर दोगे। क्या बताऊँ ? तुझे भला बताऊ भी तो क्या ? ऐ ! ऐ रमन ! जरा छड़ी तो लेआ। *आज तुझे मैं मार मारकर सिखाऊँगा। एक और नौ जब भी लिखेगा तभी यह* मार तुझे याद आएगी। वह क्रुद्ध हो उठा।

लेकिन आखिर तक उसने आत्मसंवरण कर डाला। क्या होगा मार कर ? उसकी नियति है। सीताराम हजार कोशिश से भी उसको बदल नहीं सकेगा। वह थककर बैठे-बैठे नियति के रहस्य के बारे में सोचने लगा। धीराबाबू नियति नहीं मानते। हाय धीराबाबू ! सोचते सोचते उसे ऊंघाई आने लगी। कुर्सी के पीछे की ओर थकान से सिर टिका देता। चन्द लम्हों मे ही उसके नाक बोलने लगते। मुँह खुल जाता। लड़के एक दूसरे की ओर देख इशारा करते, मास्टर की हालत दिखाकर हँसते।

गोविन्द अब भी है। उसने आकू की सोहबत छोड़ दी है। वह भी देखता और हँसता है। लड़कों को इंगित में सिखाता है—दे मास्टर के मुंह में—मक्खी डाल दे।

घर से खेत मजूर ने आकर पुकारा, पंडित जी !

गोविन्द ने खखार कर आवाज की। सीताराम की नींद टूटी। चौंक पड़ा वह। —क्या है रे ? तू ? घर के सब—।

—ठीक है जी ठीक। रत्ना दीदी का रिश्ता आया है। रत्ना के मामा लोग-बाग साथ लेकर आ गए हैं। वे कन्या देखेंगे।

जय भगवान ! रत्ना ही एकमात्र सन्तान है। उसका विवाह हो जाने से ही वह मुक्त होगा। काम खत्म होगा। आज कुआर की चार तारीख है।

●●

फिर रत्ना के विवाह के दिन।

उसने अपनी नोटबुक मे लिखा— 'सन् उन्नीस सौ पतीस। बंगाब्द तेरह सौ इकतालीस, ७ अग्रहायण को विवाह। कितना आनन्द ! वर मट्रिक पास है। आइ०ए० पढ रहा है। भगवान तुम्हारी अपार करुणा है।''

●●

सत्रह

दीर्घकाल—बारह वर्ष बाद। पहली सितम्बर सन् १९४७।

बारह वर्षों के बाद सीताराम ने उस दिन अपनी नोटबुक खोली। देश

स्वतन्त्र हो गया है। उसकी आँखो पर मोटा चश्मा। अपने घर के ओसारे पर बैठ, नोटबुक खोलकर उसने पढने की कोशिश की। फिर उसकी दृष्टि धुधली पडने लगी है। क्षीण से क्षीणतर—बुझते हुए दीपक की नाई। आज धीराबाबू आएंगे। देश स्वतन्त्र हुआ है। स्वतन्त्र देश के स्वनामधन्य लेखक धीरानन्द मुखोपाध्याय। उन्होने लिखा है—"पडित, स्वतन्त्र रत्नहाटा को प्रणाम करने आऊँगा। तुमको देखने आऊँगा। तुम कहीं चले न आना। मैं खुद तुम्हारे घर आऊँगा। तुम्हारी नोटबुक ले जाऊँगा।"

जय-जयकार हो! धीराबाबू, आपकी जय-जयकार हो। लेकिन देखोगे भी तो क्या? गाज के गिरने से जला हुआ शालवृक्ष नही, शीशम नही, देवदारु नहीं, विशाल बरगद नही, विराट अर्जुन नही, श्मशान का आकाशस्पर्शी सेमल भी नही। अफला अपुष्पित बौना सा छोटा—सेहुड। सूख गया है, इस बार मरेगा।

लेकिन जब तुम आओगे तब तुमको तुम्हारा प्रॉमिस नोटबुक तो मुझे देना ही है। वह नोटबुक और पेंसिल लेकर बैठ गया।

शुरू कर अन्दाजे में ही लिख गया।

—"क्या देखने आ रहे हैं धीराबाबू? देश स्वतन्त्र हुआ है। उस दिन असख्य ध्वज, अनगिनत झण्डे—रोशनी—अनेक गाने—प्रभूत आनन्द कलरव से देश उच्छवसित हो उठा था। किन्तु रत्नहाटा तो ध्वसोन्मुख है। इस सीताराम की तरह ही वह अपने अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा मे है।

आपने ससार का इतिहास पढा है धीराबाबू! मैं सीताराम—किसान घर का लडका—अंग्रेजी स्कूल में—नार्मल स्कूल में मैंने भारतवर्ष का इतिहास पढा था। फिर आजीवन पाठशाला की पडिताई, पाठशाला के पाठ्य मे इतिहास नही है। इसलिए भारतवर्ष का इतिहासभर भी मैं करीब करीब भूल गया हू। भूगोल? भूगोल भी वैसा ही। रत्नहाटा के बीच मे खडे होने पर चारो ओर आकाश जितने भर मे गोल होकर झुक आता है उतनी ही सीमा तक मेरा भूगोल है। लेकिन इस बार इतिहास देखा। सन् उन्नीस सौ इक्कीस से तुम रत्नहाटा के पुत्र—भारतवर्ष के स्वतन्त्रता युद्ध में मत्त हो गए, वह मेरे लिए भारतवर्ष का स्वतन्त्रता-युद्ध नही, रत्नहाटा का स्वतन्त्रता युद्ध रहा। सन् सैंतालीस मे आकर वह युद्ध समाप्त हुआ। इस बीच ससार का इतिहास आगे बढकर रत्नहाटा के इतिहास को अपने मे मिला चुका था। युद्ध ने बडे-बडे राज्यो के इतिहास को ही केवल नही बदला, रत्नहाटा के इतिहास को भी बदल दिया। युद्ध आया। रत्नहाटा तहस नहस हो गया। बडी बडी गृहस्थियाँ टूट गयी। श्री गयी—सम्पदा गयी। जो लोग सिर ऊँचा किए हुए थे उनके सिर झुक गए। मणिबाबू को एक बार देख जाना धीराबाबू। कमरे के भीतर चुपचाप बैठे रहते हैं। नौकर रखने की भी हैसियत नही रही। खुद ही तमाकू बनाकर पीते हैं। द्वैपायन मे महामान्य दुर्योधन की कथा पुराण मे पढी है। अपनी रत्नहाटा कथा म मणिबाबू के अ धकार म दुबक कर बैठने की बात लिखना।

मैं जानता हूँ धीराबाबू, तुम कहोगे, "पंडित अब भी बाकी है। जपा भजन।" तुम मनुष्यों के साथ मनुष्य के रूप में विला गए हो। तुम हँसोगे। बोलोगे—जिन सम्बन्धी व्यक्तियों की उन लोगों ने वंचना की है—तुम उनकी ओर हो। शायद तुम कहो, 'मैं ही गदायुद्ध के समय—जाँघ पर चपत मारकर गदापात का इंगित दूँगा। देखा। मैं अगर रहा—तो रोऊँगा। मैं रोऊँगा, धीराबाबू!"

मेरी आँखें जाती रहीं—अच्छा ही हुआ। मुझे कसाखुरा रत्नहाटा अब और नहीं देखना पड़ेगा। तुम हँस कर कहोगे इसमें डरने का क्या है पंडित! फिर नए तौर से गढ़ूँगा।

गढ़ो, ऐसा ही गढ़ो धीराबाबू! अमृत की तपस्या है तुम्हारी—तुम गढ़ो। मैं पाठशाला का पंडित हूँ। मेरी सांदीपन पाठशाला ही टूट गयी है, मैं अंधा बना बैठा हूँ। मेरी मनोरमा नहीं रही। मेरी रत्ना विधवा हो गई है। मैं मृत्यु-कवलित हूँ। अजगर जिस प्रकार धीरे धीरे खरगोश को पकड़कर ग्रास करता है—उसी प्रकार से मुझे लील रही है। लेकिन फर्क क्या है, जानते हो? फर्क है—खरगोश सा मैं आर्त्तनाद नहीं कर रहा हूँ।

मनोरमा हँसते-हँसते मरी, मृत्यु उसने चाही थी। उसी से सीखा है। लिखना बन्द कर वह नोटबुक के पन्ने उलटता रहा।

"सन् १९३७ के १२ दिसम्बर मनोरमा को मुक्ति मिली। हाँ, यह मृत्यु उसके लिए मुक्ति ही थी। बड़ा ही निष्ठुर आघात उसे लगा था। रत्ना का वैधव्य उसे निदारुण शैल सा दिल पर आ लगा था।" रत्ना विधवा हो गयी है!

फिर नोटबुक के पन्ने पलटे।

सन् १९३७ के ७ सितम्बर को रत्ना विधवा हुई। लिखा है—'पाठशाला में बैठा था कि टेलिग्राम मिला।" रत्ना—उनकी एकमात्र कन्या थी—बड़ी साध से उसका नाम रत्नावली रखा था। आइ ए पढ़ने वाले लड़के से उसका ब्याह किया था। याद आ रहा है—पादरियों की चिकित्सा से उनकी आँखों की रोशनी करीब करीब ठीक ही थी। आसमान में उस दिन बादल थे। लड़के पढ़ रहे थे। अचानक टेलीग्राम आया। टेलीग्राम पढ़कर वह पत्थर हो गया था। कानों से कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था, आँखों से कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था, संसार मानो पुछ चुका था। गोविन्द भयभीत हो गया था—उसने आकर पुकारा था—पंडित! पंडित!

वह अपने आपे में आया, उसे सुनाई पड़ा, कोई शब्द हो रहा है—झर, झर, झर, झर! लेकिन समझ न सका किसका शब्द है। लड़के पढ़ रहे हैं—अ आ इ ई।—क र—कर। ख ल—खल। ज ल—जल।

जल गिरे, पात हिले। जल गिरे पात हिले।

सीताराम की आँखों के आँसुओं से दृष्टि अवरुद्ध हो चुकी थी। झर झर, धारा में वर्षा उतर आई थी उस वक्त—कानों से सुना था आँखों से देखा नहीं।

तभी से फिर उसकी आँखो से पानी टपकना शुरू हो गया। वह आज भी थमा नही। आँखें हैं दृष्टि नही, देख नही पाता, पानी टपकता ही रहता है, अपने-आप ही टपकता है।

उधर इस शोक से मनोरमा ने बिस्तर ले लिया। फिर उठी ही नही। *नि शब्द अपने बुरे भाग्य की लज्जा से—ईश्वर पर—सीताराम पर रुठ कर ही* वह चली गई एक दिन।

मनोरमा की अन्तिम बातें भी लिख रखने की इच्छा थी उसकी। कई रोज कोशिश भी की थी। लेकिन लिख न सका। जितनी ही बार कोशिश की—उतने ही बार उसकी आँखो से अविराम जल गिरता रहा था। नोटबुक और कलम रख देनी पडी। रहने दो लिखना। क्या होगा लिखकर ? दिल ही मे लिखा रहा। अक्षर-अक्षर अस्थि-पजर पर खुदे रहे।

सज्ञान ही मनोरमा मृत्यु की गोद मे ढुलक पडी थी। मानो हँसते-हँसते मरण सागर मे डुबकी लगाकर फिर उतरायी ही नही—गल गयी चीनी की गुडिया-सी। सिर्फ यारेक बार व्याकुल हो मुह से साँस लेने की कोशिश की थी। उसके बाद ही सिर मानो एक ओर ढुलक गया था।

मृत्यु से पूर्व उसने बार बार उसके हाथ थाम कर कहा था—तुमको मैं सुखी न कर सकी। आशीर्वाद करो, अगले जन्म मे मैं तुम्ही को पाऊ, तुम्हारी मन माफिक बन कर तुमको सुखी बना सकूँ।

चौंक पडा था सीताराम।—क्यो ? क्यो ? यह बात तुम क्यो कर रही हो मनो ? तुम मुझे बडे भाग्य से मिली थी। ऐसी बात न करो तुम। नही-नही। कहकर वह चिल्ला उठा था।

मनोरमा ने भी कहा था,—नही। उसके मुख पर एक विचित्र मुस्कान खिल आई थी। कहा था, मैं जानती हू। मैं जानती हू। तुम सुखी नही हुए। तुम्हारा असन्तोष मैं भाँप जो लेती थी।

सीताराम हक्काबक्का रह गया था। उसका दिल अनुशोचना से भर गया था। जी मे आया था कि अपना अपराध स्वीकार कर ले। पर न कर सका। साथ-ही साथ मनोरमा की मृत्युशय्या के सिरहाने दीवार पर क्षणभर के लिए एक चित्र उभर आया। रात के अधेरे मे एक प्रकाशित खिडकी के परदे पर काली छाया से अकित एक चित्र।

बहुत देर बाद अपने को सम्भाल कर उसने उससे कहा था—तब तो तुम भी सुखी नही हो सकी मनो ! तुम मुझे क्षमा कर जाओ मनो !

मनोरमा ने बडी सुन्दर हँसी हँसी थी। हँसकर कुछ कहने जा रही थी। लेकिन उसी क्षण जाने क्या हुआ। वह व्याकुल और बेचैन हो उठी, चन्द बार मुह खोलकर साँस लेने की कोशिश की उसने—हाथ बढ़ाकर उसको पकडने की कोशिश की फिर सभी कुछ स्थिर हो गया, वह ढुलक गई।

सीताराम रोया नही। फूल चुन सजाकर उसने मनोरमा को अपने हाथो

चिता पर लिटा दिया था। उसने अपने बचपन मे पुत्रशोक विजयी महर्षि द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर को शान्ति निकेतन मे देखा था। मन ही मन उस दृश्य का स्मरण किया था उसने। प्रशान्त चेहरा लिये बैठे-बैठे रत्ना को उसने सान्त्वना दी थी। आज से उसी को रत्ना का माँ-बाप दोनो बनना पड़ेगा। दिल की पीर दिल ही मे रख उसको हँसमुख सारा जीवन बिताना पड़ेगा।

लोग ढाढस बँधाने आकर थोड़ा सा अचरज ही करने लगे थे। प्रौढ वय म पत्नी वियोग स कोई भी सीना पीटकर रोता नहीं है, वह देश और समाज में लज्जाजनक बात मानी जाती है। लेकिन उसको इस प्रकार स्थिर और शान्त देखने की भी उन्होने प्रत्याशा नहीं की थी। लोगो ने भला भी कहा था और बुरा भी। हालाँकि वह सब आड ही म कहा गया था। मुह प ऊपर कहा था कन्हाई राय न। कन्हाई काका को उससे प्यार था। लेकिन विचित्र मनुष्य था वह। उसने उस दिन उससे कहा था—तुम तो बेटा, पत्थर हो। फिर कहा था—सो भी कैसे कहू। पत्थर म न सुख है न दुख। तुम्हारा सभी कुछ उल्टा पुल्टा है बेटा! सुख के दिनो तुम्हारे चेहरे पर कभी हँसी नहीं देखी। फिर इतना दुःख शोक है—तुम्हारी आखो में आसू नहीं, सुख के दिनो में मुख देखकर लगता कि हाय इस आदमी को कितना कष्ट है! आज देख रहा हू, हँसकर बुला रहे हो आओ काका, आओ।

हथेली उलट कर उसने जताया था—क्या जान! कुछ भी न समझ सका तुमको। फिर बोला था, अच्छा, बताओ भला तुम्हें दुःख में ही सुख मिलता है कि नहीं?

सीताराम ने कहा था, ससार म दुःख ही तो परम वस्तु है राय काका! सुख के समय लोग भगवान को भूल जाते हैं, दुःख ही उसे याद दिला देता है।

राय ने कहा था, क्या जाने बेटा, दुःख किस कहते हैं, नहीं समझ सका।

—नहीं समझे? सीताराम हँसा था।

—कौन जाने? दोनो हाथ उलटकर उपेक्षा से उसने कहा था—हँसा, खेला, नाचा, गाया—दिन गुजर गया। खातमा भी कर लाया हू। कहाँ दुःख कहाँ? हालाँकि नाचने में पैर फिसलता है, दौड़ने में ठोकर लगती है, जिन्दा रहने मे बीमारी होती है, दारू पीने पर खुमारी खत्म होते वक्त सिर भारी हो जाता है, अब मर्जी चीखता चिल्लाता रोता हूँ उसी मे सुख मिलता। तुम रोओ—देखोगे, सुख मिलेगा।

जाते वक्त बोला था—मैं तो खुद आया ही हू रानी माँ ने भी सन्देश भेजा है। कहा है—गाड़ी पर एक दिन जाऊँगी। बड़ा दुःख मिला है सीताराम को, उससे बेटे की तरह स्नेह करती हू—मुझे भी बड़ा दुःख मिला। एक दिन जाऊँगी।

यह क्या? चौंक पड़ा था सीताराम। माँ आएँगी क्यो? नहीं नहीं।—काका माँ से कहना मैं खुद ही जाऊँगा। कल ही जाऊँगा।

अगले दिन ही वह गया था।

माँ ने उसके मुख की ओर देख सिर पर हाथ रख आशीर्वाद किया था—तुम्हें सिद्धि मिलेगी बेटा। तुम्हारी सहनशक्ति देखकर मैं समझ रही हूँ—तुम्हें मिलेगी।

वह भी एक विचित्र नारी हैं। सदा से सीताराम जितना उनसे प्यार करता रहा है—उतना ही डरता रहा है। वह भय उसका तिल भर भी कम नहीं हुआ। लेकिन हाँ! रानी माँ—सचमुच की रानी माँ थी। हिमालय की सफेद बर्फ से ढकी। वैसी ही उज्ज्वल, वैसी ही प्रदीप्त, वैसी ही कठिन। हालाँकि उन्हीं के वक्ष से—गंगा-यमुना ब्रह्मपुत्र निकल आए हैं। करुणा की धाराएँ।

कितना नाम है धीरावाबू का! कितना गौरव! देश-देशान्तर सारे भारतवर्ष भर में उनकी ख्याति फैली हुई है। फिर भी उस एक अपराध के कारण वे कभी बेटे के पास नहीं गईं बेटे को बुलाया नहीं। कहा है, अकेले धीरा को कैसे बुलाऊँगी? बहू का छुआ हुआ खाऊँगी नहीं, उसके बच्चों को गोद में लेते मन सकुचाएगा—उनका मैं बुला नहीं सकूँगी, धीरा क्या खुशी से आ सकेगा? माँ की इस भ्रान्ति से सीताराम को क्लेश होता। लेकिन भ्रान्ति हुई भी तो क्या, उनकी चरित्र महिमा और अन्तर वेदना से वह भ्रान्ति भी महिमान्वित हो उठी है। उनकी वेदना को सीताराम समझता था।

देबू को लेकर ही वे प्रसन्न-मन सारा जीवन बिता गईं। देबू क्रमशः इस इलाके का नामी देश सेवक बन गया है। वे इसी में खुश थीं। लेकिन उन्होंने एक अन्याय कर डाला है। देबू श्यामू के शुभाकांक्षी होने के कारण ही सीताराम ने इस बात को महसूस किया है। जमाना बिगड़ते जाने के बावजूद—माँ ने घर के क्रिया कर्म और हर एक के प्राप्य में कोई कमी नहीं की है। फलतः देबू श्यामू की हालत ज्यादा खराब हुई है। किसी का प्राप्य घटाने का प्रस्ताव मुँह में लाने का भी उपाय नहीं था। लाने पर—उनके चेहरे पर प्रचंड घृणा का भाव उभर आता था—क्या गजब की निगाहों से वह देखती थीं। रत्नहाटा के बाबुओं की कोठी का जमाना मानो उन्हीं के साथ साथ चला गया। माँ चली गयी हैं किन्तु उनको याद कर सीताराम आज भी भय और सम्भ्रम से सजग हो उठता है। उनकी महिमा और माधुर्य के बारे में सोचते-सोचते वह उदास हो जाता है।

माँ के साथ आखिरी भेंट हुई थी उनकी रोगशय्या पर। उस समय पाठशाला उसने बन्द कर दी। आँखों की रोशनी उसकी बिल्कुल क्षीण हो चुकी थी। लाठी के सहारे राह चलकर वह माँ को देखने गया था।

—कैसी हैं माँ?

उस बात का जवाब उन्होंने नहीं दिया था। पूछा था, तुम्हारी दृष्टि ऐसी हो गई है बेटा?

सीताराम हँसा था। माथे पर हाथ रखा था।

माँ ने कहा था—दीक्षा ले ली है बेटा? दीक्षा ले लो तुम। बाहर की

रोशनी जब कम होने लगी है तब भीतर रोशनी जलाने का प्रबन्ध करो।

●●

दीक्षा उसने ली है।

गुरु को प्रणाम, और माँ—आपको प्रणाम। गुरु ने दिया है मन्त्र—और आपने दिया था परामर्श। धीराबाबू मन्त्र की बात सुनकर हँसे थे। सीताराम ने उनको पत्र से यह समाचार भेजा था। जवाब में धीराबाबू ने लिखा था—"कौन सा मन्त्र लिया तुमने पंडित? सरस्वती मन्त्र हो तो मुझे कुछ कहना नहीं। लेकिन वह दीक्षा तो तुम्हारी बहुत दिन पहले हो चुकी है। खुद ही ली थी तुमने। उसका गुरु कौन है—सो तुम ही जानते हो। पंडित, माथे पर तिलक चन्दन लगाये तुम्हारे चेहरे की कल्पना करता रहा—और हँसता रहा। नहीं नहीं पंडित, यह मुझे अच्छा नहीं लगा।" सीताराम ने लिखा था, "आपका कर्म उच्च है, साधना विपुल, शायद जन्म जन्मान्तर का पुण्य हो या किसी भी कारणवश जन्म से ही आपकी उपलब्धि की प्रतिभा बड़ी है। आपको मन्त्र की आवश्यकता नहीं, मुझे है।"

है क्यों नहीं! धीराबाबू जो लोग आकाश में उठते हैं—उठ सकते हैं, उनसे आकाश की बातें, आकाश में उठने के पथ के बारे में उपदेश या मन्त्र लिए बिना धरती के मनुष्य के लिए क्या उपाय है?

तो सुनो कन्हाई राय की बात बताऊं।

वह जो मनुष्य कन्हाई राय है—जिसने हँस खेल नाच कूद कर सारी जिंदगी बिता दी उसकी आखिरी बात बताता हूं, सुनो। उपपद तत्पुरुष नागों ने उसे पसन्द नहीं किया, उसने भी किसी की परवाह नहीं की। लोगों ने उसकी बात सुनी नहीं लेकिन कहने से वह चूका भी नहीं। बाबुओं की कोठी में सारी जिंदगी बिता दी। उनके हितों की कामना करता रहा। बाबुओं की वसूली से पूर्व वह अपना हक वसूल करता था, शराब पीता था ऊँची आवाज में कहता था, कौन जाने बाबा, दुःख किसे कहते हैं। उसी कन्हाई राय ने मरते समय कहा—सीताराम से ही कहा—भगवान को क्या कहकर पुकारूँ, बता भला सीताराम? पुकारने जा रहा हूँ पर पुकार नहीं पा रहा हूं। बड़ा डर लग रहा है! हाय रे बप्पा? बता भला क्या करूँ?

निमोनिया हुआ था कन्हाई राय को। बाबुओं की कोठी में ही मरा। माँ तब नहीं रही, इसलिए कोई तीमारदारी भी उसकी नहीं हुई। बिना किसी देख-रेख के ही पड़ा था। देखने जाकर सीताराम ही आखिरी तीन दिन उसके पास रहा। छोड़कर न आ सका। उस वक्त वह घोर विकार में था। ओं! ओं! शब्द कर छाती के दर्द से वह कराह रहा था, बीच बीच में विह्वल आँखें लाल उँगली बढ़ाकर चिल्ला उठता था। मरा रे, मरा रे! गया, गया, गया।

क्या हुआ? राय काका! राय काका!

जा रे! साला खूब बच गया।

आखिरी दिन होश में आए थे। सीताराम को देख हँसकर कहा था—तुम ? हाँ, तुम्हारे सिवा और हो भी कौन सकता ?

सीताराम ने कहा था—कैसे हो ?

सीने पर हाथ रख राय ने कहा था—छाती में बड़ा दर्द है।

इसके बाद वही बातें कही थीं। कहा था—उस तकलीफ से ज्यादा तकलीफ मन में है। समझे ? भगवान को क्या कहकर पुकारूँ, समझ नहीं पा रहा हूँ। पुकारने को होकर भी पुकार नहीं पा रहा हूँ। बता सकते हो तुम ? मरने में डर लग रहा है।

●●

दीक्षा की बात पर तुम हँसो मत धीराबाबू, तुमको तो हँसना नहीं चाहिए। धीराबाबू, जो नाहक लोग माटी पर रहते हैं वे हाथ बढ़ाकर भी ऊँचे तबके के लोगों तक पहुँच नहीं पाते हैं। ऊपर वाले लोगों को वे समझ नहीं पाते। और जो नाम्ह लोग सुयोग-सुविधा पाकर ऊपर उठ जाते हैं वे भी हाथ बढ़ाकर माटी के मानुस को छू नहीं पाते। लेकिन जो लोग सचमुच बड़े लोग हैं, वे माटी पर खड़े होकर भी ऊँचाई में रहने वालों को अपनी पहुँच में पाते हैं, फिर ऊँचे उठ जाने के बाद भी नीचे की ओर हाथ बढ़ाकर माटी मानुस के हाथ थाम लेते हैं। उनको समझने में कोई गलती तो नहीं होनी चाहिए।

दीक्षा न लेता तो मेरा वक्त कैसे कटता, बताइए ?

आँखों के सामने से लगभग सभी कुछ पुछ गया है। पृथिवी सफेद कोहरे में ढकी हुई। ओसारे बैठा रहता हूँ और मन में इष्ट का जाप करता रहता हूँ।

दिन के नौ बजे एक बार दुनिया से सम्पर्क स्थापित होता है।

लड़के रास्ते से पाठशाला जाते हैं। सन्दीपन पाठशाला की घड़ी घर में टंगी है। उसमें टन्न-टन्न नौ की टकोर बजते ही उसके कान सजग हो उठते हैं। पैंट्‌ट सुनाई पड़ने लगती है। सीताराम झुक झुककर देखता। कोहरे में धुँधली आकृतियों जैसे लड़कों को देखता—रोजाना ही उनको बुलाता, पूछता, स्कूल चले सब ?

—जी।

—स्कूल कैसा लग रहा है ?

—अच्छा।

—अच्छा ? सच कह रहे हो ?

—जी, सच कह रहा हूँ।

—मास्टर मारता नहीं ?

—मारता है।

—तो ? तो फिर अच्छा क्यों लगता ?

—लगता है। कितने लड़के आते हैं इस गाँव, उस गाँव से। कितना सुन्दर भवन है ! बहुत-सी तसवीरें हैं। कितने चमचमाते बेंच हैं।

सीताराम चुप हो जाता। वह काल के परिवर्तन के बारे में सोचने लगता। बड़े परिवर्तन आए हैं। पिछले सन् चालीस में उसकी सन्दीपन पाठशाला बन्द हो गयी। उस वक्त फ्री प्रायमरी स्कूलों की नींव पड़ी थी। उसको कोई अफसोस नहीं था। वह अक्षम हो गया है और दूसरी ओर बिना फीस के देश के सभी बालक पढ़ सकेंगे, लिहाजा इसमें खेद करने का क्या है! खेद केवल इतना ही है—अगर सिर्फ नाम रह जाता। सन्दीपन पाठशाला। दूसरा खेद, अपने प्रथम जीवन में उसे ऐसा मौका क्यों नहीं मिला? काश! वह ऐसे एक सुसज्जित स्कूल में शिक्षकता कर सकता। वह उदास हो जाता। अचानक उसे एक बात याद आ जाती। वह पूछता—क्यों—क्यों! तुम लोगों की कुर्सी मेज, मकान-अकान तो अच्छे हैं—फूलों का बगीचा बनाया—तुम लोगों ने? अजी! कहाँ? सभी चले गये क्या?

वे उस वक्त चले गए थे।

सीताराम चुपचाप बैठा रहता। रास्ते से कोई जाता तो वह गुहारता—कौन जा रहे हो?

—मैं हूं पंडित।

—कौन? षष्ठीचरण?

—हाँ।

—सुनो सुनो।

—ढेर सारे काम हैं पंडित, सुनने की इस वक्त फुरसत नहीं। गाय दुहना है। बछड़ा अभी नन्हा-सा है। तिस पर गाय सिर हिलाती है। किसी औरत की क्या मजाल जो पास चली जाए।

—जाओ। तो फिर जाओ।

षष्ठीचरण आधा झूठ बतला गया। गाय शायद दुहना है लेकिन उसके लिए इतना हड़बड़ाकर वह नहीं गया, सीताराम के पास बैठना नहीं चाहता, तभी चला गया। वह जानता है, वे कहते हैं—अरे बाप, ऐसे मनहूस के पास कहीं बैठा जा सकता है? बस पढ़ाई लिखाई की बातें—नहीं तो विश विश बातें। अगर रस की दो बातें करो तो छी छी करने लगेगा। राम कहो।

वह करे भी तो क्या? उससे यह सब नहीं होता। जाने कैसी रुचि बन गई है उसकी! पवित्र तो है लेकिन वह जरा खुश्क और कठिन है इसमें कोई संदेह नहीं। दीर्घश्वास छोड़ वह बुलाता—रत्ना बिटिया!

रत्ना इस वक्त रसोई के काम में लगी रहती है। वह भीतर से जवाब देती, क्या है बाबू?

—क्या कर रही है?

—सब्जी चढ़ाई है बाबू।

—अच्छा, तो फिर रहने दे।

—क्यों बाबू? चाय पिओगे?

अब उसने यह एक आदत डाल ली है। चाय पीता है। चाय की लालच में दो-चार जने आ जाते हैं। कोई न आने पर रत्ना ही एक कटोरी लेकर पास बैठ जाती है।

और कुछ भी न होने पर चुपचाप बैठा रहता है। सोचता है—सूर्य के चारों ओर पृथ्वी घूम रही है। चल रही है तो चल रही है। यही केवल बैठा है। यह भावना भी दुस्सह हो उठे—तो क्या करेगा वह ? बता सकते हो धीराबाबू ? क्या करेगा ?

तब उसी इष्टमंत्र का जप। वह इस इष्टदेवता के रूप का ध्यान करने की कोशिश करता। बिना मंत्र के कहीं चल सकता है धीराबाबू ?

समय बीत जाता। घंटे मजे में बीत जाता। कहाँ से बीत जाता, यही उसकी समझ में नहीं आता। रत्ना आकर बुलाती—बाबू उठो, नहा लो, दिन काफी चढ़ आया है।

सचमुच दिन काफी चढ़ आया है, स्वतंत्र रत्नहाटा के नए प्राथमिक विद्यालय में, बड़े स्कूल में टिफन का घंटा बजता—टन टन टन्न—ट न न न न।

●●

धप्प धपास, धप्प धपास,—दो असमान शब्द द्रुत आगे बढ़ते आ रहे हैं। सीताराम ने सुनकर ही जान लिया, श्री बाँकाचाँद गोविन्द छोटे-बड़े पैरों से एक कम एक ज्यादा आवाज उभारते भागते आ रहे हैं। आओ बाँका चाँद, बंकुबिहारी।

वही—वही एक है—उसके इस निस्संग जीवन का साथी। बीच-बीच दो-तीन दिन के बाद एक एक दिन गोविन्द आता है। एक बेला—किसी दिन दोनों बेले ही यहाँ काट जाता। दुनिया-भर की खबरें लेकर आता है।

—समझे पंडित, बड़ी जबरदस्त खबर है आज !

—क्या जबर खबर है बाँकाराय ?

—याने कलजुग का खात्मा समझो। माँ चंडी के थान में सभी पूजा कर सकेंगे, मंदिर में प्रवेश कर सकेंगे, कानून बन गया। और साथ ही साथ एक जबरदस्त मामला, चाटुज्जे के घर में किम्भूतकिमाकार बच्चा पैदा हुआ है, सिर पर सींग ! है न कलजुग का खात्मा !

ऐसी ही विचित्र खबरें वह ले आता है। किसी दिन खबर लाता—"मंत्री आ रहा है रत्नहाटा में। बाबू बाबू में लड़ाई छिड़ गयी है। यह कहता मंत्री हमारे घर में टिकेगा तो वह कहता कभी नहीं, हमारी कोठी में ठहरेगा।'

स्वाधीन देश का मंत्री आ रहा है। बाबू लोग तो झगड़ेंगे ही। झगड़ें। लेकिन ये मंत्री लोग बाबुओं के घर में टिकते ही क्यों हैं ? मन असन्तोष से भर जाता। गरीबों के घर में क्यों नहीं ठहरते ?

किसी दिन खबर लाता, कलकत्ते में मकानात चूर चूर हो गए हैं। हवाई जहाज टूट पड़ा है।

किसी दिन बाँका चाँद आता, कहता, "हो गया है पंडित ! चलो कल ही चलो। बिल्कुल आँखें दुरुस्त कर घर लौटोगे। सपने देखा एक तीर्थ उभर आया है, कैसा भी मरीज क्यों न हो, सात दिन नहाकर लोटपोट खाते ही चंगा हो जायगा। समझे, कोढ़ी अच्छे हो गये हैं। यहीं नजदीक ही। बीस कोस होगा।

सीताराम हँसता। वह इष्टमंत्र का जप बेशक करता है, लेकिन यह विश्वास उसमें नहीं है।

एक दिन खबर ले आया था, पंडित, तुम्हारे जयधर को देखा। ओफ ! इतना भारी बदन हो गया है—सारे जहाँ का सामान लेकर टीसन पर उतरा। मुझे पहचाना जी। बोला, तगड़े गोविन्द ! अर्दली मुझे भागो-भागो कह रहा था लेकिन जयधर ने पहचान लिया तो [redacted] खिसक गया। तुम्हारे बारे में पूछा, मैं तुम्हारा सारा ब्योरा सुना रहा था लेकिन पूरा सुना न सका। उससे पहले ही किराए की मोटर आ धमकी। सामान लादकर सर्र से चली गई। मुझे आठ आना दिया है। सोचा था, पूरा रुपया देगा। हाकिम है। लेकिन मिले आठ ही आने।

जयधर अब मुन्सेफ है।

सीताराम की नोटबुक में जयधर का नाम बहुत बार रहने की बात है लेकिन ऐसा नहीं है। उसके मैट्रिक में स्कालरशिप मिलने का समाचार। आई ए में द्वितीय होने की खबर। उसके बाद भी एक खबर है जिसको लिखकर भी सीताराम ने काट दिया है। जब जयधर बी ए पढ़ता था, एक दिन आकू स्टेशन से भागता हुआ आया। सर, जयधर स्टेशन पर उतरा है।

जयधर ! सीताराम ने उच्छवसित हो आकू से कहा था, आकू, उसे जाकर बता, मैं बुला रहा हूँ। जल्दी जा।

जयधर कालेज से आता-जाता है, इस रास्ते से नहीं। दूसरे स्टेशन पर उतरकर घुमावदार रास्ते से जाता है। उसकी माँ उस वक्त नौकरी छोड़कर चली गयी है। सीताराम जयधर के झेंपने का कारण जानता था।

आकू गया। सीताराम प्रतीक्षा में उद्ग्रीव बैठा रहा। लेकिन दोनों में एक भी नहीं आया। अन्त में ज्योतिष साहा के भतीजे से मालूम हुआ—आकू और जयधर में स्टेशन पर बड़ा भद्दा सा झगड़ा हो गया है।

—क्यों ? कैसा झगड़ा ? उसे पछतावा हुआ—क्यों उसे बुलाने उसने बदहाल आकू को भेजा था।

सीतेश जरा चुप रहकर सिसकते हुए ही बोला—आकू ने कहा था, पंडित से भेंट करके जाना जयधर। इस पर जयधर ने कहा था—इससे मुझे घर जाने में देर हो जाएगी। इसी पर आकू ने शायद कहा था, देर हो जायगी इसलिए पंडित से नहीं मिलेगा ? अजीब निमकहराम है तू ! यही झगड़ा है। जयधर ने भी क्या कुछ कहा है, आकू ने भी कहा। और आकू की जुबान !

जयधर ने कहा था—बहुत-सारे पंडित, बहुत सारे मास्टरों के पास ही पढ़ा,

सभी से मिल-मिलकर प्रणाम करना पड़े तो—पैर घिसकर आधे हो जायेंगे और माथे पर गूमट निकल आयगा। तेरा तो बस वही एक पंडित है—तू जा।

भाकू ने जयधर को नौकरानी का बेटा होने का स्मरण करा दिया है। बहुत सारी बातें कही हैं उसने—रतनहाटा के बाबुओं का बेटा है वह। लेकिन जयधर विश्वविद्यालय का कृती छात्र है, उसने ऐसी तीखी भाषा में उस पर तीर चलाये हैं कि भाकू ने हार मान ली है। इसके बाद जयधर दूसरा रास्ता पकड़ कर चला गया है। भेंट नहीं की।

यह घटना लिखकर भी उसने काट दिया है।

लेकिन उसके बी ए एम ए पास की तारीखें हैं। मुन्सेफ होने के समाचार पाने की तारीख है। बस और नहीं।-कल्याण हो जयधर का, जयधर को उसने जीवन से पोंछ डाला है। मुन्सेफ होने वाली खबर पाकर उसने जयधर को आशीर्वाद करते हुए पत्र लिखा था। अपनी दशा के बारे में भी लिखा था—हो सके तो एक बार अभागे पंडित को भी देख जाना। जवाब में चिट्ठी नहीं आई, पाँच रुपये का एक मनी-आर्डर आया था। हाय जयधर! सीताराम को तूने भिखमंगा ठहराया। उसने क्या तेरी सहायता पाने के लिए अपना दुख-दर्द सूचित किया था रे? रुपया उसने लौटा दिया था। उसी दिन से उसने उसे अपने मन से पोंछ डाला था।

फिर भी उसने उसकी अमंगल-कामना नहीं की। धीराबाबू की ही एक बात का उसने स्मरण किया था—धीराबाबू एकदिन वेबू का प्रथम भाग उलट पुलटकर देखते हुए बोले थे—विद्यासागर महाशय ने त्रिकालदर्शी की तरह प्रथम भाग की रचना की है पंडित। देखा है आपने—पहले अचल है फिर अधम। संसार में जो चलता नहीं वही अचल है, और जो अचल है वही अधम है। उस दिन सीताराम ने कहा था, नहीं धीराबाबू, यह बात लेकिन उल्टी है, जो अधम होता है वही अचल हो जाता है। हम लोगों की ओर देखिए न, अधम भाग्य लेकर जन्मे हैं तभी संसार में अचल बने रहे। शिवकिंकर की ओर देखिए, अधम कुल में अधम भाग्य लेकर उसने जन्म नहीं लिया है तभी अचल होने पर भी उत्तम के रूप में चला जा रहा है।

●●

असम पैरों से विचित्र शब्द करते हुए गोविन्द आज भागता हुआ आया।—पंडित!

—क्या समाचार है बाँकाचाँद? कौन-सी संगीन घटना घटित हो गयी आज?

—बस आ ही पहुँचा पंडित!

—कौन?

—तुम्हारे धीराबाबू जी।

—यह क्या? वे तो शाम के बाद आएंगे।

—नहीं जी, उसने मीटिंग-फिटिंग मुलतवी कर दी और कहा, पहले मैं पंडित से मिलूंगा।

सीताराम अभिभूत हो गया। विश्वसंसार मानो मधुमय हो उठा! धरती पर इतना मधु है? धीराबाबू कौन है? यह तो सारे संसार का मधु है—इस संसार का दान। संसार के मधु से धीराबाबू मधुर है।

पंडित! धीराबाबू सचमुच आकर खड़ा हो गया।

सीताराम अपने जीर्ण झुके हुए शरीर को सीधाकर बैठ गया। धीराबाबू! उसका शरीर आनन्द से रोमांचित हो उठा। वह उठकर खड़ा हो गया।

धीरानन्द ने जोर से उसे अपने वक्ष में बाँध लिया।—मैं आ गया हूँ पंडित।

मैं जानता हूँ, आप आएंगे। रत्ना, आसन दे, आसन दे बेटी।

रत्ना पहले ही निकट आ खड़ी हो गयी थी। उसने कहा, आसन लायी हूँ बाबा!

दे, बिछा दे। मेरे पास आ जा। खुद ही रत्ना के सिर पर हाथ रखकर बोला, मेरी रत्ना है यह धीराबाबू! मेरा शक्तिशेल। प्रणाम कर बेटी।

धीरानन्द ने आशीर्वाद किया।

सीताराम बोला, लक्ष्मण से भी मैं बड़ा वीर हूं धीराबाबू। शक्तिशेल के आघात से लक्ष्मण अचेतन हो गये थे, हनुमान को विशल्यकरणी लाने में गंधमादन उठाकर ले आना पड़ा था। मैं शक्तिशेल सीने में लिए फिर रहा हूँ। वह हँसा, फिर बोला, कहाँ, आप जरा आगे बढ़ आइए, देखूँ आपको, कितने बड़े आदमी हैं आप।

—आँखों से क्या बिल्कुल देख नहीं पाते हो मास्टर!

—पाता हूँ। अच्छी तरह नहीं देख पाता।

—अरे तो फिर!

—तो फिर क्या?

—उम्र तुम्हारी कोई ज्यादा तो है नहीं।

पाठशाला का पंडित जिसकी मासिक आय पन्द्रह रुपया हो, उसके लिए यही उम्र काफी है। इसके अलावा—। पंडित हँसा। हँसते हँसते ही बोला, जानते ही होंगे, सन्दीपन पाठशाला उठ गयी। देश पर शिक्षा कर लगा। फ्री यू० पी० स्कूल बने, मेरी पाठशाला भी उसी में चली गयी। और ये आँखें लेकर करूँगा भी क्या?

नहीं पंडित! तुम वीर हो तुम सच्चे पंडित हो। आज इस नए स्कूल में जरूरत थी। नए युग में पुरानी बातें, सुख के दिनों में दुःख की बातें करने वाले लोगों के सिवाय चलेगा नहीं।

नहीं, बस और नहीं। आँखें भी जाती रहीं। जमाना भी नया है धीराबाबू। नये अच्छे लोग आए हैं। बेहतरीन आदमी भला छोकरा। बातें करके आनन्द मिला। बहुत-सारी बातें हुईं उसके साथ। क्या कहा, जानते हैं? कहा, सभी लोगों को शिक्षित करना पड़ेगा—चंडाल से ब्राह्मण तक। धीराबाबू, मेरा शरीर रोमांचित हो उठा। सिखाएँ। सिखा दें। अगर जिन्दा रहा, तो उस दिन

काश ! एकबार के लिए भी दृष्टि वापस पा जाऊँ। इन्सान के उस मुख का रूप एकबार देखूँगा।

धीरानन्द उसके बदन पर हाथ फेरते हुए बोला, यह सब बातें रहने दो पंडित !

रहने दूँ ?

हाँ। मैं तुम्हारी अपनी बातें सुनने आया हूँ।

वही तो हमारी अपनी बात है जो। अ-आ क ख पढ़ाई सभी करें। पाठशाला के पंडितो के पास इसके सिवा और कौन-सी बातें हैं, बताइए ? जो नहीं सीख सकेगा, उसे बेवकूफ, बुद्धू, गधा कहकर गाली दूँगा। सीताराम हँसने लगा।

यह मैं जानता हूँ। उसका मैं अनुमान लगा सकता हूँ। पंडित, अपनी मनोरमा के बारे में बातें करो। अपनी रत्ना के बारे में।

केवल मेरी ही बातें लेकर किताब लिखेंगे आप ?

हाँ। बताओ अपनी बातें। सिर्फ तुम्हारी ही बातें।

अरी रत्ना ! बेटी जरा किसान-बहू से कह दे, ताजा दूध ले आने को। धीराबाबू को चाय बना दे। वर्ना कहानी जमेगी नहीं। हाँ—धीराबाबू, यही अच्छा है। सिर्फ मेरी बातो को लेकर ही किताब लिखिए। श्रीशबाबू भी पाठशाला के पंडित हैं लेकिन वह मुझसे बहुत बड़े आदमी हैं। फिर पलाशबुनी के पंडित—वे मुझसे कुछ अलग ही तरह के हैं। सिर्फ मेरी बातें लेकर किताब लिखिएगा। लेकिन कोई झूठा रंग न चढ़ाइएगा उस पर। इकतारे से जिस प्रकार का सुर निकलता है वैसा ही बजाइएगा। बाउल का गाना जैसा होता है, वैसा ही रखिएगा। इकरंगा चित्र कैसा भी लगे उस पर दूसरा रंग न चढ़ाइएगा।—सन्दीपन पाठशाला का यह सीताराम पंडित।

नोटबुक उसके हाथों में देकर वह बोला, इसी में सबकुछ लिखा है। सिर्फ एक बात नहीं लिखी। जरा देखिए तो रत्ना कहाँ है ?

यहाँ तो नहीं है, शायद रसोई में हो।

धीमे स्वर में वह बोला, धीराबाबू, विद्यालय में एक शिक्षिका आई थी—उससे मैंने प्यार किया था। पाठशाला का पंडित होने पर भी मैं इन्सान ही हूँ। यही बात इसमें लिखी नहीं। बताता हूँ सुनिए यह बात।

यह बात खत्म कर पंडित चुप हो बैठा रहा।

●●

धीरानन्द बोला, पंडित, तो मैं अब उठूँ।

पंडित भी उठकर खड़ा हो गया। धीरानन्द ने फिर उसे बाहों में बाँध लिया।

सीताराम अचानक बोल पड़ा, और एक बात है धीराबाबू ! उसके होंठ काँपने लगे।

बताओ पंडित।

—मेरी एक बात और भी है धीराबाबू।

—बताओ पंडित । बताओ ।

मेरा हाथ थामकर मुझे ऊपर ले जाएंगे ? वहीं बताऊँगा, वहीं बताऊँगा ।

धीरानन्द उसे सहारा देकर ऊपर ले गया ।

पंडित अन्दाजे से ताखे के पास गया । पुकारा, धीराबाबू !

पंडित !

मेरा पाप—इस पाप से मुझे मुक्त करें ।

ये किताबें आपकी हैं । मैं पढ़ने लाकर इनको लौटाया नहीं । इनको आप ले जाइए । रजनीबाबू की एक किताब है । धीराबाबू !

धीरानन्द स्तब्ध खड़ा रहा । कुछ देर बाद फिर आगे बढ़कर उसने पंडित को अकवार में भर लिया । भीरु दुर्बल हृदस्पन्दन दरिद्रता क्षीण वक्षपंजर के अन्तराल से ध्वनित हो रहा है । आवेश की प्रबलता से शरीर ज्वर में उत्तप्त और प्रखर । क्षीण दृष्टि से वह मुक्त द्वारपथ से अस्तगामी सूर्य की अंतिम रश्मि से उज्ज्वल पश्चिम आकाश की ओर देख रहा है । होंठ मानों किसी असहनीय थर थर कम्पन से कांप रहे हैं ।

धीरानन्द ने गाढ़े स्वर में कहा, जय हो, जय हो—पंडित, तुम्हारी जय हो ! धीरानन्द के आलिंगन के समय उसकी आँखों से चश्मा गिर गया ।

सीताराम ने पुकारा, रत्ना ! एक बत्ती दे जा बेटी । कमरा अंधेरा हो गया ।

आई बाबू !—रत्ना ने जवाब दिया ।

धीरानन्द ने आश्चर्य से कहा, यह क्या पंडित, तुम तो कुछ भी देख नहीं पाते हो ? कमरे में अब भी तो प्रकाश है । इतनी देर में उसने पंडित की दृष्टिहीनता का परिमाण महसूस किया । सिहर उठा वह ।

सीताराम ने हँसकर कहा, प्रकाश है ? ओह, चश्मा गिर गया है न आँखों से । देखिए तो धीराबाबू, नहीं तो मैं ही शायद अपने पैरों से तोड़ डालूं ।

धीरानन्द ने चश्मा उठाकर उसके हाथों में दिया । चश्मा पहनकर सीताराम ने कहा, यही अच्छा है ।

धीरानन्द ने उसका हाथ थामकर कहा, पंडित, तुम मेरे साथ चलो, आँखों का इलाज कराओगे ।

सीताराम ने गर्दन हिलाई, नहीं । जरा चुप रहकर बोला, क्या देखूंगा आँखों से ? रत्ना की विधवा मूर्त्ति ! रहने दो । धीरानन्द सन्नाटे में आ गया ।

रत्ना बत्ती पहुँचा गई । खामोशी तोड़कर सीताराम ने कहा, अच्छा आँखों से मैं भगवान को देखने की कोशिश करूँगा । आपकी माँ ने कहा था—मैं देख सकूँगा । देखें, देख पाता हूँ कि नहीं । ऊपर की ओर उसने दृष्टि टिका दी ।

धीरानन्द ने, इस क्षण का मौका पा, दोनों हाथ माथे से लगाकर उसे प्रणाम किया ।

11 ८ 1८

●●